- मैथ्यू के अनुसार सुसमाचार:

1 1 यह यीशु मसीह के जन्म की पुस्तक है, जो दाऊद का पुत्र और इब्राहीम का पुत्र है।
2 इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ। इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ। याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए।
3 यहूदा से तमार के पेरेस और सेरा उत्पन्न हुए। पेरेस से हेस्रोन उत्पन्न हुआ। हेस्रोन से राम उत्पन्न हुआ।
4 राम से अम्मीनादाब उत्पन्न हुआ। अम्मीनादाब ने नहेसन को जन्म दिया। नहेसन ने सलमा को जन्म दिया।
5 सलमा से राहाब का बोअज उत्पन्न हुआ। बोअज से रूत से ओबेद उत्पन्न हुआ। ओबेद ने यिशै को जन्म दिया।
6 यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ। राजा दाऊद से सुलैमान ऊरिय्याह की पत्नी से उत्पन्न हुआ।
7 सुलैमान से रहूबियाम उत्पन्न हुआ। रहूबियाम से अबिया उत्पन्न हुआ। अबिया से आसा उत्पन्न हुआ।
8 आसा से यहोशापात उत्पन्न हुआ। यहोशापात से योराम उत्पन्न हुआ। यहोराम से उज्जिय्याह उत्पन्न हुआ।
9 उज्जिय्याह से योताम उत्पन्न हुआ। योताम से आहाज उत्पन्न हुआ। आहाज से हिजकिय्याह उत्पन्न हुआ।
10 हिजकिय्याह से मनश्शे उत्पन्न हुआ। मनश्शे से आमोन उत्पन्न हुआ। आमोन से योशिय्याह उत्पन्न हुआ।
11 योशिय्याह से यकोन्याह और उसके भाई बाबुल की बंधुआई के समय उत्पन्न हुए।
12 बाबुल की बंधुआई के बाद यकोन्याह से सीलतीएल उत्पन्न हुआ। सीलतीएल से जरूबाबेल उत्पन्न हुआ।
13 जरूब्बाबेल से अबीउद उत्पन्न हुआ। अबीउद से एल्याकीम उत्पन्न हुआ। एल्याकीम से अजोर उत्पन्न हुआ।
14 अजोर से सादोक उत्पन्न हुआ। सादोक ने अचिम को जन्म दिया। अचिम ने एलियुड को जन्म दिया।
15 इलीहूद से एलीआजर उत्पन्न हुआ। एलीआजर से मत्तान उत्पन्न हुआ। मत्ती से याकूब उत्पन्न हुआ।
16 याकूब से मरियम का पति यूसुफ उत्पन्न हुआ, जिससे यीशु उत्पन्न हुआ, जो मसीह कहलाता है।
17 इब्राहीम से दाऊद तक के सभी सदस्य चौदह सदस्य हैं। दाऊद से बन्धुवाई तक चौदह सदस्य हैं। बेबीलोन की कैद से लेकर मसीह तक चौदह सदस्य हैं।
18 परन्तु मसीह का जन्म इस प्रकार हुआ। जब मरियम, उसकी माँ, यूसुफ की विश्वासपात्र थी, तो उसे घर ले जाने से पहले ही पता चला कि वह पवित्र आत्मा के द्वारा गर्भवती थी।
19 मगर उसका पति यूसुफ पवित्र था, और उसका अपमान नहीं करना चाहता था, मगर उसने उसे चुपके से छोड़ने की सोची।
20 वह यह सोच ही रहा था, कि देखो, प्रभु का एक दूत स्वप्न में उसके पास यह कहता हुआ दिखाई दिया, हे दाऊद की सन्तान, अपने पति मरियम को अपने पास ले जाने से मत डर; क्योंकि जो उस में उत्पन्न हुआ है वह पवित्र आत्मा की ओर से है।
21 और वह पुत्र जनेगी जिसका नाम तुम का नाम यीशु रखोगे; क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।
22 परन्तु यह सब इसलिये हुआ कि जो वचन यहोवा ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो,
23 "देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और उसके एक पुत्र जनेगी, और वे उसका नाम इम्मानुएल रखेंगी।
24 जब यूसुफ नींद से जागा, तो उसने प्रभु के दूत की आज्ञा के अनुसार किया, और अपने पति को अपने साथ ले गया।
25 और उसने उसे तब तक नहीं पहचाना जब तक कि वह अपने पहिलौठे पुत्र को न जन्मे, और उसका नाम यीशु था।

2 1 जब यीशु का जन्म बेतलेहेम में यहूदिया देश के राजा हेरोदेस के दिनों में हुआ, तब देखो, पण्डित पूर्व से यरूशलेम को आकर कहने लगे,
2 यहूदियों का नवजात राजा कहां है? हमने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसकी पूजा करने आए हैं।
3 जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह बहुत घबरा गया और उसके साथ सारा यरूशलेम भी हो गया।
4 और उस ने सब महायाजकों और शास्त्रियों को लोगों में इकट्ठा करके उन से पूछा, कि मसीह का जन्म कहां होगा?
5 उन्होंने उस से कहा, यहूदा देश के बेतलेहेम में भविष्यद्वक्ता ने यह लिखा है,
6 "हे यहूदा देश के बेतलेहेम तू यहूदा के हाकिमों में से किसी से छोटा न है; क्योंकि तुझ में से वह सरदार मेरे पास आएगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल का प्रभु होगा।
7 तब हेरोदेस ने पण्डितों को चुपके से बुलाया और उनसे यत्न से सीखा कि तारा कब दिखाई देगा,
8 और उन्हें बेतलेहेम जाने का हुक्म देकर कहा, "जाओ और उस शिशु को ढूंढ़ो; अगर तुम उसे पा लो, तो मुझे फिर बता कि मैं भी आकर उसकी उपासना करूँगा।"
9 राजा की बात सुनकर वे चले गये। और देखो, तारा है कि वे पूर्व में देखा था उनके आगे चला गया जब तक यह आया, और

यह ऊपर खड़ा था, जहां शिशु था.
10 जब उन्होंने तारे को देखा, तो वे आनन्दित हुए,
11 और घर में गए, और शिशु को उसकी माँ मरियम के साथ पाया, और नीचे गिरकर उसे दण्डवत किया, और अपना खजाना खोला, और उसे सोना, लोबान और गन्धरस दिया।
12 और परमेश्वर ने उन्हें स्वप्न में आज्ञा दी, कि वे हेरोदेस की ओर न फिरें, और वे दूसरे मार्ग से अपके देश को लौट गए।
13 जब वे चले गए, तो देखो, यहोवा का दूत यूसुफ को स्वप्न में दर्शन देकर कहने लगा, उठकर बालक और उसकी माता को संग लेकर मिस्र देश को भाग जा, और जब तक मैं तुम से न कहूं, तब तक वहीं ठहर रह, क्योंकि हेरोदेस उस शिशु को घात करना चाहता है।
14 और वह रात को उठकर बालक और उसकी माता को संग लेकर मिस्र देश को भाग गया।
15 और वह हेरोदेस की मृत्यु के बाद तक वहीं रहा, कि जो कुछ यहोवा ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था वह पूरा हो, कि मैं ने अपके पुत्र को मिस्र से बुलाया है।
16 जब हेरोदेस ने देखा, कि मैं पण्डितोंसे भरमा गया हूं, तब वह बहुत क्रोधित हुआ, और बेतलेहेम के सब लड़कोंको, और उसकी दो वर्ष और उससे कम आयु की सारी सीमाओं पर, उस समय के अनुसार जो उस ने पण्डितोंसे यत्न से सीखा या, मार डाला।
17 फिर वह बात पूरी हुई जो भविष्यवक्ता यिर्मयाह ने कहा था:
18 "पहाड़ों पर उन्होंने रोते-बिलखते, रोते-बिलखते और रोते सुना। राहेल अपने बच्चों के लिए रोती थी, और उसे सांत्वना नहीं मिलती थी, क्योंकि यह सब उनके साथ खत्म हो गया था।
19 जब हेरोदेस मर गया, तो देखो, प्रभु का दूत मिस्र देश में यूसुफ को स्वप्न में दिखाई दिया,
20 और कहा, "उठो और बच्चे और उसकी माँ को अपने साथ ले जाओ, और इस्राएल देश में जाओ, क्योंकि वे मर गए हैं जो बच्चे के जीवन के पीछे थे।
21 तब वह उठा, और बालक और उसकी माता को संग लेकर इस्राएल देश में आया।
22 किन्तु जब उसने सुना कि अपने पिता हेरोदेस के स्थान पर अरखिलाउस यहूदिया प्रदेश में राजा है, तो वह वहाँ आने से डरता था। और एक सपने में वह भगवान से आदेश प्राप्त किया और गलील की भूमि के स्थानों के लिए चला गया.
23 और वह आकर नासरत नाम नगर में रहने लगा, कि जो कुछ भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उसका नाम नासरी रखा जाए।

3 1 उस समय यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहूदिया देश के जंगल में प्रचार करने लगा,
2 और कहा, मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।
3 और यह वही है जिसके विषय यशायाह भविष्यद्वक्ता ने कहा था, जंगल में एक उपदेशक का शब्द है, कि यहोवा के लिये मार्ग तैयार कर, और उसके मार्ग ठीक कर।
4 और यूहन्ना ने ऊंट के बालों का एक बागा और कमर में चमड़े का पटुका या, और उसका भोजन टिड्डियां और जंगली मधु या।
5 तब यरूशलेम नगर, और यहूदिया का सारा देश और यरदन के चारों ओर का सारा देश उसके पास निकल गया,
6 और उसने यरदन में बपतिस्मा लिया और अपने पापों को स्वीकार किया।
7 जब उसने बहुत से फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मे के लिए आते देखा, तो उनसे कहा, "हे सांप वालों, तुम पर किसने प्रगट किया है कि तुम आनेवाले क्रोध से बच जाओगे?
8 चौकस रहो, मन फिराव का धर्मी फल करो।
9 यह मत सोचो कि तुम अपने आप से कहना चाहते हो, 'हमारा पिता इब्राहीम है। मैं तुम से कहता हूँ, परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है।
10 कुल्हाड़ी पेड़ों की जड़ पर पहले ही रखी जा चुकी है। इसलिए जो भी पेड़ अच्छा फल नहीं लाता उसे काटकर आग में झोंक दिया जाता है।
11 मैं मन फिराव के लिये तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आएगा वह मुझ से बलवन्त है, और उसके जूते

पहनने के लिए पर्याप्त नहीं है; वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।
12 और उसके हाथ में फावड़ा है, वह अपना खलिहान झाड़ू लगाकर गेहूं को अपने खलिहान में बटोरेगा, परन्तु भूसी को सदा की आग से जला देगा।
13 उस समय यीशु गलील से यरदन में यूहन्ना को बपतिस्मा लेने के लिये आया।
14 यूहन्ना ने उसे डांटकर कहा, क्या तुझे बपतिस्मा देना है, और तू मेरे पास आता है?
15 यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि अब ऐसा ही हो, इसलिये हमारा कर्तव्य है कि हम सब धार्मिकता को पूरा करें। फिर उसने उसे ऐसा करने की अनुमति दी।
16 यीशु ने जब बपतिस्मा लिया, तो तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, आकाश उसके ऊपर खुल गया है। और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और उस पर आते देखा।
17 और देखो, स्वर्ग से यह वाणी आई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।

4 1 तब यीशु को आत्मा जंगल में ले गया, कि शैतान उसकी परीक्षा करे।
2 और जब वह चालीस दिन और चालीस रात निराहार रहा, तब उसे भूख लगी।
3 और परखने वाले ने उसके पास आकर कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह, कि ये पत्थर रोटी बन जाएंगे।
4 और उसने उत्तर दिया, "लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।
5 तब शैतान उसे अपने साथ पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के शिखर पर खड़ा किया,
6 और उससे कहा, "अगर तू परमेश् वर का बेटा है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे, क्योंकि लिखा है, 'वह अपने स्वर्गदूतों को तुझ पर हुक्म देगा और वे तुझे अपने हाथों में उठा लेंगे और वे तुझे अपने हाथों में उठा लेंगे और तेरे पैर को पत्थर से न टकराएंगे।
7 तब यीशु ने उससे कहा, "फिर लिखा है, 'तू अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न करना।
8 फिर शैतान उसे अपने साथ एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उसे दुनिया के सारे राज्य और उनकी महिमा दिखायी और
9
उससे कहा, "यदि तू गिरकर मेरी उपासना करेगा, तो मैं ये सारी चीज़ें तुझे दूँगा।
10 यीशु ने उससे कहा, हे शैतान, मेरे पास से दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू अपने परमेश्वर यहोवा को दण्डवत कर, और केवल उसी की सेवा कर।
11 तब शैतान उसके पास से चला गया, और देखो, दूत उसके पास आकर उसकी सेवा टहल करने लगे।
12 जब यीशु ने सुना कि यूहन्ना को सौंप दिया गया है, तो वह गलील देश गया।
13 और वह नासरत नगर को छोड़कर समुद्र के किनारे जबूलून और नप्ताली देश में आकर कफरनहूम में रहने लगा,
14 ताकि यशायाह भविष्यद्वक्ता ने जो कुछ कहा था, वह पूरा हो
, 15 "जबूलून का देश और नप्ताली का देश, समुद्र के किनारे, यरदन और अन्यजाति गलील के पार,
16 जो लोग अन्धकार में बैठे थे, उन्होंने बड़ी ज्योति देखी, और जो उस स्थान पर बैठे थे, और मृत्यु की छाया देखी, उन पर ज्योति छा गई।
17 उसी समय से यीशु यह प्रचार करने लगा, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।
18 जब यीशु गलील के समुद्र के पास से गुजर रहा था, तो उसने दो भाइयों को देखा, जिनका नाम शमौन उसका नाम पतरस था और उसका भाई अन्द्रियास जो अपने जाल समुद्र में फेंक रहे थे, क्योंकि वे मछुआरे थे।
19 और उस ने उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।
20 वे तुरन्त जाल छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
21 वहां से आगे बढ़ते हुए उस ने और भी दो भाइयों को जो जब्दी का पुत्र याकूब और उसका भाई यूहन्ना हैं, अपने पिता जब्दी के संग जहाज पर जाल ठीक करते देखा, और उस ने उन्हें बुलाया।
22 वे तुरन्त जहाज़ और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
23 और यीशु सारे गलील देश में फिरता हुआ उन को उनके स्कूलों में उपदेश देता रहा, और राज्य का सुसमाचार सुनाता, और लोगों में हर प्रकार की मरी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

24 और उसका समाचार सारे सीरिया देश में फैल गया। और वे सब प्रकार के बीमारों, जो नाना प्रकार की महामारियों और पीड़ाओं से पीड़ित थे, और दुष्टात्माओं से ग्रस्त, चाँदनी और गठिया से ग्रस्त लोगों को उसके पास ले आए; और उसने उन सब को ठीक किया।
25 और वे गलील के बहुत से लोगोंके पीछे हो लिए, अर्यात् दस नगरोंसे, यरूशलेम से, यहूदिया देश से, और यरदन के पार से हो लिए।

5 1 जब उसने लोगों को देखा, तो वह पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया, और उसके चेले उसके पास आए,
2 और उसने अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश दिया,
3 "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
4 धन्य हैं वे, जो विलाप करते हैं, क्योंकि उन्हें शान्ति मिलेगी।
5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
6 धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त होंगे।
7 धन्य हैं वे, जो दयालु हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।
8 धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।
9 धन्य हैं वे, जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
10 धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।
11 धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं, और यदि झूठ बोलें, तो तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें।
12 आनन्दित और ढाढ़स बान्धो, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हें प्रतिफल मिलेगा। क्योंकि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुमसे पहले थे, इसी प्रकार सताया।
13 तुम पृथ्वी के नमक हो। अब जब नमक बेवकूफ हो जाता है, तो आपको इसे क्या नमक करना चाहिए? अब से इसे उंडेलने और पैरों तले रौंदने के अलावा इसका कोई फायदा नहीं है।
14 तुम जगत की ज्योति हो। पहाड़ पर बसा शहर छिप नहीं सकता।
15 और न मोमबत्ती बुशल के नीचे जलाई जाए, परन्तु दीवट पर ऐसी हो कि वह घर के सब रहनेवालों के लिये चमके।
16 इसलिथे तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।
17 यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं; मैं लोप करने नहीं, परन्तु पूरी करने आया हूं।
18 क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए, तब तक व्यवस्था का रत्ती भर अक्षर भी टलेगा।
19 जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़कर लोगों को इस प्रकार उपदेश देगा, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा, परन्तु जो कोई उस पर चलता और सिखाता है, वह स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।
20 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धामिर्कता से उत्तम न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।
21 तुम सुन चुके हो कि पूर्वजों से कहा गया था, कि हत्या न करना; परन्तु जो कोई घात करेगा वह न्याय का दोषी ठहरेगा।
22 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करता है, वह न्याय का दोषी है, परन्तु जो कोई अपने भाई से कहता है, कि राचा है, वह युक्ति का दोषी है; परन्तु जो कोई कहे कि अरे मूर्ख, वह नरक की आग का दोषी है।
23 इसलिए अगर तू अपनी भेंट वेदी पर चढ़ाता है और याद दिलाता है कि तेरे भाई के पास तेरे खिलाफ कोई चीज़ है,
24 तो अपना तोहफा वहीं वेदी के सामने रख दो और पहले जाकर अपने भाई से सुलह कर लो, फिर आकर अपनी भेंट चढ़ाओ।
25 जब तक तू मार्ग में उसके साथ रहे, तब तक अपने विरोधी की आज्ञा माननेवाला बनो, ऐसा न हो कि शत्रु एक दिन तुम्हें न्यायी के हाथ में कर दे, और न्यायी तुम्हें उस दास के हाथ कर दे और बन्दीगृह में डाल दिया जाए।

26 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम वहाँ से तब तक नहीं हटेंगे जब तक कि तुम अंतिम राशि का भुगतान न कर दो।
27 तुम सुन चुके हो कि प्राचीनों से कहा गया था, "तू व्यभिचार न करना।
28 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री को कुकर्म की दृष्टि से देखता है, वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।
29 किन्तु यदि तेरी दाहिनी आँख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकाल कर फेंक दे। तेरे लिये भला है, कि तेरा एक अंग नाश हो, और सारा शरीर नरक में न डाला जाए।
30 यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठेस पहुँचाने का कारण बनता है, तो उसे काट कर अपने पास से फेंक दे। तेरे लिये भला है, कि तेरा एक अंग नाश हो, और सारा शरीर नरक में न डाला जाए।
31 यह भी कहा गया है, "जो कोई अपनी पत्नी को तलाक दे वह उसे तलाक का प्रमाण पत्र दे।
32 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देता है, वह उस से व्यभिचार करवाता है और जो कोई दिवंगत स्त्री से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है।
33 तुम सुन चुके हो कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था, कि झूठी शपथ न खाना, परमेश्वर की शपथ मानना।
34 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि तुम न तो स्वर्ग की शपथ खाना, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है,
35 और न पृथ्वी की, क्योंकि वह उसके पैरों की चौकी है, और न यरूशलेम की, क्योंकि यह महान राजा का नगर है।
36 और अपके सिर की शपथ न खाना, क्योंकि तू एक बाल भी काला वा सफ़ेद न कर सकेगा।
37 परन्तु तेरे वचन हों: हां, हां, नहीं, नहीं। जो ऊपर है वह बुराई है।
38 तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, "आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत।
39 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि बुराई का साम्हना न करना, परन्तु यदि कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा भी उसे दे देना।
40 और यदि कोई तुझ से वाद-विवाद करके तेरा अंगरखा लेना चाहे, तो वह भी अपना वस्त्र ले ले।
41 और यदि कोई तुम्हें एक मील के लिए विवश करे, तो उसके साथ दो मील तक जाना।
42 जो तुझ से मांगे उसे दे दे, और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उस से मुंह न मोड़ना।
43 तुम ने सुना है, कि तुम अपने पड़ोसी से प्रेम और अपने शत्रु से बैर रखो।
44 मगर मैं तुमसे कहता हूँ, अपने दुश्मनों से प्यार करो, जो तुम्हें शाप देते हैं उन्हें आशीर्वाद दो, जो तुमसे नफरत करते हैं उनके साथ भलाई करो, उनके लिए प्रार्थना करो जो तुम्हारा अपमान करते हैं और तुम्हें सताते हैं,
45 ताकि तुम अपने पिता के बेटे हो जो स्वर्ग में है, क्योंकि वह अपने सूरज को दुष्टों और अच्छे लोगों पर उदय करता है, और धर्मी और अन्यायी दोनों पर मेंह बरसाता है।
46 क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों से प्रेम रखोगे, तो तुम्हें क्या फल मिलेगा? क्या टैक्स कलेक्टर भी ऐसा नहीं करते हैं?
47 और अगर तुम सिर्फ अपने भाइयों के साथ अच्छा व्यवहार करते हो, तो तुम क्या खास काम करते हो? क्या सीमा शुल्क अधिकारी भी ऐसा ही नहीं करते?
48 इसलिए तुम्हें सिद्ध होना चाहिए, ठीक जैसे तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में है, सिद्ध है।

6 1 अपनी भिक्षा पर चौकस रहो, कि उसे मनुष्यों के साम्हने न देना, कि वे तुम्हें दिखाई दें; नहीं तो तुम्हारे स्वर्गीय पिता के पास तुम्हें कोई प्रतिफल न मिलेगा।
2 जब तू दान दे, तब उन्हें अपके साम्हने नरसिंगा न करने देना, जैसा कपटपूर्ण लोग स्कूलोंऔर सड़कोंमें करते हैं, कि लोग उनकी प्रशंसा करें। मैं तुम से सच कहता हूं, कि उन्होंने अपना प्रतिफल खो दिया है।
3 मगर जब तू दान दे, तो अपने बाएँ हाथ को न जानने देना कि तेरा दाहिना हाथ क्या कर रहा है,
4 ताकि तेरा दान छिपाया जाए और तेरा पिता जो छिपकर देखता है, तुझे सरेआम इनाम देगा।
5 और जब तुम प्रार्थना करो, तो उन कपटियोंके समान न बनो, जो स्कूलों में और सड़कों के कोनों पर खड़े होकर प्रार्थना करना पसंद करते हैं, ताकि लोग उन्हें देखें। मैं तुम से सच कहता हूं, कि उन्होंने अपना प्रतिफल खो दिया है।
6 परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जाकर द्वार बन्द कर ले और छिपकर अपने पिता से प्रार्थना कर, तब तेरा

पिता जो छिपकर देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।
7 और जब तुम प्रार्थना करो, तो अन्यजातियों की तरह बड़बड़ाओ मत, क्योंकि उन्हें लगता है कि अगर वे बहुत कुछ बोलेंगे तो उनकी भी सुन ली जाएगी।
8 इसलिए तुम उनके बराबर नहीं होगे। आपके पिता जानते हैं कि आपको उनसे पूछने से पहले क्या चाहिए।
9 इसलिये तुम इन रीति से प्रार्थना करना, 'हे हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं। तेरा नाम पवित्र किया जाए।
10 तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी हो।
11 हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
12 और जिस प्रकार हम अपने अपराध करनेवालों को क्षमा करते हैं, वैसे ही हमारे अपराध भी तू हमारे अपराध क्षमा कर।
13 और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा। क्योंकि राज्य, और सामर्थ, और महिमा सदा तेरे ही साथ रहेगी। 'आमीन'।
14 अगर तुम लोगों के अपराध माफ करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें माफ करेगा,
15 मगर अगर तुम लोगों के अपराध माफ नहीं करोगे, तो तुम्हारा पिता तुम्हारे अपराध भी तुम्हें माफ नहीं करेगा।
16 जब तुम उपवास करो, तो कपटियोंकी नाईं खट्टे न दिखाओ, क्योंकि वे अपना मुख फेर लेते हैं, ताकि वे उपवास करते हुए मनुष्यों के साम्हने दिखाई दें। मैं तुम से सच कहता हूं, कि उन्होंने अपना प्रतिफल खो दिया है।
17 मगर जब तू उपवास करे, तो अपने सिर का अभिषेक करना और अपना चेहरा धोना,
18 ताकि तू उपवास करते हुए इंसानों के सामने न आएँ, मगर अपने छिपे हुए पिता और छिपकर देखने वाला तेरा पिता तुझे सबके सामने इनाम दे।
19 तुम पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करना, जहां कीड़े-मकौड़े और काई खा जाते हैं, और चोर खोदकर चोरी करते हैं।
20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, क्योंकि वे कीड़ा या काई नहीं खाते, और चोर न तो खोदते और न चुराते।
21 चूंकि जहां आपकी बहुमूल्य निधि है, वहीं आपका दिल भी है।
22 आंख शरीर की ज्योति है। अगर तुम्हारी आंख सरल है, तो तुम्हारा पूरा शरीर हल्का होगा;
23 किन्तु यदि तेरी आँख दुष्ट है तो तेरा सारा शरीर अन्धेरा हो जाएगा। अगर तुम्हारे भीतर का प्रकाश अंधकार है, तो अंधकार कितना बड़ा होगा!
24 कोई दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता; या तो वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से लिपटा रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। आप भगवान और मैमन की सेवा नहीं कर सकते।
25 इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ, अपने जीवन की चिंता मत करो कि तुम क्या खाओगे-पीओगे और न अपने शरीर की चिंता करो कि तुम क्या पहनोगे। क्या जीवन भोजन से बढ़कर नहीं है? और कपड़ों से ज्यादा शरीर?
26 आकाश के पक्षियों को देखो: वे बोते नहीं हैं, वे काटते नहीं हैं, वे खलिहानों में इकट्ठा नहीं होते हैं, तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या आप उनसे ज्यादा नहीं हैं?
27 परन्तु तुम में से ऐसा कौन है जो उसकी लम्बाई में एक हाथ बढ़ा दे, चाहे वह तुरन्त उसकी देखभाल भी कर ले?
28 तुम कपड़ों की देखभाल क्यों करते हो? मैदान में सोसन के फूलों को देखो, वे कैसे बढ़ते हैं: वे काम नहीं करते हैं, न ही वे घूमते हैं।
29 मैं तुम से कहता हूं, सुलैमान भी अपनी सारी महिमा के अनुसार उसके समान पहिने हुए नहीं था।
30 हे अल्पविश्वासियों, यदि परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज खड़ी है, और कल भट्ठी में डाला जाएगा, इस प्रकार पहिनाए, तो क्या वह तेरे साथ ऐसा न करे?
31 इसलिये चिन्ता मत करो, कि हम क्या खायेंगे, क्या पीएंगे, और अपने आप को क्या पहिनाएंगे?
32 अन्यजाति इन सब चीज़ों को खोजते हैं। क्योंकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है।
33 पहिले परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज करो, तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।
34 सो अगली सुबह की चिन्ता मत करो, क्योंकि सुबह अपनी सुधि ले लेगी। यह पर्याप्त है कि हर दिन का अपना प्लेग होता है।

7 1 दोष न लगाओ, ऐसा न हो कि तुम दोषी ठहराए जाओ।
2 क्योंकि जिस किसी न्याय से तुम न्याय करोगे, उसी से तुम्हारा न्याय किया जाएगा, और जिस नाप से मापोगे, वह तुम्हारे लिये नापा जाएगा।
3 परन्तु तू अपके भाई की आंख का तिनका क्यों देखता है, और अपक्की आंख का लट्ठा क्यों नहीं देखता?
4 तू अपने भाई से क्योंकर कहे, कि रुक जा, मैं तेरी आंख से तिनका निकालता हूं, और देख, तेरी आंख में एक किरण है?
5 हे कपटी हो, पहिले अपक्की आँख से लट्ठा निकालो, फिर देखो कि तू अपके भाई की आंख से तिनका कैसे निकालता है।
6 तू पवित्रस्थान कुत्तों को न देना, और न अपने मोती सूअरों के साम्हने डालना, ऐसा न हो कि वे उनको अपके पांवोंतले रौंदकर टुकड़े-टुकड़े कर दें।
7 मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो तो तुम पाओगे; खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।
8 क्योंकि जो मांगता है वह पाता है, और जो ढूंढ़ता है वह पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिये खोला जाएगा।
9 तुम मनुष्योंमें ऐसा कौन है, कि उसका पुत्र उस से रोटी मांगे, और कौन उसे पत्थर चढ़ाए?
10 या यदि वह उस से कोई मछली मांगे जो उसे सांप दे?
11 जब तुम बुरे हो, तो अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देते हो, तो स्वर्ग में तुम्हारा पिता अपने मांगने वालों को अच्छी वस्तुएँ और भी क्यों नहीं देगा!
12 जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम उनके साथ करो। यही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता हैं।
13 सकेत फाटक से प्रवेश करो। क्योंकि फाटक चौड़ा है, और मार्ग चौड़ा है जो दण्ड की ओर ले जाता है; और उनमें से कई ऐसे हैं जो उस पर चलते हैं।
14 और वह फाटक सकरा है, और वह मार्ग सकरा है जो जीवन को पहुंचाता है, और उन में से थोड़े ही पाते हैं।
15 उन झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे खूँखार भेड़िये हैं।
16उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या आप कांटों से अंगूर या ऊंटकटारों से अंजीर भी तोड़ सकते हैं?
17 इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड़ बुरा फल लाता है।
18 अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता और निकम्मा पेड़ अच्छा फल नहीं ला सकता।
19 हर वह पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता, काटा और आग में झोंका जाएगा।
20 सो उन के फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।
21 जो मुझ से, 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहते हैं, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वे जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलते हैं।
22 उस दिन बहुत से लोग मुझसे कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने आपके नाम पर भविष्यवाणी नहीं की, क्या हमने आपके नाम पर दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और क्या हमने आपके नाम पर बहुत से काम नहीं किए?
23 तब मैं उन से मान लूंगा, कि मैं ने तुम को कभी नहीं जाना; हे सब कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।
24 इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन पर चलता है, मैं उसकी तुलना उस बुद्धिमान मनुष्य से करता हूँ जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया।
25 सो जब मूसलाधार वर्षा हुई, और जल की लोय आई, और आन्धी चलने लगी, और घर से टकराई, तब वह न गिरा, क्योंकि वह चट्टान पर ठोंपा गया था।
26 और जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस मूर्ख के समान है जिसने अपना घर रेत पर बनाया।
27 सो जब मूसलाधार वर्षा हुई, और जल का लोहा आया, और आन्धी चलकर घर से टकराई, तब वह गिर पड़ा और बहुत गिर पड़ा।
28 जब यीशु यह कह चुका, तो लोग उसके उपदेश से चकित हुए।
29 क्योंकि वह शास्त्रियों के समान नहीं, वरन बड़े अधिकार से प्रचार करता था।

8 1 किन्तु जब वह पहाड़ से नीचे उतरा, तो बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए।
2 और देखो, एक कोढ़ी आया और उसे प्रणाम करके कहने लगा, हे प्रभु, यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।
3 तब यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूते हुए कहा, "मैं यह करूँगा, शुद्ध हो जाऊँगा। और तुरंत वह कोढ़ से साफ हो गया।

4 यीशु ने उससे कहा, "उसे देख, किसी को न बताना, परन्तु जाकर याजक को दिखा, और जो भेंट मूसा ने उनके विषय में गवाही देने की आज्ञा दी है उसे चढ़ा दे।
5 मगर जब यीशु कफरनहूम पहुँचा, तो एक सूबेदार उसके पास आया और उससे बिनती करने लगा,
6 "प्रभु, मेरा सेवक घर पर है, गठिया से बीमार है और बहुत पीड़ा में है।
7 यीशु ने उससे कहा, "मैं आकर उसे चंगा करूँगा।
8 सूबेदार ने उत्तर दिया, हे प्रभु, मैं इस योग्य नहीं कि तू मेरी छत के नीचे जाए, परन्तु एक ही बात कह, और मेरा दास चंगा हो जाएगा।
9 क्योंकि मैं अधिक्कारनी मनुष्य हूं, और मेरे आधीन सैनिक हैं, और यदि मैं एक से कहूं, कि जाओ, तो वह जाता है, और दूसरे से कहता है, कि यहां आ, वह आता है, और मेरे दास से कहता है, कि यह कर, वह ऐसा करता है।
10 जब यीशु ने यह सुना तो वह चकित हुआ और अपने पीछे आनेवालों से कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मुझे इस्राएल पर ऐसा विश्वास नहीं मिला।
11 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे भोर और सांझ को आकर इब्राहीम, इसहाक, और याकूब के संग स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे;
12 परन्तु राज्य के सन्तान अन्धिक्कारने में डाल दिए जाएंगे, और वहां रोना और दांत पीसना होगा।
13 यीशु ने सूबेदार से कहा, "जा, तेरे विश्वास के अनुसार तेरे साथ किया जाए। और उसका दास उसी घड़ी चंगा हो गया।
14 तब यीशु पतरस के घर आया, और देखा कि उसकी सास लेटी हुई है और उसे ज्वर है।
15 फिर उसने उसके हाथ पर हमला किया और ज्वर उसे छोड़ गया। और वह उठकर उनकी सेवा करने लगी।
16 शाम को वे बहुत-से दुष्टात्माओं से ग्रसित लोगों को उसके पास लाए, और उसने आत्माओं को शब्दों से निकाल दिया और हर तरह के बीमारों को चंगा किया,
17 ताकि भविष्यवक्ता यशायाह ने जो कहा था, वह पूरा हो और उसने कहा, "उसने हमारी दुर्बलताओं को अपने ऊपर ले लिया है और हमारी महामारियाँ सह ली हैं।
18 जब यीशु ने अपने आस-पास बहुत-से लोगों को देखा तो उसे समुंदर के उस पार जाने का हुक्म दिया।
19 तब एक शास्त्री ने उसके पास आकर कहा, "गुरु, जहाँ कहीं तू जाएगा मैं तेरे पीछे-पीछे चलता रहूँगा।
20 यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के पास गड़हे होते हैं, आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, परन्तु मनुष्य के पुत्र को सिर नहीं झुकाना चाहिए।
21 उसके दूसरे चेलों ने उससे कहा, "हे प्रभु, मुझे जाने दे, और पहिले अपने पिता को मिट्टी दे दे।
22 यीशु ने उससे कहा, "मेरे पीछे हो और मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे।
23 और वह नाव पर चढ़ गया, और उसके चेले उसके पीछे हो लिए।
24 और देखो, समुद्र में बड़ी उतावली हुई, यहां तक कि जहाज भी लहरों से ढक गया, और वह सो गया।
25 तब उसके चेले उसके पास आए और उसे जगाकर बोले, "हे प्रभु, हमारी सहायता कर, हम नाश हो रहे हैं।
26 तब उसने उनसे कहा; हे अल्पविश्वासियों, तुम क्यों डरते हो? और वह उठा और हवा और समुद्र को धमकी दी; फिर यह काफी शांत हो गया।
27 परन्तु लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ और वे कहने लगे, "यह कैसा मनुष्य है कि हवा और समुद्र इसकी आज्ञा मानते हैं?
28 और वह समुद्र के उस पार गर्गसेनियों के देश में आया। तब दो आविष्ट पुरुष उसकी ओर दौड़े, जो कब्र खोदने वालों में से निकले, और बहुत क्रोधित हुए, ताकि कोई भी इस सड़क पर न चल सके।
29 और देखो, उन्होंने पुकारकर कहा, हे यीशु, परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझ से क्या काम? क्या आप समय आने से पहले हमें पीड़ा देने के लिए यहां आए हैं?
30 और उन से दूर चराई में सूअरों का एक बड़ा झुण्ड था।
31 तब दुष्टात्माओं ने उससे बिनती करके कहा, "यदि तू हम को निकालना चाहता है, तो हमें सूअरों के झुंड में जाने दे।
32 उसने कहा, जा! तब वे बाहर गए और सूअरों के झुंड में गए। और देखो, सूअरों के सभी झुंड ने खुद को ढलान से समुद्र में फेंक दिया और पानी में डूब गए।
33 तब चरवाहे भागकर नगर में गए, और ये सब बातें और दुष्टात्माओं को क्या हुआ, यह सब बातें बता दीं।

34 और देखो, सारा नगर यीशु से मिलने आया था। और जब वे उसे देखा, वे उसे अपने क्षेत्र से प्रस्थान करने के लिए भीख माँगी.

9 1 तब वह जहाज पर चढ़कर फिर चला, और अपके नगर को आया।

2 और देखो, वे उसके पास एक ऐसे मनुष्य को लाए जो गठिया से बीमार था, जो बिस्तर पर पड़ा था । जब यीशु ने उनका विश्वास देखा, तो उसने उस आदमी से कहा जो गठिया से पीड़ित था, "हे मेरे पुत्र, ढाढ़स बान्धो; आपके पाप क्षमा किए गए हैं।

3 और देखो, कितने शास्त्रियों ने अपने आप से कहा, "यह मनुष्य परमेश्वर की निन्दा करता है ।

4 यीशु ने जब उन के विचार देखे तो वह बोला, "तुम अपने मन में ऐसा बुरा क्यों सोचते हो?

5 यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना, कि उठो और चल फिर?

6 ताकि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने की शक्ति है, (उसने गठिया से पीड़ित व्यक्ति से कहा), "उठ, अपनी खाट उठा, और घर जाओ।

7 वह उठा और अपने घर चला गया।

8 जब लोगों ने यह देखा तो वे चकित हो गए और परमेश्वर की बड़ाई की, जिसने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया।

9 जब यीशु जा रहा था, तो उसने एक आदमी को सीमा शुल्क के दफ्तर में बैठे देखा, जिसका नाम मत्ती था और उसने उससे कहा, "मेरे पीछे हो ले। और वह उठकर उसके पीछे हो लिया।

10 और ऐसा हुआ कि जब वह घर में भोजन पर बैठा या, तो देखो, बहुत से चुंगी लेनेवाले और पापी आकर यीशु और उसके चेलों के साथ भोजन पर बैठ गए।

11 जब फरीसियों ने यह देखा तो वे उसके चेलों से कहने लगे, "तुम्हारा मालिक चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाता है?

12 यीशु ने जब यह सुना तो उसने उनसे कहा, "बलवानों को वैद्य की नहीं बल्कि बीमारों को वैद्य की आवश्यकता होती है।

13 मगर जाकर जान लो कि ये क्या है: "मैं बलिदान से नहीं, बल्कि दया से प्रसन्न हूँ। मैं पापियों को पश्चाताप करने के लिए बुलाने आया हूं, न कि धर्मियों को।

14 इस बीच यूहन्ना के चेले उसके पास आकर कहने लगे, "हम और फरीसी इतना उपवास क्यों करते हैं और तेरे चेले उपवास क्यों नहीं करते?

15 यीशु ने उनसे कहा, "जब दूल्हा उनके साथ है तो शादी का जोड़ा शोक कैसे मना सकता है?" परन्तु वह समय आएगा जब दूल्हा उनके बीच में से ले लिया जाएगा; फिर वे उपवास करेंगे।

16 कोई पुराने वस्त्र को नये कपड़े के चिथड़े से नहीं सुधारता, क्योंकि चिथड़ा वस्त्र को फिर फाड़ देता है, और आंसू और भी खराब हो जाते हैं।



17 और न पहिले को पुरानी खालों में रखना, नहीं तो खालें फट जाएंगी, और खालें फट जाएंगी, और खालें नष्ट हो जाएंगी। इसके बजाय, वे नई खाल में डालते हैं, ताकि उन्हें एक साथ संरक्षित किया जा सके।

18 वह थे बातें उन से कह ही रहा या, कि देखो, हाकिमों में से एक आकर उसके साम्हने गिर पड़ा और कहने लगा, हे प्रभु, मेरी बेटी अब मर गई है, परन्तु आ, उस पर हाथ रख, तो वह जीवित हो जाएगी।

19 तब यीशु उठा और उसके चेलों समेत उसके पीछे हो लिया।

20 और देखो, एक स्त्री जो बारह वर्ष से लहूलुहान थी, पीछे से उसके पास आई और उसके वस्त्र के सिरे को छुआ।

21 क्योंकि वह अपने आप से कहती थी, कि यदि मैं केवल उसके वस्त्र को छूऊं, तो मैं चंगी हो जाऊंगी।

22 तब यीशु ने मुड़कर उसे देखा और कहा, "हे मेरी बेटी, ढाढ़स बान्धो, क्योंकि तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। और स्त्री उसी समय चंगी हो गई।

23 जब वह प्रधान भवन में आया, और पाइपरों और लोगों के कोलाहल को देखा,

24 तो उसने उनसे कहा, "चले जाओ, क्योंकि कुमारी मरी नहीं है, परन्तु सो रही है। और वे उस पर हँसे।

25 जब लोगों को निकाल दिया गया, तो उसने भीतर जाकर उसका हाथ पकड़ा और लड़की उठ खड़ी हुई।

26 और यह अफवाह उसी देश में फैल गई।

27 जब यीशु वहाँ से आगे बढ़ा, तो दो अन्धे उसके पीछे हो लिये और चिल्लाकर कहने लगे, हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।
28 जब वह घर आया, तो वे अंधे उसके पास आए। यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं तुम्हारे साथ ये सब कर सकता हूँ? तब उन्होंने उससे कहा, "हे प्रभु, हाँ।
29 फिर उसने उनकी आंखें छू लीं और कहा, "यह तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे साथ किया जाए।
30 और उनकी आँखें खुल गईं। तब यीशु ने उन्हें डांटते हुए कहा, "ध्यान रखो कि कोई नहीं जानता।
31 परन्तु उन्होंने निकलकर उसी देश में उसको प्रगट किया।
32 और जब वे बाहर निकले, तो देखो, वे एक मनुष्य को जो गूंगा और वश में था, उसके पास ले आए।
33 जब शैतान निकाल दिया गया, तो वह गूंगा बोला। तब लोगों को आश्चर्य हुआ और उन्होंने कहा, इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।
34 किन्तु फरीसियों ने कहा, "वह दुष्टात्माओं के शासकों द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता है।
35 और यीशु सब नगरों और बाजारों में फिरता रहा और उन के स्कूलों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों में सब प्रकार की मरी और दुर्बलता दूर करता रहा।
36 और जब उस ने उन लोगों को देखा, तो वे उन पर पछताने लगे, क्योंकि वे उन भेड़ों की नाईं जिनका कोई चरवाहा नहीं होता, पहिले और तितर-बितर हो गए।
37 फिर उसने अपने शिष्यों से कहा, "पके खेत तो बहुत हैं किन्तु मजदूर थोड़े हैं।
38 खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूरों को भेजे।

10 1 और उस ने अपके बारह चेलोंको अपने पास बुलाकर अशुद्ध आत्माओं पर अधिक्कारने दिया, कि वे उन्हें निकाल दें, और सब प्रकार की मरी और सब प्रकार के रोग को चंगा करें।
2 अब बारह प्रेरितों के नाम ये हैं: शमौन पहिला, जो पतरस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास; जब्दी का पुत्र याकूब, और उसका भाई यूहन्ना;
3 फिलिप्पुस और बार्थोलोम्यू; थॉमस और मैथ्यू, टैक्स कलेक्टर; जेम्स, हलफई का बेटा, लेबेयस, उपनाम थडियस के साथ;
4 काना का शमौन और यहूदा इस्करियोती, जिन्होंने उसे पकड़वाया।
5 यीशु ने इन बारहों को भेजकर उन्हें आज्ञा दी, "गैर-यहूदी मार्ग से न चलना, और सामरी नगरों में न जाना,
6 परन्तु इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना।
7 मगर तुम जाकर प्रचार करो और कहो, 'स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।
8 बीमारों को चंगा किया, कोढ़ियों को शुद्ध किया, मरे हुओं को जिलाया, और दुष्टात्माओं को निकाला। आपने इसे मुफ्त में प्राप्त किया है, इसे मुफ्त में दें।

9 तेरी पेटी में सोना, चाँदी या पीतल न हो,
10 और न जाने के लिए थैला, न दो कोट, न जूते, न ही लकड़ी। क्योंकि मजदूर अपने भोजन के योग्य है।
11 किन्तु यदि तुम किसी नगर या बाजार में जाओ, तो पूछ लो कि क्या वहाँ कोई योग्य है और जब तक तुम वहाँ से न चले जाओ, तब तक उसके साथ रहो।
12 परन्तु जहां कहीं तुम किसी घर में जाओ, उसे नमस्कार करो;
13 और यदि घर योग्य होगा, तो तुम्हारी शांति उन पर आ पड़ेगी। लेकिन अगर यह योग्य नहीं है, तो आपकी शांति आपकी ओर वापस आ जाएगी।
14 और यदि कोई तुम्हें न मानता हो और तुम्हारी बातें न सुनता तो उसी घर या नगर से निकल कर अपने पैरों की धूल झाड़ दे।
15 मैं तुम से सच कहता हूं, कि अन्तिम न्याय के समय सदोम और अमोरो का देश इस नगर से अधिक सहने योग्य होगा।
16 देख, मैं तुझे भेड़ोंकी नाईं भेड़ियोंके बीच भेजता हूं; इसलिये साँपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान कपट रहित बनो।
17 मनुष्यों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें अपनी परिषदों में सौंप देंगे, और वे तुम्हें अपनी पाठशालाओं में कोड़े मारेंगे।

18 और तुम मेरे निमित्त हाकिमों और राजाओं के साम्हने लाए जाओगे, कि उन पर और अन्यजातियों पर गवाही दो।
19 सो जब वे तुम्हें पकड़ें, तो चिन्ता न करना कि तुम कैसे और क्या कहोगे; क्योंकि जो कुछ तुम कहोगे वह उसी समय तुम्हें मिल जाएगा।
20 क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं, परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम्हारे द्वारा बोलता है।
21 परन्तु भाई भाई को मार डालकर, और पिता को पुत्र के वश में कर देगा, और लड़केबाले अपने माता-पिता से बलवा करके मार डालने में सहायता करेंगे।
22 मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर रखें। परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।
23 किन्तु यदि वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे को भाग जाना। मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक मनुष्य का पुत्र न आ जाए, तुम इस्राएल के नगरों का काम पूरा नहीं कर पाओगे।
24 चेला अपने स्वामी से बड़ा नहीं और न सेवक प्रभु का है।
25 चेला अपने स्वामी के समान और दास का अपने स्वामी के समान होना पर्याप्त है। यदि उन्होंने घर के पिता को बालजबूब कहा है, तो वे उसका घराना कितना कहलाएंगे!
26 इसलिए तुम उनसे डरो। ऐसा कुछ भी छिपा नहीं है जो प्रकट नहीं किया जाएगा, और कुछ भी गुप्त नहीं है जिसे जाना नहीं जाएगा।
27 जो मैं अन्धकार में तुम से कहता हूं, उजाले में बोलना, और जो कुछ तुम कानों में सुनते हो, वही छतों पर प्रचार करते हो।
28 और उन लोगों से मत डरो जो शरीर को घात करते हैं और आत्मा को नहीं मार सकते, बल्कि उससे डरो जो शरीर और आत्मा को नरक में नष्ट कर सकता है।
29 क्या तू पैसे देकर दो गौरैया नहीं मोल लेता? तौभी उनमें से कोई भी तुम्हारे पिता के बिना पृथ्वी पर नहीं गिरता।
30 किन्तु अब तुम्हारे सिर के सारे बाल गिने हुए हैं।
31 इसलिये मत डर, क्योंकि तुम बहुत गौरैयों से उत्तम हो।
32 सो जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा, उसे मैं अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने मान लूंगा।
33 परन्तु जो कोई मनुष्यों के साम्हने मेरा इन्कार करेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने इन्कार करूंगा।
34 यह मत सोचो कि मैं धरती पर शांति लाने आया हूँ। मैं शांति भेजने नहीं आया हूं, बल्कि तलवार भेजने आया हूं।
35 क्योंकि मैं मनुष्य को उसके पिता के विरुद्ध, बेटी को उसकी माता के विरुद्ध, और बहू को उसकी सास के विरुद्ध भड़काने आया हूं।
36 इंसान के दुश्मन उसके घर ही के अंग होंगे।
37जो अपने माता पिता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं और जो कोई पुत्र या पुत्री को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं।
38और जो कोई अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे न हो ले, वह मेरे योग्य नहीं।
39 जो कोई अपना प्राण पाएगा, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।
40 जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।
41 जो कोई नबी के नाम से नबी को ग्रहण करेगा, उसे नबी का प्रतिफल मिलेगा। जो कोई भी धर्मी व्यक्ति के नाम पर एक धर्मी व्यक्ति को प्राप्त करेगा, उसे धर्मी व्यक्ति का इनाम मिलेगा।
42 और इन छोटे से छोटे में से जो कोई किसी चेले के नाम पर एक कटोरा ठंडा पानी पीए, मैं तुम से सच कहता हूं, कि उसे कोई प्रतिफल न मिलेगा।

## 11

1 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने अपने बारह शिष्यों को यह आज्ञा पूरी कर ली, तो वह वहां से उनके शहरों में उपदेश देने और प्रचार करने चला गया ।
2 मगर जब यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के काम सुने, तो उसने दो चेलों के पास 3
भेजे और उससे पूछा, "क्या तू आनेवाला है या हम किसी और का इंतज़ार करें?"
4 यीशु ने उन से कहा, जो कुछ तुम देखते और सुनते हो वे जाकर यूहन्ना से फिर कह दो:
5 अंधे देखते और लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध होते हैं, बहरे सुनते हैं, मरे हुए जी उठते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया

जाता है।
6 और धन्य है वह, जो मुझ से नाराज नहीं है।
7 जब वे जा रहे थे तो यीशु यूहन्ना के लोगों से कहने लगा, "तुम जंगल में क्यों देखने गए हो? क्या आप एक पाइप देखना चाहते थे कि हवा आगे और पीछे चलती है?
8 या तुम क्या देखने गए थे? क्या आप एक आदमी को नरम कपड़ों में देखना चाहते थे? देखो, जो नरमपंथी वस्त्र पहिनते हैं, वे राजाओं के घरों में रहते हैं।
9 तुम क्या देखने गए हो? क्या आप एक भविष्यवक्ता को देखना चाहते हैं? हां, मैं तुमसे कहता हूं, जो नबी से भी बढ़कर है।
10 क्योंकि यह वही है, जिस के विषय में लिखा है, कि देख, मैं अपना दूत तेरे आगे आगे भेजता हूं, जो तेरे आगे मार्ग सीधा करेगा।
11 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जितनी स्त्रियों से उत्पन्न हुई हैं, उनमें से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से बड़ा कोई नहीं उठा, परन्तु जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उस से बड़ा है।
12 परन्तु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से लेकर आज तक स्वर्ग के राज्य में उपद्रव हुआ है, और उपद्रव करनेवाले उसे पकड़ लेते हैं।
13 क्योंकि यूहन्ना को छोड़ सब भविष्यद्वक्ताओं और व्यवस्था ने भविष्यद्वाणी की थी।
14 और वह एलिय्याह है, जो आनेवाला है।
15 जिस के पास सुनने के लिये कान हों वह सुन ले॥
16 किन्तु मैं इस युग के लोगों की तुलना किस से करूँ? यह उन बालकों की तरह है जो बाजार में बैठकर अपने साथियों को पुकारते हैं,
17 "हमने तुम्हें सीटी बजाई, और तुम नाचोगे नहीं; हमने तुम्हें विलाप किया है, और तुम रोओगे नहीं।
18 यूहन्ना आया और उसने न खाया और न पीया, इसलिये वे कहते हैं, "उस में शैतान है।
19 मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया है, इसलिये वे कहते हैं, "देखो, मनुष्य पेटू और दाखमधु पीनेवाला, और चुंगी लेनेवाला, और पापियों का यात्री कैसे है। और ज्ञान को उसके बच्चों द्वारा धर्मी ठहराया जाना चाहिए।
20 फिर वह उन नगरों को डांटने लगा, जिनमें उसके अधिकांश काम किए गए थे, और फिर भी उन्होंने सुधार नहीं किया था:
21 हे खोराजीन! आप पर हाय, बेतसैदा! यदि ऐसे काम सूर और सैदा में होते, जैसा कि तुम्हारे साथ हुआ था, तो वे पुराने समय के टाट और राख में पश्चाताप करते।
22 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि यह तुम्हारे लिये होने से अधिक सहने योग्य होगा।
23 और हे कफरनहूम, तू जो स्वर्ग पर उठा लिया गया है, नरक में गिरा दिया जाएगा। क्योंकि यदि जो काम तुम्हारे साथ किए गए थे, वे सदोम में हुए होते, तो वह आज भी कायम रहता।
24 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि सदोम का देश अन्तिम न्याय[12] में तुम्हारे सहने योग्य होने से अधिक सहने योग्य होगा।
25 उस समय यीशु ने उत्तर दिया, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और सूझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।
26 हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यह भाता है।
27 सब कुछ मुझे पिता ने दिया है। पुत्र को कोई नहीं जानता, सिवाय पिता के; और पिता को कोई नहीं जानता, सिवाय पुत्र के, और जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहता है।
28 हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।
29 मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन से दीन हूं, और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।
30 क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।

12 1 उस समय यीशु सब्त के दिन बीज से होकर जा रहा था, और उसके चेले भूखे थे, और अन्न की बालियां तोड़कर खाने लगे।

2 जब फरीसियों ने यह देखा तो उन्होंने उससे कहा, "देख, तेरे चेले सब्त के दिन ऐसे काम कर रहे हैं जो करना उचित नहीं है।

3 उसने उनसे कहा, "क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने जब वह और उसके साथी भूखे हुए तो क्या किया?
4 वह क्योंकर मन्दिर में जाकर भेंट की रोटी खाया, जो न तो उसके खाने के योग्य थी, और न उसके संगी लोगों के लिथे थी, परन्तु केवल याजकों के लिथे थी?
5 क्या तुम ने व्यवस्या में नहीं पढ़ा कि याजक सब्त के दिन मन्दिर में सब्त को तोड़ते हैं, तौभी निर्दोष रहते हैं?
6 किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि यहाँ वह भी है जो मन्दिर से भी बड़ा है।
7 मगर अगर तू जानता कि यह क्या है, 'मैं बलिदान से नहीं, वरन दया से प्रसन्न हूँ,' तो तू निर्दोष को दोषी न ठहराता।
8 मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन भी प्रभु है।
9 और वह वहाँ से चला गया और उसके स्कूल में आया।
10 और देखो, एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था । और उन्होंने उससे पूछा, कहावत, "क्या सब्त के दिन चंगा करना सही है?" ताकि उनके पास उसके खिलाफ कुछ हो सके।
11 उस ने उन से कहा, तुम में से कौन है, यदि सब्त के दिन उसकी कोई भेड़-बकरी गड़हे में गिर जाए, तो उसे पकड़कर उठा न ले?
12 मनुष्य भेड़ से कितना अच्छा है! इसलिए, सब्त के दिन कोई अच्छा कर सकता है।
13 तब उसने उस व्यक्ति से कहा, "अपना हाथ बढ़ा। और उसने उसे बढ़ाया; और वह फिर से चंगा हो गई, ठीक दूसरे की तरह।
14 तब फरीसियों ने निकलकर उसके विषय में सम्मति की कि वे उसे किस रीति से मार डालेंगे।
15 यीशु ने जब यह सुना तो वह चला गया। और बहुत से लोग उसके पीछे हो लिये और उसने उन सभी को चंगा किया,
16 और उन्हें धमकी दी कि वे उसकी खबर न दें,
17 ताकि भविष्यवक्ता यशायाह के बारे में जो कहा गया था,
18 "देखो, यह मेरा दास है जिसे मैंने चुना है, और मेरा प्रिय, जिस से मेरा मन प्रसन्न है; मैं उस पर मेरी आत्मा डाल देंगे, और वह अन्यजातियों के लिए न्याय की घोषणा करेगा.
19 वह न तो झगड़ेगा, न चिल्लाएगा और न उसकी दोहाई सड़कों पर सुनाई देगी।
20 वह कटे हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा, और सुलगती हुई बाती को तब तक न बुझाएगा जब तक कि वह जय का न्याय न कर दे;
21 और अन्यजाति उसके नाम से आशा रखेंगे।
22 तब एक दुष्टात्मा से ग्रसित मनुष्य को उसके पास लाया गया, जो गूंगा और अन्धा हो गया; और उस ने उसे चंगा किया, और अन्धे और गूंगे बातें बोलकर देखते थे।
23 तब सब लोग बहुत डर गए और कहने लगे, "क्या यह तो दाऊद की सन्तान नहीं है?
24 यह सुनकर फरीसियों ने कहा, "वह शैतान के प्रधान बालजबूब को छोड़ और किसी दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।
25 यीशु ने उनके मन की बात जान ली और उनसे कहा, "हर एक राज्य जो अपने ही विरोध में बंटा हुआ है, उजाड़ हो जाएगा और जो कोई नगर या घर आपस में बंटा हुआ है वह स्थिर न रह सकेगा।
26 यदि एक शैतान दूसरे को निकाल दे, तो अवश्य ही वह अपने आप से भिन्न हो।
27 परन्तु यदि मैं बालजबूल की दुष्टात्माओं को निकालूं, तो वे किसके द्वारा तेरे लड़केबालोंको निकालेंगी? इसलिए वे तुम्हारे न्यायाधीश होंगे।
28 परन्तु यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।
29 और कोई क्योंकर किसी बलवन्त के घर में जाकर उसकी घरेलू सम्पत्ति लूट सकता है, जब तक कि वह पहिले बलवन्त को बान्धकर उसके घर को न लूटे?
30 जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है, और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह तितर-बितर करता है।
31 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि मनुष्य के सब पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, परन्तु आत्मा की निन्दा क्षमा नहीं करेगी।
32 और जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कुछ कहेगा, वह क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, वह न तो इस लोक में और न ही अगले लोक में क्षमा किया जाएगा।

33 या तो अच्छा पेड़ लगाओ, तो फल अच्छा होगा या सड़ा हुआ पेड़ लगाओ और फल सड़ जाएगा। क्योंकि तुम वृक्ष को फल से पहचान सकते हो।
34 हे साँप के साँचो, जब तुम बुरे हो, तो अच्छा क्योंकर बोल सकते हो? दिल भर जाने पर मुंह ओवरफ्लो हो जाता है।
35 भला मनुष्य अपके मन के भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य अपने बुरे भण्डार से बुराई निकालता है।
36 मगर मैं तुम से कहता हूँ, कि लोगों को हर एक बेकार बात का जो उन्होंने कहा है, आखिरी न्याय के समय हिसाब देना होगा।
37 तू अपनी बातों से धर्मी ठहरेगा, और तू अपनी बातों से दोषी ठहराया जाएगा।
38 तब कुछ शास्त्रियों और फरीसियों ने उत्तर दिया, "गुरु, हम चाहते हैं कि आप की ओर से एक चिन्ह मिले।
39 उस ने उन को उत्तर दिया, कि दुष्ट और व्यभिचारी एक चिन्ह ढूंढ़ता है, और उस को कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा, केवल योना भविष्यद्वक्ता के चिन्ह के।
40 क्योंकि जैसे योना तीन रात दिन जलमच्छ के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के बीच में रहेगा।
41 नीनवे के लोग इस पीढ़ी के साथ अंतिम न्याय में दिखाई देंगे और उन्हें दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने योना के प्रचार के बाद मन फिराया था। और देखो, यहाँ योना से भी बढ़कर है।
42 इस पीढ़ी के लोगों के साथ अन्तिम न्याय के समय दोपहर की रानी दिखाई देगी और उसे दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान की बुद्धि सुनने के लिए पृथ्वी की छोर से आई थी। और देखो, यहाँ सुलैमान से भी बढ़कर है।
43 जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो वह सुनसान स्थानों में भटकती है, विश्राम ढूंढ़ती है, परन्तु पाती नहीं।
44 फिर उसने कहा, "मैं अपने घर को लौट आऊँगा, जहाँ से मैं आया था। और जब वह आता है, तो वह इसे खाली, बह और सजाया हुआ पाता है।
45 सो वह जाकर सात और आत्माओं को जो अपने आप से भी बदतर हैं, अपने पास ले जाता है, और जब वे भीतर आती हैं, तो वे वहीं रहती हैं, और बाद में वही मनुष्य पहले से भी बदतर हो जाता है। तो यह इस दुष्ट पीढ़ी के साथ होगा।
46 वह लोगों से बातें कर ही रहा या, कि देखो, उसकी माता और भाई बाहर खड़े थे, और उस से बातें करना चाहते थे।
47 तब किसी ने उससे कहा, "देख, तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं और तुझ से बातें करना चाहते हैं।
48 उस ने उत्तर देकर अपने कहने वाले से कहा, कौन है मेरी माता और कौन हैं मेरे भाई?
49 उसने अपने चेलों पर हाथ बढ़ाया और कहा, "देखो, ये मेरी माँ और मेरे भाई हैं।
50 क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, बहिन और मेरी माता है।

13 1 उसी दिन यीशु घर से निकलकर समुद्र के किनारे बैठ गया।
2 और बहुत से लोग उसके पास इकट्ठे हुए, और वह नाव पर चढ़कर बैठ गया, और सब लोग किनारे पर खड़े हो गए।
3 और उस ने उन से दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं, कि देखो, एक बोनेवाला बीज बोने निकला है।
4 जब वह बीज बो रहा या, तो कुछ मार्ग के किनारे गिर पड़े, और पक्षियों ने आकर उन्हें खा लिया।
5 कुछ वस्तुएं पथरीली भूमि में गिर गईं, जहां बहुत अधिक पृथ्वी नहीं थी, और जल्द ही अंकुरित हो गए, क्योंकि उनके पास गहरी मिट्टी नहीं थी।
6 परन्तु जब सूर्य उदय हुआ, तो वह सूख गया, और जड़ न होने के कारण सूख गया।
7 कुछ बातें झाड़ियों में गिरी, और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा दिया।
8 कोई अच्छी भूमि पर गिरा और फल लाए, कोई सौ गुणा, कोई साठ गुणा, कोई तीस गुणा।
9 जिस के पास सुनने के लिये कान हों वह सुन ले॥
10 तब उसके चेले उसके पास आए और बोले, "तू उनसे दृष्टान्तों में क्यों बात कर रहा है?
11 उसने उत्तर दिया, "तुम्हें स्वर्ग के राज्य का भेद समझने के लिये दिया गया है, परन्तु उन्हें नहीं दिया गया है।
12 क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाता है, कि उसके पास बहुतायत हो, परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे भी जो कुछ उसके पास है, वह उससे ले लिया जाता है।

13 इसलिये मैं उनसे दृष्टान्तों में बात करता हूँ। क्योंकि वे देखने वाली आंखों से नहीं देखते, और सुनने वाले कानों से नहीं सुनते; क्योंकि वे इसे नहीं समझते हैं।
14 और उनके ऊपर यशायाह की यह भविष्यद्वाणी पूरी होगी, कि तुम कान लगाकर तो सुनेंगे, परन्तु न समझोगे; और देखने वाली आंखों से तुम देखोगे, और नहीं समझोगे।
15 क्योंकि इन लोगों का मन कठोर हो गया है, और इनके कान बुरी तरह सुनते हैं, और उनकी आंखें सो जाती हैं, ऐसा न हो कि एक दिन वे अपनी आंखों से देखें, और अपने कानों से सुनें, और अपने दिल से समझें, और परिवर्तित हों, कि मैं उनकी मदद करूं।
16 परन्तु धन्य हैं वे, देखने के लिये तुम्हारी आँखें, और सुनने के लिये तुम्हारे कान।
17 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और धर्मियों ने चाहा है कि जो कुछ तुम देखते हो उसे देखो, परन्तु जो नहीं देखा, और जो सुनते हो वह सुनो।
18 इस प्रकार तुम बोने वाले का यह दृष्टान्त सुनते हो:
19 यदि कोई राज्य का वचन सुनकर उसे नहीं समझता, तो वह दुष्ट आकर अपने मन में बोई हुई बातों को छीन लेता है, और यह वही मार्ग है जिसके साथ मार्ग बोया गया है।
20 परन्तु जो पत्थर पर बोया जाता है, वह तब होता है, जब मनुष्य वचन सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेता है;
21 परन्तु उसकी जड़ चंचल है; जब वचन के कारण क्लेश और सताया जाता है, तो वह तुरन्त क्रोधित हो जाता है।
22 परन्तु जो कुछ काँटों में बोया जाता है, वह यह है, कि जब कोई वचन सुनता है, और इस संसार की चिन्ता और धन के छल से वचन का गला घोंट जाता है, और वह फल नहीं लाता।
23 परन्तु अच्छे देश में जो बोया जाता है, वह तब होता है, जब कोई वचन सुनकर उसे समझे, और फिर फल लाए, और कोई सौ गुणा, और कोई साठ गुणा, कोई तीस गुणा।
24 फिर उसने उन्हें एक और दृष्टान्त-कथा सुनाकर कहा, "स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया है।
25 परन्तु जब लोग सो रहे थे, तो उसका शत्रु आकर गेहूँ के बीच जंगली घास बोकर चला गया।
26 जब सागपात उगाया और फल लगे, तो जंगली पौधे भी पाए गए।
27 तब सेवक घर के पिता के पास आकर कहने लगे, "हे प्रभु, क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज बोया नहीं? उसे खरपतवार कहाँ से मिला?
28 उसने उनसे कहा, "शत्रु ने ऐसा ही किया है। तब सेवकों ने कहा, "क्या आप चाहते हैं कि हम जाकर इसे हटा दें?"
29 उस ने कहा, नहीं, ऐसा न हो कि तू गेहूं को वैसे ही उखाड़ फेंके, जैसे जंगली पौधे निकालते हैं।
30 कटनी होने तक दोनों एक संग बढ़ते रहें, और कटनी काटने वालों से कहूंगा, कि पहिले जंगली घास बटोर लो, और गट्ठरों में बान्ध लो, कि वे जल जाएं, परन्तु गेहूं को मेरे खलिहान में इकट्ठा करो।
31 फिर उसने उन्हें एक और दृष्टान्त-कथा देकर कहा, स्वर्ग का राज्य राई के दाने के समान है, जिसे मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बोया;
32 जो सब बीजों में सबसे छोटा है, वह जब बढ़ता है, तो गोभी में बड़ा होता है, और वृक्ष बन जाता है, यहां तक कि आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियोंके बीच बसे रहते हैं।
33 फिर उसने उनसे एक और दृष्टान्त-कथा कही, कि स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है, जिसे किसी स्त्री ने लेकर तीन बुशल मैदा तब तक मिलाया जब तक कि वह पूरी तरह खमीर न हो जाए।
34 यीशु ने ये सारी बातें दृष्टान्तों में लोगों से कही और बिना दृष्टान्त के उनसे बात नहीं की,
35 ताकि भविष्यवक्ता ने जो कहा था वह पूरा हो जाए, "मैं दृष्टान्तों में अपना मुंह खोलूंगा और दुनिया की शुरुआत से ही भेद बताऊंगा।
36 इसलिए यीशु लोगों को छोड़कर घर आ गया। और उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे, "खेत में जंगली पौधों का भेद हमें समझा दे।
37 उसने उन्हें उत्तर दिया, "मनुष्य का पुत्र ही भलाई का बीज बोता है।
38 मैदान ही संसार है। अच्छा बीज है राजाई के बच्चे। जंगली घास दुष्टता की संतान हैं।

39 उनका शत्रु जो उन्हें बोता है, वह शैतान है। फसल दुनिया का अंत है। काटनेवाले स्वर्गदूत हैं।
40 जैसे जंगली पौधे निकाले जाते हैं और आग से जलाए जाते हैं, वैसे ही इस दुनिया के अंत में होगा:
41 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सभी ठोकरों को इकट्ठा करेंगे और जो गलत काम करते हैं,
42 और वे उन्हें आग की भट्टी में फेंक देंगे, जहाँ रोना और दांत पीसना होगा।
43 तब धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य की तरह चमकेंगे। जिसके पास सुनने के लिये कान हों वह सुन ले!
44 फिर स्वर्ग का राज्य मैदान में छिपे हुए भण्डार के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और आनन्द के मारे उस पर चढ़ गया, और अपना सब कुछ बेच डाला और खेत मोल लिया।
45 फिर स्वर्ग का राज्य उस व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में रहता था।
46 जब उसे बहुमूल्य मोती मिला, तो उसने जाकर अपना सब कुछ बेचकर मोल ले लिया।
47 फिर स्वर्ग का राज्य उस जाल के समान है जो समुद्र में डाला जाता है, जिस से मनुष्य सब प्रकार की वस्तुओं को पकड़ता है।48 परन्तु जब वह भर जाती है, तो उसे किनारे पर खींच लेते हैं, और बैठ कर अच्छे लोगों को एक बर्तन में इकट्ठा करते हैं, परन्तु सड़े हुए लोगों को फेंक देते हैं।
49 ऐसा ही जगत के अन्त में होगा: स्वर्गदूत निकलेंगे और दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे,
50 और उन्हें आग के भट्ठे में डालेंगे, जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।
51 यीशु ने उनसे कहा: "क्या तुम लोग यह सब बातें समझ गये? उन्होंने कहा, "हाँ, प्रभु!
52 फिर उसने कहा, "इस कारण हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य को सिखाया जाता है, उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई पुरानी बातें निकालता है।
53 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन दृष्टान्तों को पूरा कर लिया, तो वह चला गया,
54 और अपने पैतृक नगर में आया और उन्हें उनके स्कूल में पढ़ाया, जिससे वे चकित हुए और कहा, "यह ज्ञान और कर्म कहाँ से आते हैं ?"
55 क्या वह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उसकी माँ का नाम मारिया नहीं है? और उसके भाई याकूब और योसे, शमौन और यहूदा थे?
56 क्या इसकी सब बहनें हमारे बीच नहीं हैं? यह सब उसके लिए कहाँ से आता है?
57 और वे उससे नाराज हुए। यीशु ने उनसे कहा, "भविष्यद्वक्ता का आदर उसके अपने देश और घर से कम और कहीं नहीं होता।
58 और उनके अविश्वास के कारण उस ने वहां बहुत चिन्ह नहीं किए।

## 14

1 उस समय यीशु की यह अफवाह चार राजकुमार हेरोदेस के साम्हने आई।
2 और उसने अपने सेवकों से कहा, "यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है; यह मरे हुओं में से जी उठा है, इसलिये ये काम करता है।
3 क्योंकि हेरोदेस ने यूहन्ना को पकड़ लिया था और उसे उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण बन्दीगृह में डाल दिया था।
4 क्योंकि यूहन्ना ने उससे कहा था, "यह उचित नहीं कि तू उन्हें ले।
5 और वह उसे मार डालना चाहता था, परन्तु वह लोगों से डरता था, क्योंकि उन्होंने समझा कि वह भविष्यद्वक्ता है।
6 किन्तु जब हेरोदेस अपनी सालगिरह मना रहा था, तो हेरोदियास की पुत्री उनके सामने नृत्य कर रही थी। हेरोदेस इससे बहुत प्रसन्न हुआ।
7 इसलिए उसने उससे शपथ खाकर कहा कि वह उसे वह देगा जो वह मांगेगी।
8 और जब उसे उसकी माता ने उकसाया, तो उस ने कहा, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर थाली पर मुझे दे दो।
9 और राजा उदास हुआ, परन्तु शपथ खाने के कारण और जो उसके साथ भोजन पर बैठे थे, उस ने उसे देने की आज्ञा दी।
10 और उस ने बन्दीगृह में यूहन्ना को भेजकर उसका सिर काट दिया।
11 और उसका सिर थाली में उठाकर कन्या को दिया गया, और वह उसे अपनी माता के पास ले आई।

12 तब उसके चेले आकर उसकी लोथ लेकर उसे दफना दिए और आकर यीशु को इसका समाचार सुनाया।
13 यीशु ने यह सुनकर वहाँ से जहाज़ पर सवार होकर जंगल में अकेला चला गया। और जब लोगों को यह सुना, वे शहरों से बाहर पैदल उस का पीछा किया.
14 यीशु ने निकलकर बड़े लोगों को देखा; और उन्हें उन पर तरस आया, और उनके बीमारों को चंगा किया।
15 सांझ को उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे, "यह जंगल है, और रात ढलती है; लोगों को अपने पास से छोड़ दो, वे बाजारों में जाकर भोजन खरीदेंगे।
16 यीशु ने उनसे कहा, "उनका जाना ज़रूरी नहीं; उन्हें भोजन दो।
17 उन्होंने कहा, "यहाँ हमारे पास पाँच रोटियों और दो मछलियों के सिवा कुछ नहीं है।
18 उस ने कहा, उन को मेरे पास ले आओ।
19 और उस ने लोगोंको घास पर लेटने की आज्ञा दी, और उन पांच रोटियोंऔर दो मछिलयोंको लेकर आकाश की ओर दृष्टि करके धन्यवाद किया, और तोड़कर रोटियां चेलोंको दीं, और चेलोंने उन्हें लोगों को दे दिया।
20 और सब खाकर तृप्त हुए, और जो टुकड़े बचे थे उन्हें उठा लिया, और बारह टोकरियां भर लीं।
21 किन्तु जिन्होंने खाया था, वे लगभग पाँच हजार पुरुष थे, जिनके पास न पत्नियाँ थीं और न ही बच्चे।
22 यीशु ने फौरन अपने चेलों से आग्रह किया कि वे जहाज़ में चढ़ें और जब तक वह लोगों को छोड़कर न निकल जाए, तब तक उसके आगे से गुज़रें।
23 और जब वह लोगों को उसके पास से विदा कर चुका, तो प्रार्थना करने के लिये अकेला पहाड़ पर गया। शाम को वह वहां अकेला था।
24 और जहाज पहले से ही समुद्र के बीच में था, और लहरों की आवश्यकता थी, क्योंकि हवा उनके लिए प्रतिकूल थी।
25 मगर रात के चौथे पहर यीशु उनके पास आया और समुंदर पर चला-फिरता रहा।
26 जब चेलों ने उसे झील पर चलते देखा तो वे बहुत डर गए और कहने लगे, "यह तो कोई भूत है" और वे डर के मारे चिल्लाने लगे।
27 यीशु ने तुरन्त ही उन से कहा, ढाढ़स बान्धो, मैं हूँ; डरो मत।
28 पतरस ने उसे उत्तर दिया, "हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।
" 29 उसने कहा, "इधर आओ! तब पतरस जहाज पर से निकलकर पानी पर चलने लगा, कि यीशु के पास आए।
30 परन्तु उस ने प्रचण्ड आँधी देखी, और बहुत घबरा गया, और यह पुकारकर चिल्लाने लगा, हे प्रभु, मेरी सहायता कर।
31 यीशु ने फौरन हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया और उससे कहा, "हे अल्पविश्वासियों, तू ने क्यों शक किया?
32 और वे जहाज में चढ़ गए, और हवा थम गई।
33 परन्तु जो जहाज में थे, वे उसके आगे आकर गिर पड़े और कहने लगे, "सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है।

34 और वे कूच करके गलील देश को आए।
35 जब वहाँ के लोगों को उसकी भनक लगी, तो उन्होंने सारे देश में घूम-घूम कर हर तरह के अस्वस्थ लोगों को उसके पास ले आए
36 और उससे बिनती की कि वह सिर्फ उसके कपड़े की आँख को छूए। और जितने उसे छूते थे, वे सब चंगे हो गए।

## 15

1 तब यरूशलेम के शास्त्री और फरीसी उसके पास आकर कहने लगे,
2 तेरे चेले पुरनियों की बातें क्यों टालते हैं? जब वे रोटी खाते हैं तो वे अपने हाथ नहीं धोते हैं।
3 उस ने उन से कहा, तुम अपने निबंधों के कारण परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन क्यों करते हो?
4 परमेश्वर ने आज्ञा दी है, "तू अपने माता पिता का आदर करना; जो कोई पिता और माता को शाप देगा वह मर जाएगा।
5 मगर तुम सिखाते हो कि जो कोई अपने पिता वा अपनी माँ से कहता है, 'परमेश्वर को वह दिया गया है, जिससे तुम्हें मुझ से फायदा हो,' वह अच्छा करता है।
6 तो ऐसा होता है कि अब से कोई भी अपने पिता या माता का सम्मान नहीं करता है, और इसलिए आपने अपने निबंधों के कारण परमेश्वर की आज्ञा को त्याग दिया है ।
7 हे कपटियों, यशायाह ने भविष्यवाणी की है और तुम्हारे बारे में कहा है,

8 "ये लोग अपने मुंह से मेरे पास आते हैं और होठों से मेरा सम्मान करते हैं, लेकिन उनका दिल मुझसे दूर है;
9 परन्तु वे व्यर्थ मेरी सेवा करते हैं, क्योंकि वे ऐसी शिक्षा देते हैं जो मनुष्यों की आज्ञाओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं।
10 और उस ने लोगों को अपने पास बुलाकर उन से कहा, सुनो और उन्हें पकड़ो।
11 जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, परन्तु जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध करता है।
12 तब उसके चेले उसके पास आए और बोले, "क्या तू जानता है कि फरीसियों ने जब वचन सुना तो उन्हें बुरा लगा?"
13 मगर उसने जवाब दिया, "जितने पौधे मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाए, वे सब उठा लिए जाएँगे।
14 उन्हें जाने दो। वे अंधे के लिए अंधे नेता हैं। लेकिन अगर एक अंधा आदमी दूसरे को ले जाता है, तो वे दोनों गड्ढे में गिर जाते हैं।
15 पतरस ने उत्तर दिया, कि हमारे लिए यह दृष्टान्त समझा दे।
16 यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम अब भी मूर्ख हो?
17 क्या तुम अब तक नहीं जानते कि जो कुछ मुंह में जाता है, वह पेट में जाता है और प्राकृतिक मार्ग से बाहर फेंक दिया जाता है?
18 परन्तु जो बातें मुंह से निकलती हैं, वे मन से निकलती हैं, और वह मनुष्य को अशुद्ध करती हैं।
19 क्योंकि बुरे विचार मन से निकलते हैं: हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही, और निन्दा।
20 ये वे टुकड़े हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करते हैं। लेकिन बिना धुले हाथों से खाना खाने से लोग दूषित नहीं होते हैं।
21 तब यीशु निकलकर सूर और सैदा के देश में भाग गया।
22 और देखो, उसी देश से एक कनानी स्त्री आकर उसके पीछे चिल्लाने लगी, हे यहोवा, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर! मेरी बेटी शैतान से बुरी तरह त्रस्त है।
" 23 उसने उसे एक भी बात का जवाब नहीं दिया। तब उसके चेले उसके पास आकर बिनती करने लगे, और कहने लगे, "उसे छोड़ दे, क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्ला रही है।
24 उस ने उत्तर दिया, कि मैं केवल इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा गया हूं।
25 तब वह उसके पास आई और उसके आगे गिरकर बोली, "हे प्रभु, मेरी सहायता कर।
26 मगर उसने जवाब दिया, "बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे फेंकना सही नहीं।
27 उसने कहा, "हाँ, प्रभु, कुत्ते अपने स्वामी की मेज से गिरे टुकड़ों को खाते हैं।
28 यीशु ने उत्तर दिया, "हे स्त्री, तेरा विश्वास महान है! जैसा चाहो वैसा तुम्हारे साथ किया जाए। और उसकी बेटी उसी घंटे में ठीक हो गई थी।
29 यीशु वहां से चला गया और गलील की झील पर आकर पहाड़ पर चढ़कर वहीं बैठ गया।
30 और बहुत से लोग उसके पास आए, जिनके साथ लंगड़े, अंधे, गूंगे, अपाहिज और बहुत से लोग थे, और उन्होंने उन्हें यीशु के चरणों में फेंक दिया और उसने उन्हें चंगा किया,

31 यहाँ तक कि लोग चकित रह गए, जब उन्होंने देखा कि गूँगे बोल रहे हैं, तो अपाहिज चंगे हो गए, लंगड़े चले, अंधे ने देखा और इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति की।
32 यीशु ने अपने चेलों को पास बुलाया और कहा, "मुझे उन लोगों पर खेद है, क्योंकि वे तीन दिन तक मेरे साथ रहेंगे और उनके पास खाने को कुछ भी नहीं होगा और मैं उन्हें अपने पास से बिना खाए नहीं छोड़ूंगा, ऐसा न हो कि वे रास्ते में ही बेहोश हो जाएं।
33 तब उसके चेलों ने उससे पूछा, "जंगल में हमें इतनी रोटी कहाँ से मिले कि हम इतने लोगों को संतुष्ट कर सकें?
34 यीशु ने उनसे कहा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? उन्होंने कहा, "सात और एक छोटी मछली।
35 और उसने लोगों को भूमि पर लेटने की आज्ञा दी,
36 और सात रोटियाँ और मछलियां लीं, धन्यवाद किया, तोड़कर अपने चेलों को दे दीं और चेलों ने उन्हें लोगों को दे दिया।
37 और सब खाकर तृप्त हुए, और जो टुकड़े बचे थे उन्हें सात टोकरियां भर कर उठा लिया।
38 और जो वहाँ खाए थे उन में स्त्रियों और बच्चों को छोड़ चार हजार पुरुष थे।
39 और लोगों को छोड़कर वह जहाज पर चढ़ गया और मगदलीनी देश में आया।

16

1 तब फरीसी और सदूकी उसके पास आए, और उसकी परीक्षा करके बिनती करने लगे, कि वह उन्हें स्वर्ग से कोई चिन्ह दिखाए।

2 परन्तु उस ने उत्तर दिया, सांझ को तुम कहते हो, कि वह सुन्दर दिन होगा, क्योंकि आकाश लाल है;
3 भोर को तुम कहते हो, कि आज आंधी आएगी, क्योंकि आकाश लाल और बादल छाए हुए है। तुम पाखंडियों! आप स्वर्ग के रूप का न्याय कर सकते हैं; क्या तुम लोग इस समय के संकेतों का भी न्याय नहीं कर सकते?
4 यह दुष्ट और व्यभिचारी प्रजाति एक चिन्ह ढूंढ़ती है, और उस को योना भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ और कोई चिन्ह न दिया जाएगा। और वह उसे छोड़कर चला गया।
5 जब उसके चेले वहाँ गए, तो अपने साथ रोटी लेना भूल गए।
6 यीशु ने उनसे कहा, "चौकस रहो और फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहो।
7 तब उन्होंने मन ही मन सोचा, कि यदि हम रोटी अपने साथ न ले गए हों, तो ऐसा ही होगा।
8 जब यीशु ने यह देखा तो वह उनसे बोला, "हे अल्पविश्वासियों, तुम इस बात की चिन्ता क्यों करते हो कि तुम अपने साथ रोटी नहीं ले लेते?
9 क्या तुम अब तक कुछ नहीं सुन रहे हो? क्या तुझे स्मरण नहीं कि पाँच हजार रोटियों में से पाँच रोटियाँ और कितनी टोकरियाँ तू ने उठाई थीं?
10 और न तुझे स्मरण है कि उन चार हजार रोटियों में से सात रोटियां, और कितनी टोकरियां तू ने उठाई हैं?
11 तुम क्यों नहीं समझते, कि मैं तुम्हें रोटी के विषय में नहीं बताता, जब मैं कहता हूं, कि फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहो।
12 तब वे समझ गए कि उस ने यह नहीं कहा था, कि वे रोटी के खमीर से नहीं, परन्तु फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से सावधान रहें।
13 तब यीशु कैसरिया फिलिप्पी के पास आया और उसने अपने चेलों से पूछा, "लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?
14उन्हों ने कहा, कोई कहता है कि तुम यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले हो; और कोई कहता है कि तुम एलिय्याह हो; कितने कहते हैं कि तुम यिर्मयाह हो या भविष्यद्वक्ताओं में से एक हो।
15 उस ने उन से कहा; तुम मुझे क्या कहते हो?
16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।
17 यीशु ने उत्तर दिया, "धन्य है तू, योना के पुत्र शमौन, क्योंकि मांस और लोहू ने यह बात तुझ पर नहीं, परन्तु मेरे पिता पर, जो स्वर्ग में है, प्रगट किया है।
18 और मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इसी चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
19 और मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूंगा, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बान्धोगे, वह स्वर्ग में बँधा होगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे वह स्वर्ग में खुला होगा।
20 फिर उसने अपने चेलों को मना किया कि वे किसी को यह न बताएं कि यीशु ही मसीह है।
21 उसी समय से यीशु ने अपने चेलों को दिखाना आरम्भ किया कि मैं किस प्रकार यरूशलेम को जाकर पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों से बहुत दुःख उठाएगा, और मार डाला जाएगा और तीसरे दिन जी उठेगा।
22 तब पतरस उसे पकड़कर उस पर झपटकर बोला, "हे प्रभु, अपने आप को बख्श दे; तुझ से ऐसा न होने दे।
23 मगर उसने फिरकर पतरस से कहा, "हे शैतान, मुझ से दूर हो जा; तू मुझ पर क्रोधित है, क्योंकि तेरा मतलब ईश्वरीय नहीं है, बल्कि यह है कि इंसान क्या है।
24 फिर यीशु ने अपने चेलों से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।
25 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।
26 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य क्या दे सकता है ताकि वह अपने प्राण को फिर से छुड़ा सके?
27 क्योंकि ऐसा होगा कि मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और तब वह प्रत्येक को

उसके कामों के अनुसार बदला देगा ।
28 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि यहाँ कितने ऐसे खड़े हैं, जिन्हें मृत्यु का स्वाद तब तक नहीं चखना चाहिए जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते न देख लें।

17

1 छः दिन के बाद यीशु पतरस, याकूब और अपने भाई यूहन्ना को लेकर एक ऊंचे पहाड़ पर ले गया।
2 और वह उनके साम्हने बदल गया, और उसका मुख सूर्य की नाईं चमका, और उसके वस्त्र उजियाले की नाईं श्वेत हो गए।
3 और देखो, मूसा और एलिय्याह उन्हें दिखाई दिए, और उन्होंने उस से बातें कीं।
4 पतरस ने यीशु को उत्तर दिया, "प्रभु, यहाँ आकर अच्छा लगा। यदि तू चाहे, तो हम यहाँ तीन मण्डप बनाएंगे: एक तेरे लिये, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।
5 वह यह कह ही रहा या, कि देखो, एक चमकीले बादल ने उन को छा लिया। और देखो, बादल में से एक आवाज ने कहा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ, और तुम इसे सुनोगे।
6 जब शिष्यों ने यह सुना तो वे मुँह के बल गिर पड़े और डर गए।
7 यीशु उनके पास गया और उन्हें छूते हुए बोला, "डरो मत, खड़े होवो।
8 मगर जब उन्होंने अपनी नज़र ऊपर उठाई, तो उन्होंने यीशु को छोड़ और कोई नहीं देखा।
9 जब वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे तो यीशु ने यह कहकर उन्हें हुक्म दिया: "जब तक इंसान के बेटे को मरे हुओं में से जी न उठाया जाए, तब तक यह दर्शन किसी को न बताना।
10 और उसके चेलों ने उस से पूछा, शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह का पहिले आना अवश्य है?
11 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "एलिय्याह को पहले आने दो और सब कुछ ठीक करो।
12 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, एलिय्याह आ चुका है; और उन्होंने उसे न पहिचाना, परन्तु जो चाहा वही उसके साथ किया। इस रीति से मनुष्य के पुत्र को भी उन से दुःख उठाना पड़ेगा।
13 तब चेले समझ गए कि उसने उनसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में बात की है।
14 जब वे लोगों के पास पहुँचे, तो एक आदमी उसके पास आया और उसके पैरों पर गिर पड़ा
और कहने लगा, "प्रभु, मेरे बेटे पर दया कर, क्योंकि वह पागल है और उसे बहुत दुःख है: वह बार बार आग में गिरता है और कभी-कभी पानी में।
16 और मैं इसे तेरे चेलों के पास लाया, पर वे कुछ न कर सके।
17 यीशु ने उत्तर दिया, "हे अविश्वासी और पथभ्रष्ट जाति, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? उसे यहाँ ले आओ!
18 और यीशु ने उसे डांटा, और उसमें से शैतान निकल आया, और लड़का उसी समय चंगा हो गया।
19 तब उसके चेले विशेष रीति से उसके पास आये और कहने लगे, "हम उसे क्यों न निकाल न दें?
20 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम्हारे अविश्वास के कारण। क्योंकि मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के समान है, तो तुम इस पर्वत से कह सकते हो, कि यहां से चले जाओ। तब वह जी उठेगा; और आपके लिए कुछ भी असंभव नहीं होगा।
21 परन्तु यह जाति केवल प्रार्थना और उपवास के द्वारा नहीं निकलती है।
22 परन्तु जब गलील में उनका सार हुआ, तो यीशु ने उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा;
23 वे उसे मार डालेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा। और वे बहुत दुखी हो गए।
24 जब वे कफरनहूम को पहुंचे, तो पतरस के पास गया, जिसने ब्याज का पैसा लेकर कहा, क्या तुम्हारे स्वामी को यह आदत नहीं है कि वह पैसा दे?
25 उसने कहा, "हाँ। जब वह घर आया, तो यीशु उसके सामने आया और बोला, "शमौन, तुझे क्या लगता है? पृथ्वी के राजा टोल या ब्याज किससे लेते हैं? अपने बच्चों से या अजनबियों से?
26 तब पतरस ने उससे कहा, "परदेशियों के विषय में। " यीशु ने उससे कहा, "तो बच्चे स्वतंत्र हैं।
27 परन्तु ऐसा न हो कि हम उन्हें ठोकर खिलाएं, और समुद्र में जाकर मछली पकड़ने वाली छड़ी डाल दें, और जो पहली

मछली निकले उसे ले जाएं, और जब तू उसका मुंह खोलेगा, तब तुझे एक स्टेटर मिलेगा, जिसे तू लेकर मेरे और तुम्हारे लिथे उन्हें दे देगा।

18 1 उसी समय चेले यीशु के पास आकर कहने लगे, "स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है?
2 यीशु ने एक बच्चे को अपने पास बुलाया और उसे उनके बीच में बिठाया
, 3 "मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक तुम मन फिराओ और बच्चों के समान न बनो, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।
4 जो इस बालक के समान दीन होता है, वही स्वर्ग के राज्य में बड़ा है।
5 और जो कोई मेरे नाम से ऐसे बालक को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है।
6 परन्तु जो कोई मुझ पर विश्वास करनेवाले इन छोटे से छोटे में से किसी एक को ठोकर मारे, तो उसके लिये भला होगा, कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए, और जब वह सबसे गहरा हो जाए तो वह समुद्र में डूब जाए।
7 हाय ठोकर खाने के संसार पर! एक उपद्रव होना चाहिए; परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर खाई जाती है!
8 किन्तु यदि तेरा हाथ या पाँव तुझे ठेस पहुँचाने का कारण बने तो उसे काट कर अपने पास फेंक दे। यह बेहतर है कि तुम लंगड़े या जीवन के लिए अपंग हो जाओ, इससे बेहतर है कि तुम्हारे दो हाथ हों या दो पैर हों और तुम नरक की आग में फेंक दिए जाओ।
9 और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे। तुम्हारे लिये एक आंख से जीवन में प्रवेश करना इस से भला है, कि तुम्हारे पास दो आंखें हों और तुम नरक की आग में डाले जाओ।
10 चौकस रहो कि तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि स्वर्ग में उनके दूत सदा मेरे पिता के मुंह की ओर देखते हैं जो स्वर्ग में है।
11 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं का उद्धार करने आया है।
12 आपको क्या लगता है? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों और उन में से एक भटक जाए, तो क्या वह निन्यानबे भेड़ों को पहाड़ों पर छोड़कर भटकी हुई भेड़ों को ढूंढ़ने न जाएगा?
13 और यदि ऐसा होता है कि वह इसे पाता है, तो मैं तुम से सच कहता हूं, वह उन निन्यानबे से अधिक आनन्दित होता है जो भटके नहीं हैं ।
14 इस प्रकार तुम्हारे स्वर्गीय पिता की यह इच्छा नहीं, कि इन छोटों में से कोई भी नाश हो।
15 किन्तु यदि तेरा भाई तेरे विरुद्ध पाप करे तो जा और उसे केवल उसी के बीच दण्ड दे। यदि वह तुम्हारी सुनता है, तो तुमने अपने भाई को जीत लिया है।
16 यदि वह तुम्हारी नहीं सुनता, तो एक या दो और को उसके पास ले जा ताकि सब कुछ दो या तीन गवाहों के मुंह से हो जाए।
17 अगर वह उनकी नहीं सुनता, तो मंडली से कहना। यदि वह चर्च को नहीं सुनता है, तो उसे कर संग्रहकर्ता या मूर्तिपूजक मानें।
18 मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बान्धोगे, वह स्वर्ग में बँधा हुआ होगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुला होगा।
19 और मैं तुम से कहता हूं, कि यदि तुम में से दो एक हो जाएं, तो वे क्यों मांगना चाहते हैं, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, उन से किया जाएगा।
20 क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।
21 तब पतरस ने उसके पास आकर कहा, "प्रभु, मैं कितनी बार अपने भाई को क्षमा करूँ जो मेरे विरुद्ध पाप करता है? क्या यह सात बार पर्याप्त है?
22 यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से कहता हूँ, सात बार नहीं, बल्कि सात बार के सत्तर गुने तक।
23 इस कारण स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जो अपने दासों से लेखा लेना चाहता था।
24 और जब वह हिसाब लगाने लगा, तो उसे लगा कि एक तो उस पर दस हजार रुपये बकाया है।
25 क्योंकि उसके पास अदा करने के लिए पैसे नहीं थे, इसलिए प्रभु ने उसे, उसकी पत्नी और उसके बच्चों को और जो कुछ उसे देना था सब कुछ बता दिया।

26 तब वह दास गिरकर उसे प्रणाम करने लगा, और कहने लगा, हे प्रभु, मुझ पर धीरज धरे रख, मैं तुझे सब कुछ चुका दूंगा।
27 तब दास के स्वामी को दया आई, और उसने उसे जाने दिया और उसका कर्ज़ भी क्षमा कर दिया।
28 तब वही दास बाहर गया, और अपने संगी दासों में से एक को पाया, जिस पर उस पर सौ रूपया बकाया था, और उस ने उस पर चढ़ाई करके उसका गला घोंट दिया, और कहा, जो कुछ तुझे मुझ पर देना है उसका भुगतान कर।
29 तब उसका संगी दास गिर पड़ा और उससे बिनती करने लगा, कि मुझ से धीरज धर, मैं तुझे सब कुछ दूंगा।
30 परन्तु उसने ऐसा न किया, वरन जाकर उसे बन्दीगृह में तब तक फेंका जब तक कि उसका बकाया न चुका दिया जाए।
31 मगर जब उसके संगी सेवकों ने यह देखा तो वे बहुत उदास हुए और आकर जो कुछ हुआ था उसे अपने स्वामी के सामने ले आए।
32 तब उसके स्वामी ने उसे अपने साम्हने बुलाकर कहा, हे बदमाश, तूने मुझ से बिनती करते हुए तेरा यह सब कर्ज़ क्षमा कर दिया है;
33 क्या तू भी अपने संगी दास पर दया न करेगा, जैसा मैं ने तुझ पर किया है?
34 और उसका स्वामी बहुत क्रोधित हुआ, और उसे पीड़ा देने वालों के हाथ में कर दिया, जब तक कि उस ने उसका जो कुछ उस पर बकाया था, वह चुका न दिया।
35 यदि तुम अपने भाई के अपराध मन से क्षमा नहीं करोगे, तो मेरा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे साथ ऐसा ही करेगा।

19 1 और ऐसा हुआ कि जब यीशु ने इन बातों को समाप्त कर लिया, तो वह गलील से उठा और यरदन के दूसरी ओर यहूदिया प्रदेश के क्षेत्र में आया। 2 और बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए, और उसने उन्हें वहीं चंगा कर दिया। 3 तब फरीसी उसके पास आए और उसकी परीक्षा में पड़े, और उससे कहा, "क्या यह सही है, कि एक आदमी को किसी भी कारण से अपनी पत्नी को तलाक देना चाहिए? 4 उसने उत्तर दिया, "क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिसने पहले मनुष्य को बनाया, उसने पुरुष और एक स्त्री को बनाया, 5 और कहा, "इसलिए एक आदमी अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से जुड़ा रहेगा, और क्या वे दोनों एक तन होंगे"? 6 सो अब वे दो नहीं, परन्तु एक तन हैं। अब जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। 7 उन्होंने कहा, मूसा ने त्यागपत्र देने और त्यागपत्र देने का आदेश क्यों दिया? 8 उसने उनसे कहा, "मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी पत्नियों से अलग होने दिया है; लेकिन शुरू से ही ऐसा नहीं रहा है। 9 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह रचाता है, वह व्यभिचार करता है। और जो दिवंगत से ब्याह करता है, वह भी व्यभिचार करता है। 10 तब चेलों ने उससे कहा, "अगर किसी आदमी और उसकी पत्नी के बीच ऐसा मामला है तो शादी करना अच्छा नहीं है। 11 उसने उनसे कहा, "वचन हर किसी के लिये नहीं, परन्तु उन्हें दिया जाता है जिन्होंने उसे दिया है। 12 क्योंकि कितने ऐसे भी हैं जो नाश किए गए हैं, और अपनी माता के गर्भ से इस प्रकार उत्पन्न हुए हैं। और कुछ ऐसे हैं जो मनुष्यों द्वारा काट दिए जाते हैं; और कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिए स्वयं को काट दिया है। जो कोई भी इसे समझ सकता है, उसे इसे समझने दो! 13 तब वे बालक उसके पास लाए गए और उसने उन पर हाथ रखे और प्रार्थना की। लेकिन शिष्यों ने उन्हें डांटा।
14 यीशु ने कहा, बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसा ही है। 15 और उस ने उन पर हाथ रखे और चला गया। 16 और देखो, उन में से एक ने उसके पास आकर कहा, "अच्छे गुरु, मैं क्या भलाई करूँगा कि अनन्त जीवन पाऊँ?" 17 और उस ने उस से कहा, आप मुझे क्यों स्वीकार करते हैं? कोई भी अच्छा नहीं है, लेकिन एक ही भगवान। परन्तु यदि तुम जीवन में प्रवेश करना चाहते हो, तो आज्ञाओं का पालन करो। 18 तब उसने उससे पूछा, "कौन लोग? यीशु ने कहा: "तू हत्या न करना; तू व्यभिचार न करना; तू चोरी न करना; तू झूठी गवाही न देना; 19 अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। 20 तब उस जवान ने उस से कहा, मैं बचपन से ही इन सब चीज़ों की रखवाली करता रहा हूँ; मुझे अभी भी क्या याद आ रही है? 21 यीशु ने उससे कहा, "अगर तू सिद्ध होना चाहता है, तो जा और जो कुछ तेरे पास है उसे बेचकर कंगालों को दे दे, तब तुझे स्वर्ग में खजाना मिलेगा। और आओ और मेरे पीछे हो लो। 22 जब उस जवान ने वह वचन सुना, तो वह उदास होकर उसके पास से चला गया, क्योंकि उसके पास बहुत सम्पत्ति थी। 23 यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। 24 और मैं तुम से फिर कहता हूं, कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है। 25 जब उसके शिष्यों ने यह सुना तो वे बहुत चकित हुए और बोले, "हाँ, किसका उद्धार हो सकता है? 26 यीशु

ने उन की ओर देखकर कहा, मनुष्यों से यह नहीं हो सकता; लेकिन भगवान के साथ सब कुछ संभव है। 27 पतरस ने उस को उत्तर दिया, कि देख, हम तो सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं; हमें इसके लिए क्या मिलेगा? 28 यीशु ने उनसे कहा, "तुम जो नये जन्म में मेरे पीछे हो लिये हो, तुम जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी बारह कुर्सियों पर बैठोगे और इस्राएल के बारह परिवारों का न्याय करोगे। 29 और जो कोई मेरे नाम के निमित्त घरों, या भाइयों, या बहिनों, या पिता, या माता, या पत्नी, या लड़केबालों, या खेतों को छोड़ देगा, वह उसको सौ गुणा ले लेगा, और अनन्त जीवन का अधिकारी होगा।

30 किन्तु बहुत से जो प्रथम हैं, वे पिछले होंगे, और अन्तिम प्रथम होंगे।

20 1 स्वर्ग का राज्य उस गृहस्थ के समान है जो भोर को अपनी दाख की बारी में मजदूर रखने को निकला था।
2 और जब वह काम करनेवालोंके संग एक पैसा दिन की मजदूरी पर एक हो गया, तब उस ने उन्हें अपक्की दाख की बारी में भेज दिया।
3 फिर वह तीसरे पहर के करीब बाहर गया और उसने देखा कि दूसरे लोग बाजार में बेकार खड़े हैं
, 4 और उनसे कहा, "तुम भी अंगूरों के बाग में जाओ और मैं तुम्हें वही दूँगा जो सही है।
5 और वे चले गए। फिर से वह छठे और नौवें घंटे में बाहर गया और वही किया।
6 फिर वह ग्यारहवें पहर बाहर गया, और औरों को बेकार खड़ा पाया, और उन से कहा, तुम यहां दिन भर क्यों निकम्मे खड़े रहते हो?
7 उन्होंने उससे कहा, "किसी ने हमें काम पर नहीं रखा है। उस ने उन से कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो धर्म है वह तुम्हारा ही होगा।
8 जब सांझ हुई, तो दाख की बारी के स्वामी ने अपने चालक से कहा, कारीगरों को बुलाकर उनका वेतन दे, और सब से पहिले तक चल कर।
9 तब जो ग्यारहवें पहर में मज़दूरी पर रखे गए थे, वे आए, और हर एक ने अपना अपना पैसा लिया।
10 परन्तु जब पहिला आया, तो उन्होंने सोचा कि हमें और मिलेगा, और हर एक को उसका पैसा मिल गया।
11 जब उन्होंने उसे ग्रहण किया, तो वे घर-मालिक के खिलाफ यह कहते हुए कुड़कुड़ाने लगे,
12 "इन्होंने केवल एक घंटा काम किया है और तूने इन्हें हमारे जैसा बनाया है, जो दिन भर का बोझ और गर्मी सहते हैं।
13 उसने उन में से एक को उत्तर दिया, "मित्र, मैं तेरे साथ कुछ बुरा नहीं करता। क्या तुम एक पैसे के लिए मेरे साथ एक नहीं हो गए हो?
14 जो तेरा है उसे लो और जाओ। लेकिन मैं इसे आखिरी बार दूंगा जैसा कि मैं आपको करता हूं।
15 क्या मुझे अपनी इच्छा पूरी करने का अधिकार नहीं? क्या इसीलिए तुम मुझे इतनी शरारती दृष्टि से देखते हो कि मैं इतना दयालु हूँ?
16 अतः अन्तिम प्रथम होगा और जो अन्तिम होगा, वह अन्तिम होगा। क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं।
१७ और वह यरूशलेम को गया, और बारह चेलों को अपने साथ विशेष रूप से मार्ग पर ले गया, और उनसे कहा,
१८ देखो, हम यरूशलेम जा रहे हैं, और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हवाले कर दिया जाएगा, १९ और वे उसे मौत की सजा देंगे,
१९ और उसे अन्यजातियों के हवाले कर देंगे कि वे ठट्ठा करें, कोड़े मारे जाएँ और क्रूस पर चढ़ाएँ, और तीसरे दिन वह फिर जी उठेगा।
20 तब जब्दी के बच्चों की माता अपने पुत्रों समेत उसके पास आई, और उसके साम्हने गिर पड़ी, और उस से कुछ मांगा।
21 उस ने उस से कहा, तू क्या चाहती है? उसने उससे कहा, "मेरे ये दोनों पुत्र तेरे राज्य में विराजमान हों, एक तेरे दाहिनी और दूसरे तेरी बाईं ओर।
" 22 यीशु ने जवाब दिया, "तुम नहीं जानते तुम क्या माँग रहे हो। क्या आप उस प्याले को पी सकते हैं जिसे मैं पीऊंगा और उस बपतिस्मा से बपतिस्मा लूंगा जिससे मैंने बपतिस्मा लिया है? उन्होंने उससे कहा, "हाँ, श्रीमान।
23 और उस ने उन से कहा, तुम मेरा कटोरा पीओ, और जिस बपतिस्मे से मैं ने बपतिस्मा लिया है, उसी से तुम बपतिस्मा पाओगे; परन्तु मेरे दाहिनी और बाईं ओर बैठना मेरे लिये नहीं, परन्तु उनके लिये है जिन्होंने उसे मेरे पिता की ओर से तैयार

किया है।
24 जब दसों शिष्यों ने यह सुना तो वे उन दोनों भाइयों पर बहुत क्रोधित हुए।
25 मगर यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया और कहा, "तू जानता है कि दुनिया के हाकिम राज करते हैं और हाकिम का भी अधिकार होता है।
26 तुम्हारे बीच ऐसा नहीं होगा। परन्तु यदि कोई तुम में सामर्थी होना चाहे, तो वह तुम्हारा दास बने;
27 और जो कोई परम श्रेष्ठ बनना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने,
28 ठीक जैसे मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा करवाई जाए, परन्तु इसलिये आया कि सेवा टहल करे और बहुतों के छुटकारे के लिये अपना प्राण दे।
29 जब वे यरीहो से निकले, तो बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए।
30 और देखो, दो अन्धे सड़क के किनारे बैठे थे, और यीशु के पास से गुजरते हुए सुनकर चिल्लाकर कहने लगे, हे यहोवा, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।
31 किन्तु लोगों ने उन्हें धमकी दी कि वे चुप रहें। परन्तु उन्होंने और भी पुकारकर कहा, हे यहोवा, दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर!
32 यीशु चुप रहा और उन्हें बुलाकर बोला, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ करूँ?
" 33 वे उससे कहते थे: "प्रभु, कि हमारी आँखें खुल जाएँ।
34 यीशु विलाप करने लगा, और उस ने उन की आँखों को छू लिया; और तुरन्त उनकी आँखों की दृष्टि लौट ली, और वे उसके पीछे हो लिए।

21 1 जब वे यरूशलेम के पास जैतून पहाड़ पर बैतफेज की ओर आए, तो यीशु ने अपने दो चेलों को भेजा,
2 और उनसे कहा, "जो तुम्हारे आगे है उस जगह में जाओ और तुरन्त तुम्हें एक गदहा बंधा हुआ और उसका बच्चा उसके साथ मिलेगा; उसे ढीला करके मेरे पास ले आओ।
3 और यदि कोई तुम से कुछ कहे, तो कहो, 'प्रभु को उन की आवश्यकता है और वह उन्हें शीघ्र तुम्हारे पास छोड़ देगा।
4 और ये सब बातें पूरी हुईं, ताकि भविष्यद्वक्ता ने जो कहा था वह पूरा हो,
5 "सिय्योन की बेटी से कहो, 'देखो, तुम्हारा राजा गधे पर और बोझ से भरे गधे के बच्चे पर सवार होकर नम्रता से तुम्हारे पास आ रहा है।
6 चेलों ने जाकर यीशु की आज्ञा के अनुसार किया,
7 और गधे और बच्चे को लाकर उस पर अपने कपड़े रखे और उसे उस पर बिठाया।
8 किन्तु बहुत से लोगों ने अपने कपड़े सड़क पर बिछा दिए, और दूसरों ने पेड़ों की डालियाँ काटीं और उन्हें रास्ते में तितर-बितर कर दिया।



9 परन्तु जो लोग आगे बढ़कर पीछे हो लेते थे, वे चिल्लाकर कहने लगे, कि दाऊद की सन्तान को होशाना। धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है! उच्चतम में होसाना!
10 जब वह यरूशलेम में गया, तो सारा नगर यह कहकर भड़क उठा, कि वह कौन है?
11 लोगों ने कहा, "यह यीशु है, जो गलील से नासरत का नबी है।
12 यीशु परमेश्वर के मन्दिर में गया और मन्दिर के सब विक्रेताओं और मोलयदारों को निकाल दिया, और सर्राफों की मेज़ें और कबूतर बेचने वालों की कुर्सियाँ खटखटाईं
, 13 और उनसे कहा, "लिखा है, 'मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा,' मगर तुमने उसमें से हत्यारों की गुफ़ा बना दी है।
14 और अन्धे और लंगड़े मन्दिर में उसके पास गए, और उस ने उन्हें चंगा किया।
15 मगर जब महायाजकों और शास्त्रियों ने देखा कि वह क्या चमत्कार कर रहा है और जो बच्चे मन्दिर में चिल्ला रहे थे, "दाविद के बेटे का होशाना," 16 तो वे बहुत क्रोधित
हुए और उससे बोले, "क्या तू भी सुन रहा है कि ये क्या कह रहे हैं?" यीशु ने उनसे कहा, "हाँ! क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा, "बालकों और दूध पीते बच्चों के मुंह से क्या तुमने प्रशंसा तैयार की है"?
17 और वह उन्हें वहीं छोड़कर नगर से निकलकर बैतनिय्याह में चला गया, और वहीं रहने लगा।

18 परन्तु भोर को जब वह नगर में लौटा, तो उसे भूख लगी थी;
19 और उस ने मार्ग के किनारे एक अंजीर का वृक्ष देखा, और उसके पास जाकर उस में पत्तों को छोड़ और कुछ न पाया, और उस से कहा, अब तुझ पर फिर कोई फल न लगे। और अंजीर का पेड़ जल्द ही सूख गया।
20 जब शिष्यों ने यह देखा तो वे चकित हुए और बोले, "अंजीर का पेड़ इतनी जल्दी कैसे सूख गया?
21 यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम्हें विश्वास है और संदेह नहीं है तो तुम अंजीर के पेड़ के साथ ही ऐसा नहीं करोगे, बल्कि अगर तुम इस पहाड़ से कहो, 'उठो और अपने आप को समुद्र में फेंक दो,' तो यह हो जाएगा।
22 और जो कुछ तुम प्रार्थना में मांगोगे, यदि तुम विश्वास करोगे, तो तुम को मिलेगा।
23 जब वह उपदेश दे ही रहा था तो जब वह मन्दिर में आया, तो महायाजक और प्रजा के पुरनिये उसके पास आकर कहने लगे, तू यह किस शक्ति से करता है?
24 यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे तुमसे बात माँगता हूँ और अगर तुम मुझे यह बताओगे, तो मैं तुम्हें यह भी बताऊँगा कि मैं किस शक्ति से यह कर रहा हूँ:
25 यूहन्ना का बपतिस्मा कहाँ से आया? क्या यह स्वर्ग से आया था या पुरुषों से? उन्होंने सोचा, "यदि हम कहें कि वह स्वर्ग से है, तो वह हमसे कहेगा, 'तुम ने उसका विश्वास क्यों नहीं किया?
26 परन्तु यदि हम कहें कि मनुष्यों की ओर से यह है, तो हमें लोगों से डरना चाहिए, क्योंकि वे सब यूहन्ना को भविष्यद्वक्ता समझते हैं।
" 27 उन्होंने यीशु को जवाब दिया, "हम नहीं जानते। उस ने उन से कहा, मैं तुम को नहीं बताऊंगा कि मैं किस शक्ति से यह करता हूं।
28 लेकिन तुम क्या सोचते हो? एक मनुष्य के दो पुत्र थे, और पहिले के पास जाकर कहने लगा, हे मेरे पुत्र, आज जाकर मेरी दाख की बारी में काम कर।
" 29 मगर उसने जवाब दिया, "मैं ऐसा नहीं करूँगा। उसके बाद उसने पश्चाताप किया और चला गया।
30 वह दूसरे के पास गया और तुरन्त बोला। " उसने उत्तर दिया और कहा, "हे प्रभु, हाँ! - और नहीं गया।
31 इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा पूरी की? उन्होंने उससे कहा, "पहला। यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, चुंगी लेनेवाले और वेश्याएँ तुम से शीघ्र स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर सकती हैं।
32 यूहन्ना ने तुम्हारे पास आकर तुम्हें ठीक मार्ग सिखाया, और तुम ने उस की प्रतीति न की, परन्तु चुंगी लेनेवालों और वेश्याओं ने उस की प्रतीति की। और यद्यपि आपने इसे अच्छी तरह से देखा, आपने पश्चाताप नहीं किया कि आप बाद में उस पर विश्वास करते।
33 एक और दृष्टान्त सुनो: एक गृहस्थ था जिसने दाख की बारी लगाई, और उसके चारों ओर बाड़ लगाई, और उसमें दाखरस खोदा, और एक गुम्मट बनाया, और दाख की बारियों को दिया, और देश भर में चला गया।
34 जब फल का समय आया, तो उसने अपने सेवकों को दाख की गालियों के पास उसका फल लेने के लिये भेजा।
35 तब अंगूर उगाने वाले उसके दासों को ले गए, और उन्होंने एक को अचेत कर दिया और दूसरे को मार डाला और तीसरे को पत्थरवाह किया।
36 फिर उसने और दासों को भेजा, जो पहिले से अधिक थे, और उन्होंने भी उनके साथ वैसा ही किया।
37 फिर उसने अपने बेटे को उनके पास यह कहते हुए भेजा, "वे मेरे बेटे से डरेंगे।
38 जब अंगूर के बागवानों ने पुत्र को देखा, तो आपस में कहने लगे, "यह वारिस है; आओ, हम इसे मार डालें, और उसका भाग हमारे पास ले आएं।
39 और उन्होंने उसे पकड़कर दाख की बारी से बाहर निकाल दिया और मार डाला।
40 सो जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो वह इन अंगूर उगाने वालों के साथ क्या करेगा?
41 उन्होंने उससे कहा, "वह दुष्टों को मार डालेगा, और अपनी दाख की बारी अन्य दाख की बारी को अन्य दाख की बारी देगा, जो उसे ठीक समय पर फल देंगे।
42 यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुमने शास्त्र में यह नहीं पढ़ा: "जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया था, वही कोने का सिरा हो गया है। यह प्रभु के द्वारा किया गया है, और यह हमारी आंखों के सामने अद्भुत है"?
43 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा, और ऐसे लोगों को दिया जाएगा जो उसके

फल लाएँगी।
44 और जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा, और जिस किसी पर यह गिरे, वह कुचल दिया जाएगा।
45 प्रधान याजकों और फरीसियों ने जब उसके दृष्टान्तों को सुना तो वे समझ गए कि वह उनके विषय में कह रहा है।
46 और वे देखना चाहते थे कि हम उसे किस रीति से पकड़ते हैं, परन्तु लोगों से डरते थे, क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता समझते थे।

22 1 यीशु ने उत्तर दिया और दृष्टान्तों के द्वारा फिर उनसे कहा, 2 स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है जिसने अपने पुत्र से विवाह किया। 3 और उसने अपने सेवकों को भेजकर विवाह के लिये मेहमानों को बुलाने के लिये भेजा, और वे न आने लगे। 4 फिर उसने और सेवकों को भेजकर कहा, "मेहमानों से कहो, 'देखो, मैं ने अपना भोजन तैयार कर लिया है, मेरे बैल और मेरे मोटे पशु वध किए गए हैं, और सब कुछ तैयार है; शादी में आओ! 5 परन्तु वे इस बात को तुच्छ जानकर उसके खेत में गए, और दूसरे उसके काम में लग गए। 6 उन में से कितनों ने उसके सेवकों को पकड़कर उनका ठट्ठा किया और उन्हें मार डाला।
7 जब राजा ने यह सुना, तो वह क्रोधित हुआ, और उसने अपनी सेना भेजकर इन हत्यारों को मार डाला और उनके नगर में आग लगा दी। 8 तब उसने अपने सेवकों से कहा, "शादी की तैयारी है, लेकिन मेहमान इसके लायक नहीं थे। 9 इसलिए सड़कों पर जाओ और जिसे तुम पाओ उसे शादी के लिए आमंत्रित करो। 10 तब सेवक सड़कों पर गए और इकट्ठे हुए। जिसे उन्होंने पाया, बुरा और अच्छा; और टेबल सभी भरे हुए थे। 11 तब राजा मेहमानों को देखने भीतर गया, और वहां एक व्यक्ति को देखा जिसने विवाह का वस्त्र नहीं पहना था। 12 उस ने उस से कहा, हे मित्र, तू भीतर कैसे आया और तेरे पास विवाह का वस्त्र नहीं था? लेकिन वह चुप हो गया। 13 तब राजा ने अपने सेवकों से कहा, "इसके हाथ-पैर बाँध दो और इसे अन्धेरे में डाल दो। रोना और दांत पीसना होगा। 14 क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, परन्तु चुने हुए थोड़े हैं। 15 तब फरीसियों ने जाकर सम्मति की, जैसा कि उन्होंने उसकी बात में पकड़ा था। 16 और उन्होंने हेरोदेस के सेवकों के साथ अपने चेलों को उसके पास भेजा। उन्हों ने कहा; हे गुरू, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है; और हम परमेश्वर का मार्ग ठीक बताते हैं, और तुम किसी से नहीं माँगते; क्योंकि तुम मनुष्यों की प्रतिष्ठा का आदर नहीं करते। 17 सो हमें बताओ, कि तुम क्या सोचते हो, कि क्या यह उचित है कि कैसर को ब्याज दिया जाए, या नहीं? 18 यीशु ने उनकी दुष्टता देखी तो कहा, "हे कपटियों, तुम मेरी परीक्षा क्यों करते हो? 19 मुझे ब्याज का सिक्का दिखाओ। और उन्होंने उसे एक पैसा दिया। 20 और उसने उनसे कहा, "मूर्ति और शिलालेख क्या है? " 21 उन्होंने उससे कहा, "कैसर का। फिर उस ने उन से कहा, जो कैसर का है वह कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो। 22 जब उन्होंने यह सुना तो वे चकित हुए और उसे छोड़कर चले गए। 23 उस दिन सदूकी जो यह मानते थे कि पुनरुत्थान होना ही नहीं, उसके पास आया और उससे पूछा, 24 "गुरु, मूसा ने कहा था, 'यदि कोई व्यक्ति मर जाए और उसके कोई सन्तान न हो, तो उसका भाई अपनी पत्नी से विवाह करेगा और अपने भाई के वंश को उत्पन्न करेगा। 25 हमारे साथ सात भाई थे। पहली शादी हुई और मर गया; और जब उसके पास कोई बीज नहीं था, तो उसने अपनी पत्नी को अपने भाई के पास छोड़ दिया; 26 और इसी प्रकार दूसरा और तीसरा सातवें से। 27 आखिर वह औरत भी मर गयी। 28 अब मरे हुओं के जी उठने पर वह उन सातों में कौन-सी स्त्री होगी? उनके पास यह सब है। 29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "तुम भूल कर रहे हो, शास्त्र को नहीं जानते और परमेश्वर की शक्ति को नहीं जानते। 30 पुनरुत्थान के समय वे न तो विवाह करेंगे और न ही विवाह करेंगे, परन्तु स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों के समान होंगे। 31 क्या तुमने मरे हुओं के पुनरुत्थान के बारे में नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने तुमसे कहा था, 32 "मैं इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश् वर हूँ"? परन्तु परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवितों का परमेश्वर है। 33 जब लोगों ने यह सुना तो वे उसके उपदेश से चकित हुए। 34 जब फरीसियों ने सुना कि उसने सदूकियों का मुँह बंद कर दिया है, तो वे इकट्ठे हो गए। 35 उन में से एक शास्त्री ने उसकी परीक्षा की और कहा, 36 "गुरु, कानून में सबसे महान आज्ञा क्या है? 37 यीशु ने उससे कहा, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। 38 यह सबसे महान और सबसे बड़ी आज्ञा है। 39 परन्तु शेष उसके समान हैं; तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। 40 इन ही दो आज्ञाओं में सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता टिकी हुई हैं। 41 जब फरीसी साथ थे, तो यीशु ने उनसे पूछा, 42 और कहा, "तुम मसीह के बारे में कैसा महसूस करते हो? वह किसका पुत्र है? उन्होंने कहा, "दाऊद का। 43 उसने उनसे कहा, "दाऊद उसे आत्मा में प्रभु कैसे कहता है, 44 "प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा है, 'मेरे दाहिने हाथ बैठो जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पैरों की चौकी न बना दूँ। 45 जब दाऊद उसे

स्वामी कहता है, तो वह उसका बेटा कैसे हो सकता है? 46 उस दिन से कोई उस से एक बात न कह सका, और न उस दिन से किसी को उस से पूछने का साहस हुआ।

23 1 फिर यीशु ने लोगों और अपने चेलों से बात की,
2 और कहा, "शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं।
3 इस कारण जो कुछ वे तुझ से कहना कहें, मानो मानो और उसे मानो, परन्तु तू उनके कामों के अनुसार न करना, वे भला कहते हैं, और नहीं करते।
4 परन्तु वे भारी और असहनीय बोझों को बान्धकर मनुष्यों की गर्दनों पर डालते हैं, परन्तु वे स्वयं उन्हें उंगली से हिलाना नहीं चाहते।
5 परन्तु वे अपने सब काम इसलिये करते हैं, कि मनुष्य उन्हें देखें। उन्होंने अपने अनुस्मारक और अपने कपड़ों पर हेम को बड़े पैमाने पर फैलाया।
6 वे मेज के सिरहाने और स्कूलों में बैठना पसंद करते हैं,
7 और वे बाजार में अभिवादन करना और लोगों द्वारा रब्बी बुलाए जाना पसंद करते हैं।
8 परन्तु, तुम रब्बी न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही प्रभु है: और तुम सब भाई हो।
9 और पृथ्वी पर किसी का पिता न कहलाएगा; क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है जो स्वर्ग में है।
10 और तुम गुरू न कहलाना; क्योंकि तुम में से एक है, अर्थात मसीह।
11 तुम में जो बड़ा है, वह तुम्हारा सेवक होगा।
12 क्योंकि जो अपने आप को बड़ा करता है, वह दीन किया जाएगा, और जो अपने आप को दीन बनाएगा वह ऊंचा किया जाएगा।
13 हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय, जिन्होंने मनुष्यों के साम्हने स्वर्ग के राज्य का बन्द कर दिया! आप अंदर नहीं जाते हैं, और आप उन लोगों को नहीं जाने देते हैं जो अंदर जाना चाहते हैं।
14 हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय, जो विधवाओं के घरों को खा जाते और लंबी देर तक प्रार्थना करते रहते हैं! यही कारण है कि आप सभी अधिक दंड प्राप्त करेंगे।
15 हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय, जो तुम्हारी भूमि और जल में इधर-उधर घूमते रहते हैं, कि तुम एक यहूदी को संगी यहूदी बनाओ; और जब वह ऐसा हो जाए, तो तुम उसे नरक का पुत्र बनाओगे, जो तुम से दुगुनी अधिक हो।
16 हाय तुम पर हे अन्धे अगुवे, जो कहते हैं, कि जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह कुछ भी नहीं; लेकिन जो कोई भी मंदिर के सोने की कसम खाता है, वह इसका ऋणी है।
17 हे मूर्खों और अंधों लोगो! कौन बड़ा है: सोना या मंदिर जो सोने को पवित्र करता है?
18 "जो वेदी की शपथ खाता है वह कुछ भी नहीं है; लेकिन जो कोई भी उस बलिदान की शपथ लेता है जो उस पर है, वह इसका ऋणी है।
19 हे मूर्खों और अंधों लोगो! कौन बड़ा है: बलिदान या वेदी जो बलिदान को पवित्र करती है?
20 सो जो कोई वेदी की शपथ खाता है, वह उस की और उस पर की सब की शपथ खाता है।
21 और जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह उसकी और उस में रहनेवाले की शपथ खाता है।
22 और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की और उस पर बैठने वाले की शपथ खाता है।
23 हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय, जो पुदीना, सोआ, और जीरा का दशमांश देते हैं, और व्यवस्था की सबसे भारी वस्तु अर्थात न्याय, दया और विश्वास छोड़ जाते हैं। ऐसा करना चाहिए और उसे छोड़ना नहीं चाहिए।
24 हे बहकाए हुए सरदारों, जो मच्छरों को छानते और ऊंटों को निगलते हैं।
25 हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय, जो प्यालों और बर्तनों को बाहर से तो साफ रखते हैं, परन्तु भीतर से लूट और लोलुपता से भरे रहते हैं!
26 हे अन्धे फरीसी, पहिले प्याले और थाली के भीतर की सफाई करो, कि बाहर से भी शुद्ध हो।
27 हे कपटी शास्त्रियों, और फरीसियों, तुम पर हाय, जो सूनी हुई कब्रों के समान हैं, जो बाहर से तो सुन्दर तो दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर से मुर्दों की हड्डियों और सारी गन्दगी से भरी हुई हैं!

28 इसी रीति से तुम भी मनुष्यों को बाहर से पवित्र लगते हो, परन्तु अपनी शालीनता में कपट और दुर्गुणों से भरे हुए हो।
29 हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय जो भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें बनाते हैं और धर्मियों की कब्रों को सजाते हैं,
30 और कहते हैं, "यदि हम अपने पूर्वजों के दिनों में होते, तो भविष्यवक्ताओं के खून में से उनके साथ भागी न होते।
31 सो तुम आप ही पर गवाही देते हो, कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के घातकों में से हो।
32 आओ, तुम भी अपने पुरखाओं के घड़े के घड़े को पूरा करो।
33 हे साँपों और साँपों, तू नरक दण्ड से क्योंकर बचेगा?
34 इसलिथे देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूं, जिन में से कितनों को तुम घात करके क्रूस पर चढ़ाओगे, और कितनों को उनके स्कूलों में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में सताओगे।
35 ताकि धर्मी हाबिल के लोहू से लेकर बेरेक्याह के पुत्र जकर्याह के लोहू तक, जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच मार डाला था, वह सब जो पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम पर आ पड़े।
36 मैं तुम से सच कहता हूँ, ये सब बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेंगी।
37 हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, भविष्यद्वक्ताओं को घात करनेवालो, और जो तुम्हारे पास भेजे गए हैं, उन पर पत्यरवाह करने लो, मैं ने कितनी बार चाहा कि तुम्हारे लड़केबालोंको इकट्ठा करूं, जैसे मुर्गी अपने चूजों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, और तुम नहीं चाहते।
38 देख, तेरा घर तेरे लिथे उजाड़ छोड़ दिया जाएगा।
39 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि तुम मुझे अब से तब तक न देखोगे जब तक तुम यह न कहोगे, 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है।

24 1 तब यीशु मन्दिर से चला गया, और उसके चेले उसके पास मन्दिर का भवन दिखाने आए।
2 यीशु ने उनसे कहा, "क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूं, कि एक पत्थर के उपर दूसरा पत्थर ऐसा न होगा जो टूटेगा।
3 जब वह जैतून के पहाड़ पर बैठा था, तो उसके चेले विशेष रूप से उसके पास आकर कहने लगे, "हमें बता, ये सब बातें कब होंगी?" और आपके भविष्य और दुनिया के अंत का संकेत क्या होगा?
4 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "ध्यान रखो कि कोई तुम्हें धोखा न दे।
5 क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, "मैं मसीह हूँ," और बहुतों को भरमाएँगे।
6 तुम लड़ाइयां और चीख-पुकार सुनोगे; जागते रहो, मत डर। सबसे पहले, यह सब किया जाना चाहिए; लेकिन यह अभी अंत नहीं है।
7 क्योंकि जाति पर जाति बलवा करेगी, और राज्य के विरुद्ध राज्य होगा, और मरी, और बहुमूल्य समय, और भूकम्प होंगे।
8 तब सबसे पहले मुसीबतें बढ़ेंगी।



9 तब वे तुम्हें क्लेश में सौंप देंगे और तुम्हें मार डालेंगे। और मेरे नाम के निमित्त सब लोग तुझ से बैर रखेंगे।
10 तब बहुतेरे क्रोधित होंगे, और एक दूसरे को पकड़वाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे।
11 और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और बहुतों को भरमाएंगे।
12 और जब अधर्म बढ़ता जाएगा, तो बहुतों में प्रेम ठण्डा पड़ जाएगा।
13 किन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।
14 और राज्य का सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, और तब अन्त आ जाएगा।
15 जब तुम पवित्र स्थान में उजाड़ घृणित काम (जिसके बारे में दानिय्येल नबी ने कहा था) को खड़ा देखा,
16 तब तुम पहाड़ों पर भाग जाओ जो यहूदिया देश में हैं।
17 और जो छत पर हो, वह अपके घर से कुछ लेने को न उतरे;
18 और जो कोई मैदान में हो, वह अपने वस्त्र लेने को पीछे न मुड़े।
19 परन्तु हाय उन पर जो गर्भवती स्त्रियों और दूध पीते हुए बच्चों के लिए उस समय थीं!
20 किन्तु प्रार्थना करो कि तुम्हारी उड़ान शीत ऋतु में या सब्त के दिन न हो।
21 क्योंकि शीघ्र ही ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न हुआ, और न होगा।

22 और यदि ये दिन थोड़े न हों, तो कोई मनुष्य उद्धार न पाएगा, परन्तु चुने हुओं के कारण दिन घटाए जाएंगे।
23 फिर यदि कोई तुम से कहे, 'देखो, मसीह यहाँ है' या 'वहाँ' तो तुम विश्वास न करोगे।
24 क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े बड़े चिन्ह और अद्भुत काम करेंगे, यहां तक कि चुने हुए भी गलती से धोखा खाएंगे।
25 देखो, मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया था।
26 इसलिये जब वे तुम से कहें, 'देखो, वह जंगल में है,' तो बाहर मत जाना; देखो, वह कोठरी में है, प्रतीति न करना।
27 क्योंकि जैसे उगते हुए में से बिजली चमकती और सूर्यास्त तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
28 परन्तु जहां लोथ होती है वहां उकाब इकट्ठे होते हैं।
29 मगर उस समय के क्लेश के तुरंत बाद सूरज और चाँद अपना प्रकाश खो देंगे, और तारे आकाश से गिरने लगेंगे, और आकाश की शक्ति हट जाएगी।
30 और तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह स्वर्ग में प्रकट होगा। तब पृथ्वी के सब गोत्र रोएंगे, और मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ आकाश के बादलों पर आते देखेंगे।
31 और वह अपने दूतों को तुरहियां बजाते हुए भेजेगा, और वे उसके चुने हुओं को चारों दिशा से, आकाश के एक छोर से दूसरी छोर तक इकट्ठा करेंगे।
32 अंजीर के पेड़ से एक दृष्टान्त सीखो: जब उसकी डाली कोमल हो जाती है और पत्तियाँ उगती हैं, तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्म काल निकट है।
33 इसलिए यदि तुम ये सब बातें देख भी लो तो जान लो कि ये द्वार निकट हैं।
34 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी।
35 आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।
36 उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, स्वर्ग के दूत भी नहीं, परन्तु केवल मेरे पिता।
37 जैसे नूह के दिनों में था, वैसा ही इंसान के बेटे का भविष्य भी होगा।
38 क्योंकि जलप्रलय से पहिले के दिनोंकी रीति वे खाते, पीते, ब्याह करते और ब्याह करते रहे, और उस दिन तक ब्याह करते रहे जब तक नूह जहाज में न चढ़ गया।
39 और उन्होंने उस पर तब तक ध्यान न दिया जब तक जलप्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा।
40 तब मैदान में दो होंगे, एक स्वीकार किया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।
41 दो चक्की पीसेंगे, एक स्वीकार किया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा।
42 इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस घड़ी आएगा।
43 परन्तु यह जान लो, कि यदि घर का पिता जानता कि चोर किस घड़ी आनेवाला है, तो जागते रहते, और अपने घर में सेंध न लगने देते।
44 इसलिये तुम तैयार हो, क्योंकि जिस घड़ी तुम ऐसा सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।
45 परन्तु विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी ने अपने दासों पर अधिक्कारनौ ठहराया हो, कि समय पर उन्हें भोजन दे?
46 धन्य है वह दास जब उसका स्वामी आकर उसे ऐसा करते पाए।
47 मैं तुम से सच कहता हूं, कि वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति पर अधिक्कारनौ ठहराएगा।
48 मगर अगर दुष्ट दास अपने दिल में कहे, 'मेरा मालिक आने से बहुत दूर है,'
49 और वह अपने संगी सेवकों को पीटना शुरू कर दे, पियक्कड़ों के साथ खाना-पीना,
50 और उस दिन जब उसे कुछ न लगे और उस घड़ी आएगा जब उसे कुछ नहीं लगता,
51 और वह उसे नाश करेगा, और कपटियोंके संग उसे प्रतिफल देगा, और रोना और दांत पीसना होगा।

25 1 तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा, जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकली थीं।

2 उन में पाँच मूर्ख और पाँच बुद्धिमान थीं।
3 मूर्खों ने अपनी मशालों में तेल लिया, परन्तु उन्होंने अपने साथ तेल नहीं लिया।
4 परन्तु बुद्धिमानों ने अपने बर्तनों और अपनी मशालों में तेल लिया।
5 सो जब दूल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब सो गईं और सो गईं।
6 आधी रात को धूम मची: "देखो, दूल्हा आ रहा है; उससे भेंट करने के लिए बाहर आओ।
7 तब ये सभी कुंवारियाँ उठीं और अपनी मशालों को सजाया।
8 परन्तु मूर्ख ने बुद्धिमानों से कहा, अपना तेल में से कुछ हमें दे दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझ जाती हैं।
9 बुद्धिमान ने उत्तर दिया, कि ऐसा न हो, कि हम और तुम टूट जाएं, वरन दुकानदारों के पास जाकर मोल ले लो।
10 जब वे मोल लेने को जा रहे थे, तो दूल्हा आया, और जो तैयार थे, वे उसके साथ विवाह भोज में भीतर गए, और द्वार बन्द किया गया।
11 आखिर में दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं, "हे प्रभु, हे प्रभु, हमारे लिये द्वार खोल दे।
12 मगर उसने जवाब दिया, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, मैं तुम्हें नहीं जानता।
13 इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न तो वह दिन जानते हो और न वह घड़ी जिसके भीतर मनुष्य का पुत्र आएगा।
14 जैसे कोई मनुष्य उस देश में घूमता फिरता या, अपने दासों को बुलाकर उन्हें अपना सामान देता था;
15 और एक को उस ने पांच तोड़े, और दूसरे को दो, और तीसरे को, और हर एक को उसकी सामर्थ्य के अनुसार दिया, और शीघ्र चला गया।
16 सो जिस को पांच किक्कार मिले थे, उसने जाकर उन से व्यापार किया, और पांच किक्कार और पा लिए।
17 इसी प्रकार जिसने दो तोड़ा पाया था, उसने भी दो और पा लिए।
18 परन्तु जिस को मिला था, उस ने जाकर भूमि में गड़हा बनाया, और अपने स्वामी का रूपया छिपा दिया।
19 बहुत दिनों के बाद इन सेवकों का स्वामी आया और उन्होंने इनका लेखा दिया।
20 फिर जिसने पाँच किक्कार प्राप्त किए थे, उसने आकर पाँच किक्कार और ठहराए और कहा, "हे प्रभु, तूने मुझे पाँच किक्कार दिए हैं; देख, मैंने पाँच किक्कार और पा लिए हैं।
21 तब उसके स्वामी ने उस से कहा, हे धर्मपरायण और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े से ही विश्वासयोग्य रहा है; मैं तुझे बहुत से अधिक्कारित करूंगा; अपने स्वामी के आनन्द में प्रवेश कर।
22 तब जिस को दो तोड़ा मिला था, उसने आकर कहा, "हे प्रभु, तूने मुझे दो तोड़े दिए हैं; देख, मैंने उनके साथ दो और पा लिए हैं।
23 उसके स्वामी ने उससे कहा, हे धर्मपरायण और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े से ही विश्वासयोग्य रहा है; मैं तुझे बहुत से लोगों पर नियुक्त करूंगा; अपने स्वामी के आनन्द में प्रवेश कर।
24 तब जिस ने सौ वजन लिया था, उसने आकर कहा, हे प्रभु, मैं जानता था, कि तू कठोर मनुष्य है: जहां बोया नहीं वहां काटता और जहां बिखरा नहीं वहां बटोरता है;
25 और मैं डर गया, और जाकर तेरा तोड़ा भूमि में छिपा दिया। निहारना, वहाँ आप अपने है.
26 मगर उसके मालिक ने उस को उत्तर दिया, "अरे बदमाश और आलसी दास, क्या तू जानता है कि जब मैं बोता नहीं था तो काटता था, और जब तितर-बितर नहीं होता तब इकट्ठा करता था?
27 इसलिए तुम्हें मेरा पैसा सर्राफों को दे देना चाहिए था और अगर मैं आता तो मैं अपना पैसा ब्याज के साथ ले लेता।
28 इसलिथे उस से सौ भार लेकर दस किक्कार वाले को दे दो।
29 क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा, और उसके पास बहुत कुछ होगा, परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है वह भी ले लिया जाएगा।
30 और उस निकम्मे दास को अन्धकार में फेंक दे, तब रोना और दांत पीसना होगा।
31 मगर जब इंसान का बेटा अपनी महिमा में आएगा, और उसके साथ सभी स्वर्गदूत भी आएंगे, तो वह अपनी महिमा के आसन पर बैठेगा,
32 और सभी देश के लोग उसके सामने इकट्ठे हो जाएँगे। वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा, ठीक जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है,

33 और भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाएँ हाथ रखेगा।
34 तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आरम्भ से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है।
35 क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खिलाया। मैं प्यासा रहा हूँ और तूने मुझे पानी पिलाया। मैं एक अतिथि रहा हूं, और आपने मेरी मेजबानी की है।
36 मैं नंगा हूँ और तू ने मुझे कपड़े पहनाए हैं। मैं बीमार था, और तुम मुझसे मिलने आए हो। मैं बन्दीगृह में डाल दिया गया और तुम मेरे पास आ गए।
37 तब धर्मी उस को उत्तर देगा, कि हम ने तुझे कब भूखा देखा और खिलाया?
38 हमने कब तुझे मेहमान की नाईं देखा और तुझे शरण दी, या नंगा करके कपड़े पहनाए?
39 हमने कब तुझे बीमार या कैद में देखा और तेरे पास आए?
40 और राजा उन को उत्तर देगा, कि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कुछ तुम ने मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे साथ भी किया।
41 फिर वह बायीं ओर वालों से कहेगा, हे शापित लोगो, मेरे पास से उस अनन्त आग में चले जाओ जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।
42 मैं भूखा था, तूने मुझे खाना नहीं खिलाया। मैं प्यासा रहा हूँ, और तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया।
43 मैं अतिथि रहा हूँ और तुमने मेरी मेज़बानी नहीं की। मैं नंगा रहा हूं, और तुमने मुझे कपड़े नहीं पहनाए हैं। मैं बीमार और बन्दीगृह में पड़ा हूँ, और तुम मेरी सुधि नहीं लेते।
44 तब वे उस को उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हमने तुझे कब भूखा या प्यासा या अतिथि या नंगा या रोगी या बन्धुआ देखकर तेरी सेवा नहीं की?
45 तब वह उन्हें उत्तर देगा, कि मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने इन छोटे से छोटे में से किसी एक के साथ ऐसा नहीं किया, परन्तु मेरे साथ भी नहीं किया।
46 और वे अनन्त यातना में प्रवेश करेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।

## 26

1 जब यीशु ये सब बातें कह चुका, तो उसने अपने चेलों से कहा,
2 "तुम जानते हो कि दो दिन बाद ईस्टर होगा, और मनुष्य के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए सौंप दिया जाएगा।
3 तब महायाजक और शास्त्री और लोगों के मुखियाज उस महायाजक के महल में इकट्ठे हुए, जिसका नाम कैफा था,
4 और सम्मति की कि उन्होंने यीशु को धूर्तता से पकड़ा और उसे मार डाला।
5 परन्तु उन्हों ने कहा, हां, पर्व के दिन नहीं, ऐसा न हो कि लोगों में उपद्रव भड़क उठे।
6 जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में था,
7 तो एक औरत उसके पास आई जिसके पास कीमती पानी का गिलास था और जब वह मेज पर बैठा था तो उसने उसके सिर पर उंडेल दिया।
8 जब उसके शिष्यों ने यह देखा तो वे बहुत क्रोधित हुए और बोले, "यह बर्बादी क्यों की गई?
9 यह पानी ऊँचे दाम पर बेचा गया होगा और गरीबों को दिया गया होगा।
10 जब यीशु ने यह देखा तो वह उनसे बोला: "तुम इस स्त्री की परवाह क्यों करते हो? उन्होंने मेरे लिए अच्छा काम किया है।
11 तुम्हारे साथ हमेशा गरीब लोग रहते हैं, किन्तु मैं तुम्हारे पास नहीं रहता।
12 उसने यह जल मेरे शरीर पर उंडेल दिया, उसने यह मुझे कब्र के लिए तैयार करने के लिये किया।
13 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जहां सारे जगत में यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहीं जो कुछ उस ने किया है, उसके स्मरण में भी कहा जाएगा।
14 तब यहूदा इस्करियोती नाम के बारहों में से एक प्रधान याजकों के पास गया
और बोला, "तुम मुझे क्या दोगे?" मैं आपको बताऊंगा। और उन्होंने उसे चाँदी के तीस टुकड़े भेंट किए।
16 तब से वह उसे पकड़वाने का अवसर ढूँढ़ने लगा।

17 मीठी रोटी के पहले दिन चेले यीशु के पास आए और उससे कहने लगे, "तू कहाँ चाहता है कि हम तेरे लिये पास्का मेम्ने खाने की तैयारी करें?"
18 उस ने कहा, उस नगर में जाकर कहो, कि स्वामी ने तुम से कहा है, 'मेरा समय निकट है; मैं अपने चेलों के साथ ईस्टर मनाऊंगा।
19 और चेलों ने यीशु की आज्ञा के अनुसार किया, और पास्का मेम्ने को तैयार किया।
20 और सांझ को वह बारहोंके साथ भोजन करने बैठा।
21 जब वे खा रहे थे, तो उसने कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।
22 और वे बहुत उदास हुए और उनमें से हर एक पूछने लगा, "प्रभु, क्या वह मैं हूँ?
23 उसने उत्तर दिया, "जिसने मेरे साथ कटोरे में हाथ डाला है, वह मुझे पकड़वाएगा।
24 मनुष्य का पुत्र जैसा उसके विषय में लिखा है, वैसा ही जाता है, परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिस के द्वारा मनुष्य के पुत्र का पकड़वाया जाता है। उसके लिए यह बेहतर होगा कि वह कभी पैदा ही न हुआ हो।
25 तब यहूदा ने, जिसने उसे पकड़वाया था, उत्तर दिया, "क्या वह मैं हूँ, रब्बी? उसने उससे कहा, "तू ही कहता है।
26 जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी लेकर धन्यवाद किया और तोड़कर चेलों को दिया और कहा, "लो, खाओ, यह मेरी देह है।
27 और उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब उस में से पीओ;
28 यह नये नियम का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।
29 मैं तुम से कहता हूं, कि अब से मैं दाखलता के इन पौधों में से उस दिन तक फिर कभी न पीऊंगा, जब तक कि वह तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में फिर न पीऊं।
30 और जब वह स्तुति का भजन कह चुकी, तो वे जैतून के पहाड़ पर निकल गए।
31 तब यीशु ने उनसे कहा, "इस रात तुम सब मुझ पर ठोकर खाओगे। क्योंकि लिखा है, कि मैं चरवाहे को मारूंगा, और भेड़-बकरियों की भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी।
32 किन्तु जब मैं उठूँगा तो तुम्हारे आगे आगे गलील को जाऊँगा।
33 पतरस ने उत्तर दिया, "चाहे सब तुझ पर क्रोधित हों, तौभी मैं कभी नाराज नहीं होऊँगा।
34 यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज रात को कौओं के सामने तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।
35पतरस ने उससे कहा, "यदि मुझे तेरे साथ मरना पड़े तो मैं तुझे इन्कार नहीं करूँगा। सभी शिष्यों ने यही कहा।
36 तब यीशु उनके साथ गतसमनी नाम एक दरबार में आया और अपने चेलों से कहा, "जब तक मैं वहाँ जाकर प्रार्थना न करूँ, तब तक यहीं बैठे रहो।
37 और वह पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को अपने साथ ले गया, और विलाप करने और कांपने लगा।
38 यीशु ने उनसे कहा, "मेरा जी बहुत उदास है; यहीं ठहरे रहो मेरे साथ जागते रहो।
39 तब वह थोड़ा आगे बढ़कर मुंह के बल गिरकर यह प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मेरे पास से हट जाए, परन्तु जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, जैसा तू चाहता है।
40 तब वह अपने चेलों के पास गया और उन्हें सोते हुए पाया, और पतरस से कहा, क्या तू मेरे साथ एक घंटे तक चौकस नहीं रह सका?
41 जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तैयार है; लेकिन शरीर कमजोर है।
42 उस ने दूसरी बार जाकर प्रार्थना की, कि हे मेरे पिता, जब तक मैं इसे न पीऊं, तब तक यह कटोरा मेरे लिए छोड़ देना सम्भव नहीं, और तेरी ही इच्छा पूरी होगी।
43 और उस ने आकर उसे फिर सोते पाया, और उसकी आंखें भर आईं।
44 और वह उन्हें छोड़कर फिर गया, और तीसरी बार प्रार्थना की, और वही बातें कहीं।
45 तब वह अपने शिष्यों के पास गया और उनसे बोला, "क्या तुम केवल सोते और आराम करते हो? देखो, वह समय आ गया है कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में कर दिया जाए।
46 उठो, हम चलें। देखो, वह यहाँ है जो मुझे पकड़वाता है!
47 वह अभी यह कह ही रहा था, कि क्या देखा, कि बारह एक का यहूदा आया, और उसके साय तलवारोंऔर छड़ों के साथ, महायाजकों और प्रजा के पुरनियों की ओर से एक बड़ा दल आया।

48 और गद्दार ने उनके लिये यह चिन्ह ठहराया, कि मैं जिसे चूमूँगा, वही है; उसे पकड़ लो।
49 वह तुरन्त यीशु के पास आया और बोला, "हे रब्बी, तुम्हारी जय हो और उसे चूमने लगा।
50 यीशु ने उससे कहा, "मित्र, तू क्यों आया है? तब वे पास आए और यीशु पर हाथ रखे और उसे पकड़ लिया।
51 और देखो, जो यीशु के साथ थे, उन में से एक ने हाथ बढ़ाकर अपनी तलवार खींची, और महायाजक के सेवक को मारा, और उसका एक कान काट डाला।
52 तब यीशु ने उससे कहा; अपनी तलवार को उसके स्थान पर रखो! क्योंकि जो कोई तलवार उठाएगा वह तलवार से नाश हो जाएगा।
53 या क्या तुम सोचते हो, कि मैं अपने पिता से बिनती न कर सका कि मुझे बारह से भी अधिक स्वर्गदूतों को भेजे?
54 परन्तु पवित्रशास्त्र का वचन कैसे पूरा होगा? इसलिए इसे काम करना होगा।
55 उसी समय यीशु ने लोगों से कहा, "तुम तलवारें और लाठियां लिए हुए हत्यारे की नाईं मुझे पकड़ने निकले हो। क्योंकि मैं प्रति दिन तेरे संग बैठकर मन्दिर में उपदेश किया करता था, और तू ने मुझे न पकड़ा।
56 परन्तु यह सब इसलिये हुआ है, कि भविष्यद्वक्ताओं के लेख पूरे हों। तब चेले उसे छोड़कर भाग गए।
57 परन्तु जिन्होंने यीशु को पकड़ लिया था, वे उसे महायाजक कैफा के पास ले गए, जहां शास्त्री और पुरनिये इकट्ठे हुए थे।
58 परन्तु पतरस दूर से उसके पीछे महाथाजक के महल में गया, और भीतर जाकर सेवकों के संग बैठ गया, कि वह देखे कि वह कहां जाता है।
59 मगर महायाजकों और पुरनियों और सारी महासभा यीशु के खिलाफ झूठी गवाही देना चाहती थी ताकि उसे मार डाला जाए,
60 मगर उन्हें कोई नहीं मिला। और यद्यपि कई झूठे गवाह दिखाई दिए, उन्हें कोई नहीं मिला। आखिर में दो झूठे गवाह सामने आए और बोले, "उसने कहा, 'मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढहा सकता हूँ और तीन दिन में बना सकता हूँ।
62 तब महायाजक खड़ा हुआ और उससे बोला, क्या तू उन बातों का उत्तर नहीं देता जो ये तेरे विरोध में गवाही देती हैं?
63 किन्तु यीशु चुप रहा। और महायाजक ने उत्तर दिया और उससे कहा, "मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि हमें यह बताने के लिए कि क्या तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है।
" 64 यीशु ने उससे कहा, "तू ऐसा ही कहता है। परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि अब से ऐसा होगा कि तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।
65 तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़े और कहा, "उसने परमेश्वर की निन्दा की है। हमें और किस गवाही की आवश्यकता है? देखो, अब तुम ने उसकी निन्दा सुनी है।
66 तुम क्या सोचते हो? उन्होंने उत्तर दिया, "वह मृत्यु के योग्य है।
67 तब उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसे अपनी मुट्ठियों से पीटा। 68 और कुछ ने उसके चेहरे पर मारा
, 68 कहा, "हे ईसाई, हमें भविष्यद्वाणी कर, वह कौन है जिसने तुझे मारा?
69 पतरस बाहर आँगन में बैठा था, और एक दासी उसके पास आकर कहने लगी, "और तू भी यीशु गलील के साथ था।
70 मगर उसने सब के सामने यह कहकर इन्कार किया, "मैं नहीं जानता तू क्या कहता है।
71 मगर जब वह दरवाज़े से बाहर जा रहा था, तो किसी और ने उसे देखकर वहाँ के लोगों से कहा, "यह भी यीशु नासरी के साथ था।
72 और उस ने फिर इन्कार किया और शपथ खाकर कहा, मैं मनुष्य को नहीं जानता।
73 थोड़ी देर के बाद जो वहां खड़े थे उन्होंने आकर पतरस से कहा, "सचमुच तू भी इन में से है, क्योंकि तेरी भाषा तुझे पकड़वाती है।
74 तब वह अपने आप को कोसने लगा और शपथ खाकर कहने लगा, "मैं इस व्यक्ति को नहीं जानता। तुरंत कौवा आ गया।
75 तब पतरस को यीशु के वे वचन याद आए, जब उसने उस से कहा था, कि कौओं के साम्हने तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा; और वह बाहर जाकर फूट-फूटकर रोने लगा।

27 1 भोर को सब महायाजकों और प्रजा के पुरनियों ने यीशु के विरुद्ध सम्मति की, कि उसे मार डालें।
2 और वे उसे बान्धकर ले गए, और राज्यपाल, पुन्तियुस पीलातुस के हाथ कर दिया।

3 जब यहूदा ने, जिसने उसे धोखा दिया था, देखा कि उसे मौत की सज़ा दी जा रही है, तो उसने पश्चाताप किया और फिर से चाँदी के तीस टुकड़े महायाजकों और पुरनियों के पास ले आया,
4 और कहा, "मैंने बेगुनाहों के खून का गला घोंटकर बुरा किया है।
5 उन्होंने कहा, "हमें इससे क्या लेना? तुम इसे देखो! और वह मंदिर में चांदी के टुकड़े फेंक दिया, और चला गया, और खुद को फांसी.
6 किन्तु महायाजकों ने चाँदी के टुकड़े लेकर कहा, "परमेश्वर के सन्दूक में रखना हमारे लिये अच्छा नहीं, क्योंकि यह खून का पैसा है।
7 किन्तु उन्होंने सम्मति ली और तीर्थयात्रियों को दफनाने के लिये कुम्हार की बोरी खरीदी।
8 इस कारण यह खेत आज तक लोहू का क्षेत्र कहलाता है।
9 फिर वह बात पूरी हुई जो यिर्मयाह नबी ने कहा था, "उन्होंने चाँदी के तीस टुकड़े लिए, जो बेचे गए थे, और जिन्हें उन्होंने इस्राएलियों से खरीदा था,
10 और उन्हें कुम्हार के खेत के लिए दे दिया, जैसा कि यहोवा ने मुझे आज्ञा दी थी।
11 तब यीशु हाकिम के साम्हने खड़ा हुआ और हाकिम ने उस से पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? " यीशु ने उससे कहा, "तू ऐसा ही कहता है।
12 जब महायाजकों और मुखियाओं ने उस पर दोष लगाया, तो उसने कोई जवाब नहीं दिया।
13 पिलातुस ने उससे कहा, "क्या तू नहीं सुनता कि ये तुझ पर कितनी कठोरता से दोष लगा रहे हैं?
14 और उस ने उस को एक बात भी उत्तर न दी, जिस से हाकिम चकित हुआ।
15 मगर दावत के समय हाकिम की आदत थी कि वह उन लोगों में से एक कैदी को छोड़ देता था जिन्हें वे चाहते थे।
16 और उस समय उसका एक कैदी था, जिस में से एक औरों से विशेष था, जिसका नाम बरअब्बा था।
17 जब वे इकट्ठे हुए, तो पीलातुस ने उनसे पूछा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हें छोड़ दूँ? बरअब्बा या यीशु, जिसे मसीह कहा जाता है?
18 क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि उन्होंने जलन के कारण उसे सौंप दिया है।
19 जब वह न्याय आसन पर बैठा या, तो उसकी पत्नी ने उसके पास कहला भेजा, "क्या तेरा इस धर्मी मनुष्य से कुछ लेना-देना नहीं; आज मैंने उसके कारण अपने सपने में बहुत दुःख उठाए हैं।
20 किन्तु महायाजकों और पुरनियों ने लोगों को बरअब्बा माँगने और यीशु को मार डालने के लिए राजी किया।
21 राज्यपाल ने उन से कहा, इन दोनों में से तुम में से कौन क्या चाहता हूं, मैं तुम से किसे छुड़ाऊं? उन्होंने कहा, "बरअब्बा।
22पिलातुस ने उनसे कहा, "यीशु के साथ, जो मसीह कहलाता है, मैं क्या करूँ? उन सबने कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए।
23 राज्यपाल ने कहा, "उसने क्या बुरा किया है? परन्तु उन्होंने और भी पुकारकर कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए!"

24 जब पीलातुस ने देखा कि वह कुछ नहीं कर रहा है, मगर उससे भी बड़ा कोलाहल हो रहा है, तो उसने पानी लिया और लोगों के सामने अपने हाथ धोकर कहा, "मैं इस धर्मी के खून से निर्दोष हूँ।
25 उत्तर में सभी लोगों ने कहा, "उसका खून हम पर और हमारे बच्चों पर हो।
26 तब उस ने उन को बरअब्बा दिया, परन्तु यीशु को कोड़े लगवाकर क्रूस पर चढ़ाने के लिथे सौंप दिया।
27 तब राज्यपाल के सिपाही यीशु को न्याय भवन में ले गए और सारी मण्डली को उसके ऊपर इकट्ठा किया,
28 और उसे निर्वस्त्र किया और बैंजनी वस्त्र पहनाया,
29 और कांटों का एक मुकुट लटकाकर उसके सिर पर रखा, और उसके दाहिने हाथ में सरकण्डा किया, उसके सामने घुटने झुकाए और उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, आपकी जय हो, यहूदियों के राजा!
30 और उन्होंने उस पर थूका, और सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारा।
31 और जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो उसके वस्त्र पहिनकर उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिथे ले आए।
32 जब वे बाहर जा रहे थे, तो उन्हें शमौन नाम कुरेनी का एक मनुष्य मिला, जिसे उन्होंने उसके लिए अपना क्रूस उठाने के लिए मजबूर किया।
33 जब वे गुलगुता नाम के स्थान पर पहुँचे, जो अंग्रेजी में खोपड़ी का स्थान है,
34 तो उन्होंने उसे पित्त मिला हुआ सिरका पिलाया और जब वह उसे चखता तो वह नहीं पीता।

35 और जब वे उसे क्रूस पर चढ़ा चुके, तो उसके वस्त्र बांट लिए, और उनके लिथे चिट्ठी डाली, कि भविष्यद्वक्ता का यह वचन पूरा हो, कि उन्होंने मेरे वस्त्र आपस में बांट लिए, और मेरे वस्त्र के ऊपर चिट्ठी डाली है।
36 और वे वहाँ बैठ गए और उसकी रखवाली करने लगे।
37 और उन्होंने उसकी मृत्यु का मुकद्दमा ठहराया, और लिखा था, कि यह यहूदियों का राजा यीशु है।
38 और उसके साथ दो हत्यारे क्रूस पर चढ़ाए गए, एक दाहिनी और एक बाईं ओर।
39 मगर जो वहाँ से गुज़रते थे, वे उसकी निन्दा करते थे और सिर हिलाते थे,
40 "हे परमेश् वर के मन्दिर को तोड़कर तीन दिन में बनानेवालो, अपने आप को बचा। यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ।
41 इसी रीति से महायाजकों ने शास्त्रियों और पुरनियों के साथ मिलकर उसका ठट्ठा किया और कहा,
42 उसने दूसरों की सहायता की है, परन्तु अपने आप को नहीं बचा सकता। यदि वह इस्राएल का राजा है, तो अब क्रूस पर से उतर आये, और हम उस पर विश्वास करें।
43 उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, और यदि वह उस से प्रसन्न हो तो उसे छुड़ाया जाए, क्योंकि उसने कहा है, "मैं परमेश्वर का पुत्र हूं।
44 इसी प्रकार जो हत्यारे उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे, उन्होंने भी उसकी निन्दा की।
45 और छठवें पहर से लेकर नौवें पहर तक सारे देश में अन्धकार छाया रहा।
46 और नौवें पहर के करीब यीशु ने बड़े शब्द से पुकारा, "एली, एली, लामा असबतैनी?" यानी हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?
47 जब कुछ लोगों ने यह सुना तो वे वहां खड़े होकर कहने लगे, "यह एलिय्याह को बुला रहा है।
48 और उन में से एक तुरन्त दौड़ा, और स्पंज लेकर सिरके से भर कर सरकण्डे पर रखकर पानी पिलाया।
49 किन्तु दूसरे कहने लगे, "रुक जाओ, देखो कि एलिय्याह आकर उसकी सहायता करता है या नहीं।
50 मगर यीशु फिर चिल्लाया और मर गया।
51 और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक दो टुकड़े हो गया था।
52 और पृथ्वी कांप उठी, और चट्टानें फट गईं, और कब्रें खुल गईं, और जो पवित्र पवित्र लोग सो रहे थे उनकी बहुत लोथें पर खड़ी हो गईं,
53 और उसके जी उठने के बाद कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में आया, और बहुतों को दिखाई दिया।
54 परन्तु सूबेदार और जो उसके साथ थे और यीशु की रक्षा करते थे, भुईंडुब्ल और जो कुछ हुआ था, देखकर घबरा गए, और कहा, सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था।
55 और बहुत सी स्त्रियां थीं जो दूर से देख रही थीं, और गलील से यीशु के पीछे हो ली थीं और उसकी सेवा टहल कर रही थीं।
56 उनमें मरियम मगदलीनी और मरियम जब्दी के बच्चों की माँ थी।
57 सांझ को अरिमतिया से यूसुफ नाम का एक धनवान व्यक्ति आया, जो यीशु का चेला भी था।
58 तब वह पीलातुस के पास गया और उससे यीशु की लाश माँगी। तब पिलातुस ने उसे देने का आदेश दिया।
59 तब यूसुफ ने शव को लेकर शुद्ध मलमल में लपेटा,
60 और अपनी कब्र में रख दिया, जिसे उसने चट्टान में खुदवाया था, और कब्र के द्वार के सामने एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया।
61 मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र के सामने बैठ गईं।
62 अगले दिन तैयारी के दिन के बाद सब महायाजक और फरीसी पीलातुस के पास आए
और कहने लगे, "प्रभु, हम तो जानते थे कि इस भरमानेवाले ने जीवित रहते ही कहा था, 'मैं तीन दिन के बाद जी उठूँगा।
64 इसलिथे आज्ञा दे कि कब्र को तीसरे दिन तक सुरक्षित रखा जाए, ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे चुरा लें, और लोगों से कहें, 'वह मरे हुओं में से जी उठा है, और पिछले छल को पहिले से भी बुरा ठहरे।
65 पिलातुस ने उनसे कहा, "देखो, तुम्हारे पास संरक्षक हैं; जाओ और जैसा तुम जानते हो वैसा ही रहो।
66 तब वे जाकर रखवालों के साथ कब्र की रखवाली करने लगे, और पत्थर पर मुहर लगा दी।

28 1 जब सब्त का दिन पूरा हुआ, और सप्ताह का पहिला दिन भोर हुआ, तो मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई।
2 और देखो, एक बड़ा भूकम्प हुआ । क्योंकि यहोवा का दूत स्वर्ग से उतरकर ऊपर आया, और द्वार पर से पत्थर को लुढ़काकर उस पर बैठ गया।
3 और उसका रूप बिजली का सा था, और उसका वस्त्र हिम के समान श्वेत था।
4 परन्तु रखवाले डर के मारे डर गए, और मानो मर गए हों।
5 किन्तु स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, "डरो मत। मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को खोज रहे हो, जो क्रूस पर चढ़ाया गया है।
6 वह यहाँ नहीं है; जैसा उस ने कहा, जी उठा है। आओ और उस स्थान को देखो जहाँ यहोवा पड़ा है।
7 और जल्दी जाकर उसके चेलों से कहो कि वह मरे हुओं में से जी उठा है। और देखो, वह तुम्हारे आगे आगे गलील को जाएगा; वहां आप उसे देखेंगे। देखो, मैंने तुमसे कहा है।
8 और वे डर और बड़े आनन्द के साथ फुर्ती से कब्र पर गए, और उसके चेलों को यह बताने को दौड़े। 9 जब वे उसके चेलों को प्रचार करने गए,
तो देखो, यीशु उनसे मिला और बोला, "जय हो!" तब वे उसके पास आए, और उसके पांव पकड़कर उसके साम्हने गिर पड़े।
10 तब यीशु ने उनसे कहा, "डरो मत। जाओ और मेरे भाइयों से कहो कि वे गलील में जा रहे हैं; वहां वे मुझे देखेंगे।
11 जब वे जा रहे थे, तो देखो, कुछ रखवाले नगर में आए और महायाजकों को जो कुछ हुआ था वह सब बता दिया।
12 और वे प्राचीनों के साथ आए और सम्मति की और सिपाहियों को पर्याप्त धन देते
हुए कहा, 13 "कहो, 'उसके चेले रात को आए और जब हम सो रहे थे तो उसे चुरा लिया।
14 और यदि हाकिम के पास ऐसा होगा तो हम उसकी देखभाल करेंगे और तुम्हारी रक्षा करेंगे।
15 और उन्होंने पैसे लिए और वही किया जो उन्हें सिखाया गया था। इस तरह की बात आज तक यहूदियों के बीच एक आम भाषण बन गई है।
16 किन्तु ग्यारह चेले गलीलिया में एक पहाड़ पर गए जहाँ यीशु ने उन्हें भेजा था।
17 उसे देखकर वे उसके आगे गिर पड़े, परन्तु कितनों को सन्देह हुआ।
18 तब यीशु उनके पास गया और उनसे बोला, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।
19 इसलिए तुम जाओ और सब जातियों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,
20 और उन्हें वह सब मानना सिखाओ जिसकी आज्ञा मैंने तुम्हें दी है। और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।

- मार्क के अनुसार सुसमाचार:

1 1 यह यीशु मसीह के सुसमाचार का आरम्भ है। *36*
2 जैसा यशायाह भविष्यद्वक्ता में लिखा है, देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे आगे आगे भेजता हूं, और वह तेरा मार्ग तैयार करेगा।
3 जंगल में प्रचारक का शब्द है: प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसके मार्ग को सीधा करो।
4 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला जंगल में पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप के बपतिस्मा का प्रचार कर रहा था।
5 और सारे यहूदिया देश और यरूशलेम के सब लोग उसके पास निकलकर अपने पापों को मान लिया, और यरदन में उस से बपतिस्मा लिया।
6 और यूहन्ना ऊँट के बाल पहिने और कमर में चमड़े का पटुका बाँधे हुए था, और टिड्डियाँ और जंगली शहद खाता था,
7 और प्रचार करके कहता था, "मेरे पीछे एक ऐसा आ रहा है जो मुझ से अधिक बलवन्त है, और मैं इतना नहीं हूँ कि झुक कर उसके जूतों की पट्टियाँ खोल सकूँ।
8 मैं तुम्हें जल से बपतिस्मा देता हूं, परन्तु वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।
9 और उस समय ऐसा हुआ कि यीशु नासरत से गलील में आया और यरदन में यूहन्ना द्वारा बपतिस्मा लिया ।
10 और जब वह जल में से निकला, त्योंही उस ने देखा कि आकाश खुल गया है, और आत्मा कबूतर की नाईं उस पर उतरा।
11 और यह आकाशवाणी हुई, कि तू मेरा प्रिय पुत्र है; मैं तुझ से अत्यन्त प्रसन्न हूं।
12 और आत्मा ने तुरन्त उसे जंगल में खदेड़ दिया;

13 और वह चालीस दिन जंगल में रहा, और शैतान द्वारा पक्कीझा किया गया, और पशुओं के संग रहा, और स्वर्गदूत उसकी सेवा टहल करने लगे।
14 यूहन्ना के जेल में बंद होने के बाद, यीशु गलील आया और उसने परमेश्वर के सुसमाचार का प्रचार करते
हुए कहा, 15 "समय पूरा हो गया है और परमेश्वर का राज्य निकट आया है। पश्चाताप करो और सुसमाचार में विश्वास करो!
16 जब वह गलील की झील के पास से जा रहा या, तो उसने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को समुद्र में जाल डालते देखा, क्योंकि वे मछुआरे थे।
17 यीशु ने उनसे कहा, "मेरे पीछे चले आओ और मैं तुम्हें मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।
18 वे तुरन्त जाल छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
19 जब वह थोड़ी दूर चला गया, तो उस ने जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को जहाज में जाल ठीक करते देखा, और तुरन्त उन्हें बुलाया।
20 और वे अपने पिता जब्दी को भाड़े के आदमियों के साथ जहाज पर छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
21 तब वे कफरनहूम को गए, और सब्त के दिन तुरन्त आराधनालय में जाकर उपदेश देने लगा।
22 और वे उसके उपदेश से चकित हुए, क्योंकि वह अधिकार से उपदेश देता था, वैसा नहीं जैसा शास्त्री करते थे।
23 उनके आराधनालय में फौरन एक आदमी आया, जिस पर अशुद्ध स्वर्गदूत था,
24 चिल्ला कर कहने लगा, "हे यीशु नासरी, तू हमसे क्या चाहता है?" आप हमें नष्ट करने आए हैं। मैं जानता हूँ कि तू कौन है: परमेश्वर का पवित्र।
25 यीशु ने उसे डांटकर कहा, "चुप रह, और उसमें से निकल आ।
26 और अशुद्ध आत्मा उसे इधर-उधर फाड़ती, और ऊंचे शब्द से चिल्लाती और उसमें से निकल गई।
27 और सब चकित हुए, और आपस में पूछने लगे, यह क्या है? अधिकार में एक नया सिद्धांत! वह अशुद्ध आत्माओं को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी आज्ञा मानती हैं!
28 और उसके समाचार तुरन्त गलील के सारे देश में गूंज उठे।
29 तब वे फौरन आराधनालय से निकलकर याकूब और यूहन्ना के साथ शमौन और अन्द्रियास के घर में गए।
30 और शमौन की सास बुखार से तड़पती हुई लेटी हुई थी, और उन्होंने तुरन्त उसके विषय में उसको बता दिया।
31 और उस ने उसके पास आकर उसका हाथ पकड़कर उठाया, और ज्वर उसे छोड़कर उन की सेवा टहल करने लगा।
32 सांझ को जब सूर्य डूब गया, तो वे सब बीमारों और ग्रसित लोगों को उसके पास ले आए।
33 और सारा नगर द्वार पर इकट्ठा हो गया।
34 और उसने बहुत से बीमारों की सहायता की जो नाना प्रकार की दुर्बलताओं के बोझ से दबे हुए थे, और बहुत सी बुरी आत्माओं को निकाल दिया, और आत्माओं को बोलने न दिया, क्योंकि वे उसे जानती थीं।
35 भोर को भोर होने से पहले वह उठकर बाहर चला गया। और वह एक सुनसान जगह में गया और वहाँ प्रार्थना की।
36 शमौन ने जो उसके संग थे उनको संग लेकर फुर्ती से उसके पीछे हो लिया।
37 जब वह मिला, तो उससे कहा; "सब लोग तुझे ढूँढ़ रहे हैं।
38 उस ने उन से कहा, आओ, हम कहीं और निकटवर्ती नगरों में चलें, कि वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मैं इसी के लिये आया हूं।
39 और उस ने आकर गलील भर की उनकी सभाओं में दुष्टात्माओं को निकालकर प्रचार किया।
40 और एक कोढ़ी उसके पास आया, और उस से बिनती की, और घुटने टेके, और उस से कहा, यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।
41 और उस को तरस आया, और हाथ बढ़ाकर उसे छूकर कहा, मैं यह करूंगा; शुद्ध हो जा।
42 और कोढ़ तुरन्त उस पर से दूर हो गया, और वह शुद्ध हो गया।
43 यीशु ने उसे धमकाया और फौरन उसे भगा दिया
44 और उससे कहा, "ध्यान रखना कि तू इस बारे में किसी को न बता, बल्कि जाकर याजक को दिखा, और शुद्धिकरण के लिए वह सब कुछ दे जो मूसा ने उन्हें गवाही देने के लिए दी है।
45 परन्तु जब वह बाहर आया, तो उस ने आरम्भ किया, और बहुत कुछ कहा, और यह कथा प्रगट कर दी, कि यीशु सरेआम नगर में न जा सका, परन्तु सुनसान स्थानों में था, और वे चारों ओर से उसके पास आए।

2 1 और  कुछ दिन बाद वह कफरनहूम को लौट गया, और मालूम हुआ कि वह घर में है।
2 और बहुतेरे इकट्ठे हुए, यहां तक कि द्वार के बाहर भी न ठहरा, और उस ने उन्हें यह वचन सुनाया।
3 और कितने उसके पास आए, और एक रोगी को, जो गठिया से बीमार था, चार ले आए।
4 और जब वे उसे लोगोंके साम्हने उसके पास न ला सके, तो उन्होंने उस छत को खोल दिया जहां वह था, और एक द्वार बनाया, और उस खाट को नीचे गिरा दिया, जिसमें गठिया वाला आदमी पड़ा था।
5 जब यीशु ने उनका विश्वास देखा तो उस आदमी से जो गठिया से बीमार था, कहा, "मेरे बेटे, तेरे पाप माफ हुए।
6 वहाँ बैठे कुछ शास्त्री अपने मन में यह विचार कर रहे थे,
7 यह मनुष्य क्योंकर बोलता है? वह परमेश्वर की निन्दा करता है! परमेश् वर को छोड़ और कौन पापों को क्षमा कर सकता है?
8 यीशु ने तुरन्त ही अपनी आत्मा को जान लिया कि वे अपने मन में सोच रहे हैं, और उनसे कहा, "तुम ये बातें अपने दिल में क्यों सोचते हो?
9  क्या आसान है, एक आदमी से कहना जो गठिया से बीमार है, 'तुम्हारे पाप क्षमा किए गए हैं,' या यह कहना, 'उठो, अपनी खाट उठाओ और चल फिर?'
10 मगर इसलिए कि तुम जान लो कि इंसान के बेटे को धरती के पाप माफ करने का अधिकार है, उसने उस आदमी से कहा,
11 "मैं तुमसे कहता हूँ, उठ, अपनी खाट उठा और घर चला जा।"
12 तब वह उठा, और खाट उठाकर तुरन्त सब के साम्हने निकल गया, यहां तक कि सब डर गए, और परमेश्वर की बड़ाई करते हुए कहा, हम ने ऐसा पहले कभी नहीं देखा।
13 यीशु फिर निकलकर समुंदर पर गया; और सब लोग उसके पास आए और वह उन्हें उपदेश देने लगा।
14 और जब वह पास से जा रहा या, तो हलफई के पुत्र लेवी को टोल पर बैठे देखा, और उससे कहा, मेरे पीछे हो ले। और वह उठकर उसके पीछे हो लिया।
15 जब वह अपने घर की मेज पर बैठा या, तो बहुत से चुंगी लेनेवाले और पापी यीशु और उसके चेलों के साथ भोजन करने को बैठे, क्योंकि उन में से बहुत से लोग थे, और वे उसके पीछे हो लिए।
16 और फरीसियों के शास्त्रियों ने जब देखा कि वह चुंगी लेनेवालों और पापियों के संग खा रहा है, तो अपने चेलों से कहा, क्या वह चुंगी लेनेवालों और पापियों के संग खाता है?
17 यीशु ने जब यह सुना तो उसने उनसे कहा, "बलवानों को वैद्य की नहीं बल्कि बीमारों को आवश्यकता होती है। मैं पापियों को बुलाने आया हूं, धर्मियों को नहीं।
18 और यूहन्ना के चेले और फरीसी उपवास किया करते थे, और कितने आकर उससे कहने लगे, "यूहन्ना के चेले और फरीसी के चेले उपवास क्यों करते हैं, और तेरे चेले उपवास क्यों नहीं करते?
19 यीशु ने उनसे कहा, "जब दूल्हा उनके साथ है तो शादी का जोड़ा उपवास कैसे कर सकता है? जब तक दूल्हा उनके साथ है, वे उपवास नहीं कर सकते।
20 किन्तु वह समय आयेगा जब दूल्हा उनसे छीन लिया जाएगा और तब वे उस दिन उपवास करेंगी।
21 कोई पुराने वस्त्र पर नये कपड़े का चिथड़ा नहीं मरता, क्योंकि नये चिथड़े से पुराने फट जाते हैं, और आंसू और भी बढ़ जाते हैं।
22 और कोई पुरानी मशकों में जवां दाखमधु नहीं डालता, नहीं तो जवान दाखमधु खाल फाड़ डालेगा, और दाखमधु खालों समेत नष्ट हो जाएगा, परन्तु जवां दाखमधु नई मशकों में उण्डेला जाए।
23 और ऐसा हुआ कि सब्त के दिन वह मकई के खेत से गुजर रहा था, और जाते-जाते उसके शिष्य मकई की बालियां तोड़ने लगे ।
24 फरीसियों ने उससे कहा, "देख, तेरे चेले सब्त के दिन क्या करते हैं जो ठीक नहीं?
25 उस ने उन से कहा; क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा, कि जब दाऊद संकट में पड़ा और उसे और उसके साथियों को भूख लगी तब उस ने क्या किया था?
26  वह एब्यातार महाथाजक के दिनों में परमेश्वर के भवन में जाकर भेंट की रोटी खाया, जिसे याजकों को छोड़ किसी और को

खाने की अनुमति नहीं थी, और जो उसके साथ थे उन्हें भी दिया?
27 और उस ने उन से कहा, कि सब्त मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि सब्त के दिन के निमित्त।
28 इसी प्रकार मनुष्य का पुत्र भी सब्त के दिन का प्रभु है।

3 1 और वह फिर आराधनालय में गया। और एक आदमी था जिसका हाथ सूख गया था।
2 और वे यह देखने के लिथे बाट जोहते रहे कि क्या वह सब्त के दिन उसे भी चंगा करेगा, कि उन पर उसका मुकदमा चल सके।
3 उस ने सूखे हाथ वाले पुरूष से कहा, निकल आ।
4 उस ने उन से कहा, सब्त के दिन कोई भला करे वा बुराई करे, प्राण बचाए वा मार डाले? लेकिन वे चुप थे।
5 और उस ने क्रोध से उसे देखा, और उसके कठोर मन से उदास होकर उस पुरूष से कहा, अपना हाथ बढ़ा। और उसने उसे बढ़ाया; और उसका हाथ चंगा हो गया।
6 तब फरीसियों ने निकलकर तुरन्त हेरोदेस के आदमियों से उसके विषय में सम्मति की, कि वे उसे किस रीति से मार डालेंगे।
7 मगर यीशु अपने चेलों के साथ समुद्र को चला गया, और गलील से बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए,
8 और यरूशलेम से, और इदुमिया से, और यरदन के उस पार से, और जो सोर और सैदा के आसपास रहते थे, और एक बड़ी भीड़ जो उसके कामों को सुनती थी, उसके पास आई।
9 और उस ने अपने चेलों से कहा, कि उन्होंने लोगों के निमित्त उसके लिये एक छोटी नाव तैयार की है, कि उस पर दबाव न डालें।
10 क्योंकि उस ने उन में से बहुतेरों को चंगा किया, कि जितने पीड़ित थे, उन सभोंने उस पर चढ़ाई की, कि उसे छूएं।
11 जब अशुद्ध आत्माएँ उसे देखती थीं, तो उसके आगे गिरकर चिल्लाने लगीं, कि तू परमेश्वर का पुत्र है।
12 और उस ने उन्हें कठोर धमकी दी, ऐसा न हो कि वे उसे प्रगट करें।
13 तब वह पहाड़ पर चढ़ गया, और जिसे वह चाहता था उसे अपने पास बुलाया; और वे उसके पास चले गए।
14 और उसने बारह को आदेश दिया कि वे उसके साथ रहें, और वह उन्हें प्रचार करने के लिए भेजे,
15 और उन्हें बुरी आत्माओं को निकालने का अधिकार होना चाहिए।
16 और उस ने बारहोंको नियुक्त किया, और शमौन का नाम पतरस रखा;
17 और जब्दी के पुत्र याकूब, और याकूब के भाई यूहन्ना ने उनका नाम बोएनर्जेस रखा, अर्यात् गर्जन की सन्तान रखा;
18 अन्द्रियास, फिलिप्पुस, बार्थोलोम्यू, मत्ती, थोमा, हलफई का पुत्र याकूब, तद्दियुस, शमौन कनानीयुस
19 और यहूदा इस्करियोती ने उसे पकड़वाया।
20 और वह घर आया, और लोग फिर इकट्ठे हुए, यहां तक कि वे कुछ न खा सके।
21 जब उसके अपनों ने यह सुना, तो वे बाहर गए और उसे पकड़ना चाहा, क्योंकि उन्होंने कहा, "उसका दिमाग खराब हो गया है।
22 और जो शास्त्री यरूशलेम से आए थे, वे कहने लगे, कि उसके पास बालजबूल है, और वह उनके शासक के द्वारा दुष्ट आत्माओं को निकालता है।
23 और उस ने उन्हें अपने पास बुलाकर दृष्टान्तों में उन से कहा; शैतान शैतान को कैसे निकाल सकता है?
24 यदि कोई राज्य अपने ही विरुद्ध बंट जाए, तो वह स्थिर नहीं रह सकता।
25 और यदि कोई घर आपस में फूट डाले तो वह स्थिर नहीं रह सकता।
26 सो यदि शैतान अपने ही विरुद्ध उठ खड़ा होता है और अपने आप से असहमत हो जाता है, तो वह स्थिर नहीं रह सकता, परन्तु उसके साथ रहता है।
27 कोई किसी बलवान के घर में घुसकर उसकी घरेलू सम्पत्ति नहीं छीन सकता, जब तक कि वह बलवान को पहिले बान्धकर उसका घर न लूटे।
28 मैं तुम से सच कहता हूं, कि मनुष्य के सब पाप क्षमा किए जाएंगे, वरन निन्दा भी उतनी ही निन्दा भी की जाएगी, जितनी वे निन्दा करें;

29 परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करता है, वह सदा के लिये क्षमा नहीं करता, परन्तु वह अनन्त पाप का दोषी है।
30 क्योंकि वे कहते थे, "उस में आत्मा अशुद्ध है।
31 तब उसकी माता और भाई आकर बाहर खड़े हुए, और उसके पास बुलवा भेजा।
32 तब लोग उसके चारों ओर बैठ गए। उन्हों ने उस से कहा, देख, तेरी माता और बाहर तेरे भाई और तेरी बहनें तुझे पूछ रही हैं।
33 उसने उन्हें उत्तर दिया, "मेरी माँ और मेरे भाई कौन हैं?
34 और उसने अपने चारों ओर जो उसके चारों ओर बैठे थे, उन पर दृष्टि करके कहा, "देखो, ये मेरी माता और मेरे भाई हैं।
35 जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माता है।

4 1 और वह फिर समुद्र के किनारे उपदेश देने लगा। और बहुत से लोग उसके पास इकट्ठे हुए, ताकि उसे एक जहाज पर कदम रखना पड़ा और पानी पर बैठना पड़ा; और सब लोग समुद्र के किनारे भूमि पर खड़े हुए।
2 और उसने उन्हें दृष्टान्तों में बहुत सी बातें सिखाईं और अपने उपदेश में उसने उनसे कहा,
3 "सुनो! देखो, एक बोने वाला बोने निकला था।
4 जब वह बीज बो रहा या, तब मार्ग के किनारे कुछ वस्तुएं गिर पड़ीं, और पक्षियों ने आकर उन्हें खा लिया।
5 कुछ वस्तुएं चट्टानों पर गिरीं, जहां उन पर बहुत मिट्टी नहीं थी, और वे शीघ्र ही उग आईं, क्योंकि उनमें गहरी मिट्टी नहीं थी।
6 सो जब सूर्य उदय हुआ, तो सूख गया, और जड़ न होने के कारण सूख गया।
7 और कितने झाड़ियोंमें गिरे, और झाड़ियोंने बढ़कर उन्हें दबा दिया, और वे फल न लाए।
8 और कितने अच्छी भूमि पर गिरे, और उग आए, और बढ़े, और फल लाए, और तीस गुणा, और साठ गुणा, और सौ गुणा बोए।
9 और उस ने कहा; जिस के पास सुनने के लिये कान हों वह सुन ले॥
10 जब वह अकेला था, तो बारहों समेत उसके आस-पास के लोगों ने उससे दृष्टान्तों के विषय में पूछा।
११ उसने उनसे कहा, "परमेश् वर के राज का भेद तुम्हें दिया गया है, मगर बाहर वालों को यह सब दृष्टान्तों से होता है,
12 ताकि वे उसे देखने वाली आँखों से देखें और फिर भी न जानें, सुनने वाले कानों से सुनें और न समझें, ऐसा न हो कि वे मन फिराकर उन्हें क्षमा कर दें।
13 उस ने उन से कहा; यदि तुम यह दृष्टान्त नहीं समझते, तो अन्य सब को क्योंकर समझोगे?
14 बोने वाला वचन बोता है।
15 परन्तु मार्ग के मार्ग में ये ही हैं: जहां वचन बोया जाता है, और जब वे उसे सुनते हैं, तो शैतान तुरन्त आकर उस वचन को जो उन में बोया गया था, उठा ले जाता है।



16 उसी तरह, जो लोग चट्टानों पर बोए गए हैं, जब उन्होंने वचन सुना है, तो वे जल्द ही खुशी से इसे प्राप्त करते हैं,
17 लेकिन उनमें कोई जड़ नहीं है, लेकिन चंचल हैं; जब वचन के कारण क्लेश या उत्पीड़न उत्पन्न होता है, तो वे तुरंत अपराध करते हैं।
18 और दूसरे वे हैं जिनके बीच काँटे बोए जाते हैं: वे वचन सुनते हैं,
19 परन्तु संसार की चिन्ताएँ, और धन का छल, और सब वस्तुओं की अभिलाषाएँ वचन को भेद देती हैं और उसका गला घोंट देती हैं, और वह निष्फल बनी रहती है।
20 परन्तु ये वे हैं जिनके साथ अच्छी भूमि बोई गई है: वे वचन सुनकर ग्रहण करते हैं, और तीस गुणा, साठ गुणा, और सौ गुणा फल लाते हैं।
21 और उस ने उन से कहा, क्या तुम भी मोमबत्ती जलाकर झाड़ी के नीचे या बेंच के नीचे रखते हो? किसी भी तरह से नहीं, लेकिन यह कि इसे कैंडलस्टिक पर रखा जाना चाहिए।
22 क्योंकि ऐसा कुछ छिपा नहीं, जो खोला न जाएगा, और कोई भेद नहीं, जो खोला न जाएगा।
23 जिस के पास सुनने के लिये कान हों वह सुन ले॥
24 और उस ने उन से कहा, देखो, तुम क्या सुन रहे हो। आप किस माप से मापते हैं, वे आपको फिर से मापेंगे, और वे अभी भी

आपको स्वीकार करेंगे।
25 क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा, और जिसके पास नहीं है, उस से जो उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा।
26 और उस ने कहा, परमेश्वर का राज्य उस मनुष्य के समान है जो भूमि पर बीज फेंककर
सो रहा है, और रात-दिन जागता है, और बीज अंकुरित होकर बढ़ता है, और उसे पता न चले।
28 क्योंकि पृथ्वी अपने आप ही फल देती है, पहिले डंठल और फिर कान, फिर कान में पूरा गेहूँ।
29 परन्तु जब वह फल लाता है, तो वह तुरन्त हंसिया भेजता है, क्योंकि कटनी आ ही गई है।
30 उस ने कहा, हम परमेश्वर के राज्य की तुलना किस से करें, और किस दृष्टान्त से उसका प्रतिनिधित्व करें?
31 वह राई के दाने के समान है: जब वह भूमि पर बोया जाता है, तो पृथ्वी के सब बीजों में सब से छोटा होता है।
32 और जब वह बोया जाता है, तो अंकुरित होता है और सब झाड़ियों से बड़ा हो जाता है, और बड़ी डालियां उत्पन्न करता है, ताकि आकाश के पक्षी उसकी छाया के नीचे बसेरा कर सकें।
33 और ऐसे बहुत से दृष्टान्तों के द्वारा उसने उन्हें वचन सुनाया, जैसा कि वे सुन सकते थे।
34 और उस ने उन से बिना दृष्टान्त न कहा; परन्तु जब वे अकेले थे, तो अपने चेलों को सब बातें बता दी।
35 उसी दिन सांझ को उसने उनसे कहा, "आओ, हम पार चलें।
36 और उन्होंने लोगों को जाने दिया, और जैसे वह जहाज पर था, वैसे ही उसे ले गए, और उसके साथ और भी जहाज थे।
37 और एक बड़ा बवंडर उठा, और लहरें जहाज में टकराईं, यहां तक कि जहाज भर गया।
38 और वह जहाज के पीछे बैठा था और तकिये पर सो रहा था। और उन्हों ने उसे जगाकर कहा, हे प्रभु, क्या तू नहीं पूछता कि हम नाश हो जाएं?
39 तब उस ने खड़े होकर आन्धी को डांटा, और समुद्र से कहा, चुप रहो, और चुप रहो। और हवा नीचे मर गया, और वहाँ एक महान चुप्पी थी.
40 और उन से कहा; तुम क्यों डरते हो? फिर तुम्हें कोई विश्वास कैसे नहीं है?
41 वे बहुत डर गए और आपस में कहने लगे, "वह कौन है? हवा और समुद्र भी उसके आज्ञाकारी हैं!

5 1 और वे समुद्र के उस पार गिरासेनियों के देश में आए।
2 जब वह जहाज़ से बाहर आया, तो तुरन्त एक अशुद्ध आत्मा वाला मनुष्य उससे मिलने के लिये कब्रों से बाहर दौड़ा,
3 जिसका निवास गुफा में था। और अब उसे कोई नहीं बांध सकता था, जंजीरों से भी नहीं;
4 क्योंकि वह बार बार बेड़ियोंऔर जंजीरों से बंधा हुआ था, और जंजीरों को तोड़ दिया था और बेड़ियां पीस ली थीं, और कोई उसे रोक नहीं सकता था।
5 और वह रात-दिन कब्रिस्तान की गुफाओं और पहाड़ों पर चिल्लाता और अपने आप को पत्थरों से पीटता रहता था।
6 मगर जब यीशु को दूर से देखा तो वह दौड़कर उसके पास गया और उसके सामने गिर पड़ा और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए बोला,
7 "हे यीशु, परमप्रधान के बेटे, तू मुझसे क्या चाहता है? मैं आपको भगवान द्वारा सलाह देता हूं कि मुझे पीड़ा न दें!
8 क्योंकि उस ने उस से कहा, हे अशुद्ध आत्मा, उस मनुष्य में से निकल आ।
9 उस ने उस से पूछा, तेरा क्या नाम है? और उसने उत्तर दिया, "सेना मेरा नाम है; क्योंकि हम बहुत हैं।
10 और उसने यीशु से बिनती की कि वह उन्हें उस क्षेत्र से न निकाले।
11 और पहाड़ पर चराई में सूअरों का एक बड़ा झुण्ड था।
12 तब अशुद्ध आत्माएं उस से बिनती करने लगीं, कि आओ, हम सूअरों में चलें।
" 13 और उसने उन्हें ऐसा करने दिया। तब अशुद्ध आत्माएं निकलकर सूअरों में चली गईं, और झुण्ड ने अपने आप को ढलान से नीचे समुद्र में फेंक दिया, परन्तु उनमें से दो हजार थे, और वे समुद्र में डूब गए।
14 और उनके चरवाहे भाग गए, और नगर और देश में यह प्रचार किया। 15 और यीशु
के पास आकर उसे जो अशुद्ध स्वर्गदूतों के वश में था, कपड़े पहिने, विवेकशील और भयभीत बैठा देखा।
16 और जिन्हों ने उसे देखा था, उन्होंने बताया कि दुष्टात्मा से ग्रसित मनुष्य और सूअरों के विषय में क्या हुआ है।

17 और वे शुरू कर दिया और उसे अपने देश से बाहर जाने के लिए कहा.
18 जब वह जहाज पर चढ़ा, तो दुष्टात्मा से ग्रसित होकर उस से बिनती करने लगा, कि उसे अपने साथ रहने दिया जाए।
19 यीशु ने उसे अनुमति न दी, परन्तु उससे कहा, "अपने घर में अपने घर में जाकर उन्हें बता कि प्रभु ने तुझ पर कितना अच्छा किया है, और प्रभु ने तुझ पर कितनी दया की है।
20 और वह जाकर दस नगरों में प्रचार करने लगा, कि यीशु ने उसके साथ कितना बड़ा भला किया है; और सब चकित हुए।
21 जब यीशु नाव पर सवार होकर फिर आया, तो बहुत से लोग उसके पास इकट्ठे हुए, और वह समुद्र के किनारे था।
22 तब आराधनालय के शासकों में से एक याईर नाम आया। 23 यीशु को देखते ही वह उसके चरणों में गिर पड़ा
और सच्चे मन से उससे विनती करने लगा, "मेरी बेटी मर रही है; तू आकर उस पर हाथ रखेगा ताकि वह चंगी हो जाए और ज़िंदा रहे।
24 और वह उसके साथ चला गया, और बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए, और उन्होंने उसे बिनती की।
25 और एक स्त्री थी जो बारह वर्ष से लहू बह रही थी,
26 और बहुत से वैद्यों से दुःख सम्पन्न हुई थी, और उसने अपनी सारी सम्पत्ति उस पर खर्च कर दी थी, और यह उसके किसी काम का नहीं था, बल्कि उसके साथ भी बदतर था।
27 यीशु के विषय में सुनकर वह पीछे से लोगों के बीच में आई और उसके वस्त्र को छू लिया।
28 क्योंकि वह अपने आप से कहती थी, कि यदि मैं केवल उसके वस्त्र छू सकूँ, तो मैं चंगे हो जाऊँगी।
29 और उसके लोहू का सोता तुरन्त सूख गया, और उसने अपने शरीर में अनुभव किया, कि वह अपनी विपत्ति से चंगी हो गई है।
30 यीशु ने तुरन्त अपने आप में महसूस किया कि सामर्थ्य उस में से निकल गई है, और भीड़ में से मुड़कर बोला, "किस ने मेरे वस्त्र छुए हैं?
31 उसके चेलों ने उससे कहा, "लोग तुझे दबा रहे हैं और तू कह रहा है, 'किस ने मुझे छुआ है?
32 और उसने चारों ओर उस व्यक्ति को ढूँढ़ा जिसने यह किया था।
33 परन्तु वह स्त्री डर गई और काँप उठी; क्योंकि वह जानती थी कि उसे क्या हुआ है, और वह उसके आगे गिरकर उसके सामने सच सच कह गई।
34 और उस ने उस से कहा, हे मेरी बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है; कुशल से जा और अपनी विपत्ति से चंगे हो जा।
35 वह यह कह ही रहा था कि आराधनालय के सरदार के घर से कुछ लोग बाहर आए और कहने लगे, तेरी बेटी मर गई; तू स्वामी को क्यों परेशान करता है?
36 यीशु ने जो कहा गया था उसे सुनकर शासक से कहा, "डरो मत, केवल विश्वास करो।
37 और उसने अपने साथ पतरस, याकूब और याकूब के भाई यूहन्ना को छोड़ किसी को न जाने दिया।
38 और वे प्रधान के घर में आए, और उस ने कोलाहल देखा, और देखा कि वे किस रीति से रोए और बहुत चिल्ला उठे।
39 और उस ने भीतर जाकर उन से कहा; तुम क्यों चिल्ला रहे हो और रो रहे हो? बच्चा मरा नहीं है, लेकिन सो रहा है। और वे उस पर हँसे।
40 और उसने उन सब को बाहर निकाल दिया और बालक के पिता, और माता और जो उसके साथ थे उन्हें अपने साथ ले गया, और जहाँ बालक लेटा था वहाँ गया,
41 और बालक का हाथ पकड़कर उससे कहा, "लड़की, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ।
42 लड़की तुरन्त उठकर चलने-फिरने लगी, परन्तु बारह वर्ष की थी। और वे जल्द ही माप से परे भयभीत थे।
43 और उस ने उन्हें कठोर आज्ञा दी, कि किसी को पता न चले, और उन्हें भोजन देने की आज्ञा दी।

6 1 और वह निकलकर अपके निज नगर को आया, और उसके चेले उसके पीछे हो लिए।
2 और जब सब्त का दिन आया, तो वह आराधनालय में उपदेश देने लगा। और भीड़ है कि सुन रहा था चकित था, और उन्होंने कहा, "यह कहाँ से आता है?" और यह क्या ज्ञान है जो उसे दिया गया है? और ऐसे पराक्रमी कर्म जो उसके हाथों से किए जाते हैं!
3 क्या वह बढ़ई अर्थात् मरियम का पुत्र, और याकूब का भाई, और योसेस, यहूदा और शमौन नहीं है? क्या उनकी बहनें भी

हमारे साथ नहीं हैं? और उन्होंने उस पर अपराध किया।
4 यीशु ने उनसे कहा, "एक नबी अपने देश और अपने रिश्तेदारों और अपने घर में कहीं भी कम सम्मानित नहीं होता है।
5 और वह वहां एक भी काम न कर सका, परन्तु उस ने थोड़े बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया।
6 और वह उनके अविश्वास से चकित हुआ। और वह गांवों के बारे में चला गया और सिखाया.
7 फिर उसने बारहों को अपने पास बुलाकर उन्हें उठाकर दो और दो भेज कर अशुद्ध स्वर्गदूतों पर अधिकार दे दिया,
8 और उन्हें आज्ञा दी कि रास्ते में अपने साथ लाठी, न रोटी, न थैली, न पेटी और न पेटों,
9 और पैरों में जूतों के सिवा कुछ न ले जाना। और यह कि उन्हें दो कोट नहीं पहनने चाहिए।
10 और उस ने उन से कहा, जहां कहीं तुम किसी घर में जाओ, वहां से चले जाने तक वहीं रहो।
11 और यदि न सुना जाए, तो उस स्थान से निकल जा, और अपके पांवों की धूल को उन पर गवाही देने के लिये झटक डालो।
12 और उन्होंने मन फिराने के लिये प्रचार किया,
13 और बहुत-सी बुरी आत्माओं को निकालकर बहुत-से बीमारों का तेल से अभिषेक किया और उन्हें चंगा किया।
14 और वह राजा हेरोदेस के साम्हने आया, क्योंकि यीशु का नाम अब जाना जाता था। और लोगों ने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मरे हुओं में से जी उठा है; इसलिए वह ऐसे कर्म करता है।
15 और किसी ने कहा, "वह एलिय्याह है," और कुछ ने कहा, "वह भविष्यद्वक्ताओं में से एक के समान एक नबी है।
16 हेरोदेस ने जब यह सुना तो उसने कहा, "यूहन्ना, जिसका मैंने सिर काटा है, जी उठा है।
17 क्योंकि उस ने हेरोदेस को भेजकर यूहन्ना को पकड़कर उसके भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण बन्दीगृह में डाल दिया था, क्योंकि उस ने उसे अपनी पत्नी बना लिया था।
18 क्योंकि यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था, "यह उचित नहीं है कि तेरे पास अपने भाई की पत्नी हो।
19 किन्तु हेरोदियास ने उसका पीछा किया, और उसे मार डालना चाहा, परन्तु न कर सका।
20 क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना से डरता था, क्योंकि वह जानता था, कि वह एक पवित्र और पवित्र मनुष्य है, और उसने उसे सुरक्षित रखा: और जब उसने उसकी बात सुनी, तो वह बहुत बेचैन हो गया, तौभी वह उसकी सुनना पसंद करता था।
21 और एक ऐसा दिन आया, जब हेरोदेस ने अपने जन्मदिन पर अपने महापुरुषों, हाकिमों और गलील के हाकिमों को भोजन दिया।
22 तब हेरोदियास की बेटी भीतर आकर नाचने लगी, और हेरोदेस और मेज पर बैठे लोगों को प्रसन्न किया। तब राजा ने लड़की से कहा, "मुझसे पूछो कि तुम क्या चाहते हो, और मैं उसे तुम्हें दूंगा।
23 और उस ने उस से शपथ खाकर कहा, जो कुछ तू मुझ से मांगे, मैं तुझे अपना आधा राज्य दूंगा।
24 तब उस ने बाहर जाकर अपनी माता से पूछा, मैं क्या मांगूं? उसने कहा, "जॉन द बैपटिस्ट का सिर।
25 वह तुरन्त राजा के पास भीतर गई, और कहने लगी, मैं चाहती हूं, कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर इसी समय थाली में मुझे दिया जाए।



26 और राजा बहुत उदास हुआ, परन्तु शपथ खाकर और जो मेज पर बैठे थे, वह उन्हें झूठी बिनती न करने देता था।
27 राजा ने फौरन जल्लाद को भेजा और उसका सिर यहाँ लाने का आदेश दिया। 28 और उसने बन्दीगृह में उसका सिर काटकर थाली
में रखा और लड़की को दिया और लड़की को दे दिया।
29 जब उसके शिष्यों ने यह सुना तो वे आए और उसकी लाश को लेकर एक कब्र में रख दिया।
30 और प्रेरित यीशु के साथ इकट्ठे हुए और जो कुछ उन्होंने किया और सिखाया, वह सब उसे बता दिया।
31 उसने उनसे कहा, "अकेले किसी सुनसान जगह में जाओ और थोड़ा आराम करो। क्योंकि उनमें से बहुत से थे, जो समय-समय पर जाते थे; और उनके पास खाने के लिए पर्याप्त समय नहीं था।
32 और वे जहाज पर अकेले ही एक सुनसान जगह को जा रहे थे।
33 और लोगों ने उन्हें जाते देखा, और बहुतेरों ने यह देखा, और सब नगरों से पैदल ही उनके पीछे हो लिया।
34 और यीशु उतरा और बड़े लोगों को देखा, और वह उनके लिए खेद हुआ, क्योंकि वे बिना चरवाहे की भेड़ों के समान थे। और उन्होंने एक लंबा उपदेश शुरू किया।
35 जब वह दिन ढलने को था, तो उसके चेले उसके पास आकर कहने लगे, "यहाँ तो उजाड़ पड़ा है, और वह दिन भी निकल

गया है;
36 उन्हें अपने पास से छोड़ दो, तब वे खेतोंऔर गाँवों में घूमकर अपने लिये रोटियाँ मोल लें।
37 उसने उन्हें उत्तर दिया, "तुम उन्हें खाने को दो। उन्हों ने उस से कहा, तो क्या हम जाकर चान्दी के दो सौ टुकड़े करके रोटी मोल लें, और उन्हें खाने को दें?
38 मगर उसने उनसे कहा, "तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? जाओ और देखो! और जब वे यह पता लगाया था, वे कहा, "पांच और दो मछली।
39 और उस ने उन सब को हरी घास पर मेज के पास लेटने की आज्ञा दी।
40 और वे डेढ़ सौ के समूह में बैठ गए।
41 और उस ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लेकर स्वर्ग की ओर दृष्टि करके धन्यवाद किया, और रोटियां तोड़ीं, और चेलों को जो उन्होंने उनके आगे रखी थीं, उन्हें दिया, और उस ने उन दोनों मछलियों को उन सब में बांट दिया।
42 और सब ने खाया और तृप्त हुए।
43 और वे उन बारह टोकरियोंमें से बारह टोकरियां, और मछलियोंमें से पत्थरों पर चढ़ गए।
44 और जिन्होंने रोटियां खाई थीं, वे पांच हजार पुरुष थे।
45 और उसने तुरन्त अपने चेलों से बिनती की, कि जहाज में चढ़ जाओ और उन्हें अपने साम्हने बैतसैदा ले जाओ, जब तक कि वह लोगों को न छोड़ दे।
46 और उन्हें छोड़कर प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर गया।
47 और सांझ को जहाज समुद्र के बीच में था, और वह अकेला भूमि पर था।
48 और उस ने देखा, कि उन्हें नाव चलाने की आवश्यकता है, क्योंकि हवा उनके विरुद्ध है। और रात के चौथे पहर के पास वह उनके पास आया, और समुद्र पर चला,
49 और उन्हें पार करना चाहा। और जब उन्होंने उसे समुद्र पर चलते देखा, तो उन्होंने सोचा कि यह एक भूत है, और चिल्लाया;
50 क्योंकि सब ने उसे देखा और वे बहुत डर गए। उस ने तुरन्त उन से बातें करके उन से कहा, ढाढ़स ढालो, मैं हूं; डरो मत!
51 और वह उनके संग जहाज पर चढ़ गया, और हवा थम गई। और वे माप से परे भयभीत थे;
52 क्योंकि वे रोटियों के विषय में अधिक समझदार न हुए थे, परन्तु उनके मन कठोर हो गए थे।
53 और जब वे रवाना हुए, तो गलील में तट पर आकर उतरे।
54 जब वे जहाज़ से बाहर आए, तो लोगों ने तुरन्त उसे पहचान लिया
55 और सारे देश में दौड़े, और बीमारों को बिस्तरों पर ले जाने लगे, जहाँ उन्होंने सुना कि वह है।
56 और जहां कहीं वह गांवों, नगरों, और खेतों में गया, वहां बीमारों को बाजार में लिटा दिया, और उससे बिनती की, कि वह उसके वस्त्र के आंगन को भी छूए, और जितने उसे छूते थे वे सब चंगे हो गए।



7 1 तब फरीसी और यरूशलेम से आए कुछ शास्त्री उसके साथ इकट्ठे हुए। 2 और उन्होंने उसके चेलों में से कुछ को अशुद्ध हाथों से अर्थात् बिना हाथ धोए रोटी खाते देखा। 3 क्योंकि फरीसी और सब यहूदी तब तक नहीं खाते जब तक कि वे मुट्ठी भर पानी से हाथ न धोएं, और प्राचीनों की विधियों को मानें। 4 और जब वे बाजार से बाहर आएं, जब तक आप खुद को नहीं धोते तब तक मत खाओ। और कई अन्य चीजें हैं जिन्हें उन्होंने रखने के लिए माना है, जैसे: पीने के बर्तन और घड़े और केतली धोना। 5 तब फरीसियों और शास्त्रियों ने उससे पूछा, तेरे चेले पुरनियों की विधियों पर क्यों नहीं चलते, परन्तु उनकी रोटी अशुद्ध हाथों से क्यों खाते हैं? 6 उस ने उन से कहा, यशायाह ने तुम कपटियोंके विषय में बड़ी कोमलता से भविष्यद्वाणी की है, जैसा लिखा है, कि ये लोग होठों से मेरा आदर करते हैं; 7 वे व्यर्थ मेरी सेवा करते हैं, क्योंकि वे ऐसी शिक्षा देते हैं, जो मनुष्यों की आज्ञाओं के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं। 8 तू परमेश्वर की आज्ञा को ताक पर रखता है, और मनुष्यों की विधियों को मानता है। 9 और उस ने उन से कहा, तुम परमेश्वर की आज्ञा को बड़ी कोमलता से मानते हो कि अपनी विधियों को मानो। 10 क्योंकि मूसा ने कहा था, कि तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना; और जो कोई पिता या माता को शाप दे वह मार डाला जाए।
11 मगर तुम कहो, 'अगर कोई तुम्हारे पिता या माँ से कहे, 'कोरबाब, यानी एक बलि,' तो वह वही होगा जो मेरे पास आएगा,

12 अब से तुम उसे अपने पिता या अपनी माँ के लिए कुछ भी नहीं करने दोगे, 13 और तुम अपनी उन विधियों के ज़रिए परमेश्वर के वचन को मिटा दोगे जिन्हें तुमने तैयार किया है, और तुम भी ऐसा ही बहुत कुछ करोगे। 14 और उसने लोगों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा, तुम सब मेरी बात सुनो और इसे समझो! 15 कोई ऐसी वस्तु जो मनुष्य को बाहर से प्रवेश करती है, जो उसे अशुद्ध कर दे; परन्तु जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध बनाता है। 16:17 और जब वह लोगों के घर में आया तो उसके चेलों ने उस से यह दृष्टान्त पूछा। 18 उसने उनसे कहा, "क्या तुम इतने मूर्ख हो? क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ मनुष्य बाहर से प्रवेश करता है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकता? 19 क्योंकि यह उसके मन में नहीं, परन्तु उसके पेट में उतरता है, और स्वाभाविक मार्ग से निकल जाता है। इसलिए उसने सभी भोजन को शुद्ध घोषित किया। 20 और उस ने कहा, जो कुछ मनुष्य से निकलता है, वह मनुष्य को अशुद्ध कर देता है; 21 क्योंकि बुरे विचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, 22 लोभ, बैरभाव, धूर्तता, मौज-मस्ती करने, डाह करने, निन्दा करने, अभिमान और मूर्खता भीतर से ही निकलती है। 23 ये सभी बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध बनाती हैं। 24 और वह उठकर सोर के देश में चला गया, और किसी को पता न चलने दिया, तौभी वह छिप न सका। 25 परन्तु तुरन्त एक स्त्री ने उसके विषय में सुना, जिसकी छोटी बेटी में आत्मा अशुद्ध थी, और वह आकर उसके पांवोंपर गिर पड़ी; 26 सिरोफीनीकिया की एक यूनानी स्त्री थी, और उसने उससे बिनती की कि वह अपनी बेटी में से दुष्ट आत्मा को निकाल दे। 27 यीशु ने उस से कहा, पहिले बालकों को खिला ले; बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के सामने फेंकना अच्छा नहीं लगता। 28 परन्तु उस ने उस को उत्तर दिया, कि हां, हे प्रभु; लेकिन फिर भी टेबल के नीचे कुत्ते बच्चों के टुकड़ों से खाते हैं। 29 उस ने उस से कहा, इस वचन के निमित्त जा; तुम्हारी पुत्री से भूत निकल गया है। 30 और अपके घर में गई, और देखा कि बालक खाट पर पड़ा है, और दुष्ट आत्मा निकल गई है। 31 और जब वह सोर के देश से फिर चला गया, तो वह सीदोन से होते हुए गलील की झील को दस नगरों के देश के बीच में आया। 32 और वे एक को जो बहरा और गूंगा था, उसके पास लाकर बिनती करने लगे, कि उस पर हाथ रखे। 33 और उसने उसे लोगों के बीच से विशेष रूप से लिया और अपनी उंगलियां उसके कानों में डालीं, और उसकी जीभ को लार से छुआ, 34 और स्वर्ग की ओर देखा, और आहें भरकर उससे कहा, "हेफाटा!" वह है: खोलो! 35 और तुरन्त उसके कान खुल गए, और उसकी जीभ की डोरी खुल गई, और वह ठीक बोल रहा था। 36 और उसने उन्हें आदेश दिया कि वे किसी से न कहें। लेकिन जितना अधिक उसने मना किया, उतना ही उन्होंने इसे फैलाया। 37 और वे अचंभा करके कहने लगे, उस ने सब कुछ भला किया है; वह बहरों को सुनाता है और अवाक को बोलता है।

8 1 जब बहुत से लोग थे और उनके पास खाने को कुछ नहीं था, तो यीशु ने चेलों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा,

2 "लोग मुझ पर तरस खाते हैं क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास कुछ भी नहीं है।

3 और यदि मैं उन्हें बिना भोजन किए घर जाने दूं, तो वे मार्ग में मूर्छित हो जाएंगे, क्योंकि उनमें से कितने दूर से आए हैं।

4 उसके चेलों ने उत्तर दिया, "यहाँ जंगल में कोई उन्हें रोटी कैसे खिला सकता है?

5 और उन से पूछा, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? उन्होंने कहा, "सात।

6 और उसने लोगों को भूमि पर लेटने की आज्ञा दी। और उस ने वे सात रोटियां लीं, धन्यवाद किया, और तोड़कर अपने चेलों को दे दिए, कि वे उन्हें भेंट करें, और उन्होंने उन्हें लोगों के सामने पेश किया।

7 और उनके पास थोड़ी सी मछिलयां थीं; तब उस ने उनका धन्यवाद किया, और उन्हें भेंट करने की आज्ञा दी।

8 परन्तु उन्होंने खाकर तृप्त हुए, और बचे हुए टुकड़े अर्थात् सात टोकरियां उठा लीं।

9 और कोई चार हजार थे, और उस ने उन्हें जाने दिया।

10 और वह तुरन्त अपने चेलों के साथ जहाज पर चढ़ गया, और दलमनुथा के देश में आ गया।

11 तब फरीसी बाहर आकर उस से वाद-विवाद करने लगे, और उसकी परीक्षा करके स्वर्ग से एक चिन्ह मांगने लगे।

12 और वह मन में कराहकर कहने लगा, यह समय क्यों चिन्ह ढूंढ़ता है? मैं तुम से सच कहता हूं, कि इस समय के लोगों के लिये कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा।

13 और वह उन्हें छोड़कर जहाज पर फिर गया और उस पार चला गया।

14 और वे अपने साथ रोटी ले जाना भूल गए थे, और जहाज में उनके पास रोटी के सिवा और कुछ नहीं था।

15 और उस ने उन्हें यह आज्ञा दी, कि फरीसियों के खमीर और हेरोदेस के खमीर से चौकस रहो।

16 और वे इधर-उधर सोचते हुए आपस में कहने लगे, "यह सच है कि हमारे पास रोटी नहीं है।
17 यीशु ने यह देखा और उनसे कहा: "तुम्हें चिंता क्यों है कि तुम्हारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम समझते नहीं हो और क्या तुम समझते नहीं हो? क्या तुम्हारे भीतर एक कठोर हृदय है?
18 तेरे पास आंखें हैं, और तू देखती नहीं; कान रखते और सुनते नहीं? 19
जब मैंने पाँच हज़ार रोटियों में से पाँच रोटियाँ तोड़ीं, तो तुमने कितनी टोकरियाँ उठाईं? उन्होंने कहा, "बारह।
20 जब मैं ने उन चार हजार में से सातोंको तोड़ा, तब तुम ने कितनी टोकरियां उठाईं, जो टुकड़ों से भरी हुई थीं? उन्होंने कहा, "सात।
" 21 उसने उनसे कहा: "क्या तुम अब तक नहीं समझते?
22 और वे बैतसैदा आए। और वे एक अन्धे को उसके पास ले आए, और उससे बिनती करने लगे, कि उसे छू ले।
23 तब उस ने अन्धे का हाथ पकड़कर उसे गांव से बाहर ले गया, और उसकी आंखोंपर लार लगाकर उस पर हाथ रखकर उस से पूछा, क्या तुझे कुछ दिखाई देता है?
24 और उसने आँख उठाकर कहा, "मैं लोगों को ऐसे चलते हुए देखता हूँ जैसे मैंने पेड़ों को देखा हो।
" 25 तब उसने फिर अपनी आँखों पर हाथ रखे। तब उसने स्पष्ट रूप से देखा, और फिर से सही किया गया, और सब कुछ स्पष्ट रूप से देख सकता था।
26 और उस ने उसे घर भेज दिया और कहा, उस गांव में मत जाना।
27 यीशु अपने चेलों के साथ कैसरिया फिलिप्पी के पास के गाँवों में चला गया। और रास्ते में उसने अपने शिष्यों से पूछा और उनसे कहा, "लोग मुझे क्या कहते हैं?
" 28 उन्होंने उत्तर दिया, "वे कहते हैं कि आप यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले हैं; कुछ कहते हैं कि आप एलिय्याह हैं; कुछ कहते हैं कि आप भविष्यद्वक्ताओं में से एक हैं।
29 उसने उनसे कहा; और तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ? पतरस ने उत्तर दिया, कि तू ही मसीह है।
30 और उस ने उन्हें धमकाया, कि वे उसके विषय में कुछ न कहें।
31 और वह उन्हें सिखाने लगा, "मनुष्य के पुत्र को अवश्य है कि वह बहुत दु:ख उठाए, और पुरनिये और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ जानकर मार डाला जाए, और तीन दिन के बाद जी उठे।
32 और उस ने खुलकर और खुलकर यह बात कही। और पतरस उसे एक तरफ ले गया और उसका विरोध करने लगा।
33 मगर उसने मुड़कर अपने चेलों की तरफ देखा और पतरस को डांटकर कहा, हे शैतान, मुझ से दूर हो क्योंकि तेरी बात परमेश्वर से नहीं, बल्कि इंसान से है।
34 और उस ने लोगों और चेलों को पास बुलाकर कहा, जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।
35 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसकी रक्षा करेगा।
36 क्योंकि यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?
37 क्योंकि मनुष्य अपने प्राण को छुड़ाने के लिये क्या दे सकता है?
38 परन्तु इस धर्मत्यागी और पापी पीढ़ी के बीच जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी उस से लजाएगा, जब वह पवित्र स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा।

9 1 और उस ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि यहां कितने ऐसे खड़े हैं, जो तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे, जब तक वे परमेश्वर के राज्य को सामर्थ के साथ आते न देख लें। 2 छः दिन के बाद यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना को पकड़कर एक ऊंचे पहाड़ पर ले गया, वे अकेले ही उनके साम्हने रूपान्तरित हुए। 3 और उसके वस्त्र चमकीले श्वेत हो गए। क्योंकि पृथ्वी पर कोई ब्लीचर उन्हें इतना सफेद नहीं बना सकता है। 4 तब एलिय्याह मूसा के साथ उनके सामने प्रकट हुआ और उन्होंने यीशु से बातें कीं। 5 पतरस ने शुरू करके यीशु से कहा, "हे रब्बी, अच्छा है कि हम यहाँ हैं। और हम तीन तम्बू बनाएंगे, एक तुम्हारे लिए, एक मूसा के लिए, और एक एलिय्याह के लिए. 6 परन्तु वह न जानता था कि वह क्या कह रहा है; क्योंकि वे निराश थे। 7 और एक बादल आया और उन पर छा गया। और बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा

प्रिय पुत्र है; आप इसे सुनेंगे! 8 और जब उन्होंने अपने चारों ओर दृष्टि की तो उन्होंने अपने साथ केवल यीशु को ही और कोई नहीं देखा। 9 जब वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे, तो यीशु ने उन्हें आज्ञा दी थी कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे, तब तक जो कुछ तुम ने देखा है वह किसी से न कहना। 10 और वे अपने वचन पर चले और आपस में पूछने लगे, मरे हुओं में से जी उठने का क्या अर्थ है?

11 उन्हों ने उस से पूछा, शास्त्री कहते हैं, कि एलिय्याह का पहिले आना अवश्य है। 12 परन्तु उस ने उन से कहा, वरन एलिय्याह पहिले आएगा और सब कुछ फिर ठीक करेगा। और मनुष्य के पुत्र के विषय में क्योंकर लिखा है, कि वह बहुत दु:ख उठाएगा और तुच्छ जाना जाएगा? 13 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, एलिय्याह आ चुका है, और जैसा उसके विषय में लिखा है, वैसा ही उन्होंने उसके साथ वही किया जो वे चाहते थे। 14 और उन्होंने चेलों के पास आकर बहुत से लोगों को अपने चारों ओर और शास्त्रियों को उन से वाद-विवाद करते देखा। 15 जब सब लोगों ने उसे देखा, तो वे बहुत घबरा गए, और उसका स्वागत करने को दौड़े। 16 उस ने उन से पूछा; तुम उनसे क्यों वाद-विवाद करते हो? 17 लोगों में से एक ने उत्तर दिया, "गुरु, मैं अपने बेटे को आपके पास लाया हूँ, जिसका मन नहीं है। 18 और जहां वह उसे पकड़ता है, वहां उसे फाड़ देता है; और वह झाग निकालता है और अपने दाँत पीसता है और कठोर हो जाता है। और मैं ने तेरे चेलों से कहा कि उन्होंने उसे निकाल दिया, और वे न निकाल सके। 19 उस ने उन से कहा, हे अविश्वासी पीढ़ी, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? मैं तुम्हें कब तक सहन करूंगा? उसे यहाँ मेरे पास ले आओ! " 20 और वे उसे उसके पास ले आए। और जैसे ही आत्मा ने उसे देखा, उसने उसे फाड़ दिया। और वह जमीन पर गिर गया और लुढ़क गया और झाग बन गया। 21 यीशु ने पिता से पूछा, "उसके साथ ऐसा हुए कितने समय हो गए? उन्होंने कहा, "बचपन से। 22 और उस ने उस को आग और जल में कई बार झटका, कि वह उसे मार डाले। पर यदि तू कुछ कर सके, तो हम पर रहम कर, और हमारी सहायता कर। 23 यीशु ने उससे कहा, "तू कैसे कह सकता है, 'क्या तू कुछ कर सकता है? जो विश्वास करता है उसके लिए सब कुछ संभव है। 24 बालक के पिता ने तुरन्त पुकारकर कहा, मैं विश्वास करता हूँ; मेरे अविश्वास की मदद करो! 25 जब यीशु ने देखा कि लोग उसकी तरफ दौड़ रहे हैं, तो उसने अशुद्ध स्वर्गदूत को डांटा और कहा, "अरे मूक और बहिर आत्मा, मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि तू उसमें से निकल आए और फिर उसमें प्रवेश न कर। 26 तब वह चिल्लाया और उसे फाड़कर बाहर चला गया। और लड़का ऐसा हो गया जैसे वह मर गया हो, ताकि भीड़ ने कहा, "वह मर चुका है। 27 मगर यीशु ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया और वह खड़ा हो गया। 28 जब वह घर आया, तो उसके चेलों ने एकान्त में उससे पूछा, "हम उसे क्यों नहीं निकाल सके? 29 और उस ने कहा, यह जाति केवल प्रार्थना और उपवास से निकल सकती है। 30 और वे वहाँ से चले गए और गलील से होकर गुजरे। और वह नहीं चाहता था कि किसी को पता चले। 31 क्योंकि उसने अपने चेलों को उपदेश देकर उनसे कहा, "मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे; और यदि वह मार डाला जाता है, तो वह तीन दिन के बाद जी उठेगा। 32 किन्तु वे वचन को समझ नहीं पाए और उससे पूछने से डरते थे। 33 और वे कफरनहूम को आए। और जब वह घर पर था, उसने उनसे पूछा, "आपने रास्ते में एक-दूसरे के साथ क्या बातचीत की?" 34 परन्तु वे चुप रहे; क्योंकि उन्होंने रास्ते में एक दूसरे के साथ बातचीत की थी जो सबसे बड़ा होगा। 35 और उस ने बैठ कर बारहों को बुलाकर उन से कहा, यदि कोई प्रधान होना चाहे, तो सब से छोटा और सब दासों में सब से छोटा ठहरेगा। 36 और उसने एक बालक को लेकर उनके बीच में रखा और गले लगाकर उनसे कहा, 37 "जो कोई मेरे नाम से ऐसे बच्चे को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण नहीं करता, परन्तु जिसने मुझे भेजा है उसे ग्रहण करता है। 38 यूहन्ना ने उस से कहा, हे गुरु, हम ने एक को देखा जो तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालता है, परन्तु वह हमारे पीछे नहीं आता; और हमने उसे ऐसा करने से मना किया, क्योंकि वह हमारा अनुसरण नहीं करता। 39 मगर यीशु ने कहा, "तू उसे मना न करना। क्योंकि जो कोई मेरे नाम पर चमत्कार करता है, वह जल्द ही मेरे बारे में बुरा नहीं बोल सकता। 40 जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है। 41 जो कोई तुम्हें एक कटोरा पानी मेरे नाम से देता है, इसलिये कि तुम मसीह के हो, मैं तुम से सच कहता हूं, कि वह व्यर्थ न पाएगा। 42 और जो कोई मुझ पर विश्वास करने वाले इन छोटों में से किसी एक को ठोकर मारे, तो उसके लिये भला होगा कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाकर समुद्र में फेंक दिया जाए। 43 किन्तु यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे काट डाल। अपंग होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है कि तुम दो हाथ रखो और नरक में जाओ, अनन्त अग्नि के पास, 44. 45 यदि तेरा पैर तुझ से ठोकर खाता है, तो उसे काट डालो। लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना इससे भला है, कि तेरे दो पांव हों और तू नरक में डाला जाए। 47 यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे फेंक दे। परमेश्वर के राज्य में एक आँख से प्रवेश करने से भला है, कि तुम्हारी दो आँखें हों और तुम नरक में डाले जाओ, 48 जहाँ उसका कीड़ा नहीं मरता और उसकी आग नहीं बुझती।

49 हर एक को आग से नमकीन किया जाना चाहिए। 50 नमक अच्छा है, लेकिन अगर नमक कमजोर हो जाए, तो उसे किस चीज से पकाया जाएगा? अपने साथ नमक रखो, और एक दूसरे के साथ मेल मिलाप रखो।

10 1 और वह कूच करके यहूदिया के देश और यरदन के पार आ गया। और लोग भीड़ में फिर से उसके पास दौड़े, और जैसा कि उसकी प्रथा थी, उसने उन्हें फिर से सिखाया। 2 तब फरीसी उसके पास आए और उस से पूछने लगे कि क्या कोई पुरूष अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है, और उस पर मुकदमा चलाया। 3 उसने उत्तर दिया, कि मूसा ने तुझे क्या आज्ञा दी है? 4 उन्होंने कहा, "मूसा ने उसे तलाक का प्रमाण पत्र लिखने और उसे तलाक देने की अनुमति दी। 5 यीशु ने उनसे कहा, "तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण उसने तुम्हारे लिये यह आज्ञा लिखी है; 6 किन्तु सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर ने नर और नारी करके उन्हें उत्पन्न किया। 7 इसलिए इंसान अपने माता-पिता को छोड़ देगा 8 और वे दोनों एक तन होंगे। इसलिए अब वे दो नहीं, बल्कि एक तन हैं। 9 जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। 10 घर पर उसके शिष्यों ने उस से फिर पूछा। 11 और उसने उनसे कहा, "जो कोई अपनी पत्नी को तलाक देकर दूसरी से ब्याह रचाता है, वह उसके विरोध में व्यभिचार करता है; 12 और यदि कोई स्त्री अपने पति को तलाक देकर दूसरे से ब्याह करे तो वह व्यभिचार करती है। यीशु ने बच्चों को आशीर्वाद दिया 13 और वे बालकों को उसके पास ले आए कि वह उन्हें छूए। लेकिन शिष्यों ने उन्हें डांटा, . 14 यह देखकर यीशु बहुत क्रोधित हुआ और उनसे बोला, "बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो; क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसा ही है। 15 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाई ग्रहण न करे, वह उस में प्रवेश करने न पाएगा। 16 और उस ने उसे गले लगाया, और उस पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। 17 जब वह मार्ग से जा रहा था, तो उन में से एक दौड़कर उसके पास गया और उसके सामने घुटने टेककर उससे पूछा, "हे उत्तम स्वामी, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ? 18 यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे क्यों भाता है? कोई भी अच्छा नहीं है, लेकिन केवल भगवान। 19 तू आज्ञाओं को तो जानता है, कि हत्या न करना; तू व्यभिचार न करना; तू चोरी न करना; तू झूठी गवाही न देना; तू किसी को न लूटना; पिता और माता का सम्मान करें। 20 और उस ने उस से कहा, हे गुरु, मैं बचपन से ही इन सब बातों का पालन करता आया हूं। 21 यीशु ने उस की ओर देखकर उस से प्रेम किया और उस से कहा, तुझमें एक बात की घटी है। जाओ, जो कुछ तुम्हारे पास है उसे बेच दो और कंगालों को दे दो, और स्वर्ग में तुम्हारा खजाना होगा, और आओ, मेरे पीछे हो लो। 22 परन्तु वह वचन से अप्रसन्न हुआ, और उदास होकर चला गया। क्योंकि उसके पास बहुत सी वस्तुएं थीं। 23 यीशु ने अपने चारों ओर दृष्टि करके अपने चेलों से कहा, "धनवानों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन होगा! 24 किन्तु चेले उसकी बातों से चकित हुए। यीशु ने फिर उत्तर दिया और उनसे कहा, "हे प्यारे बच्चों, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है! 25 परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए धनवान के लिए ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है। 26 मगर वे और भी चकित हुए और आपस में कहने लगे, "तो फिर किसका उद्धार हो सकता है? 27 यीशु ने उन की ओर देखकर कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से नहीं; क्योंकि परमेश्वर के साथ सब कुछ संभव है। 28 पतरस ने उत्तर दिया, कि देख, हम सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं। 29 यीशु ने कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं जो मेरे और सुसमाचार के लिये घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या लड़केबालों, या खेतों को छोड़ता हो, 30 जो सतावों के बीच सौ गुणा घर, भाई, बहिन, माता, बाल-बच्चे, खेत और खेत न ले, और आने वाले संसार में अनन्त जीवन प्राप्त करता हो। 31 परन्तु बहुत से लोग पिछले होंगे, जो प्रथम हैं, और जो पहले हैं वे पिछले हैं। 32 और वे यरूशलेम को जाने के मार्ग पर थे; और यीशु उनके आगे आगे आगे चला, और वे चकित हुए; परन्तु जो उसके पीछे हो लेते थे, वे डरते थे। 33 और वह फिर बारहों को अपने पास ले गया और उन्हें बताने लगा कि उसका क्या होगा: 33 देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ में कर दिया जाएगा, और वे उसे मार डालने की आज्ञा देंगे और उसे अन्यजातियों के हाथ सौंप देंगे। 34 वे उसका ठट्ठा करेंगे, और उसे थूकेंगे, कोड़े मारेंगे और मार डालेंगे, और तीन दिन के बाद वह जी उठेगा। 35 तब जब्दी के पुत्र याकूब और यूहन्ना ने उसके पास जाकर कहा, "गुरु, हम चाहते हैं कि हम जो माँगें, वह तुम हमारे साथ करें। 36 उसने उनसे कहा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूँ?
37 उन्होंने उससे कहा, "हमें दे ताकि तेरी महिमा में हम में से एक तेरे दाहिनी और एक तेरी बाईं ओर बैठे। 38 मगर यीशु ने उनसे कहा, "तुम नहीं जानते तुम क्या माँग रहे हो। क्या आप उस प्याले को पी सकते हैं जिसे मैं पीता हूं, या उस बपतिस्मा से बपतिस्मा ले सकते हैं जिससे मैं बपतिस्मा लेता हूं? 39 वे उससे बोले, "हाँ, हम कर सकते हैं। यीशु ने उन से कहा, जो कटोरा मैं पीता हूं तुम पीओगे और जिस बपतिस्मे से मैं बपतिस्मा लेता हूं उसी से बपतिस्मा लोगे; 40 परन्तु मेरे दाहिनी और बाईं

ओर बैठने के लिये यह मेरा काम नहीं है कि मैं तुझे दूं, परन्तु जिनके लिये वह तैयार किया गया है। 41 जब दसों चेलों ने यह सुना तो वे याकूब और यूहन्ना पर भड़क उठे। 42 तब यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया और उनसे कहा, "तुम जानते हो कि दुनिया के हाकिम अपने लोगों का विरोध करते हैं और शासक उन पर कहर बरपाते हैं। 43 परन्तु तुम्हारे बीच ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने; 44 और तुम में से जो कोई प्रधान होना चाहे, वह सब का सेवक बने। 45 क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि सेवा टहल करे, और बहुतों के छुटकारे के लिये अपना प्राण दे। यरीहो का अंधा आदमी 46 और वे यरीहो में आए। और जब वह यरीहो से चला गया, वह और उसके चेले और एक बड़ी भीड़, वहाँ एक अन्धा आदमी बैठा था; तिमाई का पुत्र बरतिमाई सड़क के किनारे था और भीख माँग रहा था। 47 जब उसने सुना कि वह नासरी का यीशु है, तो चिल्लाकर कहने लगा, "हे दाऊद की सन्तान, यीशु, मुझ पर दया कर। 48 और बहुतेरों ने उसे डांटकर चुप रहने को कहा। परन्तु उसने और भी पुकार कर कहा, "दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर! 49 यीशु खड़ा रहा और बोला, "उसे बुलाओ। और उन्होंने अंधे आदमी को बुलाया और उससे कहा, "खुश रहो, उठ। वह तुम्हें बुला रहा है! 50 तब वह अपना वस्त्र उतारकर उछलकर यीशु के पास आया। 51 यीशु ने उत्तर दिया, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ? अंधे आदमी ने उससे कहा, "रब्बूनी, ताकि मैं फिर से देख सकूं। 52 मगर यीशु ने उससे कहा, "जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है। और तुरंत वह फिर से देख सकता था, और सड़क पर उसका पीछा किया।

11 1 जब वे यरूशलेम के निकट बैतफगे और बैतनिय्याह के निकट जैतून पर्वत पर पहुंचे, तब उस ने अपके चेलोंके पास दो 2 कहला भेजकर उन से कहा, जो तुम्हारे आगे है उस गांव में जाओ। और जैसे ही आप प्रवेश करते हैं, आपको एक बछेड़ा बंधा हुआ मिलेगा, जिस पर पहले कोई आदमी नहीं बैठा है; इसे खोल दो और यहाँ लाओ! 3 और यदि कोई तुम से कहे, 'यह क्या कर रहा है? कह दो, "रब को इसकी आवश्यकता है और वह तुरन्त उसे लौटा देता है। 4 और उन्होंने जाकर उस बच्चे को मार्ग के बाहर एक द्वार से बँधा हुआ पाया, और उसे खोल दिया। 5 वहां खड़े कितनों ने उन से कहा, तुम बच्चे को खोलने के लिये क्या करते हो? 6 परन्तु उन्होंने यीशु की आज्ञा के अनुसार उन से कहा, और उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया। 7 तब वे उस बच्चे को यीशु के पास ले आए, और अपने वस्त्र उस पर रख दिए; और वह उस पर बैठ गया। 8 और बहुतों ने अपने वस्त्र मार्ग में बिछा दिए, और कितनों ने हरी डालियां जो उन्होंने खेतों में काट डाली थीं, फैला दीं। 9 और जो आगे और पीछे चले गए, वे चिल्लाकर कहने लगे, "होशाना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है! 10 धन्य हो हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आनेवाला है। उच्चतम में होसाना! 11 और वह यरूशलेम और मन्दिर में गया, और अपने चारों ओर सब कुछ देखा, और सांझ को वह बारहोंके साथ बैतनिय्याह को निकला। 12 अगले दिन जब वे बैतनिय्याह से बाहर निकले तो वह भूखा था। 13 और उस ने दूर से एक अंजीर का वृक्ष देखा, जिस में पत्ते थे; फिर वह यह देखने के लिए ऊपर गया कि क्या उसे उस पर कुछ मिल सकता है। और जब वह उसके पास आया, तो उसे पत्तियों के अलावा कुछ नहीं मिला; क्योंकि यह अंजीर का समय नहीं था। 14 यीशु ने उत्तर दिया, "अब कोई तेरा फल फिर कभी न खाए। " उसके शिष्यों ने यह सुना। 15 और वे यरूशलेम आए। और यीशु मन्दिर में जाकर विक्रेताओं और मोलोंवालों को मन्दिर में निकालने लगा; और पैसे बदलने वालों की मेज और कबूतर-विक्रेताओं की कुर्सियों को उसने 16 पर धकेल दिया, और वह किसी को भी मंदिर के माध्यम से कुछ भी ले जाने की अनुमति नहीं देगा। 17 और उपदेश करके उन से कहा, क्या यह नहीं लिखा है, कि मेरा घर सब जातियों के लिये प्रार्थना का घर कहलाएगा? किन्तु तुमने उसमें से लुटेरों का अड्डा बना दिया है। 18 और वह महायाजकों और शास्त्रियों के साम्हने आया, और वे इस बात की खोज करने लगे, कि उसे कैसे घात करें। क्योंकि वे उससे डरते थे; क्योंकि सब लोग उसके उपदेश से बहुत घबरा गए थे। 19 शाम को वे नगर से बाहर निकले। 20 भोर को जब वे अंजीर के पेड़ के पास से गुजरे, तो उन्होंने देखा कि वह जड़ तक सूख गया है। 21पतरस ने यह सोचकर उससे कहा, "हे रब्बी, देख, जिस अंजीर के पेड़ को तू ने शाप दिया है वह सूख गया है। 22 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "परमेश्वर में विश्वास रखो। 23जो कोई इस पहाड़ से कहता है, उठ, उठ, समुद्र में डाल दे, मैं तुम से सच सच कहता हूँ। और उसने अपने दिल में संदेह नहीं किया, लेकिन विश्वास किया कि अगर वह जो कहता है वह होगा, तो यह उसके साथ होगा। 24 इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम प्रार्थना में मांगो, उसका विश्वास करो, और वह तुम्हारे लिये होगा। 25 और जब तुम खड़े होकर प्रार्थना करो, तो यदि तुम्हें किसी से कोई शिकायत हो, तो उसे क्षमा कर दो ताकि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध तुम्हें क्षमा करे। 26 वे फिर यरूशलेम आए। जब वह मन्दिर में टहल रहा था, तो महायाजक, शास्त्री और पुरनिये उसके पास आए और उससे कहने लगे, तू यह किस अधिकार से करता है? या आपको ऐसा करने का अधिकार किसने दिया है? 29 यीशु ने उनसे कहा, "मैं तुमसे एक बात माँगता हूँ। मुझे उत्तर दो, और मैं तुम्हें बताऊंगा

कि मैं किस अधिकार से यह करता हूं। 30 यूहन्ना का बपतिस्मा, क्या यह स्वर्ग से था या मनुष्यों की ओर से? मुझे जवाब दो!
31 और उन्होंने यह सोचकर कहा, यदि हम कहें कि वह स्वर्ग से आई है, तो वह कहेगा, 'तुमने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया? 32 क्या हम कहें कि यह मनुष्यों की ओर से है? - तब वे लोगों से डरते थे। क्योंकि वे सब विश्वास करते थे कि यूहन्ना वास्तव में एक भविष्यद्वक्ता था। 33 उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, "हम नहीं जानते। यीशु ने उनसे कहा, "मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ।

12 1 और वह उन से दृष्टान्तों में बातें करने लगा, कि एक मनुष्य ने दाख की बारी लगाकर उसके चारों ओर बाड़ लगाई, और दाखरस खोदा, और एक गुम्मट बनाया, और दाख की बारी के उपजनेवालों को पट्टे पर देकर देश से बाहर चला गया।
2 और जब समय आया, तब उस ने दाख की बारी के फल में से दाख की बारी में से कुछ दाख की बारी के फल लेने के लिथे एक दास को भेजा।
3 किन्तु उन्होंने उसे पकड़ लिया और पीट-पीटकर खाली छोड़ दिया।
4 फिर उस ने एक और दास को उनके पास भेजा, और उन्होंने उसका सिर फोड़कर उसकी निन्दा की।
5 फिर उसने एक और को भेजा और उन्होंने उसे मार डाला। और कई अन्य; कुछ को उन्होंने मारा, कुछ को उन्होंने मार डाला।
6 फिर उसके एक और प्रिय पुत्र हुआ, जिसे उसने उनके पास यह कहकर भेजा, कि वे मेरे पुत्र से डरेंगे।
7 परन्तु अंगूर के वस्त्र देनेवाले आपस में कहने लगे, यह तो निज भाग है; आओ, हम इसे मार डालें, तो भाग हमारा हो जाएगा।
8 और उन्होंने उसे पकड़कर मार डाला और दाख की बारी से बाहर फेंक दिया।
9 अब बगीचे का स्वामी क्या करेगा? वह आएगा और अंगूर की बारी दूसरों को दे देगा।
10 क्या तुमने पवित्र शास्त्र में नहीं पढ़ा, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने ठुकरा दिया था, वही कोने का सिरा हो गया है?
11 यह प्रभु की ओर से हुआ है, और यह हमारी आंखों के सामने एक चमत्कार है"?
12 और वे देखना चाहते थे कि उन्होंने उसे कैसे पकड़ा, तौभी वे लोगों से डरते थे, क्योंकि वे जानते थे कि उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा है। और वे उसे छोड़कर चले गए।
13 और उन्होंने फरीसियों और हेरोदेस के आदमियों में से कितनोंको उसके पास भेजा, कि उसकी बातों में उसे पकड़ लें।
१४ और उन्होंने आकर उससे कहा, "हे गुरु, हम जानते हैं, कि तू सच्चा है, और हम किसी से नहीं पूछते; क्योंकि तू मनुष्यों का नाम नहीं जानता, परन्तु परमेश् वर का मार्ग ठीक से बताता है। क्या यह सही है कि सम्राट को करों का भुगतान करना चाहिए या नहीं? हमें देना चाहिए या नहीं देना चाहिए?
15 परन्तु उस ने उनका कपट देखा और उन से कहा; तुम मेरी परीक्षा क्यों करते हो? उसे देखने के लिए मुझे एक पैसा लाओ!
16 और वे एक ले आए। फिर उसने कहा, "छवि और शिलालेख क्या है?" उन्होंने उससे कहा, "कैसर का।
17 यीशु ने उनसे कहा, "जो कैसर का है वह कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो। और वे उस पर चकित थे.
18 तब सदूकी जो यह विश्वास करते थे कि पुनरुत्थान ही नहीं, उसके पास आकर उस से पूछने लगे,
19 गुरु, मूसा ने हमें लिखा है, कि यदि किसी का भाई मर जाए और उस से पत्नी हो जाए और उसके कोई सन्तान न हो, तो उसका भाई उसकी पत्नी ले ले और अपने भाई के वंश को जननेपाए।
20 अब सात भाई थे। पहले ने एक पत्नी ली; वह मर गया और कोई संतान नहीं छोड़ी।
21 और दूसरा उन्हें लेकर मर गया, और उसके कोई सन्तान नहीं थी। तीसरा भी।
22 और सातों ने कोई सन्तान नहीं छोड़ी। आखिर महिला की भी मौत हो गई।
23 अब पुनरुत्थान के समय जब वे जी उठेंगे, तो वह उन में से किसकी पत्नी होगी? क्योंकि सातों ने उसे पत्नी के रूप में रखा था।
24 तब यीशु ने उनसे कहा, "क्या ऐसा नहीं है? आप गलत हैं क्योंकि आप पवित्रशास्त्र को नहीं जानते हैं, न ही परमेश्वर की शक्ति को।
25 जब वे मरे हुओं में से जी उठेंगे, तो न ब्याह करेंगे, न ब्याह लेंगे, मगर स्वर्ग के दूतों के समान होंगे।

26 परन्तु मरे हुओं के विषय में कि वे जी उठें, क्या तुम ने मूसा की पुस्तक में नहीं पढ़ा, कि परमेश्वर ने झाड़ी में उस से कहा, मैं इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं?
27 परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है। आप बहुत गलत हैं।
28 और शास्त्रियों में से एक उसके पास आया, और वह उन की सुन रहा था, जब वे आपस में वाद-विवाद कर रहे थे। और जब उसने देखा कि उसने उन्हें अच्छी तरह से जवाब दिया है, तो उसने उससे पूछा, "सब से ऊपर सबसे महान आज्ञा क्या है?"
29 यीशु ने उसे उत्तर दिया, "सबसे महान आज्ञा यह है: "हे इस्राएल, सुन, प्रभु हमारा परमेश्वर केवल यहोवा है,
30 और तू प्रभु परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि और अपनी सारी शक्ति के साथ प्रेम रख।
31 दूसरी यह है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। इससे बड़ी कोई आज्ञा और कोई नहीं।
32 शास्त्री ने उससे कहा, "गुरु, तू ने बिल्कुल ठीक कहा है। वह केवल एक है, और उसके सिवा और कोई नहीं है;
33 और उसी से अपने सारे मन और अपनी सारी बुद्धि और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, यह होमबलि और मेलबलि से बढ़कर है।
34 यीशु ने जब देखा कि वह बुद्धिमानी से जवाब दे रहा है तो उससे कहा, "तू परमेश्वर के राज से दूर नहीं है। और तब से किसी ने उससे पूछने की हिम्मत नहीं की।
35 मन्दिर में उपदेश करते हुए यीशु ने कहा, "शास्त्री कैसे कहते हैं कि मसीह दाऊद की सन्तान है?
36 दाऊद ने स्वयं पवित्र आत्मा से कहा, "यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा था, 'मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों तले न कर दूं।
37 दाऊद उसे अपना स्वामी कहता है। वह उसका बेटा कहां से है? और सभी लोग उसे सुनना पसंद करते थे।
38 फिर उसने उन्हें सिखाया और उनसे कहा, "शास्त्रियों से सावधान रहो, जो लंबे कपड़ों में चलना पसंद करते हैं और बाजार में एक-दूसरे को नमस्कार करते हैं,
39 और सभाओं के सिरहाने और भोज में मेज पर बैठना पसंद करते हैं।
40 वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और वे दिखाई देने के लिए लंबी प्रार्थना करते हैं। वे अधिक कठोर न्याय प्राप्त करेंगे।
41 तब यीशु परमेश्वर के सन्दूक के सामने बैठ गया और देखा कि लोग सन्दूक में कैसे पैसे डालते हैं। और कई अमीर लोग बहुत कुछ डालते हैं।
42 और एक कंगाल विधवा ने आकर दो दमकलियां डालीं, जो दूर से काम करती हैं।
43 और उसने अपने चेलों को अपने पास बुलाकर कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि इस कंगाल विधवा ने परमेश्वर के सीने में जितने लोग रखे हैं उन से कहीं अधिक डाला है।
44 क्योंकि उन सब ने अपनी बहुतायत में से डाल दिया है, परन्तु इस ने अपनी सब कुछ अपनी गरीबी से जो कुछ भी जीवित रखा, और अपनी सारी संपत्ति लगा दी है।



13 1 जब वह मन्दिर से बाहर जा रहा था, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा, "गुरु, देख, क्या पत्थर और कैसी इमारतें हैं! 2 यीशु ने उससे कहा, "क्या तू इन विशाल भवनों को देख रहा है? एक पत्थर के ऊपर दूसरा पत्थर नहीं बचेगा जो टूटेगा नहीं। 3 जब वह जैतून के पहाड़ पर मंदिर के सामने बैठा था, तो पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास ने अकेले में उससे पूछा, 4 हमें बता, यह कब होगा? और जब ये सब बातें पूरी हो जाएँगी तो इसका क्या चिन्ह होगा? 5 यीशु उनसे कहने लगा, "ध्यान रखो कि कोई तुम्हें धोखा न दे। 6 बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं वही हूँ,' और बहुतों को भरमाएँगे। 7 किन्तु जब तुम युद्धों और युद्ध की अफवाहों के बारे में सुनो तो डरो मत। यह किया जाना चाहिए। लेकिन अंत अभी तक यहाँ नहीं है। 8 क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा। और भूकंप आगे और पीछे होंगे, और महंगा समय होगा। यह प्रसव पीड़ा की शुरुआत है। 9 किन्तु तुम सावधान रहो। क्योंकि वे तुम्हें न्याय के वश में कर देंगे, और आराधनालयों में तुम पीटे जाओगे, और हाकिमों और राजाओं के साम्हने मेरे निमित्त हाकिमों और राजाओं के साम्हने उन पर गवाही देकर लाए जाओगे। 10 और सुसमाचार का प्रचार पहले सभी राष्ट्रों को किया जाना चाहिए। 11 इसलिए यदि वे तुम्हें ले जाकर तुम्हें सौंप दें, तो पहले यह चिन्ता मत करो कि तुम क्या कहोगे। लेकिन उस समय आपको जो दिया जाता है वह बोलता है। क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं, परन्तु पवित्र आत्मा है। 12 भाई भाई को मार डालकर, और पिता को पुत्र के हाथ में

कर देगा, और लड़केबाले माता-पिता से बलवा करके मार डालने में उनकी सहायता करेंगे। 13 मेरे नाम के कारण सब लोग तुमसे घृणा करेंगे। परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। 14 परन्तु जब तू उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को वहां खड़ा देखे, जहां उसे नहीं होना चाहिए, तो जो कोई उसे पढ़े, वह चौकस रहे। - तो जो कोई यहूदिया में हो, वह पहाड़ों पर भाग जाए। 15 जो छत पर हो, उसे अपने घर से कुछ लेने के लिए नीचे नहीं आना चाहिए और न ही अंदर जाना चाहिए। 16 और जो कोई मैदान में हो, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न मुड़े। 17 परन्तु हाय उन पर जो उस समय गर्भवती और दूध पानेवाली हैं! 18 किन्तु प्रार्थना करो कि यह शीत ऋतु में न हो। 19 क्योंकि इन दिनों में ऐसा क्लेश होगा, जैसा सृष्टि के आरम्भ से न हुआ, जिसे परमेश्वर ने सृजा, और न फिर कभी होगा। 20 और यदि यहोवा इन दिनों को छोटा न करता, तो कोई मनुष्य न बचता; परन्तु चुने हुओं के निमित्त, जिन्हें उस ने चुन लिया है, इन दिनों को छोटा कर दिया है। 21 यदि उस समय कोई तुमसे कहे, 'देखो, मसीह यहाँ है। निहारना, वह वहाँ है!, इस पर विश्वास मत करो। 22 क्योंकि बहुत से झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे, यहां तक कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमाएंगे। 23 किन्तु तुम सावधान रहो। मैंने आप सभी को पहले ही बता दिया है! 24 मगर उस वक्त इस बड़े संकट के बाद सूरज और चाँद अपना प्रकाश खो देंगे, 25 और आसमान से तारे गिरने लगेंगे और आकाश की शक्तियाँ हिल जाएँगी। 26 तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादलों पर आते देखेंगे। 27 तब वह अपने दूतों को भेजकर पृथ्वी की छोर से आकाश की छोर तक चारों दिशा से अपने चुने हुओं को इकट्ठा करेगा। 28 परन्तु अंजीर के पेड़ से एक दृष्टान्त सीखो: जब उसकी डाली अब अंकुरित होगी और पत्ते आएंगे, तो तुम जान लो कि ग्रीष्म काल निकट है। 29 इसी प्रकार यदि तुम इन बातों को होते देखो तो जान लो कि ये द्वार निकट हैं। 30 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी। 31 आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे; लेकिन मेरे शब्द कभी नहीं टलेंगे। 32 उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र परन्तु केवल पिता। 33 खबरदार, जागते रहो। क्योंकि तुम नहीं जानते कि समय कब आया। 34 जैसे कोई मनुष्य उस देश में घूमता फिरता और अपना घर छोड़कर अपने दासों और हर एक काम पर अधिकार देता और द्वारपाल को जागते रहने की आज्ञा देता था, 35 वैसे ही अब जागते रहो; क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आता है, सांझ को या आधी रात को, या बांग के समय या भोर को, 36 ताकि जब वह अचानक आए, तो तुम्हें सोता हुआ न पाए। 37 किन्तु जो मैं तुम से कहता हूँ, सब से कहता हूँ: जागते रहो।

14 1 और ईस्टर और अखमीरी रोटी के दिन पहिले ही दो दिन थे। और महायाजकों और शास्त्रियों ने चालाकी से उसे पकड़ने और उसे मारने की खोज की। सचमुच: "पासा"। लूथर ने नए नियम में "फसह" को "ईस्टर" के रूप में प्रस्तुत किया। 2 क्योंकि उन्होंने कहा, पर्व पर नहीं, ऐसा न हो कि लोगों में बलवा हो। बैतनिय्याह में अभिषेक 3 और जब वह बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में था, और मेज पर बैठा था, तो एक स्त्री आई जिसके पास शुद्ध और बहुमूल्य स्पाइकेनार्ड तेल का गिलास था, और उसने गिलास तोड़कर उसके सिर पर उंडेल दिया। 4 मगर कुछ ऐसे भी थे जो क्रोधित हुए और आपस में कहने लगे, "यह तेल का क्या काम हैं?" 5 यह तेल चाँदी के तीन सौ सिक्कों से अधिक में बेचा जा सकता था और कंगालों को दिया जा सकता था; 6 यीशु ने कहा, "उन्हें जाने दो। आप उसे क्यों परेशान करते हैं? उन्होंने मेरे लिए अच्छा काम किया है। 7 कंगाल लोग तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, और यदि तुम चाहो तो उन की भलाई कर सकते हो; लेकिन तुम हमेशा मेरे पास नहीं हो। 8 उसने वही किया जो वह कर सकती थी; उसने मेरे दफनाने के लिए पहले से ही मेरे शरीर का अभिषेक कर दिया। 9 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जहां सारे जगत में सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके स्मरण में वह भी कहा जाएगा जो उस ने अब किया है। 10 और यहूदा इस्करियोती जो बारहों में से एक था, महायाजकों के पास गया, कि उसे पकड़वाया। 11 जब उन्होंने यह सुना तो वे बहुत खुश हुए और उन्होंने उसे धन देने का वचन दिया। और उसने एक अच्छे अवसर पर उसे धोखा देने के तरीकों की तलाश की। 12 और अखमीरी रोटी के पहिले दिन जब पास्का मेम्ना चढ़ाया गया, तो उसके चेलों ने उस से पूछा, तू कहां चाहता है, कि हम जाकर तेरे खाने के लिये पास्का मेम्ना तैयार करें? 13 और उस ने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा, कि नगर में जाओ, और तुम्हें एक मनुष्य पानी का घड़ा उठाए हुए मिलेगा; 14 और जहाँ कहीं वह जाए, घर के स्वामी से कहना, 'स्वामी ने तुम्हारे पास यह संदेश भेजा है, 'वह कोठरी कहाँ है जिसमें मैं अपने चेलों के साथ पास्का मेम्ना खा सकता हूँ?' 15 और वह तुम्हें एक बड़ा हॉल दिखाएगा, जो गद्दीदार और तैयार है; वहाँ हमारे लिए तैयार करता है। 16 तब चेले निकलकर नगर में आए, और जैसा उस ने उन से कहा था, वैसा ही उसे पाया, और पास्का मेम्ना तैयार किया। 17 सांझ को वह बारहों के साथ आया। 18 जब वे भोजन करने के लिए बैठे थे, तो यीशु

ने कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम में से जो मेरे साथ भोजन करेगा, वह मुझे पकड़वाएगा। 19 वे बहुत उदास हुए और एक
एक करके उस से कहने लगे, क्या वह मैं हूं? 20 उस ने उन से कहा, उन बारहों में से एक जो मेरे साथ कटोरे में डुबकी लगाएगा।
21 जैसा उसके विषय में लिखा है, वैसा ही मनुष्य का पुत्र चला जाता है; परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा मनुष्य के
पुत्र को पकड़वाया गया! यह उसी आदमी के लिए बेहतर होगा कि वह कभी पैदा ही न हुआ हो। 22 जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने
रोटी लेकर धन्यवाद किया और तोड़कर उन्हें देकर कहा, "लो; यह मेरा शरीर है। 23 और उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया,
और उन्हें दिया; और वे सब उस में से पीते थे। 24 और उस ने उन से कहा; यह नये नियम का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के
लिये बहाया जाता है। 25 मैं तुम से सच कहता हूं, कि मैं दाख की उगती हुई दाख को उस दिन तक कभी न पीऊंगा जब तक कि
मैं उसे परमेश्वर के राज्य में फिर न पीऊं। 26 और स्तुति का भजन कहकर वे जैतून के पहाड़ पर निकल गए। 27 यीशु ने
उनसे कहा, "तुम सब मेरे विरुद्ध ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है, "मैं चरवाहे को मारूँगा, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।
28 किन्तु जब मैं जी उठूँगा, तो तुम्हारे आगे आगे गलील को जाऊँगा। 29 किन्तु पतरस ने उससे कहा, "और यदि वे सब तुझ
से ठोकर खाएँ, तो मैं नहीं जानता। 30 यीशु ने उससे कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज रात को कौओं के सामने दो बार
तू मेरा तीन बार इन्कार करेगा। 31 मगर उसने आगे कहा, "चाहे मुझे तुम्हारे साथ मरना पड़े, तौभी मैं तुम्हें इन्कार नहीं
करूँगा। सभी ने एक ही बात कही। 32 और वे गतसमनी नामक दरबार में आए। और उसने अपने चेलों से कहा, "जब तक मैं
प्रार्थना न कर चुकूँ तब तक यहीं बैठे रहो। 33 और वह पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ ले गया, और कांपने और
कांपने लगा, 34 और उनसे कहा, "मेरा प्राण मृत्यु से दुखी है; यहाँ रहो और देखो! 35 और वह थोड़ा और आगे बढ़कर भूमि पर
गिर पड़ा और प्रार्थना करने लगा कि यदि हो सके तो वह घड़ी बीत जाए, 36 और कहा, "हे अब्बा, मेरे पिता, तेरे लिए सब कुछ
मुमकिन है; यह प्याला मुझ से ले लो; लेकिन वह नहीं जो मैं चाहता हूं, बल्कि आप क्या चाहते हैं! 37 तब उस ने आकर उसे
सोते हुए पाया, और पतरस से कहा, हे शमौन, क्या तू सो रहा है? क्या आप एक घंटे तक नहीं देख सकते थे? 38 जागते रहो
और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। आत्मा तैयार है; लेकिन शरीर कमजोर है। 39 और उसने फिर जाकर प्रार्थना की
और वही बातें कहीं, 40 और फिर आकर उन्हें फिर सोते पाया; क्योंकि उनकी आंखें नींद से भरी हुई थीं, और वे नहीं जानती थीं
कि उसे क्या उत्तर दें। 41 वह तीसरी बार फिर लौट कर आया और उनसे बोला, "क्या अब तुम सो कर चैन करोगे? यह पर्याप्त
है; घड़ी आ गई है। देखो, मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में सौंप दिया गया है।
42 उठो, हमें जाने दो। देख, जो मुझे पकड़वाता है, वह निकट है। 43 वह अभी बोल ही रहा था, त्योंमें से एक यहूदा उसके पास
आया, और उसके साथ महायाजकों और शास्त्रियों और पुरनियों का एक बड़ा दल आया, जिनके पास तलवारें और छड़ें थीं। 44
और गद्दार ने उन्हें यह कहकर एक चिन्ह दिया, कि मैं जिसे चूमूंगा, वह वही है; इसे जब्त कर लेता है और इसे सुरक्षित रूप
से दूर ले जाता है। 45 जब वह आया तो तुरन्त उसके पास आया और उससे बोला, "हे रब्बी! और उसे चूम लिया। 46 किन्तु
उन्होंने उस पर हाथ रखे और उसे पकड़ लिया। 47 परन्तु जो पास खड़े थे, उन में से एक ने अपनी तलवार खींची, और
महायाजक के सेवक को मारा, और उसका एक कान काट डाला। 48 यीशु ने उत्तर दिया, "तुम मुझे पकड़ने के लिये तलवारें
और लाठी लिये हुए हत्यारे के साम्हने निकले हो। 49 मैं प्रति दिन मन्दिर में उपदेश देता रहा हूँ और तू ने मुझे नहीं पकड़ा।
परन्तु पवित्रशास्त्र को पूरा होना आवश्यक है! 50 तब वे सब उसे छोड़कर भाग गए। 51 और एक जवान पुरूष उसके पीछे हो
लिया, और उसकी नंगी त्वचा पर सन पहिने हुए; और उन्होंने उसे पकड़ लिया। 52 परन्तु वह मलमल छोड़कर नंगा भाग
गया। 53 और वे यीशु को महायाजक के पास ले गए; और सब महायाजक और पुरनिये और शास्त्री इकट्ठे हुए। 54 परन्तु
पतरस दूर से उसके पीछे महाथाजक के महल में गया, और दासोंके संग बैठकर आग से गर्म हुआ। 55 परन्तु महायाजकों और
सब महासभा ने फिर यीशु की गवाही चाजी की, कि उसे मार डालें, परन्तु कुछ न पाया। 56 बहुतेरों ने उसके विरुद्ध झूठी
गवाही दी; लेकिन उनकी गवाही सहमत नहीं थी। 57 और कितने खड़े हुए और उसके विरुद्ध झूठी गवाही देकर कहने लगे,
58 हम ने उसे यह कहते सुना, कि मैं इस बनाये हुए भवन को ढा दूंगा, और तीन दिन के अन्दर एक और मन्दिर बनाऊँगा जो
हाथों से नहीं बना। 59 परन्तु उनकी गवाही भी सहमत न हुई। 60 तब महायाजक खड़ा हुआ और बीच में खड़ा होकर यीशु से
पूछा, क्या तू उन बातों का उत्तर नहीं देता जो तेरे विरोध में गवाही देती हैं? 61 परन्तु वह चुप रहा, और कोई उत्तर न दिया। तब
महायाजक ने फिर उससे पूछा और उससे कहा, "क्या तू धन्य का पुत्र मसीह है?" 62 यीशु ने कहा, "मैं हूँ; और तुम मनुष्य के
पुत्र को शक् तिष् मशाली की दाहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे। 63 तब महायाजक ने अपने वस्त्र
फाड़े और कहा, "हमें और गवाहों की आवश्यकता क्यों है? 64 तुमने ईशनिंदा सुनी है। तुम्हारा क्या विचार है? परन्तु सब ने
उसे दण्ड सुनाया, कि वह मृत्यु का दोषी है। 65 तब कितने उस पर थूकने लगे, और उसका मुंह ढांपने लगे, और उसे मुट्ठियों

से पीटने लगे, और उस से कहने लगे, कि हमारी भविष्यद्वाणी कर। और नौकरों ने उसके चेहरे पर मारा। 66 पतरस नीचे आँगन में था। तब महायाजक की दासियों में से एक आई; 67 जब उसने पतरस को गर्म होते देखा, तो उसकी ओर देखकर कहा, "और तू भी यीशु नासरी के साथ था। " 68 मगर उसने इनकार किया और कहा, "मैं नहीं जानता और न ही मैं समझता हूँ कि तू क्या कह रहा है। और वह आँगन में चला गया, . 69 दासी ने उसे देखा और पास खड़े लोगों से फिर कहने लगी, "यह उन में से एक है। 70 और उस ने फिर इन्कार किया। और थोड़ी देर के बाद वे फिर से पतरस से कहा, जो पास खड़े थे, "वास्तव में, तुम उन में से एक हो; क्योंकि तू गलीली है। 71 मगर वह अपने आप को कोसने लगा और कसम खाने लगा, "मैं उस आदमी को नहीं जानता जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो। 72 और तुरन्त कौवे फिर से चले। तब पतरस को वह वचन याद आया जो यीशु ने उससे कहा था, "कौवे के सामने दो बार तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा। और वह रोने लगा।

15 1 भोर को महायाजकों ने पुरनियों, शास्त्रियों, और सब महासभा से सम्मति की, और यीशु को बान्धकर ले गए, और पीलातुस के हाथ में कर दिया।

2 पिलातुस ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है? परन्तु उस ने उत्तर देकर उस से कहा, तू ऐसा ही कहता है।

3 महायाजकों ने उस पर कठोर दोष लगाया।

4 पिलातुस ने उस से फिर पूछा, क्या तू उत्तर नहीं देता? देखो वे आप पर कितना कठिन आरोप लगाते हैं!

5 यीशु ने फिर उत्तर न दिया, तो पीलातुस चकित हुआ।

6 और वह उन्हें भोज के लिये एक बन्दी देता था, जिसे वे चाहते थे।

7 बरअब्बा नाम का एक व्यक्ति था, जो उन बागियों के साथ पकड़ा गया था, जिन्होंने विद्रोह में हत्या की थी।

8 और लोगों ने उसके पास जाकर बिनती की, कि जैसा वह करता था, वैसा ही करे।

9 पिलातुस ने उन से कहा, क्या तुम चाहते हो कि मैं यहूदियों के राजा को तुम्हारे हाथ छोड़ दूं?

10 क्योंकि वह जानता था कि महाथाजकों ने डाह के कारण उसे सौंप दिया है।

11 किन्तु महायाजकों ने लोगों को बरअब्बा से जाने देने के लिये उकसाया।

12 पिलातुस ने उन्हें फिर उत्तर दिया, "जिसे तुम यहूदियों का राजा कहते हो, उसके साथ मैं क्या करूँ?

13 तब उन्होंने फिर पुकारा, "उसे क्रूस पर चढ़ा दो!

14पीलातुस ने उनसे कहा, "उसने क्या बुरा किया है? परन्तु वे और भी चिल्लाए: उसे क्रूस पर चढ़ाओ!

15 परन्तु पीलातुस ने लोगों की इच्छा पूरी करना स्मरण किया, और बरअब्बा को उनके हाथ छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर क्रूस पर चढ़ाने के लिथे सौंप दिया।

16 और सैनिकों ने उसे उस किले अर्थात् न्याय के भवन में ले जाकर सारी मण्डली को इकट्ठा किया,

17 और उन्होंने उसे बैंजनी रंग पहनाया और काँटों का मुकुट बाँधा और उसे पहनाया,

18 और उसका अभिवादन करने लगे, "हे यहूदियों के राजा, तेरी जय हो।

19 और उन्होंने सरकण्डे से उसके सिर पर मारा, और उस पर थूका, और घुटनों के बल गिरकर उसे दण्डवत करने लगे।

20 जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो उन्होंने उसे बैंजनी वस्त्र उतार दिया, और अपने वस्त्र पहिनकर उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए बाहर ले आए,

21 और कुरेनी शमौन नाम के एक व्यक्ति को, जो मैदान से आया था, जो सिकंदर और रूफुस का पिता था, उसके लिए क्रूस उठाने के लिए विवश किया।

22 और वे उसे कलवरी के स्थान पर ले गए, जिसका अनुवाद खोपड़ी के स्थान के रूप में किया जाता है।

23 और उन्होंने उसे गन्धरस को दाखमधु पिलाया, परन्तु उस ने न लिया।

24 और उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। और उन्होंने उसके वस्त्र बांट लिए, और चिट्ठी डालकर देखा कि किसे क्या मिलना चाहिए।

25 उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, तब वे लगभग तीसरे पहर थे।

26 और उसके ऊपर लिखा था, जो उसके विरोध में कहा गया था, अर्यात् यहूदियों का राजा।

27 और उन्होंने उसके साथ दो हत्यारों को क्रूस पर चढ़ाया, एक तो उसकी दाहिनी और एक बाईं ओर।

28 तब पवित्र शास्त्र का वह वचन पूरा हुआ, जो कहता है, "वह कुकर्मियों में गिना जाता है।
29 और जो वहाँ से गुज़रते थे, वे उसकी निन्दा करते थे और सिर हिलाकर कहने लगे थे, "हा, हे मंदिर तोड़नेवालो, और तीन दिन में बनानेवालों,
30 अब अपने आप को बचाओ और क्रूस पर से नीचे उतरो।
31 उसी तरह, महायाजकों ने आपस में और शास्त्रियों के बीच यह कहते हुए उसका मज़ाक उड़ाया, "उसने दूसरों की सहायता की है, परन्तु वह अपने आप को नहीं बचा सकता।
32 अब इस्राएल का राजा मसीह क्रूस पर से उतर आए कि हम देखते और विश्वास करें। और जो उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए थे, उन्होंने भी उसकी निन्दा की।
33 और छठवें पहर के पहर के पहर तक सारे देश में अन्धकार छाया रहा।
34 और नौवें पहर के करीब यीशु ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली, लामा असबतैनी?
35 और जो लोग यह सुनकर पास खड़े थे, उन्होंने कहा, "देखो, यह एलिय्याह को बुला रहा है।
36 तब उन में से एक ने दौड़कर सिरके से स्पंज भरा, और सरकण्डे पर रखकर पानी पिलाया, और कहा, रुक जा, देख, कि एलिय्याह आकर उसे नीचे ले जाएगा।
37 मगर यीशु ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया और मर गया।
38 और मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट गया।
39 और सूबेदार जो उसके साम्हने खड़ा था, और जो उसे मरता हुआ देखता था, कहने लगा, निश्चय ही यह परमेश्वर का पुत्र था।
40 और ऐसी स्त्रियां भी थीं जो दूर से देख रही थीं, जिनमें मरियम मगदलीनी, और याकूब और योसेस की माता मरियम, और सलोमी भी थीं,
41 जो गलील में उसके पीछे हो ली थीं और उसकी सेवा की थी, और बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं जो उसके साथ यरूशलेम को गई थीं।
42 सब्त के एक दिन पहले सांझ के समय
अरिमतिया का यूसुफ एक कुलीन पार्षद के रूप में आया, जो परमेश्वर के राज्य की बाट जोहता था। उसने पिलातुस के पास जाने का साहस किया और यीशु के शरीर के लिए कहा।
44 पीलातुस को बहुत आश्चर्य हुआ कि वह मर चुका है, और उसने सूबेदार को बुलाकर पूछा कि क्या वह बहुत समय पहले मर चुका था।
45 और सूबेदार से पूछकर उस ने लोय यूसुफ को दे दी।
46 और उस ने सन का मलमल मोल लेकर उतारकर मलमल में लपेटा, और चट्टान में खुदी हुई कब्र में रखा, और कब्र के द्वार के साम्हने एक पत्थर लुढ़काया।

47 किन्तु मरियम मगदलीनी और योसे की माँ मरियम ने देखा कि वह कहाँ रखा गया है।

16 1 और जब सब्त का दिन बीत गया, तो मरियम मगदलीनी, और याकूब की माता मरियम, और सलोमी ने सुगन्धित द्रव्य मोल लिए, कि आकर उसका अभिषेक करें। 2 और वे सप् ताह के पहिले दिन को सूर्य के उदय होने पर कब्र पर आए। 3 और वे आपस में कहने लगे, कब्र के द्वार पर से पत्थर को हमारे लिये कौन लुढ़काएगा? 4 और उन्होंने दृष्टि करके देखा, कि पत्थर लुढ़का हुआ है; क्योंकि वह बहुत लंबा था। 5 और उन्होंने कब्र में जाकर एक जवान को अपनी दाहिनी ओर बैठे देखा, जिस ने श्वेत वस्त्र का लम्बा चोगा पहिना हुआ था, और वे चकित हुए। 6 किन्तु उसने उनसे कहा, "डरो मत। आप नासरत के यीशु को खोज रहे हैं, जो क्रूस पर चढ़ाया गया है। वह जी उठा है, वह यहाँ नहीं है। देखो, वह स्थान जहाँ उन्होंने उसे रखा था! 7 मगर तुम जाओ और उसके चेलों और पतरस से कहो, कि वह तुम्हारे आगे आगे गलील जाएगा। वहाँ तुम उसे देखोगे, जैसा उसने तुमसे कहा है। 8 और वे निकलकर अधोलोक में से भाग गए; क्योंकि वह कांपती और भयभीत होकर आई थी। और उन्होंने किसी से कुछ नहीं कहा; क्योंकि वे डरते थे। 9:10 और वह चला गया और यह उन लोगों को जो उसके साथ थे सुनाया, जो विलाप कर रहे थे और रो रहे थे. 11 और जब उन्होंने सुना कि वह जीवित है, और उसे दिखाई दिया, तो उन्होंने विश्वास न किया। 12 फिर उस ने मार्ग में उन में से दो पर दूसरे रूप में प्रगट किया, जब वे भूमि पर

चल रहे थे। 13 उन्होंने जाकर औरों को भी बताया। और उन्होंने उन पर विश्वास भी नहीं किया। 14 आखिर में, जब वे ग्यारहों मेज पर बैठे थे, तो उस ने अपने आप को प्रगट किया और उनके अविश्वास और उनके मन की कठोरता को डांटा, क्योंकि उन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया था जिन्होंने उसे देखा था और फिर जी उठे थे। 15 और उस ने उन से कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष् टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। 16 जो विश्वास करता है और बपतिस्मा लेता है, उसी का उद्धार होगा; परन्तु जो विश्वास नहीं करता वह शापित होगा। 17 परन्तु विश्वास करनेवालों के पीछे जो चिन्ह होंगे, वे ये हैं: मेरे नाम से वे बुरी आत्माओं को निकालेंगे, वे नई नई भाषा बोलेंगे, 18 वे सांपों को निकाल देंगे, और यदि वे कुछ घातक पीते हैं, तो यह उन्हें चोट नहीं पहुंचाएगा; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और यह उनके साथ बेहतर होगा। 19 और प्रभु उन से बातें करके स्वर्ग पर चढ़ गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया। 20 किन्तु उन्होंने बाहर जाकर सभी स्थानों पर प्रचार किया। और प्रभु ने उनके साथ काम किया, जो बाद के संकेतों से वचन की पुष्टि करता है।

- ल्यूक के अनुसार सुसमाचार:

1 1 क्योंकि बहुतों ने हमारे बीच हुई बातों का लेखा-जोखा देने का उपक्रम किया है,
2 क्योंकि वे हमें सौंपी गई हैं, जिन्होंने इसे शुरू से ही देखा है, और वचन के सेवक रहे हैं,
3 मैंने भी शुरू से ही सब बातों की जांच-पड़ताल करने के बाद अच्छा समझा है, कि हे मेरे महान थियुफिलुस, मैं उसे तुम्हें दे दूं,
4 कि जिस उपदेश में तुम्हें शिक्षा दी गई है, उसकी पक्की बुनियाद को जानो।
5 यहूदिया के राजा हेरोदेस के दिनों में अबियाह के राज्य का एक याजक था, जिसका नाम जकर्याह था, और उसकी पत्नी हारून की बेटियों की थी, जिसका नाम इलीशिबा था।
6 परन्तु वे दोनों परमेश्वर के साम्हने पवित्र थे, और प्रभु की सारी आज्ञाओं और विधियों पर निर्दोष चलनेवाले थे।
7 और उनके कोई सन्तान न थी, क्योंकि इलीशिबा थी, और दोनों बहुत बूढ़े थे।
8 और ऐसा हुआ कि जब वह परमेश्वर के साम्हने याजकपद का प्रयोग कर रहा था, जब उसकी आज्ञा थी,
9 कि याजकपद की रीति के अनुसार वह धूप जलाने के लिये खींचा गया, और वह यहोवा के भवन में गया।
10 और लोगों की सारी भीड़ धूप के समय प्रार्थना करते हुए बाहर थी।
11 और यहोवा का एक दूत उसे दिखाई दिया, जो धूप की वेदी के दाहिनी ओर खड़ा था।
12 जकरयाह ने उसे देखा, तो वह बहुत घबरा गया, और उस पर भय छा गया।
13 परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा, "जकरयाह, भयभीत न हो, क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिए एक पुत्र उत्पन्न होगा, जिसका नाम यूहन्ना होगा।
14 और तुम आनन्दित और आनन्दित होगे, और उसके जन्म से बहुतेरे आनन्दित होंगे।
15 क्योंकि वह यहोवा की दृष्टि में महान होगा; वह दाखमधु या मदिरा न पीएगा, और अपनी माता के गर्भ से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा।
16 वह इस्राएल के बहुतेरों को उनके प्रभु परमेश्वर की ओर फेरेगा।
17 और वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ से उसके आगे आगे आगे चलेगा, कि पितरों के मन को सन्तान की ओर फेरे, और आज्ञा न माननेवालोंको धर्मियों की बुद्धि की ओर फेरे, कि प्रभु के लिये तैयार की हुई प्रजा तैयार करे।
18 जकरयाह ने स्वर्गदूत से कहा, "मैं यह कैसे जानूँ? क्योंकि मैं बूढ़ा हूँ और मेरी पत्नी बूढ़ी है।
19 स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "मैं जिब्राईल हूँ, जो परमेश्वर के सामने खड़ा है और मुझे तुझ से बातें करने को भेजा गया है, कि तुझे ये बातें बताऊँ।
20 और देखो, तुम चुप रहोगे और उस दिन तक बोलने में असमर्थ रहोगे जब तक ये बातें पूरी न हो जाएं, क्योंकि तुम ने मेरी बातों की प्रतीति नहीं की है, जो उनके समय में पूरी होंगी।
21 और लोग जकरयाह की बाट जोहते रहे, और चकित हुए कि वह मन्दिर में इतनी देर तक रहा।
22 जब वह बाहर गया, तो उन से बातें न कर सका; और वे जान गए, कि उस ने मन्दिर में कोई दर्शन देखा है। और वह उन्हें इशारा किया और चुप रहा.
23 और ऐसा हुआ कि जब उसकी सेवकाई का समय समाप्त हो गया, तो वह अपने घर चला गया ।

24 इतने दिनों के बाद उसकी पत्नी इलीशिबा गर्भवती हुई और पाँच महीने तक यह कहते रहे,
25 "प्रभु ने उन दिनों में मेरे साथ ऐसा ही किया है, जब उसने मुझे देखा था, कि वह मनुष्यों के बीच मेरी नामधराई मुझसे दूर कर दे।
26 छठवें महीने में परमेश्वर ने स्वर्गदूत जिब्राईल को गलील के नासरत नाम एक नगर में भेजा,
27 और एक कुंवारी लड़की के घर जो दाऊद के घराने के यूसुफ नाम के एक पुरूष से घनिष्ठ थी, और उस कुँवारी का नाम मरियम था।
28 तब स्वर्गदूत उसके पास आया और बोला, हे परम कृपालु, तेरी जय हो! प्रभु आपके साथ है!
29 मगर वह उसकी बातों से बहुत डर गई, और सोचने लगी, "यह कैसा नमस्कार है?"
30 स्वर्गदूत ने उससे कहा, हे मरियम, मत डर, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।
31 देखो, तुम गर्भवती हो और एक पुत्र जनेगी, और तुम्हारा नाम यीशु होगा।
32 वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उस को देगा
33 और वह याकूब के घराने का सदा के लिए राजा रहेगा और उसके राज्य का अन्त न होगा।
34 मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह कैसे हो सकता है, क्योंकि मैं किसी के बारे में नहीं जानती?
35 स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी।
36 और देखो, तुम्हारी कुटुरी इलीशिबा भी अपनी आयु के एक पुत्र से गर्भवती है, और अब छठे महीने में चल रही है, जो कहा जाता है।
37 क्योंकि परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।
38 मरियम ने कहा, देख, मैं यहोवा की दासी हूं; तेरे वचन के अनुसार मेरे साथ हो जाए। और स्वर्गदूत उसके पास से चला गया।
39 उन दिनों मरियम उठकर पहाड़ों पर यहूदा के एक नगर में गई,
40 और जकरयाह के घर जाकर इलीशिबा को नमस्कार किया।
41 और जब इलीशिबा ने मरियम का नमस्कार सुना, तब बालक उसके गर्भ में उछल पड़ा। 42 और इलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण थी
, और जोर से पुकारकर कहने लगी, "धन्य हो तुम स्त्रियों में, और धन्य है तुम्हारे गर्भ का फल।
43 मेरे प्रभु की माता मेरे पास कैसे आई?
44 देखो, जब मैं ने तेरे नमस्कार का शब्द सुना, तो बालक मेरे गर्भ में आनन्द से उछल पड़ा।
﴾ 45 ﴿ धन्य हो तुम, जो ईमान लाए। क्योंकि जो कुछ प्रभु की ओर से तुम से कहा जाता है, वह पूरा होगा।
46 मरियम ने कहा, "मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है,
47 और मेरी आत्मा मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित होती है;
48 क्योंकि उसने अपने दास की दीनता देखी है। देख, अब से मेरे लड़के-बाले मुझे धन्य कहेंगे।
49 क्योंकि उस ने मेरे लिये बड़े बड़े काम किए हैं, जो पराक्रमी है और जिसका नाम पवित्र है।
50 और उसकी करूणा उनके डरवैयों पर सदा बनी रहती है।
51 वह अपनी बांह से शक्ति का प्रयोग करता है, और जो घमण्डी हैं उनके हृदयों में उन्हें तितर-बितर करता है।
52 वह शूरवीरों को उनके सिंहासनों पर से गिरा देता है, और दीनों को ऊंचा करता है।
53 वह भूखों को धन से भर देता है, और धनवान को खाली छोड़ देता है।
54 वह दया को स्मरण करता है और अपने सेवक इस्राएल की सहायता करता है,
55 जैसे उसने हमारे पुरखाओं, इब्राहीम और अपनी सन्तान से सदा बात की थी।
56मरियम लगभग तीन महीने उसके साथ रही और फिर वह घर लौट गई।
57 और इलीशिबा के जन्म का समय आया, और उसने एक पुत्र को जन्म दिया।
58 और उसके पड़ोसियों और कुटुम्बियों ने सुना कि प्रभु ने उस पर बड़ी दया की है, और उसके साथ आनन्दित हुए।
59 और ऐसा हुआ कि आठवें दिन वे शिशु का खतना करने आए, और उसका नाम उसके पिता जकरयाह के नाम पर रखा।
60 उस की माता ने उत्तर दिया, कि उसका नाम यूहन्ना ही नहीं होगा।

" 61 उन्होंने उससे कहा, "तेरे परिवार में ऐसा कोई नहीं है जो ऐसा कहलाता हो।
62 और उन्होंने उसके पिता को बुलाने की इच्छा के अनुसार इशारा किया।
63 और उसने एक तख्ती माँगकर लिखा, "उसका नाम यूहन्ना है। और वे सब चकित थे।
64 और तुरन्त उसका मुंह और जीभ खुल गई, और वह बोल बोला और परमेश्वर की बड़ाई की।
65 और सब पड़ोसी डर गए, और यह सारी कहानी यहूदिया के सब पहाड़ों पर फैल गई।
66 और जितनों ने यह सुना, उन सभों ने मन में उतरकर कहा, "तुझे क्या लगता है कि उस शिशु का क्या होगा? क्योंकि यहोवा का हाथ उसके साथ था।
67 और उसके पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से भर गए और उन्होंने भविष्यवाणी की, 68
"इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की जय हो!
69 और अपने दास दाऊद के घराने में उद्धार का एक सींग खड़ा किया,
70 जैसा कि उसने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से प्राचीनकाल की बात कही थी:
71 कि उसने हमें हमारे शत्रुओं और उन सब के हाथ से छुड़ाया जो हमसे बैर रखते हैं,
72 और हमारे पुरखाओं पर दया की, और अपनी पवित्र वाचा को याद किया
73 और उस शपथ के जो उसने हमारे पिता इब्राहीम से शपथ खाकर हमें देने की शपथ खाई,
74 कि हम ने अपने शत्रुओं के हाथ से छुड़ाकर जीवन भर निर्भय होकर उसकी सेवा की,
75 पवित्रता और धार्मिकता से जो उसे भाती है।
76 और हे बालकों, तुम परमप्रधान भविष्यद्वक्ता कहलाओगे।
77 और उसके लोगों को उनके पापों की क्षमा देकर उद्धार का ज्ञान देना,
78 हमारे परमेश्वर की उस कोमल दया के द्वारा, जिसके द्वारा स्वर्ग से जी उठे हुए हम पर आए,
79 कि वह उन लोगों को दिखाई दे जो अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठे हैं, और हमारे पांव शान्ति के मार्ग में खड़े हों।
80 और वह बच्चा बढ़ता और मन में बलवन्त होता गया। और वह जंगल में तब तक रहा जब तक कि वह इस्राएलियोंके साम्हने न निकल आए।

2 1 उस समय ऐसा हुआ कि कैसर ऑगस्तुस की ओर से एक आज्ञा निकली, कि सारे संसार का सम्मान किया जाए ।
2 और यह अनुमान सबसे पहले लगाया गया था, और उस समय लगाया गया था जब कुरेनियुस सीरिया में राज्यपाल था।
3 और हर एक मनुष्य का मूल्य उसके अपने नगर में गया।
4 तब यूसुफ भी गलील से नासरत नगर से यहूदिया देश और दाऊद के उस नगर को गया, जो बेतलेहेम कहलाता है, क्योंकि वह दाऊद के घराने और वंश का था,

5 कि वह अपनी भरोसेमंद पत्नी मरियम के साथ मूल्यवान हो जाए, जो गर्भवती थी।
6 जब वे वहाँ थे, तो उसके जन्म का समय आ गया।
7 और उस ने अपके पहिलौठे पुत्र को जन्म दिया, और उसे कपड़े लपेटकर इन्फ्लू में डाल दिया, क्योंकि सराय में और कोई कमरा नहीं था।
8 और उसी क्षेत्र में मैदान में भेड़शाहोंके पास चरवाहे थे, जो रात को अपनी भेड़-बकरियों की देखभाल करते थे।
9 और देखो, यहोवा का दूत उनके पास आया, और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका, और वे बहुत डर गए।
10 स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो मत। देख, मैं तेरे लिये बड़े आनन्द का सुसमाचार लाया हूं, जो सब लोगों के पास आएगा;
11 क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, जो प्रभु मसीह है।
12 और यह एक चिन्ह है: तुम बच्चे को कपड़े में लिपटा हुआ और चरनी में पड़ा पाओगे।
13 और तुरन् त स्वर्गदूत के साथ स् वर्गदूतों की एक भीड़ परमेश्वर की स्तुति करने लगी,
14 परमप्रधान परमेश् वर की महिमा, पृथ्वी पर शान्ति, और मनुष्यों की भलाई।
15 जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गए, तो चरवाहों ने आपस में कहा, "आओ, अब हम बेतलेहेम को चलें और उस कथा को देखें जो यहोवा ने हमें बताई है।

16 और वे फुर्ती से आए, और मरियम और यूसुफ दोनों को चरनी में पड़ा पाया, और बालक चरनी में पड़ा था।
17 उसे देखकर उन्होंने वह वचन फैला दिया जो इस बालक ने उन से कहा था।
18 और जितने लोग उसके साम्हने आए, वे उन बातों से जो चरवाहों ने उन से कही थीं, चकित हुए।
19 मगर मरियम ने ये सारी बातें मानीं और अपने दिल में डाल लीं।
20 और चरवाहे मुड़कर उन सब बातों के कारण जो उन्होंने सुनी और देखी थीं, परमेश्वर की स्तुति और स्तुति करने लगे, जैसा उन से कहा गया था।
21 और जब आठ दिन बीत गए, और बालक का खतना होना आवश्यक था, तो उसका नाम यीशु रखा गया, जैसा कि स्वर्गदूत ने उसे गर्भ में गर्भ में आने से पहिले बुलाया था।
22 जब मूसा की व्यवस्था के अनुसार उनके शुद्धिकरण के दिन पूरे हुए, तो वे उसे यहोवा के सामने पेश करने के लिए यरूशलेम ले गए,
23 जैसा कि यहोवा की व्यवस्था में लिखा है, "हर एक जेठा पुत्र यहोवा के लिए पवित्र कहलाएगा,"
24 और बलिदान चढ़ाएं, जैसा कि यहोवा की व्यवस्था में कहा गया है। "कछुए कबूतर या दो युवा कबूतरों की एक जोड़ी".
25 और देखो, यरूशलेम में शिमोन नाम एक मनुष्य था, और वही मनुष्य पवित्र और धर्मी था, और इस्राएल की शान्ति की बाट जोहता रहा, और पवित्र आत्मा उसके साथ था।
26 और उसे पवित्र आत्मा से उत्तर मिला था, कि जब तक वह प्रभु के मसीह को पहिले न देख ले, तब तक मृत्यु को न देखेगा।
27 और वह आत्मा के लिये मन्दिर में आया। 28 तब जब माता-पिता बालक यीशु को मन्दिर में इसलिये ले गये कि उसके लिये व्यवस्था के अनुसार रीति-रिवाज हो,
28 तब यीशु ने उसे गोद में लिया और परमेश्वर की स्तुति करते हुए कहा,
29 हे प्रभु, अब तू जैसा कहता है, वैसा ही अपने दास को कुशल से जाने दे;
30 क्योंकि मेरी आंखो ने तेरे उद्धारकर्ता को देखा है,
31 जिसे तू ने सब जातियों के साम्हने तैयार किया है,
32 अन्यजातियों को ज्योति देने और अपनी प्रजा इस्राएल की स्तुति करने के लिथे देखा है।
33 और उसके माता-पिता उसके विषय में कही गई बातों से चकित हुए।
34 तब शिमोन ने उन्हें आशीर्वाद दिया और अपनी माता मरियम से कहा, देखो, यह मनुष्य इस्राएल में बहुतों के पतन और पुनरुत्थान के लिये आशयित है, और एक चिन्ह के लिये जो विरोधाभासी होगा,
35 और तुम्हारे प्राण में तलवार चुभेगी, ताकि बहुतों के मन के विचार प्रगट हों।
36 और आशेर के घराने में फनूएल की बेटी हन्नाह नाम एक भविष्यद्वक्ता थी, जो बहुत बूढ़ी थी, और अपने कुँवारेपन के सात वर्ष बाद अपने पति के साथ रहती थी,
37 और चौरासी वर्ष की विधवा थी, जो कभी मन्दिर से नहीं आई, परन्तु उपवास और प्रार्थना करते हुए दिन-रात परमेश्वर की सेवा करती थी।
38 और उसी घड़ी वह भी आई, और परमेश्वर की बड़ाई करके सब जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे, उसके विषय में बातें की।
39 और जब वे यहोवा की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ पूरा कर चुके, तो गलील को अपने नासरत नगर को लौट गए।
40 परन्तु बालक बढ़ता और सामर्थी और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उसके साथ था। बारह वर्षीय यीशु मंदिर में
था 41 और उसके माता-पिता ईस्टर के अवसर पर प्रति वर्ष यरूशलेम जाते थे।
42 जब वह बारह वर्ष का हुआ, तो वे पर्व की रीति के अनुसार यरूशलेम को गए।
43 जब दिन पूरे हुए और वे अपने घर लौट गए, तो बालक यीशु यरूशलेम में ही रह गया, और उसके माता-पिता को यह पता न चला।
44 परन्तु उन्होंने समझा कि वह उन संगी लोगों में से है, सो वे एक दिन का सफ़र करके उसे अपने कुटुम्बियों और जान-पहचान वालों के बीच ढूँढ़ने लगे।
45 जब वह न मिला, तो यरूशलेम को फिर उसे ढूंढ़ने लगे।

46 और ऐसा हुआ कि तीन दिनों के बाद उन्होंने उसे मंदिर में शिक्षकों के बीच बैठे, उनकी बात सुनते और उनसे पूछते हुए पाया ।
47 और जितने उस की सुन रहे थे, वे सब उस की समझ और उसके उत्तरों से चकित थे।
48 जब उन्होंने उसे देखा तो वे चकित हो गये। उस की माता ने उस से कहा; पुत्र, तू ने हम से क्यों ऐसा व्यवहार किया? देख, मैं और तेरे पिता दुःख से तुझे ढूंढ़ते रहे हैं।
49 उस ने उन से कहा; तुम मुझे क्या ढूंढ़ते रहे? क्या तुम नहीं जानते, कि मुझे अपने पिता की बातों में होना अवश्य है?
50 और जो बात उस ने उनसे कही, उन्होंने उसे नहीं समझा।
51 और वह उनके संग गया, और नासरत को आया, और उनके आधीन हो गया। और उसकी माँ ने इन सभी शब्दों को अपने दिल में रखा।
52 और यीशु परमेश्वर और मनुष्यों के साथ बुद्धि, डील-डौल और अनुग्रह में बढ़ता गया।

3 1 तिबिरियुस कैसर के राज्य के पंद्रहवें वर्ष में, जब पुन्तियुस पीलातुस यहूदिया का हाकिम था, और हेरोदेस गलील का एक राजकुमार था, और उसका भाई फिलिप्पुस इतूरैया का एक प्रधान था, और त्रखोनितिस और लिसानिया के प्रदेश में अबिलीन का एक प्रधान था,
2 और जब हन्ना और कैफा महायाजक थे, तब परमेश्वर की आज्ञा जकर्याह के पुत्र यूहन्ना को मिली। रेगिस्तान में।
3 और वह यरदन के चारों ओर के सारे देश में आया और पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप के बपतिस्मा का प्रचार किया,
4 जैसा कि यशायाह भविष्यद्वक्ता के कथनों की पुस्तक में लिखा है, "जंगल में एक उपदेशक का शब्द है, 'प्रभु का मार्ग तैयार कर, और उसके मार्ग को सीधा करो।
5 सब तराइयां ऊंची की जाएंगी, और सब पहाड़ और पहाडिय़ां नीची की जाएंगी; और जो टेढ़ी है वह सीधी ठहरेगी, और जो ऊबड़-खाबड़ है वह सीधा मार्ग बन जाएगा।
6 और सब प्राणी परमेश्वर के उद्धारकर्ता को देखेंगे।
7 तब यूहन्ना उन लोगों से जो उसके द्वारा बपतिस्मा लेने के लिए बाहर जा रहे थे, कहा, "हे सांप के लोगों, तुम को किसने दिखाया है कि तुम आनेवाले क्रोध से बच जाओगे?"
8 चौकस रहो, और मन फिराव का धर्म फल करो, और यह न कहो, कि हमारा पिता इब्राहीम है। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है।
9 कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा जा चुका है, और जिस पेड़ में अच्छा फल न लाए, वह काट डाला जाएगा और आग में झोंका जाएगा।
10 लोगों ने उस से पूछा, हम क्या करें?
11 उस ने उन को उत्तर दिया, कि जिस के पास दो अंगरखे हों वह उसे दे जिसके पास दो अंगरखे हों और जिसके पास भोजन हो वह उसे दे दे।
12 तब चुंगी लेनेवाले भी बपतिस्मा लेने आए और उससे कहने लगे, "गुरु, हम क्या करें?"
13 उस ने उन से कहा, जितने का विश्वास किया गया है, उससे अधिक मत मांगो।
14 तब सिपाहियों ने भी उस से पूछा, हम क्या करें? उस ने उन से कहा, किसी के साथ उपद्रव या अन्याय न करना; और अपने वेतन से संतुष्ट रहो।
15 मगर जब लोग बाट जोहने लगे और सभी अपने दिल में यूहन्ना के बारे में सोच रहे थे कि कहीं वह मसीह तो नहीं है,
16 यूहन्ना ने उन सब से कहा, "मैं तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, मगर कोई मुझसे ज़्यादा ताकतवर है, और मैं इतना नहीं हूँ कि उसके जूतों की पट्टियाँ खोल सकूँ; वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।
17 उसके हाथ में ताना का फावड़ा है, और वह अपने खलिहान में गेहूं बटोरेगा, और भूसी को कभी न बुझने वाली आग से जला देगा।
18 और बहुत सी बातों के साथ उस ने लोगों को उपदेश दिया, और उनके लिए उद्धार का प्रचार किया।
19 और जब हेरोदेस ने अपने भाई की पत्नी हेरोदियास और हेरोदेस की सारी बुराई के कारण उसे डांटा,
20 और यूहन्ना को भी बन्दीगृह में डाल दिया।

21 और जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और यीशु ने भी बपतिस्मा लिया और प्रार्थना करने लगा, तो स्वर्ग खुल गया,
22 और पवित्र आत्मा कबूतर की तरह शारीरिक रूप में उस पर उतरा, और स्वर्ग से यह आवाज़ आई, "तू मेरा प्रिय पुत्र है, मैं तुझ से अत्यन्त प्रसन्न हूँ।
23 और यीशु, जब शुरू हुआ, तो लगभग तीस वर्ष का था, और यूसुफ का पुत्र माना जाता था, जो एली का पुत्र था,
24 जो मैथ्यू का पुत्र था, जो लेवी का पुत्र था, जो मेल्की का पुत्र था, जो जन्नै का पुत्र था, जो यूसुफ का पुत्र था,
25 जो मत्तियाह का पुत्र था। वह आमोस का पुत्र था, वह नहूम का पुत्र था, वह एजली का पुत्र था, वह नग्गै का पुत्र था,
26 वह मात का पुत्र था, वह मत्याह का पुत्र था, वह शिमीस का पुत्र था, जो योसीक्स का पुत्र था, जो योदा का पुत्र था,
27 जो योहानान का पुत्र था, जो रजा का पुत्र था। वह जरूब्बाबेल का पुत्र था, वह सीलतीएल का पुत्र था, वह नेरी का पुत्र था,
28 वह मल्की का पुत्र था, जो अद्दी का पुत्र था, जो कोसाम का पुत्र था, जो एल्मादम का पुत्र था, जो एर का पुत्र था,
29 जो यीशु का पुत्र था, वह एलीर का पुत्र था, जो यहोरीम का पुत्र था। वह मत्थात का पुत्र था, जो लेवी का पुत्र था,
30 जो शिमोन का पुत्र था, जो यहूदा का पुत्र था, जो यूसुफ का पुत्र था, जो योनाम का पुत्र था, जो एल्याकीम का पुत्र था,
31 जो मेलिया का पुत्र था, जो मन्ना का पुत्र था, जो मत्ता का पुत्र था, जो नातान का पुत्र था।
32 वह यिशै का एक पुत्र, ओबेद का पुत्र, बोअज का पुत्र, सलमा का पुत्र, नकशोन का पुत्र,
33 अम्मीनादाब का पुत्र, प्रशासन का पुत्र, अरनी का पुत्र, हेस्रोन का पुत्र, पेरेस का पुत्र था। वह यहूदा का पुत्र था,
34 वह याकूब का पुत्र था, वह इसहाक का पुत्र था, वह इब्राहीम का पुत्र था, वह थारा का पुत्र था, वह नाहोर का पुत्र था,
35 वह सरूग का पुत्र था, जो रेगुस का पुत्र था, वह पेलेग का पुत्र था, वह एबेर का पुत्र था, जो शेला का पुत्र था।
36 वह केनान का पुत्र था, वह अर्पचद का पुत्र था, वह शेम का पुत्र था, वह नूह का पुत्र था, वह लेमेक का पुत्र था,
37 वह मतूशेलह का पुत्र था, वह हनोक का पुत्र था, वह येरेद का पुत्र था, वह महललेल का पुत्र था, जो केनान का पुत्र था,
38 जो एनोश का पुत्र था। वह शेत का पुत्र था, वह आदम का पुत्र था, वह परमेश्वर का था।

4 1 मगर यीशु पवित्र आत्मा से भरा हुआ यरदन से फिर आया और आत्मा के ज़रिए जंगल में ले जाया गया, 2 और शैतान ने चालीस दिन तक उसकी परीक्षा ली। और उन दिनों में उसने कुछ नहीं खाया, और जब वे खत्म हो गए, तो उसे भूख लगी। 3 शैतान ने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इस पत्थर से कह, कि यह रोटी बन जाए। 4 यीशु ने उत्तर दिया, "लिखा है, "मनुष्य केवल रोटी ही से जीवित नहीं रहेगा। 5 और शैतान ने उसे उठाकर सारी दुनिया का राज्य दिखाया, 6 और उससे कहा, "यह सारी शक्ति मैं तुझे और इसकी महिमा को दूँगा। क्योंकि यह मुझे दिया गया है, और मैं जिसे चाहूं उसे दूंगा। 7 इसलिए यदि तुम मेरी उपासना करना चाहो तो यह सब तुम्हारा हो जाएगा। 8 यीशु ने उत्तर दिया, "शास्त्र में लिखा है, "तू यहोवा अपने परमेश्वर की उपासना कर, केवल उसी की सेवा करना। 9 और वह उसे यरूशलेम में ले गया, और मन्दिर के शिखर पर खड़ा करके उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को यहां से नीचे फेंक दे; 10 क्योंकि लिखा है, कि वह अपने दूतों को तुझ पर आज्ञा देगा कि वे तुम्हारी रक्षा करें। 11 वे तुझे अपने हाथों में उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांव में पत्थर से चोट लगे। 12 यीशु ने उत्तर दिया, "यह कहा जाता है, 'तू अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न करना। 13 और जब शैतान सब परीक्षा समाप्त कर चुका, तो वह कुछ समय के लिए उसके पास से चला गया। गलील में काम करते हैं। नासरत में उपदेश 14 और यीशु, आत्मा की शक्ति में, गलील में वापस आया, और उसके बारे में समाचार आसपास के सभी स्थानों में गूंज उठा। 15 और वह उन की सभाओं में उपदेश करता था, और सब उसकी प्रशंसा करते थे। 16 और वह नासरत को जहां उसका पालन-पोषण हुआ था, आया, और सब्त के दिन अपनी रीति के अनुसार आराधनालय में गया, और उठकर पढ़ना चाहा। 17 तब यशायाह नबी की पुस्तक उसे दी गई। और जब उसने पुस्तक खोली, तो उसे वह अंश मिला जहाँ लिखा है: 18 "प्रभु का आत्मा मेरे साथ है, क्योंकि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है; उसने मुझे भेजा है कि मैं बन्धुओं को प्रचार करूं कि वे मुक्त हो जाएं, और अंधों को कि वे देखें, और दीन लोगों को कि वे स्वतंत्र और स्वतंत्र हों, 19 कि प्रभु के अनुग्रह के वर्ष का प्रचार करें। 20 जब वह पुस्तक समाप्त हो गई, तो उसे दास को देकर बैठ गया। और आराधनालय में सभी आँखें उस पर थे. 21 वह उनसे कहने लगा, "आज पवित्र शास्त्र का यह वचन तुम्हारे कानों में पूरा हुआ है। 22 और सब ने उस की गवाही दी, और चकित हुए, कि अनुग्रह की बातें उसके मुंह से निकलीं, कि क्या यह यूसुफ का पुत्र नहीं है? 23 उस ने उन से कहा, तुम मुझे यह वचन दोगे, कि वैद्य, अपनी ही सहायता कर। क्योंकि हम ने कफरनहूम में कितनी बड़ी बातें सुनी हैं! यहां अपने पैतृक शहर में भी ऐसा ही करें। 24 और उस ने कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कोई नबी

अपने देश में किसी काम का नहीं है। 25 परन्तु मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि एलिय्याह के दिनों में इस्राएल में बहुत सी विधवाएं थीं, जब आकाश तीन वर्ष छः महीने तक बन्द रहा, और सारे देश में बड़ा आनन्द हुआ, 26 और एलिय्याह उन में से किसी के पास नहीं भेजा गया, सिदोनियों के देश में सारपत को छोड़ एक विधवा के पास भेजा गया। 27 एलीशा भविष्यद्वक्ता के दिनों में इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, और सीरिया के नामान को छोड़ उन में से कोई भी शुद्ध न हुआ। 28 यह सुनकर आराधनालय में जितने लोग थे, वे बहुत क्रोधित हुए, 29 और उठकर उसे नगर से बाहर धकेल दिया, और उसे उस पहाड़ के किनारे पर ले गए जिस पर उनका नगर बनाया गया था, और उसे नीचे फेंक दिया। 30 परन्तु वह उनके बीच से होकर चला गया। 31 और वह गलील के कफरनहूम नगर में आया और सब्त के दिन उन्हें उपदेश दिया। 32 और वे उसके उपदेश से चकित हुए; क्योंकि उसने अधिकार के साथ प्रचार किया। 33 और आराधनालय में एक मनुष्य अशुद्ध आत्मा के वश में था; उसने ऊँची आवाज़ में पुकारा,
34 "रुक जाओ, हे यीशु नासरी, तुम हम से क्या चाहते हो? आप हमें नष्ट करने आए हैं। मैं जानता हूँ कि तू कौन है: परमेश्वर का पवित्र। 35 तब यीशु ने उसे डांटकर कहा, "चुप रह, और उसमें से निकल आ। और दुष्ट आत्मा ने उसे उनके बीच में फेंक दिया, और उसमें से निकाल दिया, और उसकी कुछ हानि नहीं की। 36 और सब के सब पर भय छा गया, और वे आपस में कहने लगे, "यह क्या बात है? वह अशुद्ध आत्माओं को अधिकार और सामर्थ के साथ आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं। 37 और उसके चारों ओर के सब स्थानों में उसका समाचार फैल गया। 38 तब वह आराधनालय से निकलकर साइमन के घर आया। और शमौन की सास को तेज बुखार था, और उन्होंने उसके लिए उससे भीख मांगी। 39 और उस ने उसे दण्डवत् करके ज्वर की आज्ञा दी, और वह उसे छोड़ गया। और वह तुरंत उठकर उनकी सेवा करने लगी। 40 और जब सूर्य डूब गया, तो जितने लोग नाना प्रकार के दु:खों से बीमार थे, उन्हें उसके पास ले आए। और उस ने उन में से हर एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया। 41 बहुतों की दुष्ट आत्माएं चिल्लाने लगीं, कि तू परमेश्वर का पुत्र है। और उस ने उन्हें धमकाया, और उन्हें बोलने न दिया; क्योंकि वे जानते थे कि वह मसीह है। 42 और जब दिन हुआ, तो वह एक सुनसान जगह को निकल गया; और लोग उसे ढूंढ़ने लगे, और वे उसके पास आकर उसे मज़बूत कर दिया, ताकि वह उन्हें न छोड़े। 43 और उस ने उन से कहा, मुझे दूसरे नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करना अवश्य है; क्योंकि मुझे इसी के लिये भेजा गया है। 44 और वह यहूदिया के आराधनालयों में प्रचार करता था।

5 1 और ऐसा हुआ कि जब लोग परमेश्वर का वचन सुनने के लिए उसके पास भीड़ कर रहे थे, तो वह गलील सागर के किनारे खड़ा था,
2 और दो जहाजों को समुद्र के किनारे पड़ा देखा, और मछुआरे बाहर निकले थे और अपने जाल धो रहे थे।
3 तब वह शमौन के एक के जहाज पर चढ़कर उस से बिनती करने लगा, कि उस देश से थोड़ा दूर ले ले। और वह बैठ गया और जहाज से बाहर लोगों को सिखाया.
4 जब वह यह कह चुका, तो उसने शमौन से कहा, ऊंचे स्थानों पर चढ़ जा और अपने जाल डाल दे, कि तू आगे बढ़ सके।
5 शमौन ने उस को उत्तर दिया, कि हे गुरु, हम ने रात भर काम किया और कुछ नहीं पकड़ा; परन्तु तेरे वचन पर मैं जाल डालूंगा।
6 जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने बहुत सी मछलियाँ पकड़ीं, और उनके जाल टूटने लगे।
7 और उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरे जहाज में थे, आने और उनकी सहायता करने का संकेत दिया। और वे आए और दोनों जहाजों को पूरा भर दिया, ताकि वे डूब जाएं।
8 जब शमौन पतरस ने यह देखा तो वह यीशु के चरणों में गिर पड़ा और बोला, "प्रभु, यहाँ से निकल जा। मैं एक पापी व्यक्ति हूं।
9 क्योंकि उस पर और जितने लोग उसके संग थे, जो इस मछलियाँ पकड़ने की चढ़ाई में थे, उन सभों ने एक साथ भय छा लिया था;
10 वैसे ही याकूब और यूहन्ना भी शमौन के साथी जब्दी के पुत्र थे। यीशु ने साइमन से कहा, "डरो मत। क्योंकि अब से तुम पुरुषों को पकड़ोगे।
11 और वे जहाजों को भूमि से ले गए, और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
12 और ऐसा हुआ कि जब वह एक नगर में था, तो देखो, कोढ़ से भरा एक मनुष्य था। जब उसने यीशु को देखा तो वह मुँह के

बल गिर पड़ा और उससे विनती करने लगा, "हे प्रभु, यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है।
13 और उस ने हाथ बढ़ाकर उसे छूकर कहा, मैं यह काम करूंगा, और शुद्ध हो जाऊं। और तुरंत कोढ़ ने उसे छोड़ दिया।
14 और उसने उसे आज्ञा दी कि वह किसी से न बता। परन्तु जाओ और अपने आप को याजक को दिखाओ, और अपने शुद्धिकरण के लिए बलिदान करो, जैसा मूसा ने आज्ञा दी थी, कि उनकी गवाही हो।
15 परन्तु उसके विषय में समाचार दूर-दूर तक फैलता गया, और बहुत से लोग सुनने और उसके द्वारा अपके रोग से चंगे होने के लिथे इकट्ठे हुए।
16 परन्तु वह जंगल में भाग गया और प्रार्थना करने लगा।
17 और ऐसा हुआ कि एक दिन वह उपदेश दे रहा था, और फरीसी और शास्त्री बैठे थे, जो गलील और यहूदिया के सभी स्थानों से और यरूशलेम से आए थे । और प्रभु की शक्ति ने बीमारों को चंगा करने का काम किया।
18 और देखो, कुछ लोग एक आदमी को बिस्तर पर लाए जो गठिया से बीमार था, और उन्होंने उसे अंदर लाने और उसके सामने रखने की कोशिश की ।
19 और जब वे न समझ सके कि उसे लोगों के साम्हने से भीतर कैसे लाएं, तो छत पर चढ़ गए, और खंभों में से होकर बिछौना यीशु के साम्हने उनके बीच में रख दिया।
20 उनका विश्वास देखकर, उस ने उस से कहा; हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।
21 तब शास्त्री और फरीसी आपस में कहने लगे, "निन्दा करनेवाला वह कौन होता है? परमेश् वर को छोड़ और कौन पापों को क्षमा कर सकता है?
22 यीशु ने जब उन के विचार देखे तो उन से कहा, "तुम अपने दिल में क्या सोचते हो?
23 और यह कहना कि तेरे पाप क्षमा हुए, या यह कहना, कि उठ, चल फिर?
24 परन् तु जिस से तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को धरती पर पाप क्षमा करने का अधिकार है, तो उसने उस आदमी से जो गठिया से बीमार है, कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ, उठ, अपनी खाट उठा, और घर चला जा।
25 वह तुरन्त उन की आंखों के साम्हने उठा, और जिस खाट पर वह लेटा था, उसे उठाकर अपने घर जाकर परमेश्वर की स्तुति की।
26 तब सब चकित हुए और परमेश्वर की बड़ाई करने लगे, और बहुत डरकर कहने लगे, कि आज हम ने अनोखी बातें देखी हैं।
27 तब उस ने निकलकर लेवी नाम एक चुंगी लेनेवाले को खम्भे पर बैठे देखा, और उस से कहा, मेरे पीछे हो ले।
28 वह सब कुछ छोड़कर उठकर उसके पीछे हो लिया।
29 और लेवी ने उसके घर में उसके लिये बड़ी जेवनार तैयार की, और बहुत से चुंगी लेनेवाले और दूसरे उसके साथ भोजन करने बैठे।
30 तब फरीसी और उनके शास्त्री कुड़कुड़ाकर उसके चेलों से कहने लगे, "तुम चुंगी लेनेवालों और पापियों के संग क्यों खाते पीते हो?



31 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "स्वस्थ व्यक्ति को वैद्य की नहीं बल्कि बीमारों को वैद्य की आवश्यकता होती है।
32 मैं पापियों को मन फिराव के लिये बुलाने आया हूँ, धर्मियों को नहीं।
33 उन्होंने उस से कहा, यूहन्ना के चेले भी फरीसियों की नाई उपवास और प्रार्थना करते हैं, परन्तु तेरे चेले भी खाते पीते हैं।
34 मगर यीशु ने उनसे कहा, "जब दूल्हा उनके साथ है तो तुम शादी के जोड़े को उपवास नहीं कर सकते।
35 किन्तु वह समय आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा और तब वे उन दिनों में उपवास करेंगी।
36 और उस ने उन से एक दृष्टान्त-कथा कही, कि कोई नये वस्त्र का चीर फाड़कर पुराने वस्त्र में नहीं सुधारता, और न नया वस्त्र फाड़ता है, और नये वस्त्र का चिथड़ा पुराने को ठीक नहीं करता।
37 और कोई जवानी दाखमधु को पुरानी मशकों में नहीं डालता, नहीं तो जवानी दाखमधु खाल फाड़कर बिखर जाएगी, और खालें नाश हो जाएंगी।
38 परन्तु नया दाखमधु नई मशकों में डाला जाएगा।
39 और जो कोई पुराने में से पीता है, वह नया नहीं चाहता, क्योंकि वह कहता है, "पुराना हल्का है।

6 1 और सब्त के दिन ऐसा हुआ कि वह मकई के खेत से होकर गुजर रहा था; और उसके चेले अन्न के कान तोड़कर अपने हाथों से रगड़कर खाते। 2 कितने फरीसियों ने कहा, "तुम सब्त के दिन वह क्यों करते हो जो उचित नहीं है? 3 यीशु ने उन से कहा, क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने जब उसे और उसके साथियों को भूख लगी तो क्या किया? 4 जब उस ने परमेश्वर के भवन में जाकर भेंट की रोटी ली, और खाया, और जो उसके संग थे उन्हें भी दिया; जिसे खाने की अनुमति केवल पुजारियों के अलावा किसी को नहीं थी। 5 और उस ने उन से कहा, मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन भी प्रभु है। 6 अब एक और सब्त के दिन ऐसा हुआ कि वह आराधनालय में गया और उपदेश दिया। और एक आदमी था जिसका दाहिना हाथ सूख गया था। 7 परन्तु शास्त्री और फरीसी यह देखने के लिथे बाट जोहते रहे कि क्या वह सब्त के दिन चंगा करेगा, कि वे उसके विरुद्ध कुछ पाएं। 8 परन्तु उस ने उन के विचार सुने, और सूखे हाथ वाले पुरूष से कहा, उठकर निकल आ। और वह उठकर आगे बढ़ गया। 9 तब यीशु ने उनसे पूछा, "मैं तुमसे पूछता हूँ, सब्त के दिन अच्छा काम करना उचित है या बुरा?" जीवन को संरक्षित या खराब करने के लिए? 10 और उस ने उन चारों ओर दृष्टि करके उस पुरूष से कहा, अपना हाथ बढ़ा। और उसने वैसा ही किया, और उसका हाथ फिर उसके पास लाया गया। 11 मगर वे मूर्ख बन गए, और आपस में पूछने लगे कि यीशु के साथ क्या करने वाले हैं। 12 और ऐसा हुआ कि उस समय वह प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर जा रहा था; और वह परमेश्वर से प्रार्थना में रात भर रहा। 13 जब दिन हुआ, तो उसने अपने चेलों को बुलाकर उन में से बारह को चुन लिया, जिन्हें उस ने प्रेरित भी कहा: 14 शमौन, जिसे उस ने पतरस और अन्द्रियास को अपना भाई कहा; जेम्स और जॉन; फिलिप और बार्थोलोम्यू; 15 मत्ती और थोमा; हलफई और शमौन के पुत्र याकूब को जेलोतेस कहा जाता है; 16 याकूब का पुत्र यहूदा और यहूदा इस्करियोती ने बाद में उसे पकड़वाया। 17 और वह उनके संग उतरकर समतल मैदान में खड़ा हो गया। और उसके चारों ओर उसके चेलों की भीड़, और यहूदिया के सारे देश से, और यरूशलेम से, और सूर और सैदा के तट से लोगों की एक बड़ी भीड़ थी, 18 जो उसे सुनने आए थे, और ताकि वे अपने रोगों से चंगे हो सकें। और जो अशुद्ध आत्माओं के द्वारा चलाए गए थे वे चंगे हो गए। 19 और सब लोगों ने उसे छूना चाहा; क्योंकि उस में से शक्ति निकल गई, और सब को चंगा कर दिया। 20 और उस ने अपके चेलोंपर आंखें उठाकर कहा, धन्य हो तुम कंगाल; क्योंकि परमेश्वर का राज्य तेरा है। 21 धन्य हो तुम, जो यहां भूखे हो; क्योंकि तुम तृप्त हो जाओगे। धन्य हैं आप, जो यहां रोते हैं; क्योंकि तुम हँसोगे। 22 धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण तुम से बैर रखो, और तुम्हें निकाल दो, डांटो, और तुम्हारे नाम को बुरा मानकर ठुकरा दो। 23 उस दिन आनन्दित और आनन्दित हो; क्योंकि देखो, स्वर्ग में तेरा प्रतिफल महान है। उनके बापदादों ने भी नबियों के साथ ऐसा ही किया। 24 परन्तु इसके विरुद्ध तुम धनवान लोगों पर हाय! क्योंकि तुमने अपना आराम खो दिया है। 25 हाय तुम पर जो यहाँ तृप्त हो! क्योंकि तुझे भूख लगेगी। धिक्कार है आप पर जो यहाँ हँसते हैं! क्योंकि तुम रोओगे और रोओगे। 26 हाय तेरी पर, यदि सब लोग तेरे विषय में भला कहें! उनके बापदादों ने भी झूठे नबियों के साथ ऐसा ही किया। 27 परन्तु मैं तुम से जो सुनते हैं, कहता हूं, कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुमसे नफरत करते हैं उनका भला करो; 28 जो तुझे शाप देते हैं, उन्हें आशीष दो; उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो आपको ठेस पहुंचाते हैं। 29 और जो कोई तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे, वह दूसरा भी चढ़ा; और जो कोई तेरा लबादा ले, वह तेरा अंगरखा पहनने से मना न करना। 30 जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो कोई तेरी वस्तु ले ले, वह फिर न मांगना। 31 और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ करो। 32 और यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों से प्रेम रखो, तो तुम्हारा क्या धन्यवाद है? क्योंकि पापी भी अपने मित्रों से प्रेम रखते हैं। 33 और यदि तुम अपके उपकारों की भलाई करते हो, तो तुम्हारा क्या धन्यवाद है? क्योंकि पापी भी ऐसा ही करते हैं। 34 और यदि तुम उन्हें उधार देते हो जिनसे पाने की आशा रखते हो, तो तुम्हारा क्या धन्यवाद होगा? क्योंकि पापी भी पापियों को उधार देते हैं, ताकि वे फिर से वही ले सकें। 35 बल्कि अपने शत्रुओं से प्रेम करो; भला करो और जहां बदले में कुछ भी आशा नहीं रखते हो वहां उधार दो, और तुम्हारा प्रतिफल महान होगा, और तुम परमप्रधान के बच्चे होगे; क्योंकि वह कृतघ्न और दुष्टों पर कृपालु है। 36 जैसे तुम्हारा पिता दयालु है, वैसे ही दयालु बनो। 37 और दोष न लगाओ, तो तुम्हें दोषी नहीं ठहराया जाएगा। निंदा मत करो, तुम्हारी निंदा नहीं की जाएगी। क्षमा करें, और आपको क्षमा किया जाएगा। 38 प्रार्थना तो तुम्हें दी जाएगी। एक पूर्ण, दबाया हुआ, हिल गया, और बहता हुआ माप आपकी छाती में डाल दिया जाएगा; क्योंकि जिस माप से तुम मापते हो, उसी माप से तुम फिर से नापे जाओगे। 39 और उस ने उन्हें एक दृष्टान्त-कथा भी सुनाई: क्या अन्धा अन्धे को मार्ग दिखा सकता है? क्या वे दोनों गड्ढे में नहीं गिरेंगे? 40 चेला अपने स्वामी से ऊपर नहीं होता; यदि शिष्य सिद्ध है, तो वह अपने गुरु की तरह है। 41 परन्तु तू अपने भाई की आंख का तिनका क्यों देखता है, और वह लट्ठा तुझे अपनी आंख का लट्ठा क्यों नहीं दिखता? 42 तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि हे भाई, चुप रह, मैं तेरी आंख का तिनका निकाल लूंगा, और तू अपनी

ही आंख का लट्ठा न देखेगा? हे पाखंडी, पहले अपनी आंख से किरण निकालो और फिर यह देखना कि तुम अपने भाई की आंख से तिनका निकाल लो। 43 क्योंकि कोई अच्छा पेड़ नहीं जिस में सड़े हुए फल लगते हों, और न ही सड़ा हुआ पेड़ जो अच्छा फल लाए। 44 हर पेड़ अपने फल ही से पहचाना जाता है। क्योंकि कोई कांटों से अंजीर नहीं तोड़ता, और न बाड़ों से अंगूर तोड़ता है। 45 भला मनुष्य अपके मन के भण्डार से अच्छी-अच्छी बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य अपके मन के बुरे भण्डार से बुराई को निकालता है। जिसका दिल भरा होता है, उसके लिए मुंह उमड़ पड़ता है। 46 तुम मुझे प्रभु क्यों कहते हो, और जो मैं कहता हूँ वह नहीं चलता? 47 जो कोई मेरे पास आकर मेरी बातें सुनेगा और उन पर चलेगा, मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि वह कैसा है। 48 वह उस मनुष्य के समान है जिसने घर बनाया, गहिरा खोदा और चट्टान पर नींव डाली। लेकिन जब पानी की बाढ़ आई, तो नदी ने घर को तोड़ दिया, और इसे स्थानांतरित नहीं कर सका; क्योंकि यह अच्छी तरह से बनाया गया था। 49 किन्तु जो सुनता है और नहीं करता वह उस मनुष्य के समान है जिसने पृथ्वी पर बिना नींव के घर बनाया। और नदी उस पर टूट पड़ी, और वह तुरन्त गिर गई, और घर बहुत गिर गया।

7 1 यीशु लोगों से बातें करके कफरनहूम को गया। 2 और एक सूबेदार का दास, जिसे वह योग्य समझता था, बीमार पड़ा और मर गया। 3 परन्तु यीशु का समाचार सुनकर उसने यहूदियों के पुरनियों को उसके पास भेजा और उससे बिनती की, कि आकर अपने दास को चंगा करे। 4 परन्तु जब वे यीशु के पास आए, उन्होंने उससे यत्न से विनती की और कहा, "वह योग्य है कि तुम उसे यह दिखाओ; 5 क्योंकि वह हमारे लोगों से प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे लिये आराधनालय बनाया है। 6 किन्तु यीशु उनके साथ चला गया। परन्तु जब वह घर से दूर न था, तो सूबेदार ने उसके पास मित्रों को यह कहते हुए भेजा, "हे प्रभु, घबराहट न कर; मैं इस योग्य नहीं हूं कि तुम मेरी छत के नीचे जाओ; 7 इस कारण मैं ने अपने आप को तेरे पास आने के योग्य नहीं समझा; परन्तु एक बात कह, तब मेरा दास चंगा हो जाएगा। 8 क्योंकि मैं भी अधिकार के आधीन मनुष्य हूं, और मेरे आधीन सैनिक हैं; और मैं एक से कहता हूं, 'जाओ!' तो वह जाता है; और दूसरी ओर: यहाँ आओ! इसलिए वह आता है; और मेरे सेवक से, "यह करो। तो वह ऐसा करता है। 9 यीशु ने जब यह सुना तो वह उस पर चकित हुआ और अपने पीछे आनेवालों से कहा, "मैं तुम से कहता हूँ, मुझे सारे इस्राएल में ऐसा विश्वास नहीं मिला। 10 और जब दूत घर आए, तो उन्होंने दास को भला पाया। 11 और ऐसा हुआ कि वह नैन नामक एक नगर में गया; और उसके चेले उसके और बहुत से लोगों के साथ गए। 12 और जब वह नगर के फाटक के निकट पहुंचा, तो क्या देखा, कि एक मरा हुआ मनुष्य निकाला गया, जो अपक्की माता का एकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी। और नगर के बहुत से लोग उसके साथ गए। 13 जब प्रभु ने उसे देखा, तो वह उसके लिए विलाप करने लगा, और उसने उससे कहा, "मत रो। 14 और उस ने आकर ताबूत को छुआ, और ढोनेवाले खड़े थे। उसने कहा, "नवयुवक, मैं तुझसे कहता हूँ, उठ जा। 15 तब वह मरा हुआ खड़ा हुआ और बोलने लगा; और उसने उसे अपनी माँ को दे दिया। 16 और सब के सब लोग यह कहकर परमेश्वर की बड़ाई करने लगे, कि हमारे बीच एक बड़ा भविष्यद्वक्ता उठ खड़ा हुआ है, और परमेश्वर ने अपनी प्रजा की सुधि ली है। 17 और उसके विषय में यह बात सारे यहूदिया देश और आस-पास के सारे देशों में गूंज उठी। 18 उसके शिष्यों ने यूहन्ना को ये सारी बातें बतायीं। 19 और यूहन्ना ने अपने दो चेलों को अपने पास बुलाया और प्रभु के पास भेजकर बोला, "क्या तू ही आनेवाला है, या हम किसी और की बाट जोहेंगे?" 20 जब वे मनुष्य उसके पास आए, तो कहने लगे, "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने के लिये भेजा है, कि क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी और की बाट जोहते रहें? 21 और उसी घड़ी उस ने बहुतों को बीमारियों, और विपत्तियों और दुष्टात्माओं से चंगा किया, और बहुत से अन्धों को दृष्टि दी। 22 यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि तुम जाकर यूहन्ना से वह बातें कहो जो तुम ने देखी और सुनी हैं: अंधे देखते हैं, लंगड़े चलते हैं, कोढ़ी शुद्ध होते हैं, बहरे सुनते हैं, मरे जी उठते हैं, कंगाल सुसमाचार सुनाते हैं; 23 धन्य है वह, जो मुझे ठोकर नहीं देता। 24 मगर जब यूहन्ना के दूत चले गए, तो यीशु यूहन्ना के लोगों से कहने लगा: "तुम जंगल में क्यों गए हो? क्या आप हवा से हिलते हुए ईख देखना चाहते थे? 25 तुम क्या देखने गए थे? क्या आप एक आदमी को नरम कपड़ों में देखना चाहते थे? देखो, जो लोग सुन्दर वस्त्र पहनते हैं और ऐश्वर्य से रहते हैं, वे राजदरबार में हैं। 26 तुम क्या देखने गए थे? क्या आप एक भविष्यवक्ता को देखना चाहते हैं? हां, मैं तुमसे कहता हूं, वह एक नबी से भी बढ़कर है। 27 यह वही है जिस के विषय में लिखा है, कि देख, मैं अपना दूत तेरे आगे आगे भेजता हूं, जो तेरे आगे मार्ग सीधा करेगा। 28 मैं तुम से कहता हूं, कि जो स्त्री से उत्पन्न हुए हैं, उन में यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं; परन्तु जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उस से बड़ा है। 29 और जितने लोग उस की सुनते थे, और चुंगी लेनेवाले परमेश्वर से सहमत हुए, और यूहन्ना के बपतिस्मे से बपतिस्मा लिया। 30 मगर फरीसियों और शास्त्रियों ने परमेश्वर की मनमानी को तुच्छ

जाना और उस ने बपतिस्मा न लिया। 31 इस युग के मनुष्योंकी तुलना मैं किस से करूं, और वे किस के तुल्य हैं? 32 वे उन बालकों के समान हैं, जो बाजार में बैठकर एक-दूसरे को पुकारते हैं, कि हम तो तेरे लिथे खेले हैं, और तुम नाचते नहीं; हमने आपसे शिकायत की है, और आप रोए नहीं हैं। 33 क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आया और न रोटी खाई और न दाखमधु पीया; आप कहते हैं, 'वह ग्रसित है। 34 मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया है; तुम कहते हो, "देखो, मनुष्य पेटू और दाखमधु पीने वाला है, चुंगी लेने वाला और पापी मित्र है। 35 तौभी बुद्धि उसके सब पुत्रों के द्वारा धर्मी ठहरती है।
36 फरीसियों में से एक ने उससे विनती की कि वह उसके साथ भोजन करे। और वह फरीसी के घर में जाकर मेज पर बैठ गया। 37 और देखो, नगर में एक स्त्री थी जो पापी थी । जब उसने सुना कि वह फरीसी के घर में मेज पर बैठा है, तो वह एक गिलास इत्र ले आई, 38 और पीछे उसके पैरों के पास खड़ी हो गई, और रोने लगी, और उसके पैरों को आँसुओं से गीला करने लगी, और उन्हें अपने सिर के बालों से सुखाने लगी, और उसके पैरों को चूमा, और इत्र से उनका अभिषेक किया। 39 मगर जब फरीसी ने, जिसने उसे न्यौता दिया था, यह देखकर अपने आप से कहा, "अगर यह आदमी नबी होता, तो जानता कि यह किस और किस तरह की औरत को छू रहा है। क्योंकि वह पापी है। " 40 यीशु ने उत्तर दिया, "शमौन, मुझे तुझ से कुछ कहना है। उसने कहा, "गुरु, मुझे बता। 41 एक लेनदार था जिसके दो कर्ज़दार थे। एक पर पांच सौ चांदी का कर्ज था, दूसरे पर पचास। 42 किन्तु क्योंकि उन्हें भुगतान नहीं करना था, यीशु ने उन दोनों को दे दिया। मुझे बताओ, उनमें से कौन उसे सबसे ज्यादा प्यार करेगा? 43 साइमन ने उत्तर दिया, "मैं उसका सम्मान करता हूँ जिसे उसने सबसे अधिक दिया है। उस ने उस से कहा, तू ने ठीक न्याय किया है। 44 तब वह स्त्री की ओर मुड़ा और शमौन से बोला, क्या तू इस स्त्री को देख रहा है? मैं तेरे घर आया हूँ; तू ने मेरे पांवों के लिथे जल नहीं दिया; लेकिन उसने मेरे पैरों को आंसुओं से गीला कर दिया है और उन्हें अपने सिर के बालों से सुखा दिया है। 45 तूने मुझे चूमा नहीं; लेकिन बाद में, मेरे अंदर आने के बाद, मेरे पैरों को चूमना बंद नहीं किया। 46 तू ने मेरे सिर पर तेल नहीं लगाया; परन्तु उस ने मेरे पांवों का मलहम से अभिषेक किया है। 47 इसलिये मैं तुम से कहता हूँ कि इसके बहुत से पाप क्षमा हुए, इस कारण उसने मुझ पर बहुत प्रेम किया। परन्तु जिसे क्षमा किया जाता है वह थोड़ा प्रेम करता है। 48 और उस ने उस से कहा, तेरे पाप क्षमा हुए। 49 तब जो उनके साथ भोजन पर बैठे थे, वे आपस में कहने लगे, "यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है? 50 और उस ने स्त्री से कहा, तेरे विश्वास से तुझे सहायता मिली है; शांति से जाओ!

8 1 और ऐसा हुआ कि वह शहरों और गांवों में यात्रा कर रहा था, परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार और प्रचार कर रहा था, और बारह उसके साथ थे, 2 और कई महिलाएं जिन्हें उसने बुरी आत्माओं और बीमारियों से चंगा किया था, यहां तक कि मैरी, जिसका नाम मैग्डलीन है, जिससे सात आत्माएं निकली थीं, 3 और जोआना, चूसा की पत्नी, हेरोदेस के प्रबंधकों में से एक, और सुज़ाना, और कई अन्य जिन्होंने उन्हें अपने सामान का हाथ दिया। 4 जब बहुत से लोग इकट्ठे हुए, और नगरों से उसके पास फुर्ती से आए, तो उस ने दृष्टान्त में कहा, 5 एक बोनेवाला अपना बीज बोने निकला। और जब वह बो रहा था, तो कुछ मार्ग के किनारे गिर गए और पैरों के नीचे रौंद दिए गए, और आकाश के पक्षियों ने उन्हें खा लिया। 6 और कुछ चट्टान पर गिरे; और जब वह उठा, तो सूख गया, क्योंकि उसमें रस न था। 7 और कुछ झाड़ियोंमें गिरे; और कांटों ने उसके साथ चढ़कर उसका गला घोंट दिया। 8 और कुछ वस्तुएं अच्छे देश पर गिरी; और वह उग आया, और सौ गुणा फल उत्पन्न हुआ। यह कहकर वह चिल्ला उठा, "जिसके पास सुनने के लिये कान हों वह सुन ले। 9 उसके शिष्यों ने उससे पूछा कि यह दृष्टान्त क्या है। 10 और उस ने कहा, तुम्हें परमेश्वर के राज्य के भेदों को तो जानने को दिया गया है, परन्तु दूसरों को दृष्टान्तों में बताया गया है, ताकि वे उसे देखते हुए भी न देखें, और अब तक सुनें कि नहीं। 11 परन्तु दृष्टान्त यह है: बीज परमेश्वर का वचन है। 12 परन्तु जो मार्ग में हैं, वे सुनने वाले हैं; तब शैतान आकर उनके मन से वचन ले लेता है, ताकि वे विश्वास न करें और उद्धार पाएं। 13 परन्तु जो चट्टान पर हैं वे ये हैं: जब वे यह सुनते हैं, तो वे आनन्द के साथ वचन प्राप्त करते हैं। लेकिन उनकी कोई जड़ नहीं है; कुछ समय के लिए वे विश्वास करते हैं, और परीक्षण के समय वे दूर हो जाते हैं। 14 परन्तु जो झाड़ियों में गिरे वे हैं, जो सुनते हैं, और चिन्ताओं और धन और जीवन के सुख के बीच जाते हैं, और घुटते और फल नहीं लाते। 15 परन्तु जो अच्छे देश में हैं, वे वचन को सुनते हैं, और उसे भले और भले मन में रखते हैं, और धीरज से फल लाते हैं। 16 कोई दीवट जलाकर उसे बर्तन से न ढांपे, और न बेंच के नीचे रखे; परन्तु वह उसे दीवट पर रखता है, ताकि जो कोई प्रवेश करे वह ज्योति देखे। 17 क्योंकि ऐसा कुछ छिपा नहीं, जो प्रगट न हो, और न कोई भेद है, जो प्रगट न हो, और प्रगट न हो। 18 इसलिए देखो कि तुम कैसे सुनते हो। क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा; लेकिन जिसके पास नहीं है, यहां तक कि वह जो सोचता है कि उसके पास है, वह छीन लिया जाएगा।

19 और उसकी माता और भाई उसके पास गए, और लोगों के सामने उसके पास नहीं आ सके। 20 और उससे कहा गया, "तेरी माँ और तेरे भाई बाहर खड़े हैं और तुझे देखना चाहते हैं। 21 उसने उत्तर दिया, "मेरी माँ और मेरे भाई ये हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते और उस पर चलते हैं। 22 और एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने शिष्यों के साथ एक जहाज में चढ़ गया; और उस ने उन से कहा, आओ, हम झील पार करें। और उन्होंने जमीन से धक्का दिया। 23 जब वे गाड़ी चला रहे थे, तो वह सो गया। और समुद्र पर एक बवंडर आया, और लहरों जहाज भर गया, और वे बड़े खतरे में थे. 24 तब वे उसके पास गए और उसे जगाकर बोले, हे प्रभु, हम तो नाश हो रहे हैं। तब वह उठा और हवा और पानी की लहरों को धमकाया; और यह बंद हो गया, और एक चुप्पी बन गया। " 25 उसने उनसे कहा: "तुम्हारा विश्वास कहाँ है? और वे डर गए और चकित हुए और आपस में कहने लगे, "यह कौन है? हवा और पानी तक भी वह आज्ञा देता है, और वे उसकी आज्ञा मानते हैं। 26 और वे गलील के साम्हने गिरसेनियों के देश को गए। 27 और जब वह तट पर पहुंचा, तो उसे नगर के एक मनुष्य से भेंट हुई, जो बुरी आत्माओं से भरा हुआ था, और बहुत दिन तक वस्त्र न पहिनता था, और न किसी घर में, परन्तु कब्रिस्तान की गुफाओं में रहता था। 28 यीशु को देखकर वह चिल्लाया और उसके सामने गिर पड़ा और ऊंचे शब्द से पुकारकर बोला, "हे यीशु, परमप्रधान के पुत्र, तू मुझ से क्या चाहता है? मैं आपसे विनती करता हूं, आप मुझे पीड़ा नहीं देना चाहते हैं। 29 क्योंकि उस ने अशुद्ध आत्मा को मनुष्य में से मार डालने की आज्ञा दी थी। क्योंकि वह उसे बहुत दिन तक सताता रहा, और वह जंजीरों और बेड़ियों से बंधा हुआ था, और बन्धुआई में रखा गया था, और उसके बन्धन तोड़ डाले थे, और दुष्ट आत्मा के द्वारा जंगल में खदेड़ दिया गया था। 30 यीशु ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है? उसने कहा: सेना। क्योंकि बहुत सी बुरी आत्माएँ उसमें प्रवेश कर चुकी थीं। 31 और उन्होंने उस से बिनती की, कि वह हमें नरक में जाने के लिए न कहे। 32 पहाड़ के पास की चराई में सूअरों का एक बड़ा झुण्ड था। और उन्होंने उससे विनती की कि वह उन्हें प्रवेश करने की अनुमति दे। और उसने उन्हें ऐसा करने की अनुमति दी। 33 तब दुष्ट आत्माएँ मनुष्य में से निकलीं और सूअरों में चली गईं। और झुंड ने खुद को ढलान से झील में फेंक दिया और डूब गया। 34 मगर जब चरवाहों ने देखा कि क्या हो रहा है, तो वे भाग गए और शहर और गाँवों में इसका प्रचार किया। 35 सो वे जो कुछ हुआ था उसे देखने को निकले, और यीशु के पास आए, और उस मनुष्य को जिसके पास से दुष्ट आत्माएँ निकली थीं, यीशु के पांवोंके पास पहिने, विवेकशील, और भयभीत पाया। 36 और जिन्हों ने उसे देखा था, उन्होंने उन्हें ऐसा प्रचार किया, जैसे दुष्टात्मा से ग्रसित मनुष्य चंगे हो गया था। 37 और गिरासेनियों के आस-पास के देश की सारी भीड़ ने उस से बिनती की, कि वह उन से चला जाए; क्योंकि उस पर बड़ा भय छा गया था। और वह जहाज में कदम रखा और फिर से वापस कर दिया. 38 और जिस मनुष्य के पास से दुष्ट आत्माएँ निकली थीं, उसने उस से बिनती की, कि वह उसके साथ रहे। किन्तु यीशु ने उसे छोड़ दिया और कहा, 39 फिर घर जाओ और बताओ कि परमेश्वर ने तुम्हारे लिये कितने बड़े काम किये हैं। और वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा कि यीशु ने उसके लिये कितने बड़े बड़े काम किए हैं। 40 और ऐसा हुआ कि जब यीशु लौटा, तो लोगों ने खुशी से उसका स्वागत किया; क्योंकि वे सब उसकी बाट जोहते थे। 41 और देखो, याईर नाम का एक मनुष्य जो आराधनालय का सरदार था, आकर यीशु के पांवोंपर गिर पड़ा, और उससे बिनती करने लगा, कि उसके घर में आए; 42 क्योंकि उसकी एक इकलौती बेटी थी, जो लगभग बारह वर्ष की थी, जो उसके अंतिम पैरों में थी। और जैसे ही वह गया, लोगों ने उसके चारों ओर भीड़ लगा दी। 43 और एक स्त्री को बारह वर्ष तक लोहू बहता रहा; इसे कोई ठीक नहीं कर सका। 44 वह पीछे से उठी और उसके वस्त्र के सिरे को छू लिया; और तुरंत उसका खून बह निकला। 45 यीशु ने उनसे कहा, "किस ने मुझे छुआ है? लेकिन जब वे सब इससे इनकार करते हैं, तो पीटर ने कहा, "गुरु, लोग आपको दबा रहे हैं और दबा रहे हैं। 46 मगर यीशु ने कहा, "किसी ने मुझे छुआ है। क्योंकि मुझे लगा कि एक शक्ति ने मुझे छोड़ दिया है। 47 जब उस स्त्री ने देखा, कि वह छिपी नहीं है, तो वह कांपती हुई उसके साम्हने गिर पड़ी, और सब लोगों को यह भी बताने लगी कि मैं उसे छू चुकी हूं, और यह भी कि वह किस रीति से शीघ्र चंगी हो जाएगी। 48 उसने उससे कहा, "बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है। शांति से जाओ! 49 वह यह कह ही रहा था कि आराधनालय के प्रधान के सेवकों में से एक ने आकर उस से कहा, तेरी बेटी मर गई है; गुरु को परेशान मत करो। 50 यीशु ने यह सुनकर उस से कहा, मत डर; बस मेरा विश्वास करो, इस तरह वह ठीक हो जाएगी! 51 जब वह घर में आया, तो पतरस, यूहन्ना, याकूब और बालक के माता-पिता को छोड़ किसी को भी उसके साथ अंदर नहीं जाने दिया। 52 किन्तु वे सब उसके लिये रोए और विलाप करने लगे। किन्तु उसने कहा, "रोओ मत। वह मरा नहीं है, लेकिन वह सो रहा है। 53 और वे उस पर हँसे, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि वह मर गई है। 54 किन्तु उसने उसका हाथ पकड़ा और पुकारते हुए कहा, "हे बालक, उठ! 55 और उसका आत्मा फिर आया और वह तुरन्त उठ खड़ी हुई। और उसने उसे खिलाने का आदेश दिया। 56 उसके माता-पिता चकित हुए। किन्तु उसने उन्हें आज्ञा दी कि जो कुछ हुआ था वह किसी को न बताएँ।

9 1 और उसने बारहों को एक साथ बुलाकर उन्हें सब दुष्ट आत्माओं पर अधिकार दिया, और ताकि वे बीमारियों को चंगा कर सकें, 2 और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने और चंगा करने के लिए बाहर भेज दिया। 3 और उस ने उन से कहा, मार्ग में न तो लाठी, न थैली, न रोटी, न पैसे, और न किसी के पास दो अंगरखे हों। 4 और यदि तुम किसी घर में जाओ, जब तक आप आगे नहीं बढ़ जाते, तब तक वहीं रहें। 5 और यदि वे तुम्हें ग्रहण न करें, तो उसी नगर से निकल जा, और उनके विरुद्ध गवाही देने के लिये अपने पांवों की धूल झाड़ दे। 6 और वे निकलकर गांवोंमें फिरते हुए सुसमाचार का प्रचार करते और हर जगह चंगाई करते रहे। 7 और जो कुछ हुआ, वह सब चार हाकिमों हेरोदेस के साम्हने हुआ; और वह बेचैन हो गया, क्योंकि यह कुछ के बारे में कहा गया था, "यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा है; 8 परन्तु कितनों में से एलिय्याह प्रकट हुआ है; लेकिन कुछ में से, प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं में से एक जी उठा है। 9 हेरोदेस ने कहा, हे यूहन्ना, मैं ने उसका सिर काट दिया है; लेकिन यह कौन है जिसके बारे में मैं ये बातें सुनता हूं? और उसे देखने की इच्छा की। पाँच हजार 10 को खिलाकर प्रेरित फिर आए और उसे बताया कि उन्होंने कितने बड़े काम किए हैं। और वह उसे अपने साथ ले गया, और बेतसैदा नामक एक नगर में चला गया. 11 जब लोगों को उसकी जानकारी हुई, तो वे उसके पीछे हो लिए। और उस ने उन्हें अपने पास आने दिया, और उन्हें परमेश्वर के राज्य के बारे में बताया, और जिन्हें इसकी आवश्यकता थी उन्हें चंगा किया। 12 किन्तु दिन ढलने लगा। तब बारहों ने उसके पास आकर कहा, प्रजा के लोगों को अपने पास से छोड़ दे, कि वे आस-पास के गाँवों और खेतों में चले जाएं, कि उन्हें रहने और भोजन मिले; क्योंकि हम यहाँ जंगल में हैं। 13 उसने उनसे कहा, "उन्हें कुछ खाने को दो। उन्होंने कहा, "हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ नहीं हैं; जब तक हम इन सब लोगों के लिये भोजन मोल न लें; 14 क्योंकि वहाँ लगभग पाँच हजार पुरुष थे। और उसने अपने चेलों से कहा, "उन्हें पचास-पचास के समूह में बैठने दो। 15 और उन्होंने वैसा ही किया, और सब को लिटा दिया। 16 तब उस ने वे पांच रोटियां और दो मछिलयां लीं, और स्वर्ग की ओर दृष्टि करके उनका धन्यवाद किया, और तोड़कर चेलों को दे दिया, कि वे लोगों को भेंट करें। 17 और उन्होंने खाकर सब तृप्त हुए; और जो कुछ उनके टुकड़ों में से बचा था, उसे उठाया गया, बारह टोकरियां। 18 जब वह अकेला प्रार्थना कर रहा था, और केवल उसके चेले ही उसके साथ थे, तब उस ने उन से पूछा, कि लोग मुझे क्या कहते हैं? 19 उन्होंने उत्तर दिया, "वे कहते हैं कि तू यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है; परन्तु कुछ, तू एलिय्याह है; परन्तु कुछ, कि प्राचीन समय के भविष्यद्वक्ताओं में से एक जी उठा था। 20 उसने उनसे कहा, "तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूँ? पतरस ने उत्तर दिया, "तू परमेश्वर का मसीह है। 21 उसने उन्हें डाँटा और उन्हें आज्ञा दी कि वे किसी से बात न करें, 22 "मनुष्य के पुत्र को अवश्य है कि वह बहुत दुःख उठाएगा, और पुरनिये, महायाजकों और शास्त्रियों द्वारा उसे तुच्छ ठहराया जाएगा, और मार डाला जाएगा, और तीसरे दिन जी उठेगा। 23 फिर उसने सब से कहा, "जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप से इन्कार करे और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। 24 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। 25 क्योंकि मनुष्य को क्या लाभ होता यदि वह सारे जगत को प्राप्त कर ले, अपने आप को खो दे, या अपने आप को हानि उठाता? 26 परन्तु जो मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी अपनी महिमा में, और अपने पिता में, और पवित्र स्वर्गदूतों में आकर लजाएगा। 27 किन्तु मैं तुम से सच कहता हूँ, कि यहाँ खड़े लोगों में से कितने ऐसे भी हैं, जिन्हें जब तक परमेश्वर का राज्य न देख लें, मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे। 28 और इन बातों के बाद ऐसा हुआ कि वह पतरस, यूहन्ना और याकूब को अपने पास ले गया, और प्रार्थना करने के लिए एक पहाड़ पर चढ़ गया ।
29 जब वह प्रार्थना कर रहा था, तो उसके चेहरे का रूप बदल गया, और उसका वस्त्र श्वेत और चमकीला हो गया। 30 और देखो, दो व्यक्ति उससे बातें कर रहे थे, जो मूसा और एलिय्याह थे। 31 वे रूपान्तरित दिखाई दिए, और उस परिणाम के बारे में बात की जो उसे यरूशलेम में पूरा करना था। 32 परन्तु पतरस और उसके साथी नींद से भरे हुए थे। लेकिन जब वे जाग गए, तो उन्होंने देखा कि वह कैसे रूपांतरित हो गया था, और दो आदमी उसके पास खड़े थे। 33 और ऐसा हुआ कि जब वे उसके पास से जा रहे थे, पतरस ने यीशु से कहा, "गुरु, हमारे लिए अच्छा है कि हम यहां हैं । आओ हम तीन तम्बू बनाएं, एक तुम्हारे लिए, एक मूसा के लिए, और एक एलिय्याह के लिए। और वह नहीं जानता था कि वह क्या कह रहा था। 34 वह यह कह ही रहा था, कि एक बादल आया और उस पर छा गया; और जब बादल ने उन को ढांप लिया, तब वे घबरा गए। 35 और बादल में से यह वाणी निकली, कि यह मेरा चुना हुआ पुत्र है; आप इसे सुनेंगे! 36 जब यह शब्द आया तो उन्होंने यीशु को अकेला पाया। और वे चुप रहे और उन दिनों में किसी को नहीं बताया कि उन्होंने क्या देखा था। 37 और ऐसा हुआ कि दूसरे दिन जब वे पहाड़ से नीचे उतरे, तो बहुत से लोग उन से मिलने आए। 38 और देखो, लोगों में से एक मनुष्य चिल्लाकर कहने लगा, हे गुरु, मैं

तुझ से बिनती करता हूं, कि मेरे पुत्र की सुधि ले; क्योंकि वह मेरा इकलौता पुत्र है। 39 देखो, एक आत्मा उसे पकड़ लेती है, यहां तक कि वह अचानक चिल्लाता है, और उसे इधर-उधर झटके देता है, यहां तक कि वह झाग निकालता है, और जब वह उसे इस तरह से नष्ट कर देता है, तो उसे मुश्किल से छोड़ता है। 40 और मैं ने तेरे चेलों से कहा कि उसे निकाल दो, मगर वे न निकाल सके। 41 यीशु ने उत्तर दिया, "हे अविश्वासी और विकृत पीढ़ी, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हें सहता रहूँगा? अपने बेटे को यहाँ ले आओ! 42 जब वह उसके पास आया, तो दुष्ट आत्मा ने उसे फाड़कर ले गई। लेकिन यीशु ने अशुद्ध आत्मा को डांटा और लड़के को चंगा किया और उसे उसके पिता को वापस दे दिया। 43 और वे सब परमेश्वर की बड़ी शक्ति से चकित हुए। जब सब उसके कामों से चकित हुए, तो उसने अपने चेलों से कहा, 44 "यह वचन सुनो कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाना चाहिए। 45 परन्तु उन्होंने वचन को न समझा, और वह उन से छिपी रही, यहां तक कि वे उसे न समझे। और वे उससे यह शब्द पूछने से डरते थे। महत्वाकांक्षा और असहिष्णुता के खिलाफ, 46 लेकिन उनके बीच विचार आया कि उनमें सबसे बड़ा कौन है। 47 मगर जब यीशु ने उनके मन की बात जान ली तो उसने एक बच्चे को लिया और अपने पास रख लिया, 48 और उनसे कहा, "जो कोई मेरे नाम से इस बच्चे को स्वीकार करता है, वह मुझे स्वीकार करता है। और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है। क्योंकि जो तुम सब में छोटा है, वह महान है। 49 यूहन्ना ने उत्तर दिया, "गुरु, हम ने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो तेरे नाम से बुरी आत्माएँ निकालता है; और हमने उसका विरोध किया, क्योंकि वह हमारे साथ तुम्हारे पीछे नहीं चलता। 50 यीशु ने उससे कहा, "उसे मना मत कर। क्योंकि जो तुम्हारे विरोध में नहीं, वह तुम्हारे पक्ष में है। 51 और जब पूरा समय हो गया कि उसे यहां से ले जाया जाए, तो उस ने मुंह फेरकर सीधे यरूशलेम को चला गया। 52 और उस ने उसके आगे दूत भेजे; और वे जाकर सामरियों के एक गांव में आए, कि उन्होंने उसे रहने की आज्ञा दी। 53 और उन्होंने उसे ग्रहण न किया, क्योंकि उसने यरूशलेम को जाने के लिये मुंह फेर लिया था। 54 जब उसके शिष्यों याकूब और यूहन्ना ने यह देखा तो वे कहने लगे, "हे प्रभु, यदि तू चाहो तो हम कहेंगे कि आकाश से आग गिरती है और उन्हें भस्म कर देती है। 55 मगर यीशु ने पलटकर उन्हें धमकाया। 56 इंसान का बेटा इंसानों के प्राणों को नाश करने नहीं, बल्कि उनकी हिफाजत करने आया है> 57 तब वे दूसरे गाँव में चले गए। 58 यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के पास गड़हे होते हैं, और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के पास वह स्थान नहीं है जहां वह अपना सिर रखे है। 59 उसने दूसरे से कहा, "मेरे पीछे हो ले। किन्तु उसने कहा, "मुझे पहले जाने दो और अपने पिता को दफनाने दो। 60 यीशु ने उससे कहा, "मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे; परन्तु जाकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करो। 61 फिर दूसरे ने कहा, हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूंगा; लेकिन पहले मुझे उन लोगों की छुट्टी लेने की अनुमति दें जो मेरे घर में हैं। 62 यीशु ने उससे कहा, "जो कोई हल पर हाथ रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।

10 1 तब यहोवा ने और सत्तर को अलग करके उन सब नगरों और स्थानों में जहाँ वह जाना चाहता था, अपने सामने दो और भेज दिया, 2 और उनसे कहा, "पके तो बहुत हैं, मज़दूर थोड़े हैं। खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे। 3 जाओ; देख, मैं तुझे भेड़ियोंके बीच भेड़ के बच्चों के समान भेजता हूं। 4 थैला, थैला या जूते मत उठाओ और रास्ते में किसी का अभिवादन मत करो। 5 जब तुम किसी घर में आओ, तो पहिले यह कहना, 'इस भवन को शांति मिले। 6 और यदि कोई शान्ति का पुत्र हो, तो तेरी शान्ति उस पर बनी रहे; लेकिन यदि नहीं, तो आपकी शांति आपकी ओर वापस आ जाएगी। 7 परन्तु जो कुछ तुझे दिया जाता है उसे खाओ-पीओ उसी घर में रहो; क्योंकि मजदूर अपनी मजदूरी के योग्य है। तुम एक घर से दूसरे घर में नहीं जाओगे। 8 और जब तुम किसी शहर में पहुँचो और वे तुम्हें ले जाएँ, तो जो तुम्हारे सामने रखा गया है उसे खाओ, 9 और वहाँ के बीमारों को चंगा करो और उनसे कहो, 'परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ पहुँचा है। 10 मगर अगर तुम किसी ऐसे नगर में पहुँचो, जहाँ वे तुम्हें ग्रहण नहीं करते, तो उसकी सड़कों पर जाकर कहो, 11 जो धूल तुम्हारे नगर से हमारे पैरों पर लटकी है, उसे हम तुम पर झटक देंगे; परन्तु जान लो कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट है। 12 मैं तुम से कहता हूं, कि उस दिन सदोम की सहनशीलता उस नगर में अधिक सहनशील होगी। 13 हे चोराजीन, हाय तुझ पर! आप पर हाय, बेतसैदा! क्योंकि यदि सोर और सैदा के साथ ऐसे काम होते, जो तुम्हारे साथ हुए होते, तो वे बहुत पहले टाट और राख में बैठ जाते और पश्चाताप करते। 14 परन्तु न्याय में सूर और सैदा के लिये यह तुम्हारे लिये सहने से अधिक होगा। 15 और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग पर उठा लिया जाएगा? आप नरक में डाले जाओगे। 16 जो तुम्हारी सुनता है, वह मेरी सुनता है; और जो तुझ को तुच्छ जानता है, वह मुझे तुच्छ जानता है; परन्तु जो मुझे तुच्छ जानता है, वह मेरे भेजनेवाले को तुच्छ जानता है। 17 और सत्तर फिर आनन्द के साथ आए, और कहा, "हे प्रभु,

दुष्ट आत्माएँ भी तेरे नाम से हमारे वश में हैं। 18 उसने उनसे कहा, "मैंने शैतान को बिजली की तरह स्वर्ग से गिरते देखा। 19 देख, मैं ने तुझे साँपों और बिच्छुओं, और शत्रु के सारे अधिकार पर चलने का अधिकार दिया है; और कुछ भी आपको नुकसान नहीं पहुंचाएगा। 20 किन्तु इस बात से आनन्दित न हो कि आत्माएँ तुम्हारे अधीन हैं। परन्तु आनन्दित हो कि तेरे नाम स्वर्ग में लिखे गए हैं। 21 उसी घड़ी यीशु पवित्र शक् ति से बहुत खुश हुआ और उसने कहा, हे पिता, स् वर्ग-पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा बहिष् कार करता हूं कि तू ने ये बातें ज्ञानियों और सूझदारों से छिपा रखीं, और बालकों पर प्रगट की हैं। हाँ, पिताजी, तो यह आपको भाता था। 22 सब कुछ मेरे पिता ने मुझे सौंप दिया है। पुत्र कौन है, यह कोई नहीं जानता, सिवाय पिता के; न ही पिता कौन है, क्योंकि केवल पुत्र और जिसे पुत्र प्रकट करना चाहता है। 23 फिर वह विशेष रूप से अपने चेलों की ओर मुड़ा और बोला, "धन्य हैं वे आँखें, जो जो देखती हैं, जो देखती हैं। 24 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ तुम देखते हो उसे बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं ने देखना चाहा, परन्तु जो तुम सुनते हो उसे नहीं देखा, और जो सुनते हो उसे सुना, परन्तु नहीं सुना। 25 और देखो, एक शास्त्री खड़ा हुआ और उसकी परीक्षा करके कहा, "गुरु, अनन्त जीवन का अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ? " 26 उसने उससे कहा, "कानून में क्या लिखा है? आप कैसे पढ़ते हैं? 27 उस ने उत्तर दिया, कि तू परमेश्वर अपने यहोवा से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी शक्ति से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। 28 परन्तु उस ने उस से कहा, तू ने ठीक उत्तर दिया है; ऐसा करो, और तुम जीवित रहोगे। 29 मगर उसने अपने आप को धर्मी ठहराना चाहा, और यीशु से पूछा, "मेरा पड़ोसी कौन है?" 30 यीशु ने उत्तर दिया, "एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को गया, और डाकुओं के हाथ में पड़ गया; उन्होंने उसे निर्वस्त्र किया और पीटा और उसे अधमरा पड़ा छोड़ दिया। 31 और संयोग से ऐसा हुआ कि एक याजक उसी मार्ग से जा रहा था; और जब उसने उसे देखा, तो वह पास से चला गया। 32 वैसे ही एक लेवीवंशी भी; जब वह उस स्थान पर आया और उसे देखा, तो वह वहां से गुजरा। 33 और एक सामरी कूच करके वहां आया; 34 तब उस ने उसके पास जाकर उसके घावों पर तेल और दाखमधु उंडेल दिया, और उन पर पट्टी बान्धी, और उसे उसके पशु पर उठाकर एक सराय में ले गया, और उसकी दूध पिलाई। 35 दूसरे दिन उसने चाँदी के दो टुकड़े निकालकर सराय के मालिक को दे दिए और उससे कहा, "उसकी देखभाल कर, और यदि तू कुछ और दिखाए, तो जब मैं वापस आऊँगा तो मैं तुझे पैसे दूँगा। 36 तुम क्या समझते हो इन तीनों में से वह उस व्यक्ति के बाद दूसरा कौन था, जो लुटेरों में से मारा गया था? 37 उसने कहा, "जिसने उस पर दया की। " यीशु ने उससे कहा, "जा, तू भी ऐसा ही कर। 38 और ऐसा हुआ कि जब वे जा रहे थे, वह एक गांव में आया । मार्था नाम की एक स्त्री थी जो उसे अपने घर ले गई। 39 और उसकी एक बहिन थी जिसका नाम मरियम था; वह यीशु के चरणों में बैठ गई और उसका भाषण सुना। 40 किन्तु मारथा ने उसकी सेवा करने में बहुत कष्ट उठाया। और उसने पास आकर कहा, "हे प्रभु, क्या तू यह नहीं बिनती करता कि मेरी बहिन मुझे अकेले सेवा करने दे? उसे बताओ कि वह उस पर भी हमला करेगी! 41 किन्तु यहोवा ने उत्तर दिया और उससे कहा, "मार्था, मार्था, तुम्हें बहुत चिंता और परेशानी है। 42 किन्तु एक बात अवश्य है। मैरी ने अच्छा हिस्सा चुना है; उसे उससे दूर नहीं किया जाना चाहिए।

11 1 और ऐसा हुआ कि वह एक स्थान पर प्रार्थना कर रहा था । और जब वह रुक गया, तो उसके शिष्यों में से एक ने उससे कहा, "हे प्रभु, हमें प्रार्थना करना सिखा, जैसा यूहन्ना ने भी अपने चेलों को सिखाया था। 2 और उस ने उन से कहा; जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो, 'हे हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं। तेरा नाम पवित्र किया जाए। तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी हो। 3 हमारी दिन भर की रोटी हमें सदा के लिये दे। 4 और हमारे पापों को क्षमा कर; क्योंकि हम उन सभी को भी क्षमा करते हैं जो हमारे ऋणी हैं। और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा। 5 और उस ने उन से कहा, तुम में से ऐसा कौन है जिसका कोई मित्र हो, और आधी रात को उसके पास जाकर कहे, 'हे प्रिय मित्र, मुझे तीन रोटियां उधार दे; 6 क्योंकि मेरा मित्र यात्रा के मार्ग में मेरे पास आया है, और जो कुछ मैं ने उसके साम्हने रखा है, वह मेरे पास नहीं है। 7 और भीतर वाला कहेगा, "मुझे कष्ट न दे। दरवाजा पहले से ही बंद है, और मेरे छोटे बच्चे कमरे में मेरे साथ हैं; मैं उठकर आपको नहीं दे सकता। 8 मैं तुम से कहता हूं, और यदि वह उठकर उसे नहीं दे, क्योंकि वह उसका मित्र है, तो वह अपने ढीठ आग्रह के कारण अब भी उठ खड़ा होगा और उसे जितना चाहिए उतना उसे देगा। 9 और मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, और यह तुम्हारे लिए खोला जाएगा। 10 क्योंकि जो मांगता है उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाएगा वह खुल जाएगा। 11 तुम में से पुत्र अपने पिता से मछली कहां मांगेगा, और कौन उसे मछली के लिये सांप चढ़ाएगा? 12 या यदि वह अंडा मांगे तो बदले में उसे बिच्छू कौन देगा? 13 जब तुम बुरे अपने बच्चों को अच्छी सौगाहें दे सकोगे, तो स्वर्ग का पिता अपने मांगने वालों को पवित्र

आत्मा क्यों न देगा! 14 और उस ने एक दुष्ट आत्मा को जो गूंगी थी, निकाल दिया। और जब आत्मा निकली, तब गूंगा बोला। और लोग चकित थे। 15 उन में से कितनों ने कहा, वह अपने शासक बालजबूब के द्वारा दुष्ट आत्माओं को निकालता है। 16 मगर औरों ने उसकी परीक्षा की और उससे स्वर्ग से एक चिन्ह माँगा। 17 परन्तु वह उनके विचार जानता था, और उनसे कहता था, कि हर एक राज्य जब आपस में फूट पड़ता है, तो उजाड़ हो जाता है, और एक घर दूसरे पर आ पड़ता है। 18 मगर अगर शैतान भी उसके ही खिलाफ बंट जाए, तो उसका राज कैसे कायम रहेगा? क्योंकि तू कहता है कि मैं बालज़बूल के द्वारा दुष्ट आत्माओं को निकालता हूँ। 19 परन्तु यदि मैं बालजबूल के प्राण निकालूं, तो तेरे पुत्रोंने किस के द्वारा उन्हें निकाल दिया? इसलिए वे तुम्हारे न्यायाधीश होंगे। 20 किन्तु यदि मैं परमेश्वर की उंगलियों से बुरी आत्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है। 21 जब कोई बलवन्त मनुष्य हथियारों से अपने महल की रक्षा करता है, तब उसका अपना कुशल रहता है। 22 परन्तु यदि कोई बलवन्त उस पर चढ़ाई करके उस पर जय पाए, तो वह उसके उन हथियारों को छीन लेता है जिन पर वह भरोसा करता था, और लूट बांट देता है। 23 जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह तितर-बितर हो जाता है। 24 जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकलती है, तब सुनसान स्थानों में होकर विश्राम ढूंढ़ती है, परन्तु पाती नहीं; उस ने यों कहा, मैं अपने घर को जहां से आया था लौट जाऊंगा। 25 और जब वह आता है, तो उसे झाड़ा हुआ और सुशोभित पाता है। 26 तब वह जाकर सात और आत्माओं को जो अपने आप से भी बदतर हैं, अपने पास ले लेता है; और जब वे अंदर आते हैं, तो वे वहां रहते हैं, और बाद में यह उसी व्यक्ति के साथ पहले से भी बदतर होगा। 27 जब वह ये बातें कह ही रहा था, कि लोगों में से एक स्त्री ने ऊंचे शब्द से उस से कहा, धन्य है वह शरीर जो तुझे जन्म देता था, और वे छातियां जिन्हें तू ने चूसा था। 28 और उस ने कहा, धन्य हैं वे, जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते। 29 किन्तु लोग दबे रहे। फिर उसने शुरू किया और कहा, "इस पीढ़ी के लोग बुरे हैं; वह एक चिन्ह चाहता है, और उसे योना के चिन्ह के सिवा और कोई चिन्ह नहीं दिया जाता। 30 क्योंकि जैसे योना नीनवे के लोगों के लिये चिन्ह था, वैसे ही इस युग के लोगों के लिये मनुष्य का पुत्र ठहरेगा।

31 और दक्खिन देश की रानी इस पीढ़ी के लोगों के साथ अन्तिम न्याय में दिखाई देगी, और उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह जगत की छोर से सुलैमान की बुद्धि सुनने को आई थी। और देखो, यहाँ सुलैमान से भी अधिक है। 32 नीनवे के लोग न्याय के समय इस पीढ़ी के लोगों के साथ खड़े होकर दोषी ठहराएंगे; क्योंकि उन्होंने योना के प्रचार के बाद मन फिराया। और देखो, यहाँ योना से भी बढ़कर भी है। 33 कोई दीवट जलाकर कोने में नहीं रखता, वरन बुशल के नीचे नहीं, परन्तु दीवट पर, ताकि जो भीतर जाए वह ज्योति को देखे। 34 तेरी आँख शरीर का दीपक है। इसलिए यदि आपकी आंख शुद्ध है, तो आपका पूरा शरीर हल्का है; लेकिन अगर आपकी आंख बुरी है, तो आपका शरीर भी अंधेरा है। 35 इसलिए चौकस रहो कि तुममें जो रौशनी है, वह अन्धकार न हो। 36 सो अगर तेरा शरीर पूरी तरह से उजियाला है, और उसमें अन्धकार का कोई हिस्सा नहीं है, तो वह वैसा ही उजियाला होगा जैसा कोई रौशनी चमकती हुई तुझे प्रकाशित करती है। फरीसियों और शास्त्रियों के खिलाफ 37 जब वह बोल ही रहा था कि एक फरीसी ने उससे दोपहर का भोजन उसके साथ खाने को कहा। और वह अंदर जाकर टेबल पर बैठ गया। 38 जब फरीसी ने यह देखा तो वह चकित रह गया कि उसने खाने से पहले नहाना छोड़ दिया था। 39 और यहोवा ने उस से कहा, हे फरीसियों, प्यालों और बर्तनों को मन से शुद्ध रख; लेकिन आपका आंतरिक भाग डकैती और दुष्टता से भरा है। 40 हे मूर्खों, क्या जिसने बाहर की सृष्टि की, उसने भीतर की भी सृष्टि नहीं की? 41 जो भीतर है उसे दान दो, देखो, और तुम्हारे पास सब कुछ शुद्ध होगा। 42 परन्तु हाय तुम फरीसियों, कि तुम पुदीने और रू और सब गोभी का दशमांश दो, और परमेश्वर के न्याय और प्रेम को मानते हो! यह किया जाना चाहिए और वह नहीं। 43 हाय तुम फरीसियों, कि तुम आराधनालयों के सिरहाने बैठना पसन्द करते हो और बाजार में नमस्कार पाओ! 44 हाय तुम पर कि तुम उन छिपी हुई कब्रों के समान हो, जिन पर लोग चलते रहते हैं और उसे नहीं जानते। 45 इस पर शास्त्रियों में से एक ने उस को उत्तर दिया, कि हे स्वामी, तू भी इन बातों से हमारी निन्दा करता है। 46 परन्तु उस ने कहा, हे शास्त्रियों, तुम पर भी हाय! क्योंकि तुम मनुष्यों पर असहनीय बोझ का बोझ डालते हो, और आप ही उन्हें उंगली से नहीं छूते। 47 हाय तुम पर! क्योंकि तुम भविष्यद्वक्ताओं के लिये कब्रें बनाते हो; किन्तु तुम्हारे पुरखाओं ने उन्हें मार डाला। 48 इसलिथे तुम अपके पुरखाओं के कामोंपर गवाही देते और ग्रहण करते हो; क्योंकि उन्होंने उन्हें मार डाला, और तुम उनके लिये कब्रें बनाते हो। 49 इसलिए परमेश्वर की बुद्धि कहती है, "मैं उनके पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूँगा, और उनमें से कुछ उन्हें मार डालेंगे और सताएँगे, 50 ताकि दुनिया की नींव के समय से जो खून बहाया गया है, वह सभी भविष्यद्वक्ताओं की इस पीढ़ी से माँगा जाए, 51 हाबिल के खून से लेकर जकर्याह के खून तक, जो वेदी और मंदिर के बीच में नष्ट हो गया था। हां, मैं तुमसे कहता हूं, कि इस पीढ़ी से इसकी मांग की जाएगी।

52 हे शास्त्रियों, तुम पर हाय! क्योंकि तुमने ज्ञान की कुंजी छीन ली है। आपने अंदर जाकर उन लोगों का विरोध नहीं किया जो प्रवेश करना चाहते थे। 53 जब वह वहाँ से चला गया, तो शास्त्री और फरीसी उसे बहुत जोर से दबाने लगे और तरह-तरह के सवालों के साथ उससे पूछताछ करने लगे, 54 और उसकी बाट जोहने लगे कि क्या वे उसके मुँह से कुछ निकाल सकते हैं।

12 1 इसी बीच लोग दौड़कर उनके पास आए, और बहुत से हजार इकट्ठे हो गए, यहां तक कि वे एक दूसरे को रौंदने लगे। फिर उसने शुरू किया और अपने चेलों से कहा, "फरीसियों के खमीर से सावधान रहो, जो कपटी है। 2 परन्तु ऐसा कुछ छिपा नहीं, जो प्रगट न हो, और न ऐसा भेद जो न जाना जाए। 3 सो जो कुछ तुम अन्धकार में कहते हो वह उजाले में सुना जाएगा; कक्षों में आप अपने कान में जो कहेंगे वह छतों पर चिल्लाया जाएगा। 4 किन्तु मेरे मित्रों, मैं तुमसे यह कहता हूँ कि तुम उन लोगों से मत डरो जो शव को घात करते हैं और उसके बाद कुछ नहीं कर सकते। 5 परन्तु मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि तुम्हें किस से डरना चाहिए: उस से डरो, जो घात करने के बाद नरक में डालने का भी अधिकार रखता है। हां, मैं तुमसे कहता हूं, उससे डरो। 6 क्या तू दो पैसे में पाँच गौरैयों को नहीं बेचता है? फिर भी, उनमें से एक को भी परमेश्वर के सामने भुलाया नहीं गया है। 7 किन्तु तुम्हारे सिर के सारे बाल गिने हुए हैं। इसलिथे मत डरो; तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो। 8 परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, कि जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा, मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के दूतों के साम्हने उसे मान लेगा। 9 परन्तु जो कोई मनुष्यों के साम्हने मेरा इन्कार करेगा, उसका परमेश्वर के दूतों के साम्हने इन्कार किया जाएगा।

10 और जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कुछ कहेगा, उसे क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो पवित्र आत्मा की निन्दा करता है, उसे क्षमा नहीं किया जाएगा। 11 परन्तु यदि वे तुम्हें अपने आराधनालयों में, अधिकारियों और हाकिमों के साम्हने ले जाएं, तो चिन्ता न करो कि तुम कैसे और क्या उत्तर दोगे या क्या कहोगे। 12 क्योंकि पवित्र आत्मा उस समय तुम्हें शिक्षा देगा। 12 क्योंकि पवित्र आत्मा उस समय तुम्हें शिक्षा देगा। क्या कहना है। 13 उनमें से एक ने उससे कहा, "गुरु, मेरे भाई से कह कि विरासत मेरे साथ साझा करता है। 14 उस ने उस से कहा; हे मनुष्य, किस ने मुझे तुझ पर न्यायी या वारिस ठहराया? 15 उस ने उन से कहा, चौकस रहो, और सब लोभ से चौकस रहो; क्योंकि कोई भी बहुत सी वस्तुओं के होने से जीवित नहीं रहता है। 16 और उस ने उन्हें एक दृष्टान्त-कथा सुनाई, कि एक धनवान मनुष्य था, खेत अच्छी तरह से उगाया गया था। 17 उस ने सोचा, मैं क्या करूं? मेरे पास अपने फल इकट्ठा करने के लिए जगह नहीं है। 18 और उसने कहा, "मैं यह करूँगा: मैं अपने खलिहान तोड़ दूँगा और बड़े खलिहान बनाऊँगा, और उन में अपना सारा अनाज और अपनी संपत्ति इकट्ठा करूँगा, 19 और मैं अपनी आत्मा से कहूँगा, 'प्रिय आत्मा, तेरे पास कई वर्षों से एक बड़ा भण्डार है; अब शान्ति करो, खाओ, पीओ और ढाढ़स बान्धो! 20 किन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, "अरे मूर्ख! आज रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; और यह क्या होगा जो आपने तैयार किया है? 21 ऐसा ही उन लोगों के साथ भी है जो अपने लिये धन इकट्ठा करते हैं और परमेश्वर के लिए धनी नहीं होते। 22 और उसने अपने शिष्यों से कहा, "इसीलिये मैं तुमसे कहता हूँ, अपने जीवन की चिंता मत करो कि तुम क्या खाओगे और क्या खाओगे, अपने शरीर की चिंता मत करो कि तुम क्या पहनोगे। 23 जीवन भोजन से अधिक है, और शरीर कपड़ों से अधिक है। 24 कौवों को देखो, वे न बोते, न काटते, न तहखाने होते और न खलिहान, तौभी परमेश्वर उन्हें खिलाता है। आप पक्षियों की तुलना में कितने अधिक हैं! 25 तुम में से कौन है, क्या वह पहले से ही चिन्ता कर रहा है, और कौन है जो उसके जीवन की लम्बाई में कुछ बढ़ा सकता है? 26 जब तुम छोटे से छोटा काम नहीं कर सकते, तो दूसरे की चिंता क्यों करते हो? 27 सोसन के फूलों को देखो, वे कैसे न तो सूसन के पेड़ काटते हैं और न बुनते हैं। परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान ने अपनी सारी महिमा में उन की नाईं वस्त्र पहिने हुए नहीं थे। 28 यदि परमेश्वर उस घास को जो आज मैदान में है पहिनाता है, और कल कुण्डर में झोंका जाएगा, तो हे अल्पविश्वासियों, वह तुझे कितना अधिक पहिनाएगा! 29 सो तुम भी मत पूछो कि तुम्हें क्या खाना चाहिए और क्या पीना चाहिए और न घबराओ। 30 ये सब वस्तुएं जगत की जातियां ढूंढ़ती हैं; किन्तु तुम्हारे पिता अच्छी तरह जानते हैं कि तुम्हें इसकी आवश्यकता है। 31 मगर उसके राज्य की खोज करो तो ये सब चीज़ें भी तुम्हें मिल जाएंगी। 32 हे छोटे झुण्ड, मत डर। क्योंकि यह तुम्हारे पिता की प्रसन्नता है कि वह तुम्हें राज्य दे। 33 तुम्हारे पास जो कुछ है उसे बेच दो और भिक्षा दो। अपने लिए बैग बनाओ जो अप्रचलित नहीं हो जाते हैं, एक खजाना जो स्वर्ग में कभी कम नहीं होता है, जहां कोई चोर नहीं आता है और पतंगे नहीं खाते हैं। 34 क्योंकि चूंकि जहां आपकी बहुमूल्य निधि है, वहीं आपका दिल भी होगा। 35 तुम्हारी कमर बाँधी जाए और तुम्हारी मोमबत्तियाँ जलती रहें 36 और उन आदमियों की तरह बनो जो अपने रब की बाट जोहते रहते हैं कि जब वह शादी से चला जाए तो जब वह आकर खटखटाए, तो वे फौरन उसके लिए खुल

जाएँ। 37 धन्य हैं वे दास, जिन्हें स्वामी जब आता है, जागता पाता है। मैं तुम से सच कहता हूं, कि वह अपना झोली बान्धकर उन्हें भोजन पर बैठाएगा, और उनके पास आकर उनकी सेवा करेगा। 38 और जब वह दूसरे पहर और तीसरे पहर में आकर ऐसा पाता है, तो धन्य हैं ये दास। 39 मगर यह जान लो, कि अगर घरवाले को पता होता कि चोर किस घड़ी आनेवाला है, तो वह अपने घर में सेंध न लगवाता। 40 इसलिए तुम भी तैयार रहो। क्योंकि मनुष्य का पुत्र उस घड़ी में आ रहा है, जब तुम ऐसा सोचते भी नहीं। 41 पतरस ने उससे कहा, "हे प्रभु, तू यह दृष्टान्त हम से कह रहा है कि हम से वा सब को? 42 यहोवा ने कहा, वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिसे यहोवा अपने दासों पर प्रधान ठहराता है, कि उन्हें उचित समय पर वह दे, जो उनका देय है? 43 धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी अपने आने पर ऐसा करता पाए। 44 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति पर अधिक्कारनी ठहराएगा। 45 मगर अगर वही दास अपने दिल में कहे, 'मेरा मालिक आने वाला है,' और नौकरों और नौकरानियों को पीटना शुरू कर दे, और खाना-पीना और मतवाला हो जाना, 46 तो उसी दास का मालिक उस दिन आएगा जिस दिन उसे पता नहीं होगा, और जिस घड़ी वह नहीं जानता, और उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा, और उसे अविश्वासियों के साथ उसका इनाम देगा। 47 परन्तु जो दास अपने स्वामी की इच्छा को जानता है, परन्तु जिसने न तो कुछ तैयार किया है और न अपनी इच्छा के अनुसार किया है, उसे बहुत पक्के लगेंगे। 48 परन्तु जो इसे नहीं जानता, और जो आघात के योग्य काम करता है, उसे थोड़े ही आघात सहने पड़ते हैं। क्योंकि उसे बहुत कुछ दिया गया है, उससे बहुत मांगा जाएगा; और जिस को बहुत आज्ञा दी जाती है, उससे बहुत मांगा जाएगा। 49 मैं पृथ्वी पर आग जलाने आया हूं; मैं इसे जलाने के बजाय क्या करूंगा! 50 लेकिन मुझे पहले बपतिस्मा से बपतिस्मा लेना चाहिए, और जब तक यह पूरा नहीं हो जाता तब तक मैं कितना चिंतित हूं! 51 क्या तुम्हें लगता है कि मैं धरती पर शांति लाने आया हूँ? मैं कहता हूं: नहीं, लेकिन कलह। 52 क्योंकि अब से एक घर में पांच विषम होंगे, तीन दो के विरोध में, और दो तीन के विरोध में। 53 पिता पुत्र के विरोध में, और पुत्र पिता के विरोध में, माता बेटी के विरोध में, बेटी के विरोध में बेटी होगी, बेटी के विरोध में बेटी होगी, बहू के विरोध में सास और सास के विरोध में बहू होगी। 54 और उसने लोगों से कहा, "जब तुम बादल को पश्चिम से उठते देखोगे, तो तुरन्त कहोगे, 'मेंह बनने वाला है। और ऐसा ही होता है। 55 और जब तुम दक्षिणी हवा को बहते देखते हो तो कहते हो, 'गर्मी होगी। और ऐसा ही होता है। 56 हे कपटियों! तू जानता है कि पृथ्वी और आकाश के रंग-रूप को कैसे परखा जाता है; लेकिन आप इस बार परीक्षण कैसे नहीं करते हैं? 57 तुम अपने आप को क्यों नहीं देखते कि उचित क्या है? 58 क्योंकि जब तू अपके विरोधी के संग हाकिम के साम्हने जाए, तो उस से छुटकारा पाने के लिथे परिश्रम करना, ऐसा न हो कि वह तुझे न्यायी के साम्हने ले आए, और न्यायी तुझे जमानतदार के वश में कर दे, और दास तुझे बन्दीगृह में डाल दे। 59 मैं तुमसे कहता हूँ, तुम वहाँ से तब तक नहीं हटोगे जब तक कि तुम अंतिम राशि का भुगतान न कर दो।

## 13

1 उस समय उन में से कितने ऐसे थे, जिन्होंने उसे गलीलियों के विषय में बताया, जिनका लोहू पीलातुस ने उनके बलिदान के साथ मिला दिया था।

2 यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तुम सोचते हो कि ये गलीली अन्य सभी गलीलियों से अधिक पापी थे, क्योंकि उन्होंने यह दुख उठाया?

3 मैं तुम से कहता हूं, नहीं, परन्तु यदि तुम मन फिराओ नहीं, तो तुम सब उसी रीति से नाश हो जाओगे।

4 क्या सोचते हो, कि जिन अठारहों पर शीलोह का गुम्मट गिरा और उन्हें घात किया, वे यरूशलेम में रहनेवाले सब मनुष्यों से अधिक अपराधी हैं?

5 मैं तुम से कहता हूं, नहीं, परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे, तो तुम सब उसी रीति से नाश हो जाओगे।

6 और उस ने उन्हें यह दृष्टान्त-कथा सुनाई, कि एक मनुष्य ने अपनी दाख की बारी में अंजीर का वृक्ष लगाया हुआ था, और उस पर फल ढूंढ़ने लगा, परन्तु न पाया।

7 तब उसने दाख की बारी के बागवानों से कहा, सुन, मैं इस अंजीर के पेड़ पर फल ढूंढ़ने के लिये तीन वर्ष प्रति वर्ष आता हूं, परन्तु मुझे फल नहीं मिलता। उसे काट दो! वह देश को क्या बाधा डाल रहे हैं?

8 मगर उसने जवाब दिया, "हे प्रभु, उसे इसी साल छोड़ दे, जब तक कि मैं उसे खोदकर खाद न दे

और 9 अगर वह अब भी फल देना चाहे तो उसे काट डाल।

10 और वह सब्त के दिन आराधनालय में उपदेश देता था।

11 और देखो, एक स्त्री थी जिसे अठारह वर्ष से रोगी की आत्मा थी, और वह झुकी हुई थी, और खड़ी नहीं हो सकती थी ।

12 यीशु ने उसे देखकर उसे अपने पास बुलाया और कहा, "हे स्त्री, अपनी बीमारी से छुटकारा पा।
13 तब उस ने उस पर हाथ रखे और वह तुरन्त उठकर परमेश्वर की स्तुति करने लगी।
14 तब आराधनालय के सरदार ने यीशु के सब्त के दिन चंगा होने पर क्रोधित होकर लोगों से कहा, उन्हें छः दिन काम करना है; आकर उन पर चंगे हो जाओ, परन्तु सब्त के दिन नहीं।
15 तब यहोवा ने उसे उत्तर दिया, "अरे कपटियों! क्या तुम में से हर एक सब्त के दिन चरनी में से अपने बैल या गदहे को खोलकर पानी के स्थान पर नहीं लाता?
16 तो क्या यह जो इब्राहीम की बेटी है, जिसे शैतान ने अठारह वर्ष से बाँध रखा था, सब्त के दिन इस बन्धन से मुक्त न हो जाए?
17 जब उसने यह कहा, तो जितने उसे नापसंद करते थे, वे सब लज्जित हुए। और सब लोग उन सब महिमामय कामों से जो उसके द्वारा किए गए थे, आनन्दित हुए।
18 उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य किसके समान है, और मैं उसकी तुलना किस से करूँ?
19 वह राई के दाने के समान है, जिसे मनुष्य लेकर अपनी बारी में फेंक दिया, और वह बढ़कर वृक्ष हो गया, और आकाश के पक्षी उसकी डालियोंके बीच बसेरा करने लगे।
20 उस ने फिर कहा, परमेश्वर के राज्य की उपदृष्टि मैं किस से दूं?
21 वह खमीर के समान है, जिसे स्त्री ने लेकर तीन बुशल मैदा तब तक मिलाया जब तक कि वह पूरी तरह खमीर न हो जाए।
22 और वह उपदेश करते हुए नगरोंऔर गाँवों में फिरता हुआ यरूशलेम को चला गया।
23 एक ने उससे कहा, "प्रभु, क्या तू समझता है कि कुछ ही उद्धार पाएंगे? उसने उनसे कहा,
24 "सकेत फाटक से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि बहुत से लोग यह खोज करेंगे कि कैसे प्रवेश किया जाए, और ऐसा नहीं कर सकेंगे।
25 तब जब घर का स्वामी उठकर द्वार बन्द कर ले, और तू बाहर खड़ा होकर द्वार खटखटाकर कहने लगे, हे प्रभु, हमारे लिये द्वार खोल दे, तब वह तुझ को उत्तर देगा, कि मैं नहीं जानता कि तू कहां से आया है।
26 तब तुम कहने लगोगे, 'हमने तेरे सामने खाया पिया और तूने हमारी गलियों में शिक्षा दी।
27 और वह तुम से कहेगा, 'मैं नहीं जानता कि तुम कहां से आए हो; हे सब कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ।
28 जब तुम इब्राहीम, इसहाक, याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में देखोगे, तब रोना और दांत पीसना होगा, परन्तु तुम निकाल दिए जाओगे।
29 और ईस्टर और पश्चिम से, उत्तर से और दक्षिण से भी आयेंगे, जो परमेश्वर के राज्य में मेज पर बैठेंगे।
30 और देखो, वे पिछले हैं, वे पहले होंगे, और वे पहले हैं, वे पिछले होंगे। हेरोदेस की शत्रुता।
31 उसी समय कुछ फरीसी आए और उससे कहने लगे, "चला जा, चला जा, क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है।
32 और उसने उनसे कहा, "जाओ और इस लोमड़ी से कहो, 'देखो, मैं आज और कल बुरी आत्माओं को निकालकर चंगा करता हूँ, और तीसरे दिन मैं अपने गंतव्य पर पहुँचूँगा।
33 किन्तु आज, कल और परसों मुझे अवश्य है, क्योंकि किसी भविष्यद्वक्ता का यरूशलेम के बाहर मरना उचित नहीं।
34 हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, हे भविष्यद्वक्ताओं को घात करनेवालो, और जो तुम्हारे पास भेजे गए हैं, उन पर मैं ने कितनी ही बार चाहा कि तुम्हारे लड़केबालोंको इकट्ठा करूं, जैसे मुर्गी अपके पंखों के नीचे अपना घोंसला बटोरती है, और तू ने नहीं चाहा।
35 देख, तेरा घर तेरे लिथे उजाड़ छोड़ दिया जाएगा। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक वह समय न आए जब तक तुम कहोगे, 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है।

14 1 और ऐसा हुआ कि वह सब्त के दिन फरीसियों के एक शासक के घर रोटी खाने के लिए आया, और वे उसकी प्रतीक्षा में लेट गए। 2 और देखो, उसके सामने एक आदमी था जो जलोदर था। 3 और यीशु ने उत्तर दिया और शास्त्रियों और फरीसियों से कहा, "सब्त के दिन चंगा करना सही है या नहीं?" 4 लेकिन वे चुप थे । और उसने उसे पकड़ लिया और उसे चंगा किया और उसे जाने दिया। 5 उस ने उन से पूछा; तुम में ऐसा कौन है जिसका पुत्र या बैल कुएं में गिर पड़े और सब्त के दिन वह तुरन्त उसे बाहर न निकाले? " 6 परन्तु वे उसे उत्तर न दे सके। 7 और उसने मेहमानों से एक

दृष्टान्त कहा, जब उसने देखा कि वे सबसे ऊपर बैठने की कोशिश कर रहे हैं, और उनसे कहा, 8 यदि तुम्हें विवाह में किसी के द्वारा आमंत्रित किया जाता है, तो सिर पर मत बैठो, ऐसा न हो कि तुमसे अधिक रईस को उसके द्वारा आमंत्रित किया जाए, 9 और फिर वह आ जाए जिसने तुम्हें और उसे आमंत्रित किया है। और अपने आप से कहो, 'इसे रास्ता दो। और फिर आपको शर्म के साथ नीचे बैठना चाहिए। 10 परन्तु जब तुझे बुलाया जाए, तो जा, बैठना, ताकि जब तेरे निमंत्रित करनेवाला आए तो तुझ से कहे, कि हे मित्र, ऊपर जा। तब तुम उन लोगों के साम्हने आदर पाओगे जो तुम्हारे साथ मेज पर बैठते हैं। 11 क्योंकि जो अपने आप को बड़ा करे वह दीन किया जाए; और जो अपने आप को दीन बनाएगा, वह ऊंचा किया जाएगा। 12 फिर उसने अपने निमंत्रित करनेवाले से कहा, यदि तू भोजन या भोज करे, तो न अपने मित्रों, न भाइयों, न कुटुम्बियों, और न धनवान पड़ोसियों को न बुलाना, ऐसा न हो कि वे तुझे फिर बुलाकर प्रतिफल दें। 13 मगर जब तुम खाना खाओ, तो कंगालों, अपाहिजों, लंगड़ों और अंधों को बुलाओ, 14 और तुम धन्य होगे क्योंकि वे तुम्हें बदला देने की कोई इच्छा नहीं रखते। परन्तु धर्मियों के पुनरुत्थान में तुम्हें प्रतिफल मिलेगा। 15 जब एक व्यक्ति जो मेज पर बैठा था, उसने यह सुनकर उससे कहा, धन्य है वह, जो परमेश्वर के राज्य में रोटी खाता है। 16 उस ने उस से कहा, एक मनुष्य भोजन करता था, और उसने बहुतों को आमन्त्रित किया। 17 और उस ने प्रभु भोज के समय अपने दास को निमंत्रित करनेवालों से कहला भेजा, कि आ, क्योंकि सब कुछ तैयार है।

18 वे सब एक के बाद एक क्षमा याचना करने लगे। पहले ने उससे कहा, "मैंने एक खेत खरीदा है, और मुझे बाहर जाकर उसे देखना अवश्य है; मैं आपसे विनती करता हूं, मुझे माफ करना। 19 और दूसरे ने कहा, मैं ने पांच जोड़ी बैल मोल लिए हैं, और अब उन से मिलने को हूं; मैं आपसे विनती करता हूं, मुझे माफ करना। 20 तीसरे ने कहा, "मैंने एक पत्नी बना ली है; इसलिए मैं नहीं आ सकता। 21 दास ने आकर अपने स्वामी को फिर यह बताया। तब घर का स्वामी क्रोधित हुआ, और अपने सेवक से कहा, नगर की सड़कों और गलियों में फुर्ती से निकलकर कंगालों, और अपाहिजों, और अंधों और लंगड़ों को ले आ। 22 दास ने कहा, हे प्रभु, जो आज्ञा तू ने दी थी वह पूरी हो गई है; लेकिन वहां अभी भी जगह है। 23 तब स्वामी ने सेवक से कहा, सड़कोंऔर बाड़ों की ओर जा और उन्हें विवष करके भीतर ले जा कि मेरा घर भर जाए। 24 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि निमंत्रित पुरुषों में से कोई भी मेरे भोज को नहीं चखेगा। 25 और बहुत से लोग उसके संग गए; उसने मुड़कर उनसे कहा, 26 "यदि कोई मेरे पास आता है और अपने पिता, माता, पत्नी, बच्चों, भाइयों-बहनों और अपने प्राणों से घृणा नहीं करता तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। 27और जो अपना क्रूस न उठाए; और मेरे पीछे न आए; वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता। 28 तुम में से ऐसा कौन है जो गुम्मट बनाना चाहता हो और पहिले बैठकर उसे उड़ाने का दाम न गिने? 29 ताकि जब वह नेव रख दे और उसे बाहर न ला सके, तो जो कोई उसे देखता है, वे उसका मज़ाक उड़ाना शुरू न करें, 30 और कहें, "इस आदमी ने बनाना शुरू किया और इसे बाहर नहीं ला सकता। 31 या कौन राजा दूसरे राजा से युद्ध करना चाहता है, और पहिले बैठकर सम्मति नहीं लेता कि जो उस पर बीस हजार लेकर आएगा वह दस हजार से भेंट करे या नहीं? 32 अगर नहीं, तो वह दूर रहते हुए शांति की दुहाई देता है। 33 इसलिए तुममें से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। 34 नमक अच्छी बात है; लेकिन अगर नमक कमजोर हो जाता है, तो इसे किसके साथ सीज किया जाएगा? 35 वह न तो भूमि के लिये काम आएगी और न गोबर के लिये, परन्तु फेंक दी जाएगी। जिसके पास सुनने के लिये कान हों वह सुन ले!



15 1 और सब प्रकार के चुंगी लेनेवाले और पापी उसकी सुनने को उसके पास आए। 2 तब फरीसी और शास्त्री यह कहते हुए कुड़कुड़ाने लगे, कि यह मनुष्य पापियों को ग्रहण करता है, और उनके साथ खाता है। 3 और उस ने यह दृष्टान्त-कथा उन से कही, 4 तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है जिसकी सौ भेड़ें हों, और यदि उन में से एक भी खो जाए, तो निन्यानबे को जंगल में न छोड़े, और खोई हुई भेड़ को जब तक न पा ले, तब तक उसका पीछा न करे? 5 और जब वह उसे मिल जाता है, तो वह उसे आनन्द से अपने कंधों पर रखता है। 6 और जब वह घर आता है, तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को बुलाकर उनसे कहता है, "मेरे साथ आनन्द करो; क्योंकि मुझे मेरी खोई हुई भेड़ें मिल गई हैं। 7 मैं तुम से कहता हूं, कि स्वर्ग में मन फिरानेवाले एक पापी से अधिक आनन्द अधिक होगा, उन निन्यानबे धर्मी लोगों से जिन्हें मन फिराव की आवश्यकता नहीं। 8 और ऐसी कौन स्त्री है जिसके पास दस पैसे हों, यदि वह एक को खो दे, और दीया न जलाए, और घर की झाड़ू लगाती हो और जब तक वह न मिल जाए तब तक यत्न से ढूंढ़ती रहे? 9 और जब वह उसे मिल जाता है, तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को बुलाकर कहती है, "मेरे साथ आनन्द करो; क्योंकि मुझे मेरा पैसा मिल गया है, जिसे मैंने खो दिया था। 10 इसी प्रकार मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर के दूतों के साम्हने मन फिराने वाले पापी के कारण आनन्दित होगा। 11 उसने

कहा, "किसी व्यक्ति के दो पुत्र थे। 12 और उनमें से छोटे ने अपने पिता से कहा, "हे पिता, जो धन मेरा है उसका भाग मुझे दे दे। और उसने संपत्ति को उनके साथ साझा किया। 13 और उसके कुछ ही समय बाद छोटे पुत्र ने सब कुछ इकट्ठा किया और देश भर में बहुत दूर चला गया; और वहाँ उसने अपनी संपत्ति को भव्यता से मार डाला। 14 जब वह अपना सब कुछ खा चुका, तो सारे देश में बहुत कुछ हो गया, और वह भूखा मरने लगा, 15 और जाकर उसी देश के एक नागरिक से लिपट गया। उसने उसे सूअरों की देखभाल के लिए अपने खेत में भेजा। 16 और उस ने अपके पेट को खर्च किए हुए अन्न से भरना चाहा, जिसे सूअर खा गए; और किसी ने उसे नहीं दिया। 17 तब उसने मन में सोचा, "मेरे पिता के पास कितने ही मजदूर हैं, जिनके पास बहुत रोटी है, और मैं भूखा मर रहा हूँ। 18 मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा, 'पिता, मैंने स्वर्ग के विरुद्ध और तेरे सामने पाप किया है। 19 अब मैं इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं; मुझे अपने दिहाड़ी मजदूरों में से एक बनाओ! 20 वह उठकर अपने पिता के पास आया। लेकिन जब वह अभी भी वहां से दूर था, तो उसके पिता ने उसे देखा, और वह खेद हुआ, और दौड़कर उसकी गर्दन पर गिर गया, और उसे चूमा। 21 पुत्र ने उस से कहा, हे पिता, मैं ने स्वर्ग के विरुद्ध और तेरे साम्हने पाप किया है; अब से मैं तेरा पुत्र कहलाने के योग्य नहीं रहा। 22 मगर पिता ने अपने सेवकों से कहा, "जल्दी से उत्तम वस्त्र निकाल लाओ और उसे पहनाओ और उसके हाथ में कंगन और पैरों में जूते बाँधो, 23 और जिस बछड़े को हमने मोटा किया है उसे ले आओ और उसे मार डालो। आओ हम खाएं और मगन रहें! 24 क्योंकि मेरा यह पुत्र जो मर गया था अब जी उठा है; वह खो गया था और मिल गया है। और वे मगन होने लगे। 25 किन्तु बड़ा पुत्र मैदान में था। 26 और जब वह घर के निकट पहुँचा, तो उसने गीत गाते और नाचते हुए सुना, 26 और एक सेवक को अपने पास बुलाकर पूछा कि यह क्या है। 27 मगर उसने उससे कहा, "तेरा भाई आ गया है, और तेरे पिता ने मोटे बछड़े को बलि किया है, क्योंकि वह फिर स्वस्थ है। 28 तब वह क्रोधित हुआ और भीतर नहीं गया। तब उसके पिता बाहर गए और उससे भीख माँगी। 29 परन्तु उस ने पिता से कहा, देख, मैं इतने वर्ष तेरी सेवा करता रहा, और तेरी आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं किया; और तुमने मुझे अपने दोस्तों के साथ मस्ती करने के लिए कभी बकरी नहीं दी। 30 परन्तु जब तुम्हारा यह पुत्र आया, जिसने तुम्हारा धन वेश्याओं के साथ उड़ा दिया, तो तुम ने उसके लिथे मोटा बछड़ा बलि किया। 31 उस ने उस से कहा; पुत्र, तू सर्वदा मेरे साथ है; और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही है। 32 परन्तु आनन्दित और ढाढ़स बान्धित रहो; क्योंकि तेरा यह भाई मर गया था और फिर जी उठा है; वह खो गया था और मिल गया है।

16 1 और उस ने अपके चेलोंसे यह भी कहा, एक धनवान मनुष्य था, और उस पर पहिले दोष लगाया गया, कि उस पर अपना माल बरबाद किया गया।

2 और उस ने उसे बुलवा भेजा, और उस से पूछा, मैं तुझ से क्या सुनता हूं? अपने घर का हिसाब रखना! क्योंकि अब से तुम भण्डारी नहीं हो सकते।

3 भण्डारी ने अपने आप से कहा, "मैं क्या करूँ?" मेरा स्वामी मुझसे कार्यालय लेता है; मैं खुदाई नहीं कर सकता, और मुझे भीख मांगने में शर्म आती है।



4 मैं भली-भाँति जानता हूँ कि मैं क्या करने पर हूँ, ताकि जब मैं पद से हटा दिया जाऊँ, तो वे मुझे अपने घरों में ले जाएँ।

5 और उस ने अपके स्वामी के कर्जदारों को बुलाकर पहिले से कहा, मेरे स्वामी का तुझे कितना कर्जदार है?

6 उसने कहा, "सौ टन तेल। और उसने उससे कहा, "अपना कर्ज का बिल ले लो, बैठ जाओ, और जल्दी में पचास लिखो।

7 तब उसने दूसरे से कहा, "मगर तेरा कितना कर्ज़ है? उसने कहा, "सौ बुशल गेहूँ। और उसने उससे कहा, "अपना पत्र ले लो और अस्सी लिखो।

8 और यहोवा ने अधर्मी भण्डारी की प्रशंसा की, कि उस ने बुद्धिमानी से काम किया है, क्योंकि इस संसार के लोग ज्योति की सन्तान से भी बुद्धिमान हैं।

9 और मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि अधर्मी धन से मित्रता करो, कि जब वह पूरा हो जाए, तब वे तुम्हें अनन्त तम्बू में ले जाएं। 10

जो छोटे में विश्वासयोग्य है, वह बड़े में विश्वासयोग्य है, और जो थोड़े में गलत है, वह बड़े में गलत भी है।

11 अगर तू अधर्मी धन की ओर विश् वासयोग्य नहीं है, तो कौन तुझे सच्ची भलाई सौंपेगा?

12 और यदि तुम परदेशियों से विश्वासयोग्य नहीं होगे, तो कौन तुम्हें वह देगा जो हमारा है?

13 कोई दास दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता: या तो वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से लिपटा रहेगा

और दूसरे को तुच्छ जानेगा। आप भगवान और मैमन की सेवा नहीं कर सकते।
14 फरीसियों ने यह सब सुना। वे पैसे के लालची थे और उसका मजाक उड़ाते थे।
15 उस ने उन से कहा, तुम मनुष्यों के साम्हने धर्मी तो हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे मन को जानता है; क्योंकि मनुष्यों में जो कुछ बड़ा है, वह परमेश्वर की दृष्टि में घृणित है।
16 व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक फैले हुए हैं। तब से, परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया जाता है, और हर कोई बलपूर्वक उसमें अपना रास्ता बनाता है।
17 परन्तु व्यवस्था के एक कण के गिरने से आकाश और पृथ्वी का टल जाना सहज है।
18 जो कोई अपनी पत्नी को त्यागकर दूसरी से ब्याह रचाता है, वह व्यभिचार करता है, और जो कोई अपने पति को तलाक देता है, वह व्यभिचार करता है।
19 एक धनवान मनुष्य था, जो बैंजनी और बहुमूल्य मलमल पहिनता था, और प्रतिदिन महिमा और आनन्द से जीवन व्यतीत करता था।
20 लाज़र नाम का एक गरीब आदमी था, जो घावों से भरा हुआ था,
21 और अमीर आदमी की मेज से जो कुछ गिरा था, उससे संतुष्ट होना चाहता था, और कुत्तों ने आकर उसके घावों को चाटा।
22 और ऐसा हुआ कि गरीब आदमी मर गया, और स्वर्गदूतों द्वारा इब्राहीम की गोद में ले जाया गया । लेकिन अमीर आदमी भी मर गया और उसे दफनाया गया।
23 जब वह मरे हुओं के संग या, तो पीड़ा से आंखें उठाकर इब्राहीम को दूर से और लाजर को गर्भ में देखा।
24 और उस ने पुकार कर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया कर, और लाजर को भेज दे, कि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में सुंडे, और मेरी जीभ को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़पता हूं।
25 परन्तु इब्राहीम ने कहा, "हे मेरे पुत्र, स्मरण कर, कि तेरी भलाई तो तेरे जीवन में पाई गई, परन्तु लाज़र ने बुराई पाई है; अब उसे यहाँ शान्ति मिली है, और तू तड़प रहा है।
26 इन सब बातों के अतिरिक्त हमारे और तुम लोगों के बीच एक बड़ी खाई है, यहां तक कि जो यहां से उस पार तुम्हारे पास आना चाहते थे, वे न जा सके और न ही वहां के लोग इस पार हमारे पास आ सकें।
27 फिर उस ने कहा, हे पिता, मैं तुझ से बिनती करता हूं, कि इसे मेरे पिता के घर भेज दे;
28 क्योंकि मेरे पाँच भाई और हैं, कि वह उन्हें चिताए, ऐसा न हो कि वे भी इस पीड़ा के स्थान पर आ पड़ें।
29 इब्राहीम ने कहा, "उनके पास मूसा और नबी हैं; वे उन की सुनें।
30 उस ने कहा, नहीं पिता इब्राहीम, परन्तु यदि मरे हुओं में से एक भी उनके पास जाए, तो वे मन फिराएंगे।
31 उसने उससे कहा, "यदि वे मूसा और नबियों की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई भी जी उठे तो वे ईमान नहीं लायेंगे।



17 1 और उस ने अपके चेलों से कहा, यह अनहोना है, कि ठोकर न लगे, परन्तु हाय उस पर जिसके द्वारा वे आती हैं। 2 उसके लिये भला होगा कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाकर समुद्र में फेंक दिया जाए, बजाय इसके कि इन छोटों में से किसी एक को ठोकर लगे। 3 खबरदार! यदि तेरा भाई पाप करे, तो उसकी निन्दा कर; और यदि वह पश्चाताप करे, तो उसे क्षमा कर दे। 4 और यदि वह दिन में सात बार तुम्हारे विरुद्ध पाप करे, और सात बार तुम्हारे पास आकर कहे, 'मुझे खेद है। अतः तुम उसे क्षमा कर दोगे। 5 प्रेरितों ने प्रभु से कहा, "हमारा विश्वास बढ़ा। 6 यहोवा ने कहा, यदि तेरा विश्वास राई के दाने के समान हो और तू इस शहतूत के वृक्ष से कहे, 'अपने आप को फाड़ कर समुद्र में डाल दे। इसलिए वह आपकी आज्ञाकारी होगी। 7 तुम में से ऐसा कौन हो जिसके पास खेत से घर आने पर उसके लिये हल जोतने वा पशुओं को चराने के लिये दास हो, उस से कहे, कि तुरन्त आकर भोजन की मेज पर बैठ जा? 8 क्या वह उस से कहता है, कि जो कुछ मैं खाऊं उसे तैयार कर, अपना पल्ली पहिन ले, और जब तक मैं खाऊं और पीऊं तब तक मेरी सेवा कर; उसके बाद तुम भी खाओगे-पीओगे? 9 क्या वह उस दास का धन्यवाद भी करता है कि उसने उसकी आज्ञा पूरी की? 10 तुम भी ऐसा ही करते हो! जब तुम वह सब कर चुहो जिसका तुम्हें आदेश दिया गया है, तो कह दो, 'हम निकम्मे दास हैं; हमने वही किया है जो करने के लिए हम बाध्य थे। 11 जब वह यरूशलेम को जा रहा था, तब शोमरोन और गलील के बीच कूच किया। 12 जब वह एक गाँव में पहुँचा, तो दस कोढ़ी उससे मिले और वे कुछ दूरी पर खड़े थे, 13 और ऊँची आवाज़ में कहने लगे, "हे यीशु, हे प्रिय स्वामी,

हम पर दया कर। 14 उन्हें देखकर उस ने उन से कहा, "जाओ और याजकों को दिखाओ। और चलते-चलते वे शुद्ध हो गए। 15 मगर उनमें से एक ने देखा कि वह चंगा हो गया है, पीछे मुड़ा और ऊँचे शब्द से परमेश् वर की बड़ाई की, 16 और मुँह के बल गिरकर यीशु के चरणों में गिर पड़ा और उसका धन्यवाद किया। और वह एक सामरी था। 17 यीशु ने उत्तर दिया, "क्या उन में से दस शुद्ध नहीं हुए? लेकिन वे नौ कहां हैं? 18 क्या इस अजनबी को छोड़ और मन फिराकर परमेश्वर की महिमा करने वाला और कोई नहीं है? 19 उस ने उस से कहा, उठ, जा; आपके विश्वास ने आपकी मदद की है। 20 मगर जब फरीसियों ने उससे पूछा, "परमेश्वर का राज्य कब आयेगा?" उस ने उन से कहा, परमेश्वर का राज्य ऐसा नहीं आता, कि वह तुम्हारी आंखों से देखा जाए; 21 वे यह न कहेंगे, कि देखो, यहाँ! या: वहाँ! क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है। 22 और उसने अपने चेलों से कहा, "ऐसा समय आएगा कि तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन देखना चाहोगे और उसे देखना नहीं पाओगे। 23 वे तुमसे कहेंगे, "देखो! निहारना, यहाँ! न तो जाओ और न ही अनुसरण करो। 24 क्योंकि जैसे ऊपर आकाश से बिजली चमकती है, और जो कुछ आकाश के नीचे है उन पर चमकती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिन में होगा। 25 किन्तु पहले उसे बहुत दुःख सहना होगा और इस युग के लोग उसे तुच्छ ठहराएंगे। 26 और जैसा नूह के दिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा: 27 उन्होंने खाया, पिया, विवाह किया, विवाह किया, विवाह किया, उस दिन तक जब तक नूह जहाज में नहीं पहुँचा, और जलप्रलय ने आकर उन सब को नष्ट कर दिया। 28 उसी प्रकार भी, जैसा लूत के दिनों में हुआ था: उन्होंने खाया, पिया, खरीदा, बेचा, बोया, बनाया; 29 परन्तु जिस दिन लूत सदोम से निकला, उस दिन आग और गन्धक आकाश से बरसी और सब को मार डाला। 30 ऐसा ही उस दिन होगा जब मनुष्य का पुत्र प्रगट होगा। 31 उसी दिन जो कोई छत पर हो और उसके घर में उसका घरेलू सामान हो, वह उसे लेने के लिए नीचे न आए। उसी तरह, जो मैदान में है, वह अपने पीछे की ओर न मुड़ें। 32 लूत की पत्नी को याद रखो। 33 जो कोई अपने प्राण की रक्षा करना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई उसे खो देगा वह उसे जीने में मदद करेगा। 34 मैं तुम से कहता हूं, कि उसी रात दो लोग एक खाट पर सोएंगे; एक को स्वीकार किया जाएगा, दूसरे को अस्वीकार कर दिया जाएगा। 35 दो लोग आपस में पीसेंगे; एक को स्वीकार किया जाएगा, दूसरे को अस्वीकार कर दिया जाएगा। 36 दो मैदान में होंगे, एक स्वीकार किया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। 37 उन्होंने उस को उत्तर दिया, कि हे प्रभु, कहां है? उस ने उन से कहा, जहां लोथ है, वहां गिद्ध इकट्ठे हैं।

## 18

1 और उसने उन्हें एक दृष्टान्त सुनाया, कि मनुष्य को हमेशा प्रार्थना करनी चाहिए और हार नहीं माननी चाहिए,

2 और कहा, "एक नगर में एक न्यायी था जो परमेश्वर से नहीं डरता था, और न ही वह किसी मनुष्य से डरता था।

3 उसी नगर में एक विधवा थी जो उसके पास आकर कहने लगी, मेरे विरोधी के साम्हने मेरा न्याय कर।

4 और वह बहुत दिनों तक ऐसा नहीं करता था। मगर इसके बाद उसने मन ही मन सोचा, "हालाँकि मैं परमेश्वर से नहीं डरता, न ही मैं किसी आदमी से डरता हूँ,

5 फिर भी मैं इस विधवा के साथ न्याय करूँगा क्योंकि वह मुझे इतना कष्ट दे रही है ताकि वह आकर मेरे साथ कुछ न करे।

6 तब यहोवा ने कहा, "सुनो कि अधर्मी न्यायी क्या कहता है।

7 क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात-दिन उसकी दुहाई देते रहते हैं, और क्या वह उन की देर तक करता रहे?

8 मैं तुम से कहता हूँ, वह शीघ्र ही उनका न्याय लौटा देगा। परन्तु जब मनुष्य का पुत्र आएगा, तो क्या तुम सोचते हो कि वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?

9 और उसने यह दृष्टान्त उन लोगों से कहा जो धर्मी समझकर दूसरों को तुच्छ समझते थे:

10 दो लोग प्रार्थना करने के लिए मन्दिर में गए, एक फरीसी और दूसरा चुंगी लेनेवाला।

11 फरीसी ने खड़े होकर अपने आप से प्रार्थना की, "हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं अन्य लोगों, लुटेरों, अधर्मियों, व्यभिचारी, या यहाँ तक कि इस चुंगी लेनेवालों की तरह नहीं हूँ।

12 मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ और जो कुछ भी लेता हूँ उसका दसवाँ भाग देता हूँ।

13 और चुंगी लेनेवाला कुछ दूरी पर खड़ा था, और आकाश की ओर आंखें न उठाकर छाती पीटकर कहने लगा, हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।

14 मैं तुम से कहता हूं, कि यह धर्मी ठहराए हुए अपने घर गया, ऐसा नहीं। क्योंकि जो अपने आप को ऊंचा करेगा, वह दीन

किया जाएगा; और जो अपने आप को दीन बनाएगा, वह ऊंचा किया जाएगा।
15 वे छोटे बच्चों को भी छूने के लिए उसके पास ले आए। लेकिन जब चेलों ने यह देखा, तो उन्होंने उन्हें डांटा।
16 यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया और कहा, "बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो; क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसा ही है।
17 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाई ग्रहण न करे, वह उस में प्रवेश करने न पाएगा।
18 और एक शासक ने उससे पूछा, "अच्छे स्वामी, अनन्त जीवन के अधिकारी होने के लिये मैं क्या करूँ?"
19 यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे क्यों भाता है? कोई भी अच्छा नहीं है, लेकिन केवल भगवान।
20 तू आज्ञाओं को तो जानता है, कि व्यभिचार न करना; तू हत्या न करना; तू चोरी न करना; तू झूठी गवाही न देना; तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।
21 और उस ने कहा, बचपन से ही मैंने इन सारी चीज़ों की रखवाली की है।
22 यीशु ने जब यह सुना तो उसने उससे कहा, "अब तक तुझमें एक बात की घटी है। जो कुछ तेरे पास है उसे बेचकर कंगालों को दे दे, तब तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो ले।
23 जब उसने यह सुना तो वह उदास हुआ, क्योंकि वह बहुत धनी था।
24 किन्तु यीशु ने उसकी ओर देखकर कहा, "धनवानों के लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है!
25 परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।
26 जिन्होंने ये बातें सुनीं, वे कहने लगे: "तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?
27 मगर उसने कहा, "जो कुछ इंसानों के लिए असम्भव है, वह परमेश्वर के लिए भी हो सकता है।
28 पतरस ने कहा, "देख, हम सब कुछ छोड़कर तेरे पीछे हो लिये हैं।
29 उसने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं जो परमेश्वर के राज्य के लिये घर, या पत्नी, या भाई, या माता-पिता, या लड़के-लड़के, 30 को न छोड़े,
30 जो इस समय में और न मिलने वाले संसार में अनन्त जीवन पाए।
31 और वह बारहों को अपने साथ ले गया और उनसे कहा, "देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और जो कुछ मनुष्य के पुत्र के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा लिखा गया है वह सब पूरा हो जाएगा।
32 क्योंकि वह अन्यजातियों के हाथ में कर दिया जाएगा, और उसका ठट्ठा किया जाएगा, उसकी निन्दा की जाएगी और उस पर थूका जाएगा,
33 और वे उसे कोड़े मारेंगे और मार डालेंगे, और तीसरे दिन वह जी उठेगा।
34 परन्तु वे उसे न समझे, और वह बात उन से छिपी रही, और न जानते थे कि क्या कहा गया है।
35 जब वह यरीहो के निकट पहुंचा, तो एक अन्धा सड़क के किनारे बैठा भीख मांग रहा था।
36 मगर वहाँ से गुज़रने वालों की बात सुनकर उसने पूछा कि वे क्या हैं।
37 तब उन्होंने उसे बताया कि यीशु नासरी के पास से गुजर रहा है।
38 और उस ने पुकारकर कहा, हे यीशु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर।
39 किन्तु जो सामने से जाते थे, वे उसे चुप रहने की धमकी देते थे। परन्तु उसने और भी पुकारा, "दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर!
40 परन्तु यीशु खड़ा रहा और उसे उसके पास लाने की आज्ञा दी। 41 तब वे उसे उसके निकट ले आए, तो उसने उससे पूछा,
41 और कहा, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ? उसने कहा, "हे प्रभु, ताकि मैं फिर देखूँ।
" 42 यीशु ने उससे कहा, "देखते! आपके विश्वास ने आपकी मदद की है।
43 और वह तुरन्त उसे देखकर परमेश्वर की स्तुति करने लगा। और जितने लोगों ने ये बातें देखीं, उन सभों ने परमेश्वर की स्तुति की।

19 1 और वह भीतर जाकर यरीहो से होकर गया। 2 और देखो, जक्कई नाम का एक मनुष्य था, जो चुंगी लेनेवालों का सरदार था, और धनी था। 3 और वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन था, और लोगों के सामने नहीं देख सकता था, क्योंकि वह व्यक्ति में छोटा था। 4 और वह आगे भागकर शहतूत के पेड़ पर चढ़ गया। कि वह उसे देखे; वहाँ के लिए वह के माध्यम से प्राप्त करने के लिए किया गया था. 5 जब यीशु उस स्थान पर आया, तो उसने ऊपर दृष्टि करके उस से कहा, "जक्कई जल्दी नीचे आ; क्योंकि मुझे आज तेरे घर रुकना अवश्य है। 6 और वह फुर्ती से नीचे उतरा और आनन्द से उसका स्वागत किया। 7 यह देखकर सब कुड़कुड़ाकर कहने लगे, "वह एक पापी के पास आ गया है। 8 जक्कई ने यहोवा के साम्हने आकर कहा, देख, हे प्रभु, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी को भरमाता हूं, तो उसे चौगुना लौटा दूंगा। 9 यीशु ने उससे कहा, "आज इस घर में उद्धार आया है, क्योंकि यह भी इब्राहीम का पुत्र है। 10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है॥ 11 जब वे सुन रहे थे, तो उसने एक दृष्टान्त भी सुनाया, क्योंकि वह यरूशलेम के निकट था, और उन्होंने सोचा कि परमेश्वर का राज्य तुरंत प्रकट होगा, 12 और कहा, "एक महान व्यक्ति बहुत दूर एक देश में चला गया, ताकि वह राज्य प्राप्त कर सके और फिर वापस आ सके। 13 और उस ने अपने दासों में से दस को बुलवा भेजा, और दस मोहरें देकर उन से कहा, मेरे आने तक उन से व्यापार करो। 14 मगर उसके सिताव उससे बैर रखने लगे और उसके पीछे यह कहला भेजा, कि हम नहीं चाहते, कि वह हम पर प्रभुता करे। 15 और ऐसा हुआ कि जब वह राज्य प्राप्त करने के बाद फिर से आया, तो उसने उन्हीं सेवकों को बुलाया जिन्हें उसने पैसे दिए थे, ताकि वह जान सके कि उनमें से प्रत्येक ने किसके लिए सौदा किया था । 16 फिर पहले ने आकर कहा, "प्रभु, तेरे पौंड से दस पौंड मिले हैं। 17 और उस ने उस से कहा, हे धर्मपरायण दास, तू थोड़ा ही सच्चा रहा है, इस कारण तू दस नगरों पर अधिक्कारनी होगा। 18 दूसरे ने आकर कहा, "प्रभु, तेरे पौंड में पाँच पौंड निकले हैं। 19 फिर उसने उस से कहा, और तू पांच नगरों के अधिपति होगा। 20 और तीसरे ने भी आकर कहा, हे प्रभु, देख, तेरा मोहर जो मैं ने रूमाल में रखा है, यह रहा; 21 मैं तुझ से डरता था, क्योंकि तू एक कठोर मनुष्य है; आप जो नहीं डालते हैं उसे लेते हैं और जो आपने नहीं बोया है उसे काटते हैं।
22 उस ने उस से कहा, हे दुष्ट दास, मैं तेरे मुंह से तेरा न्याय करूंगा। क्या तुम जानते हो कि मैं एक कठोर मनुष्य हूँ, जो मैंने नहीं रखा उसे ले लो और जो मैंने नहीं बोया है उसे काटो? 23 तूने मेरा धन विनिमय बिल में क्यों नहीं रखा? और अगर मैं आया होता, तो मैं ब्याज के साथ इसकी मांग करता। 24 और जो पास खड़े थे, उस ने कहा, उस से वह मोहड़ा ले लो और जिसके पास दस मोहरें हैं उसे दे दो। " 25 उन्होंने उससे कहा, "प्रभु, उसके पास दस मोहरें तो हैं। 26 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, जिसके पास है, उसे दिया जाएगा; परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे जो उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा। 27 किन्तु मेरे वे शत्रु जो नहीं चाहते कि मैं उन पर शासन करूँ, उन्हें यहाँ ले आओ और मेरे सामने मार डालो। 28 यह कहकर वह यरूशलेम को चला गया। 29 और ऐसा हुआ कि जब वह बैतफेज और बैतनिय्याह के पास पहुंचा, और जैतून पर्वत नामक पर्वत पर आया, तो उसने अपने शिष्यों के पास यह कहते हुए दो 30 भेजे, "उस स्थान पर जाओ जो विपरीत है । और जब तुम प्रवेश करोगे, तो तुम्हें एक बछेड़ा बंधा हुआ मिलेगा, जिस पर पहिले कभी कोई नहीं बैठा; इसे खोल दो और यहाँ लाओ! 31 और यदि कोई तुम से पूछे कि तुम उसे क्यों खोल रहे हो तो कहो, 'प्रभु को इसकी आवश्यकता है। 32 और जो भेजे गए थे, उन्होंने जाकर उसे पाया, जैसा कि उसने उनसे कहा था। 33 जब उन्होंने बच्चे को खोला, तो उसके स्वामी ने उन से कहा, तुम बच्चे को क्यों खोलते हो? 34 किन्तु वे कहने लगे, "प्रभु को उसकी आवश्यकता है। 35 तब वे उसे यीशु के पास ले आए, और अपने वस्त्र उस बच्चे पर डालकर यीशु को उस पर बिठाया। 36 सो जब वह गया तो उन्होंने अपने वस्त्र मार्ग पर फैला दिए। 37 जब वह जैतून पहाड़ की ढलान के पास पहुँचा, तो उसके सारे चेले ऊँचे शब्द से परमेश्वर के उन कामों के लिए जो उन्होंने देखे थे, 38 और कहा, "धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से राजा आता है। स्वर्ग में शांति और आकाश में महिमा हो! 39 और लोगों में से कुछ फरीसियों ने उससे कहा, "हे स्वामी, अपने चेलों का साम्हना कर। 40 उसने उत्तर दिया, "मैं तुमसे कहता हूँ, यदि ये चुप रहे, तो पत्थर चिल्लाएंगे। 41 जब वह निकट आया, तो उसने नगर को देखा और उसके विषय में रोने लगा, 42 और कहा, "भला होता कि तू भी इस समय जान लेता कि तेरी शांति के लिए क्या है। लेकिन अब यह आपकी आंखों से छिपा है। 43 क्योंकि वे दिन तुझ पर आ पड़ेंगे, जब तेरे शत्रु तेरे और बाल-बच्चों के चारों ओर शहरपनाह बनाकर तुझे घेर लेंगे, और चारों ओर से तुझे भयभीत करेंगे। 44 और वे तुम्हें पीस डालेंगे, और एक पत्थर पर दूसरा पत्थर न छोड़ेंगे, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम किस समय में दु:ख भोग रहे हो। 45 वह मन्दिर में गया और बेचने वालों को निकालने लगा, 46 और उनसे कहा, "लिखा है, 'मेरा घर प्रार्थना का घर होगा। लेकिन आपने इसे लुटेरों का अड्डा बना दिया है। 47 और वह प्रतिदिन मन्दिर में उपदेश देता था। परन्तु

महायाजकों और शास्त्रियों और लोगों में से कुलीन लोगों ने उसे मार डालना चाहा, 48 और न जानते थे कि यह कैसे किया जाए; क्योंकि सब लोग उससे लिपटे रहे और उसकी सुन रहे थे।

20

1 और जिस दिन वह मन्दिर में लोगों को शिक्षा दे रहा था और सुसमाचार का प्रचार कर रहा था, उस दिन प्रधान याजक और शास्त्री पुरनियों के साथ उसके पास आए,

2 और उससे कहा, "हमें बता, तू यह किस अधिकार से करता है, या तुझे ऐसा अधिकार किसने दिया है?"

3 उस ने उन से कहा, मैं तुम से एक बात पूछता हूँ; मुझे बताओ,

4 यूहन्ना का बपतिस्मा स्वर्ग से हुआ था वा मनुष्यों की ओर से?

5 परन्तु उन्होंने मन ही मन सोचा, कि यदि हम स्वर्ग में से कहें, तो वह कहेगा, 'तुम ने उस पर विश्वास क्यों नहीं किया?

6 परन्तु यदि हम मनुष्यों के विषय में कहें, तो सब लोग हम को पत्थरवाह करेंगे, क्योंकि वे यूहन्ना को भविष्यद्वक्ता कहते हैं।

7 उन्होंने उत्तर दिया, कि वे नहीं जानते कि यह कहां से आया है।

8 यीशु ने उनसे कहा, "मैं नहीं बताता कि मैं किस अधिकार से यह काम कर रहा हूँ।

9 और वह लोगों को यह दृष्टान्त-कथा कहने लगा, कि एक मनुष्य ने दाख की बारी लगाकर दाख की बारी को दाख की बारियों को पट्टे पर दे दिया, और बहुत समय बिताकर उस देश से बाहर चला गया।

10 और उसके दिनों में उस ने दाख की बारी के फल में से कुछ उसको देने के लिए दाख की बारी के पास एक दास भेजा। लेकिन अंगूर उगाने वालों ने उसे पीटकर खाली छोड़ दिया।

11 और उस ने एक और दास को भेजा, परन्तु उन्होंने उसे भी पीटा, और ठट्ठा करके उसको खाली छोड़ दिया।

12 और उस ने तीसरा भेजा, परन्तु उन्होंने उसे भी लहूलुहान करके निकाल दिया।

13 तब बगीचे के स्वामी ने कहा, "मैं क्या करूँ? मैं अपने प्रिय पुत्र को भेजूँगा; वे इससे कतराएंगे।

14 परन्तु जब अंगूर के बागवानों ने पुत्र को देखा, तो वे मन में सोचने लगे, कि यह विरासत है; आओ, हम उसे मार डालें, कि विरासत हमारी हो जाए।

15 और उन्होंने उसे अंगूरों के बाग से बाहर धकेल दिया और मार डाला। दाख की बारी का स्वामी उनके साथ क्या करेगा?

16 वह आएगा और इन अंगूर उगाने वालों को मार डालेगा और अपनी अंगूरों का बाग दूसरों को दे देगा। जब उन्होंने यह सुना तो उन्होंने कहा, "यह तुमसे दूर हो!"

17 मगर उसने उन की तरफ देखकर कहा, "तो फिर जो लिखा है वह क्या है (भजन संहिता 118:22): "जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा बन गया है"?

18 जो कोई इस पत्थर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा, परन्तु जिस किसी पर यह गिरे, वह कुचल दिया जाएगा।

19 और शास्त्री और महायाजक उसी घड़ी उस पर हाथ रखना चाहते थे, और लोगों से डर गए, क्योंकि वे समझ गए थे कि उस ने उन से यह दृष्टान्त कहा है।

20 और उन्होंने उसका पीछा किया, और पवित्र होने का नाटक करने के लिथे मनुष्य भेजे, कि वे उसे उसके भाषण में पकड़ लें, कि उसे हाकिम के अधिकार और अधिकार के वश में कर दें।

21उन्हों ने उस से कहा, हे गुरु, हम जानते हैं, कि तू ईमानदारी से बोलता और सिखाता है, और किसी के अधिकार को नहीं जानता; परन्तु परमेश्वर का मार्ग ठीक से बताता है।

22 क्या यह सही है कि हम कैसर को कर देते हैं, या नहीं?

23 मगर यीशु ने उनकी धूर्तता देखी और उनसे कहा,

24 मुझे एक पैसा दिखाओ। उसके पास कौन सा चित्र और शिलालेख है? लेकिन उन्होंने कहा, "कैसर का।

25 उस ने उन से कहा, जो कैसर का है वह कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।

26 और वे लोगों के साम्हने वचन सुनकर उसे रोक न सके, और उसके उत्तर से चकित हुए, और चुप रहे।

27 तब कुछ सदूकी जो मानते हैं कि पुनरुत्थान होना ही नहीं, उसके पास आकर उससे पूछने लगे,

28 "गुरु, मूसा ने हमें लिखा था, "यदि कोई भाई जिसकी पत्नी हो और वह निःसंतान मर जाए, तो उसका भाई अपनी पत्नी ले ले और अपने भाई के वंश को उत्पन्न करे।

29 अब वहाँ सात भाई थे। पहले ने एक पत्नी ली और निःसंतान मर गया।
30 और उस ने उन
सातों को पकड़ लिया, और कोई सन्तान न छोड़ा और मर गया।
32 आखिर में वह औरत भी मर गयी।
33 अब मरे हुओं के जी उठने पर वह उन में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि सातों ने उसे पत्नी के रूप में रखा था।
34 यीशु ने उनसे कहा, "इस दुनिया के बच्चे शादी करते हैं और शादी करते हैं;
35 मगर जो इस काबिल हैं कि उस दुनिया को और मरे हुओं में से जी उठना पा लें, वे न तो शादी करेंगे और न ही शादी करेंगे।
36 क्योंकि वे फिर कभी नहीं मर सकते; क्योंकि वे स्वर्गदूतों के समान हैं, और परमेश्वर की सन्तान हैं, क्योंकि वे पुनरुत्थान की सन्तान हैं।
37 परन्तु मूसा ने यह भी संकेत दिया, कि मरे हुए झाड़ी में ही जी उठेंगे, क्योंकि वह इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर कहलाता है।
38 परन्तु परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवतों का परमेश् वर है; क् योंकि वे सब उसी के लिये जीवित हैं।
39 इस पर कुछ शास्त्रियों ने उत्तर दिया, "गुरु, तूने ठीक कहा।
40 और उन्होंने उस से फिर कुछ पूछने का साहस न किया।
41 उसने उनसे कहा: "वे कैसे कह सकते हैं कि मसीह दाऊद का पुत्र है?
42 और वह स्वयं, दाऊद भजन संहिता की पुस्तक में कहता है (भजन संहिता 110:1), "प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा है, 'मेरे दाहिने हाथ बैठ,
43 जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न बना दूँ।
44 तब दाऊद उसे स्वामी कहता है, तो वह उसका बेटा कैसे हो सकता है?
45 मगर जब सब लोग सुन रहे थे, तो यीशु ने अपने चेलों से कहा,
46 "उन शास्त्रियों से सावधान रहो जो लम्बे कपड़ों में घूमना चाहते हैं और बाज़ार में नमस्कार पाकर खुश होते हैं और सभाओं के सिरों और मेज़ पर बैठना पसंद करते हैं।
47 वे विधवाओं के घरों को खा जाते हैं, और दिखावे के लिये लंबी प्रार्थना करते हैं। वे अधिक कठोर न्याय प्राप्त करेंगे।

21 1 और उस ने दृष्टि करके धनवानोंको अपके मेलबलि परमेश्वर के सन्दूक में डालते देखा।
2 और उसने एक कंगाल विधवा को भी देखा, जिसने दो दमियाँ लगाईं।
3 और उस ने कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि इस कंगाल विधवा ने उन सब से अधिक काम किया है।
4 क्योंकि इन सब ने बलिदानों के लिथे अपनी बहुतायत में से दिया है, परन्तु जो कुछ वह अपनी गरीबी में से जीवित रहा, सब उस ने लगा दिया।



5 जब कुछ लोगों ने मन्दिर के विषय में कहा, कि वह सुन्दर पत्थरों और रत्नों से सुशोभित है, तो उसने कहा,
6 ऐसा समय आएगा, जब जो सब कुछ तुम देखते हो उसमें से एक पत्थर के उपर ऐसा पत्थर न बचेगा जो तोड़ा न जाएगा।
7 उन्होंने उस से पूछा, हे गुरु, यह कब होगा?
8 परन्तु उस ने कहा, चौकस रह, धोखा न खाओ। क्योंकि बहुतेरे मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं हूं,' और 'समय आ गया है। - उनका पालन न करें!
9 किन्तु जब तुम युद्धों और विद्रोहों के बारे में सुनो तो डरो मत। इसके लिए पहले किया जाना चाहिए; लेकिन अंत इतनी जल्दी नहीं है।
१० फिर उसने उनसे कहा, "लोग जाति पर और राज्य पर राज्य के विरुद्ध उठ खड़े होंगे,
११ और बड़े भूकम्प होंगे, और महामारी, और महंगा समय, और स्वर्ग से भय और बड़े चिन्ह होंगे।
12 परन्तु इस से पहिले वे तुझ पर हाथ रखेंगे, और तुझे सताएंगे, और अपने आराधनालयोंऔर बन्दीगृहों में सौंप देंगे, और मेरे नाम के निमित्त राजाओं और हाकिमों के आगे चलेंगे।
13 इससे तुम गवाह बन सकोगे।
14 इसलिए इस बात की चिन्ता मत करो कि तुम अपने लिये कैसा उत्तर दोगे।

15 क्योंकि मैं तुझे ऐसा मुंह और बुद्धि दूंगा, कि तेरे सब विरोधी न तो साम्हने रह सकेंगे और न उसका विरोध कर सकेंगे।
16 किन्तु तुम्हारे माता-पिता, भाई, सम्बन्धी और मित्र तुम्हें सौंप देंगे और वे तुममें से कुछ को मार डालेंगे।
17 मेरे नाम के कारण सब लोग तुमसे घृणा करेंगे।
18 और तुम्हारे सिर का एक बाल भी बाल भी न टूटेगा।
19 यदि तू दृढ़ लगा रहेगा, तो तेरा प्राण मिलेगा।
20 किन्तु जब तुम यरूशलेम को सेना से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजाड़ आ पहुँचा है।
21 तब जो यहूदिया में हो वह पहाड़ों पर भाग जाए, और जो नगर में हो वह निकल जाए, और जो देश में हो वह भीतर न आए।
22 क्योंकि ये ही दण्ड के दिन हैं, ताकि जो कुछ लिखा गया है वह सब पूरा हो।
23 परन्तु हाय उन पर जो उन दिनों गर्भवती और दूध पाती हैं! क्योंकि पृथ्वी पर बड़ा संकट होगा, और इन लोगों पर क्रोध होगा,
24 और वे तलवार से मारे जाएंगे, और सभी राष्ट्रों के बीच बंदी बनाए जाएंगे, और यरूशलेम को अन्यजातियों द्वारा पैरों तले रौंद दिया जाएगा, जब तक कि अन्यजातियों का समय पूरा न हो जाए।
25 और सूर्य, चन्द्रमा, तारागण में चिन्ह दिखाई देंगे, और पृथ्वी पर लोग डरेंगे और डरेंगे, क्योंकि समुद्र और जल की लहरें गरजेंगे,
26 और मनुष्य भय से मूर्छित हो जाएँगे, और सारी पृथ्वी पर आने वाली वस्तुओं की आशा से, क्योंकि स्वर्ग की शक्तियाँ भी हिल जाएँगी।
27 तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे।
28 परन्तु जब ये बातें होने लगें, तो ऊपर करके अपने सिर उठाना, क्योंकि तेरा छुटकारा निकट आ रहा है।
29 फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त-कथा कही: अंजीर के पेड़ और सभी पेड़ों को देखो:
30 यदि वे अभी अंकुरित होते हैं और आप इसे देखते हैं, तो आप खुद जानते हैं कि गर्मी निकट है।
31 इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को निकट आते देखो, तो जान लेना कि परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है।
32 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक सब बातें पूरी न हो लें, तब तक इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा।
33 आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।
34 परन्तु सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खाने-पीने और खाने की चिन्ता करने में कसा हुआ हो, और न आज का दिन तुम पर फन्दे की नाईं शीघ्र आ पड़े।
35 क्योंकि वह अचानक पृथ्वी के सब रहनेवालों पर आ पड़ेगा।
36 इसलिये सदा जागते रहो और प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब घटनाओं से जो होनेवाली हैं, हियाव बान्धते रहो और मनुष्य के पुत्र के साम्हने खड़े हो।
37 और वह दिन को मन्दिर में उपदेश करता था, और रात को[83] निकलकर जैतून के पहाड़ पर रात भर रहा।
38 और सब लोग मन्दिर में उसे सुनने के लिये तड़के उसके पास गए।

## 22

1 और अखमीरी रोटी का पर्ब्ब निकट था, जिसे ईस्टर कहा जाता है। 2 और महायाजकों और शास्त्रियों ने उसे मार डालना चाहा, क्योंकि वे लोगों से डरते थे। 3 और शैतान यहूदा में घुस गया, जो इस्करियोती कहलाता था, जो बारहों की गिनती में था। 4 और उस ने जाकर महायाजकों और सूबेदारों से बातें कीं। कैसे वह उसे उनके हवाले करना चाहता था। 5 और वे आनन्दित हुए और उन्होंने उसे धन देने का वचन दिया। 6 और वह मान गया, और बिना शोरगुल किए उसे सौंपने का अवसर खोजने लगा। 7 तब अखमीरी रोटी का दिन आया, जिस में पास्का का मेम्ना बलिदान किया जाना था। 8 और उस ने पतरस और यूहन्ना को यह कहला भेजा, कि जाओ, हमारे लिये पास्का मेम्ना तैयार करो कि हम उसे खा सकें। 9 उन्होंने उस से पूछा, तू कहां चाहता है कि हम उसे तैयार करें? 10 उस ने उन से कहा, देखो, जब तुम नगर में प्रवेश करोगे, तो तुम्हें एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए मिलेगा; उसके पीछे उस घर में जाओ जहाँ वह प्रवेश करता है, 11 और घर के स्वामी से कहो, 'स्वामी ने तुम्हारे पास संदेश भेजा है, 'वह कोठरी कहाँ है जहाँ मैं अपने चेलों के साथ पास्का मेम्ना खा सकूँ?' 12 और वह तुम्हें एक बड़ा हॉल दिखाएगा, जिस पर गद्दियां लगी होंगी; वहां यह तैयार करता है। 13 और उन्होंने जाकर उसे वैसा ही पाया जैसा उस ने उन से कहा था, और पास्का मेम्ना तैयार किया। 14 जब वह घड़ी आई, तो वह और प्रेरित

उसके साथ बैठ गए। 15 उस ने उन से कहा, मेरी बड़ी लालसा थी कि दु:ख भोगने से पहले इस पास्का मेम्ने को तुम्हारे साथ खाऊं। 16 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो जाए, तब तक मैं उसे फिर कभी न खाऊंगा। 17 और उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद करके कहा, उसे लेकर आपस में बांट लो; 18 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि अब से जब तक परमेश्वर का राज्य न आए, दाखलता का रस कभी न पीऊंगा। 19 और उस ने रोटी लेकर धन्यवाद करके तोड़कर उन्हें यह कहते हुए दिया, कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिथे दी जाती है; मेरी याद में ऐसा करो। 20 और खाने के बाद उसने यह कटोरा भी ले लिया, कि यह कटोरा मेरे लोहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है, वह नया नियम है। 21 परन्तु देखो, मेरे पकड़वानेवाले का हाथ मेज़ों पर मेरे साथ है। 22 क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपनी आज्ञा के अनुसार जाता है; परन्तु हाय उस आदमी पर जिसके द्वारा उसे धोखा दिया गया है! 23 वे आपस में पूछने लगे कि हम में से कौन ऐसा करेगा? 24 और उन में झगड़ा भी हुआ, जो उन में सबसे बड़ा माना जाता था। 25 और उसने उनसे कहा, "राष्ट्रों के राजा राज्य करते हैं, और उनके शूरवीर दया के स्वामी कहलाते हैं। 26 किन्तु तुम नहीं। परन्तु तुम में जो बड़ा है, वह सब से छोटे के समान होगा, और कुलीन दास के समान होगा। 27 क्योंकि बड़ा कौन है, वह जो भोजन पर बैठा है या वह जो सेवा टहल करता है? क्या यह वह नहीं है जो मेज पर बैठता है? लेकिन मैं एक सेवक के रूप में आपके बीच में हूं। 28 परन्तु तू ही है जो मेरी परीक्षाओं में मेरे साथ रहा। 29 और जैसा मेरे पिता ने मुझे आज्ञा दी है, मैं तुम्हें राज्य दूँगा, 30 ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पीओ, सिंहासनों पर बैठो और इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो। 31 हे शमौन, हे शमौन, देख, शैतान ने तुझ से चाहा है, कि वह तुझे गेहूं की नाईं छान ले। 32 किन्तु मैंने तुम्हारे लिये दुआ की है ताकि तुम्हारा विश्वास जाता न रहे। और जब तुम परिवर्तित हो, तो अपने भाइयों को दृढ़ करो। 33 उस ने उस से कहा, हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह में जाने और मृत्यु तक जाने को तैयार हूँ। 34 और उस ने कहा, हे पतरस, मैं तुझ से कहता हूं, कि आज जब तक तू तीन बार इन्कार न कर दे, कि तू मुझे जानता है, तब तक कोना न देगा। 35 और उस ने उन से कहा; जब कभी मैं ने तुम्हें बिना थैली, बिना थैली और बिना जूतों के भेजा है, तो क्या तुम्हें कभी घटी हुई है? उन्होंने कहा: कभी नहीं। 36 फिर उसने उनसे कहा, "लेकिन अब जिस किसी के पास पर्स हो वह उसे ले ले और थैली भी ले ले और जिसके पास न हो वह अपना कपड़ा बेच दे और तलवार मोल ले। 37 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जो लिखा है, वह मुझ में सिद्ध हो जाए, कि वह कुकर्मियों में गिना जाता है। क्योंकि जो मेरे द्वारा लिखा गया है वह भी पूरा होगा।

38 उन्होंने कहा, "हे प्रभु, देख, यहाँ दो तलवारें हैं। उस ने उन से कहा, बहुत हो गया। 39 और वह अपनी रीति के अनुसार जैतून के पहाड़ पर निकल गया। और उसके चेले उसके पीछे हो लिए। 40 वहाँ आकर उसने उनसे कहा, "प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। 41 और उसने उन से एक पत्थर फाड़ा और घुटने टेककर प्रार्थना की, 42 और कहा, "पिता, यदि तू चाहे तो यह कटोरा मुझ से ले ले; परन्तु मेरी नहीं, परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो। 43 और स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उसके सामने प्रकट हुआ और उसे सामर्थ दी। 44 और ऐसा हुआ कि उसने मृत्यु से संघर्ष किया, और अधिक उत्साह से प्रार्थना की । लेकिन उसका पसीना खून की बूंदों की तरह हो गया, जो जमीन पर गिर गया। 45 वह प्रार्थना से उठा और अपने चेलों के पास आया और उन्हें उदास सोते हुए पाया, 46 और उनसे कहा, "तुम क्यों सो रहे हो? उठो और प्रार्थना करो, ताकि तुम प्रलोभन में न पड़ो। 47 वह अभी बोल ही रहा था, कि दल आ गया; और उन बारहों में से एक जिसका नाम यहूदा था, उनके आगे आगे आगे बढ़कर यीशु को चूमने के लिये उसके पास गया। 48 यीशु ने उससे कहा, "यहूदा, क्या तू मनुष्य के पुत्र को चूमकर पकड़वाता है? 49 जब जो उसके आस-पास थे, उन्होंने देखा कि क्या होनेवाला है, तो उससे कहा, "हे प्रभु, क्या हम तलवार से मारेंगे? 50 और उन में से एक ने महायाजक के दास को मारा, और उसका दाहिना कान काट डाला। 51 यीशु ने उत्तर दिया, "रुक जाओ। और उसने उसके कान को छुआ और उसे चंगा किया। 52 यीशु ने मन्दिर के महायाजकों और सूबेदारों और पुरनियों से जो उसके पास आए थे, कहा, तुम तलवारें और डंडे लिए हुए निकले हो, जैसे हत्यारा हो। 53 मैं प्रति दिन मन्दिर में तुम्हारे साथ रहा हूँ और तुम लोगों ने मुझ पर हाथ नहीं डाला। लेकिन यह आपका घंटा और अंधकार की शक्ति है। 54 परन्तु वे उसे पकड़ कर ले गए, और महायाजक के घर ले गए। लेकिन पतरस ने दूर से पीछा किया। 55 तब उन्होंने आँगन के बीच में आग जलाई और वे दोनों साथ बैठ गए। और पतरस उनके बीच बैठ गया। 56 तब एक दासी ने उसे आग के पास बैठे देखा, और उसे गौर से देखते हुए कहा, "यह भी उसके साथ था। 57 उसने यह कहकर इन्कार किया, कि हे नारी, मैं उसे नहीं जानता। 58थोड़ी देर बाद किसी और ने उसे देखकर कहा, "तू भी उन में से है। किन्तु पतरस ने कहा, "हे मनुष्य, मैं नहीं हूँ। 59 और थोड़ी देर के बाद, एक घंटे के बाद, दूसरे ने यह पुष्टि की, कि सचमुच यह मनुष्य उसके साथ था; क्योंकि वह गलीली है। 60 किन्तु पतरस ने उससे कहा, "हे मनुष्य, मैं नहीं जानता तू क्या कह रहा है। और जैसे ही वह अभी भी बोल रहा था, कौवा आ गया। 61 तब यहोवा ने मुड़कर

पतरस की ओर देखा। और पतरस को प्रभु का वचन याद आया, जैसा उसने उससे कहा था, "आज कौवे के साम्हने तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा। 62 तब पतरस बाहर निकलकर फूट-फूट कर रोने लगा। 63 मगर जो लोग यीशु को पकड़े हुए थे, वे उसका मज़ाक उड़ाते और पीटते थे, 64 उसे ढँक कर पूछने लगे, "भविष्यद्वाणी, यह कौन है जिसने तुझे मारा?" 65 और उन्होंने उसके विरोध में और भी बहुत सी निन्दा की। 66 जब दिन हुआ, तो प्रजा के पुरनिये जो महायाजक और शास्त्री इकट्ठे हुए और उसे अपनी महासभा के सामने ले आए, 67 और कहा, "यदि तू मसीह है, तो हम से कह। उस ने उन से कहा, यदि मैं तुम से कहूं, तो तुम विश्वास नहीं करोगे; 68 मगर अगर मैं पूछूँ, तो तुम मुझे जवाब नहीं दोगे। 69 किन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठेगा। 70 तब वे सब बोले, "क्या तू परमेश्वर का पुत्र है? उस ने उन से कहा; तुम कहते हो; वह मैं हूँ। 71 मगर वे कहने लगे: "अब हमें और गवाही की ज़रूरत क्यों रही? हमने खुद उनके मुंह से यह सुना है।

23 1 तब सारी भीड़ उठ खड़ी हुई और उसे पीलातुस के सामने ले आए, 2 और उस पर दोष लगाते हुए कहने लगे, "हमने पाया है कि यह मनुष्य हमारी प्रजा को दूर कर रहा है और कैसर को कर देने से मना कर रहा है, और कह रहा है कि यह मसीह है, एक राजा। 3 किन्तु पीलातुस ने उससे पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है? उसने उसे उत्तर दिया और कहा, "तुम ऐसा कहते हो। 4 पिलातुस ने महायाजकों और लोगों से कहा, "मुझे इस व्यक्ति में कोई दोष नहीं मिला। 5 परन्तु वे और भी उतावले हो गए, और कहने लगे, कि वह सारे यहूदिया देश में उपदेश देकर प्रजा को उभारता है, और यहां तक गलील में भी आरम्भ किया है। 6 जब पीलातुस ने यह सुना तो उसने पूछा कि क्या वह व्यक्ति गलीलिया से है? 7 और जब उस ने सुना, कि वह हेरोदेस के हाकिमों में से है, तो उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, जो उन दिनों यरूशलेम में ही था। 8 परन्तु जब हेरोदेस ने यीशु को देखा, तो वह बहुत आनन्दित हुआ; क्योंकि वह उसे बहुत पहले देखना पसंद करता; क्योंकि उस ने उसके विषय में सुना था, और आशा की थी कि वह उस से एक चिन्ह देखेगा। 9 और उस ने उस से बहुत सी बातें पूछीं। लेकिन उसने उसे कुछ जवाब नहीं दिया। 10 परन्तु महायाजक और शास्त्री खड़े रहे और उस पर कठोर दोष लगाया। 11 परन्तु हेरोदेस और उसके सेवकों ने तुच्छ जाना और उसका मजाक उड़ाया, और उसे श्वेत वस्त्र पहनाकर पीलातुस के पास लौटा भेजा। 12 उस समय पीलातुस और हेरोदेस एक दूसरे के मित्र हो गए; क्योंकि पहले वे एक-दूसरे के दुश्मन थे। 13 किन्तु पीलातुस ने महायाजकों, हाकिमों और प्रजा को बुलाकर उनसे कहा, "तुम इस मनुष्य को मेरे पास ऐसे लाए हो जो लोगों को भगाता है। और देखो, मैं ने तेरे साम्हने उसकी परीक्षा की है, और जिन बातों का तू उस पर दोष लगाता है, उन में मैं मनुष्य को कोई नहीं पाता; 15 हेरोदेस ने भी नहीं किया, क्योंकि उसने उसे हमारे पास लौटा दिया है। और देखो, उसने मृत्यु के योग्य कुछ नहीं किया है । 16 इसलिए मैं उसे ताड़ना देकर छोड़ दूँगा। 17 तब सब लोग चिल्ला उठे और कहने लगे, "इस मनुष्य को छोड़ दो और बरअब्बा को छोड़ दो। 19 नगर में हुए उपद्रव और हत्या के कारण वह बन्दीगृह में डाला गया। 20 तब पीलातुस ने उन्हें फिर पुकारा क्योंकि वह यीशु को रिहा करना चाहता था। 21 परन्तु उन्होंने चिल्लाकर कहा, "उसे क्रूस पर चढ़ाओ, उसे क्रूस पर चढ़ाओ। 22 उस ने तीसरी बार उन से कहा; इस आदमी ने क्या बुरा किया है? मुझे उसमें कुछ भी नहीं मिलता है जो मृत्यु के योग्य हो; इसलिथे मैं उसे ताड़ना दूंगा और छोड़ दूंगा। 23 परन्तु उन्होंने बड़े जयजयकार के साथ उस पर आक्रमण किया, और माँग की कि उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए। और उनकी चीखें हाथ से निकल गईं। 24 और पीलातुस ने फैसला किया कि उनकी बिनती पूरी हो गई, 25 और जो राजद्रोह और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया था, जिसे उन्होंने माँगा था, उसे छोड़ दिया; परन्तु उसने यीशु को उनकी इच्छा के हवाले कर दिया। 26 जब वे उसे ले जा रहे थे, तो उन में से एक कुरेनी शमौन को, जो मैदान से आ रहा था, पकड़ लिया, और यीशु को डांटने के लिये क्रूस उस पर रख दिया। 27 और उसके पीछे बहुत से लोग और स्त्रियां उसके लिये विलाप करती और रोती हुई उसके पीछे हो लीं। 28 यीशु ने उनकी ओर मुड़कर कहा, "यरूशलेम की बेटियो, मेरे वास्ते मत रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के वास्ते रोओ। 29 क्योंकि देखो, वह समय आएगा जब यह कहा जाएगा, 'धन्य हैं वे, जो हैं, और वे शरीर जिन्होंने जन्म नहीं दिया है, और वे स्तन जिन्होंने भोजन नहीं किया है। 30 तब वे पहाड़ों से कहने लगेंगे, 'हम पर गिर पड़ो। और पहाड़ियों के लिए: हमें कवर करें! 31 क्योंकि यदि हरी लकड़ी के साथ ऐसा किया जाए, तो मुरझाए हुए लोग क्या होंगे? 32 और कुछ और भी थे, जो दो कुकर्मी थे, जिन्हें उसके साथ दूर करने के लिए ले जाया गया था। 33 और जब वे खोपड़ी के स्थान को पहुँचे, तो वहाँ उसे और उसके साथ कुकर्मियों को भी एक को दाहिनी और एक को बाईं ओर क्रूस पर चढ़ाया। 34 मगर यीशु ने कहा, "ऐ बाप, इन्हें माफ कर। क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं! और उन्होंने उसके वस्त्र बांट लिए, और उनके लिये चिट्ठी डाली। 35 और लोग खड़े होकर देखते रहे। शासकों ने भी मजाक उड़ाया और कहा, "उसने दूसरों की मदद की है; वह अपनी सहायता करे, वही मसीह है, परमेश्वर का चुना हुआ। 36 सिपाहियों

ने भी उसका मज़ाक उड़ाया और उसके पास आकर सिरका लाकर 37 कहा, "अगर तू यहूदियों का राजा है, तो अपने आप को बचा। 38 और उसके ऊपर यह लिखा था, कि यह यहूदियों का राजा है। 39 परन्तु जो फांसी पर लटकाया गया था, उसके कुकर्मी ने यह कहकर उसकी निन्दा की, कि क्या तू मसीह नहीं है? अपनी और हमारी मदद करो! 40 इस पर दूसरे ने उसे डांटकर कहा, क्या तू परमेश्वर से नहीं डरता, जो दण्ड की आज्ञा का भागी है? 41 और हम इसमें ठीक हैं, क्योंकि हम अपने कामों का मूल्य प्राप्त करते हैं; लेकिन उन्होंने कुछ गलत नहीं किया है। 42 और उस ने कहा, हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मुझे स्मरण करना। 43 ईसा' ने उस से कहा, "मैं तुझसे सच कहता हूँ कि तू आज ही मेरे साथ फ़िर्दौस में होगा। 44 और छठवें पहर का पहर बज चुका था, और नौवें पहर तक सारे देश में अन्धकार छा गया, 45 और सूर्य ने अपना प्रकाश खो दिया, और मन्दिर का परदा फट गया। 46 यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, "हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ। और जब वह यह कहा था, वह मर गया.
47 जब सूबेदार ने देखा कि क्या हो रहा है, तो उसने परमेश्वर की स्तुति करते हुए कहा, "निश्चय ही यह मनुष्य एक धर्मी मनुष्य था। 48 और जितने लोग वहाँ थे और देख रहे थे, उन्होंने छाती पीटकर पीछे मुँह फेर लिया। 49 और उसके सब जान-पहचान वाले दूर खड़े थे, और स्त्रियाँ दूर खड़ी थीं। गलील के लोग उसके पीछे हो लिए थे, और उन्होंने ये सब बातें देखी थीं। 50 और देखो, यूसुफ नाम एक पार्षद था, जो एक अच्छा और धर्मपरायण व्यक्ति था, 51 और उसने उनकी सलाह और व्यवहार को स्वीकार नहीं किया था । वह यहूदियों के एक शहर अरिमतिया से था, जो परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहा था। 52 फिर वह पीलातुस के पास गया और यीशु की लाश माँगने लगा, 53 और उसे उतारकर मलमल में लपेटा और एक कटी हुई कब्र में रख दिया, जिसमें कभी कोई नहीं पड़ा था। 54 तैयारी का दिन था, और सब्त का दिन शुरू हुआ। 55 और जो स्त्रियाँ गलील से उसके साथ आई थीं, उन्होंने पीछे पीछे चलकर कब्र को देखा और देखा कि उसकी लोथ किस रीति रखी गई है। 56 किन्तु उन्होंने पीछे मुड़कर सुगन्ध और इत्र तैयार किया। और सभी सब्त वे व्यवस्था के अनुसार चुप थे.

## 24

1 किन्तु सप्ताह के पहिले दिन बहुत पहले ही वे कब्र पर उन सुगन्धित पदार्थों को ले आए जो उन्होंने तैयार किए थे। 2 मगर उन्होंने पत्थर को कब्र से लुढ़का हुआ पाया, 3 और अंदर गए, और प्रभु यीशु की लोथ नहीं पाई। 4 और जब उन्हें इस बारे में चिंता हुई, तो देखो, दो चमकते हुए वस्त्र लिए हुए उनके पास आए। 5 और वे बहुत डर गए, और उनके मुंह जमीन पर गिर पड़े। उन्हों ने उन से कहा; तुम जीवतों को मरे हुओं में क्यों ढूंढ़ते हो? 6 वह यहाँ नहीं है; वह जी उठा है। याद करो कि जब वह गलील में ही था, 7 तब उसने तुमसे क्या कहा था, "मनुष्य के पुत्र को पापियों के हाथ में पकड़वाया जाना चाहिए, और क्रूस पर चढ़ाया जाना चाहिए, और तीसरे दिन फिर जी उठना चाहिए। 8 और उन्हें उसके वचन याद आए। 9 और वे फिर कब्र से नीचे उतरे और ग्यारह चेलों और बाकी सब को ये सब बातें बता दीं। 10 और मरियम मगदलीनी, योआना, और याकूब की माता मरियम और उनके साथ के अन्य लोग थे, जिन्होंने प्रेरितों से ये बातें कहीं। 11 और ये बातें उन्हें मानो परियों की बातें मानो हों, और उन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया। 12 तब पतरस उठा, और दौड़कर कब्र पर गया, और झुक कर केवल सनी के कपड़े देखे, और यह देखकर चला गया कि क्या हुआ है। 13 और देखो, उसी दिन उन में से दो एक ऐसे स्थान पर गए जो यरूशलेम से दो घंटे की पैदल दूरी पर था; नाम है एम्मॉस। 14 और वे आपस में इन सब कहानियों के बारे में बातें कर रहे थे। 15 जब वे आपस में बातें और बातें कर रहे थे, तो यीशु आप उनके निकट आया, और उनके साथ चल फिरा। 16 किन्तु उनकी आँखें ऐसी थीं, कि वे उसे पहचान न पाए। 17 उस ने उन से कहा, मार्ग में तुम ये क्या बातें करते हो? वहां वे उदास होकर रुक गए। 18 उन में से एक जिसका नाम क्लियोपास था, उत्तर देकर उस से कहा, क्या यरूशलेम में रहनेवाले परदेशियों में से तू अकेला है, जो नहीं जानता कि आज के दिनों में वहां क्या हुआ है? 19 उसने उनसे कहा, "क्या? और उन्होंने उससे कहा, "नासरत के यीशु की, जो एक नबी था, जो परमेश्वर और सभी लोगों के सामने कामों और शब्दों में शक्तिशाली था; 20 जब हमारे महायाजकों और हाकिमों ने उसे मृत्यु दण्ड के हाथ में कर दिया और क्रूस पर चढ़ा दिया। 21 किन्तु हमें आशा थी कि वही इस्राएल को छुटकारा देगा। और इन सबसे बड़ी बात यह है कि आज तीसरी बार ऐसी घटनाएं हुई हैं। 22 हम में से कुछ स्त्रियों से भी घबरा गए; 23 उसका शरीर नहीं मिला, आओ और कहो कि उन्होंने स्वर्गदूतों की एक झलक देखी है जो कहते हैं कि वह जीवित है। 24 और हम में से कितने कब्र के पास गए, और उसे वैसा ही पाया, जैसा स्त्रियों ने कहा था; परन्तु उन्होंने उसे नहीं देखा। 25 और उस ने उन से कहा; हे मूर्खों, मन के आलसी हो, भविष्यद्वक्ताओं ने जो कुछ कहा है, उस सब पर विश्वास करो। 26 क्या मसीह को ये दु:ख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करने की आवश्यकता नहीं थी?

27 फिर उसने मूसा और सब नबियों से आरम्भ किया और पवित्र शास्त्र में से जो कुछ उसके विषय में कहा गया था, उन्हें समझाया और जिस स्थान को वे जा रहे थे वहाँ के निकट पहुँचे। और उसने आगे बढ़ने का नाटक किया। 29 उन्होंने उसे यह कहकर विवश किया, कि हमारे साथ रह; क्योंकि शाम होने वाली है, और दिन आ गया है। और वह उनके साथ रहने के लिए अंदर चला गया। 30 और ऐसा हुआ कि जब वह उनके साथ भोजन पर बैठा या, तो उस ने रोटी लेकर धन्यवाद किया, और तोड़कर उन्हें दे दिया। 31 तब उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने उसे पहचान लिया। और वह उनसे गायब हो गया। 32 और वे आपस में कहने लगे, "जब उस ने मार्ग में हम से बातें कीं, और पवित्र शास्त्र के द्वार को हमारे लिये खोलकर क्या हमारा मन भीतर ही भीतर नहीं जलता था? 33 उसी समय वे उठकर यरूशलेम को लौट गए, और उन ग्यारहों और जो उनके साथ थे, उन्हें इकट्ठे पाया, 34 और कहा, "सचमुच प्रभु जी उठा है और शमौन को दिखाई दिया है। 35 उन्होंने मार्ग में जो कुछ हुआ था, उसे बताया और रोटी तोड़ते समय उन्होंने उसे किस रीति से पहचान लिया। 36 जब वे यह बातें कर ही रहे थे कि यीशु खुद उनके बीच में खड़ा था। 37 परन्तु वे डर गए, और डर गए, और समझकर किसी आत्मा को देखा। 38 और उस ने उन से कहा; तुम इतने भयभीत क्यों हो, और तुम्हारे मन में यह विचार क्यों आते हैं? 39 देख, मेरे हाथ और पांव मैं ही हूं। मुझे महसूस करो और देखो; क्योंकि आत्मा के पास न तो मांस होता और न हड्डी, जैसा कि तुम देखते हो कि मेरे पास है। 40 मगर जब वे आनन्द के मारे विश्वास न कर रहे थे और चकित हो गए तो उसने उनसे कहा, "क्या तुम्हारे पास यहाँ खाने के लिए कुछ है? 42 और उन्होंने उसके सामने तली हुई मछली का एक टुकड़ा रखा। 43 और उस ने उसे लेकर उनके सामने खाया। 44 उसने उनसे कहा, "जब मैं तुम्हारे साथ ही था तब मैंने तुमसे कहा था कि मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों में जो कुछ मेरे बारे में लिखा है, वह सब अवश्य पूरा हो। 45 फिर उसने उनके सामने यह समझ खोली कि वे शास्त्रों को समझते हैं, 46 और उनसे कहा, "लिखा है कि मसीह को तीसरे दिन दुख उठाना और मरे हुओं में से जी उठना पड़ा; 47 और उस मन फिराव का प्रचार उसके नाम से किया जाए, ताकि सब जातियों में पापों की क्षमा हो। 48 यरूशलेम को चढ़ो और सब बातों के गवाह बनो। 49 और देखो, मैं अपने पिता की प्रतिज्ञा के अनुसार तुम्हारे पास भेजूंगा। परन्तु तू तब तक नगर में रहेगा जब तक कि तू ऊपर से सामर्थ्य पहिन न ले। 50 और वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीर्वाद दिया। 51 और ऐसा हुआ, कि जब उसने उन्हें आशीर्वाद दिया, तो वह उनके पास से चला गया । 52 मगर वे बड़े आनन्द के साथ यरूशलेम लौटे 53 और मंदिर में सदा परमेश्वर की स्तुति करते रहते थे।

- Evangelium nach Johannes:

1

1 Im Anfang war das Wort, und das Wort war bei Gott, und Gott war das Wort.
2 Dasselbe war im Anfang bei Gott.
3 Alle Dinge sind durch dasselbe gemacht, und ohne dasselbe ist nichts gemacht, was gemacht ist.
4 In ihm war das Leben, und das Leben war das Licht der Menschen.
5 Und das Licht scheint in der Finsternis, und die Finsternis hat's nicht begriffen.
6 Es ward ein Mensch von Gott gesandt, der hieß Johannes.
7 Dieser kam zum Zeugnis, dass er von dem Licht zeugte, auf dass sie alle durch ihn glaubten.
8 Er war nicht das Licht, sondern dass er zeugte von dem Licht.
9 Das war das wahrhaftige Licht, welches alle Menschen erleuchtet, die in diese Welt kommen.
10 Es war in der Welt, und die Welt ist durch dasselbe gemacht; und die Welt kannte es nicht.
11 Er kam in sein Eigentum; und die Seinen nahmen ihn nicht auf.
12 Wie viele ihn aber aufnahmen, denen gab er Macht, Kinder Gottes zu werden, die an seinen Namen glauben;
13 welche nicht von dem Geblüt noch von dem Willen des Fleisches noch von dem Willen eines Mannes, sondern von Gott geboren sind.
14 Und das Wort ward Fleisch und wohnte unter uns, und wir sahen seine Herrlichkeit, eine Herrlichkeit als des eingeborenen Sohnes vom Vater, voller Gnade und Wahrheit.
15 Johannes zeugt von ihm, ruft und spricht: Dieser war es, von dem ich gesagt habe: Nach mir wird kommen, der vor mir gewesen ist; denn er war eher als ich.
16 Und von seiner Fülle haben wir alle genommen Gnade um Gnade.
17 Denn das Gesetz ist durch Moses gegeben; die Gnade und Wahrheit ist durch Jesum Christum geworden.
18 Niemand hat Gott je gesehen; der eingeborene Sohn, der in des Vaters Schoß ist, der hat es uns verkündigt.
19 Und dies ist das Zeugnis des Johannes, da die Juden sandten von Jerusalem Priester und Leviten, dass sie ihn fragten: Wer bist du?
20 Und er bekannte und leugnete nicht; und er bekannte: Ich bin nicht Christus.

21 Und sie fragten ihn: Was denn? Bist du Elia? Er sprach: Ich bin's nicht. Bist du der Prophet? Und er antwortete: Nein!
22 Da sprachen sie zu ihm: Was bist du denn? dass wir Antwort geben denen, die uns gesandt haben. Was sagst du von dir selbst?
23 Er sprach: Ich bin eine Stimme eines Predigers in der Wüste: Richtet den Weg des Herrn! wie der Prophet Jesaja gesagt hat.
24 Und die gesandt waren, die waren von den Pharisäern.
25 Und sie fragten ihn und sprachen zu ihm: Warum taufst du denn, so du nicht Christus bist noch Elia noch der Prophet?
26 Johannes antwortete ihnen und sprach: Ich taufe mit Wasser; aber er ist mitten unter euch getreten, den ihr nicht kennt.
27 Der ist's, der nach mir kommen wird, welcher vor mir gewesen ist, des ich nicht wert bin, dass ich seine Schuhriemen auflöse.
28 Dies geschah zu Bethabara jenseit des Jordans, wo Johannes taufte.
29 Des andern Tages sieht Johannes Jesum zu ihm kommen und spricht: Siehe, das ist Gottes Lamm, welches der Welt Sünde trägt!
30 Dieser ist's, von dem ich gesagt habe: Nach mir kommt ein Mann, welcher vor mir gewesen ist; denn er war eher denn ich.
31 Und ich kannte ihn nicht; sondern auf dass er offenbar würde in Israel, darum bin ich gekommen, zu taufen mit Wasser.
32 Und Johannes zeugte und sprach: Ich sah, dass der Geist herabfuhr wie eine Taube vom Himmel und blieb auf ihm.
33 Und ich kannte ihn nicht; aber der mich sandte, zu taufen mit Wasser, der sprach zu mir: Auf welchen du sehen wirst den Geist herabfahren und auf ihm bleiben, der ist's, der mit dem heiligen Geist tauft.
34 Und ich sah es und zeugte, dass dieser ist Gottes Sohn.
35 Des andern Tages stand abermals Johannes und zwei seiner Jünger.
36 Und als er Jesum sah wandeln, sprach er: Siehe, das ist Gottes Lamm!
37 Und die zwei Jünger hörten ihn reden und folgten Jesu nach.
38 Jesus aber wandte sich um und sah sie nachfolgen und sprach zu ihnen: Was suchet ihr? Sie aber sprachen zu ihm: Meister, wo bist du zur Herberge?
39 Er sprach zu ihnen: Kommt und sehet's! Sie kamen und sahen's und blieben den Tag bei ihm. Es war aber um die zehnte Stunde.
40 Einer aus den zweien, die von Johannes hörten und Jesus nachfolgten, war Andreas, der Bruder des Simon Petrus.
41 Der findet am ersten seinen Bruder Simon und spricht zu ihm: Wir haben den Messias gefunden (welches ist verdolmetscht: der Gesalbte),
42 und führte ihn zu Jesu. Da ihn Jesus sah, sprach er: Du bist Simon, Jona's Sohn; du sollst Kephas (Fels) heißen.
43 Des andern Tages wollte Jesus wieder nach Galiläa ziehen und findet Philippus und spricht zu ihm: Folge mir nach!
44 Philippus aber war von Bethsaida, aus der Stadt des Andreas und Petrus.
45 Philippus findet Nathanael und spricht zu ihm: Wir haben den gefunden, von welchem Moses im Gesetz und die Propheten geschrieben haben, Jesum, Josephs Sohn von Nazareth.
46 Und Nathanael sprach zu ihm: Was kann von Nazareth Gutes kommen? Philippus spricht zu ihm: Komm und sieh es!
47 Jesus sah Nathanael zu sich kommen und spricht von ihm: Siehe, ein rechter Israeliter, in welchem kein Falsch ist.
48 Nathanael spricht zu ihm: Woher kennst du mich? Jesus antwortete und sprach zu ihm: Ehe denn dich Philippus rief, da du unter dem Feigenbaum warst, sah ich dich.
49 Nathanael antwortete und spricht zu ihm: Rabbi, du bist Gottes Sohn, du bist der König von Israel!
50 Jesus antwortete und sprach zu ihm: Du glaubst, weil ich dir gesagt habe, dass ich dich gesehen habe unter dem Feigenbaum; du wirst noch Größeres denn das sehen.
51 Und spricht zu ihm: Wahrlich, wahrlich ich sage euch: Von nun an werdet ihr den Himmel offen sehen und die Engel Gottes hinauf und herab fahren auf des Menschen Sohn.

2

1 Und am dritten Tag ward eine Hochzeit zu Kana in Galiläa; und die Mutter Jesu war da.
2 Jesus aber und seine Jünger wurden auch auf die Hochzeit geladen.
3 Und da es an Wein gebrach, spricht die Mutter Jesu zu ihm: Sie haben nicht Wein.

4 Jesus spricht zu ihr: Weib, was habe ich mit dir zu schaffen? Meine Stunde ist noch nicht gekommen.
5 Seine Mutter spricht zu den Dienern: Was er euch sagt, das tut.
6 Es waren aber allda sechs steinerne Wasserkrüge gesetzt nach der Weise der jüdischen Reinigung, und ging in je einen zwei oder drei Maß.
7 Jesus spricht zu ihnen: Füllet die Wasserkrüge mit Wasser! Und sie füllten sie bis obenan.
8 Und er spricht zu ihnen: Schöpfet nun und bringet's dem Speisemeister! Und sie brachten's.
9 Als aber der Speisemeister kostete den Wein, der Wasser gewesen war, und wusste nicht, woher er kam (die Diener aber wussten's, die das Wasser geschöpft hatten), ruft der Speisemeister den Bräutigam
10 und spricht zu ihm: Jedermann gibt zum ersten guten Wein, und wenn sie trunken geworden sind, alsdann den geringeren; du hast den guten Wein bisher behalten.
11 Das ist das erste Zeichen, das Jesus tat, geschehen zu Kana in Galiläa, und offenbarte seine Herrlichkeit. Und seine Jünger glaubten an ihn.
12 Darnach zog er hinab gen Kapernaum, er, seine Mutter, seine Brüder und seine Jünger; und sie blieben nicht lange daselbst.
13 Und der Juden Ostern war nahe, und Jesus zog hinauf gen Jerusalem.
14 Und er fand im Tempel sitzen, die da Ochsen, Schafe und Tauben feil hatten, und die Wechsler.
15 Und er machte eine Geißel aus Stricken und trieb sie alle zum Tempel hinaus samt den Schafen und Ochsen und verschüttete den Wechslern das Geld und stieß die Tische um
16 und sprach zu denen, die die Tauben feil hatten: tragt das von dannen und macht nicht meines Vaters Haus zum Kaufhause!
17 Seine Jünger aber gedachten daran, dass geschrieben steht: Der Eifer um dein Haus hat mich gefressen.
18 Da antworteten nun die Juden und sprachen zu ihm: Was zeigst du uns für ein Zeichen, dass du solches tun mögest?
19 Jesus antwortete und sprach zu ihnen: Brechet diesen Tempel, und am dritten Tage will ich ihn aufrichten.
20 Da sprachen die Juden: Dieser Tempel ist in sechsundvierzig Jahren erbaut; und du willst ihn in drei Tagen aufrichten?
21 (Er aber redete von dem Tempel seines Leibes.
22 Da er nun auferstanden war von den Toten, gedachten seine Jünger daran, dass er dies gesagt hatte, und glaubten der Schrift und der Rede, die Jesus gesagt hatte.)
23 Als er aber zu Jerusalem war am Osterfest, glaubten viele an seinen Namen, da sie die Zeichen sahen, die er tat.
24 Aber Jesus vertraute sich ihnen nicht; denn er kannte sie alle
25 und bedurfte nicht, dass jemand Zeugnis gäbe von einem Menschen; denn er wusste wohl, was im Menschen war.

3 1 Es war aber ein Mensch unter den Pharisäern mit Namen Nikodemus, ein Oberster unter den Juden.
2 Der kam zu Jesu bei der Nacht und sprach zu ihm: Meister, wir wissen, dass du bist ein Lehrer von Gott gekommen; denn niemand kann die Zeichen tun, die du tust, es sei denn Gott mit ihm.
3 Jesus antwortete und sprach zu ihm: Wahrlich, wahrlich, ich sage dir: Es sei denn, dass jemand von neuem geboren werde, so kann er das Reich Gottes nicht sehen.
4 Nikodemus spricht zu ihm: Wie kann ein Mensch geboren werden wenn er alt ist? Kann er auch wiederum in seiner Mutter Leib gehen und geboren werden?
5 Jesus antwortete: Wahrlich, wahrlich ich sage dir: Es sei denn dass jemand geboren werde aus Wasser und Geist, so kann er nicht in das Reich Gottes kommen.
6 Was vom Fleisch geboren wird, das ist Fleisch; und was vom Geist geboren wird, das ist Geist.
7 Lass dich's nicht wundern, dass ich dir gesagt habe: Ihr müsset von neuem geboren werden.
8 Der Wind bläst, wo er will, und du hörst sein Sausen wohl; aber du weißt nicht, woher er kommt und wohin er fährt. Also ist ein jeglicher, der aus dem Geist geboren ist.
9 Nikodemus antwortete und sprach zu ihm: Wie mag solches zugehen?
10 Jesus antwortete und sprach zu ihm: Bist du ein Meister in Israel und weißt das nicht?
11 Wahrlich, wahrlich ich sage dir: Wir reden, was wir wissen, und zeugen, was wir gesehen haben; und ihr nehmt unser Zeugnis nicht an.
12 Glaubet ihr nicht, wenn ich euch von irdischen Dingen sage, wie würdet ihr glauben, wenn ich euch von himmlischen Dingen sagen würde?
13 Und niemand fährt gen Himmel, denn der vom Himmel herniedergekommen ist, nämlich des Menschen Sohn, der im Himmel ist.
14 Und wie Mose in der Wüste eine Schlange erhöht hat, also muss des Menschen Sohn erhöht werden,
15 auf das alle, die an ihn glauben, nicht verloren werden, sondern das ewige Leben haben.

16 Also hat Gott die Welt geliebt, dass er seinen eingeborenen Sohn gab, auf dass alle, die an ihn glauben, nicht verloren werden, sondern das ewige Leben haben.
17 Denn Gott hat seinen Sohn nicht gesandt in die Welt, dass er die Welt richte, sondern dass die Welt durch ihn selig werde.
18 Wer an ihn glaubt, der wird nicht gerichtet; wer aber nicht glaubt, der ist schon gerichtet, denn er glaubt nicht an den Namen des eingeborenen Sohnes Gottes.
19 Das ist aber das Gericht, dass das Licht in die Welt gekommen ist, und die Menschen liebten die Finsternis mehr als das Licht; denn ihre Werke waren böse.
20 Wer arges tut, der hasst das Licht und kommt nicht an das Licht, auf dass seine Werke nicht gestraft werden.
21 Wer aber die Wahrheit tut, der kommt an das Licht, dass seine Werke offenbar werden; denn sie sind in Gott getan.
22 Danach kam Jesus und seine Jünger in das jüdische Land und hatte daselbst sein Wesen mit ihnen und taufte.
23 Johannes aber taufte auch noch zu Enon, nahe bei Salim, denn es war viel Wasser daselbst; und sie kamen dahin und ließen sich taufen.
24 Denn Johannes war noch nicht ins Gefängnis gelegt.
25 Da erhob sich eine Frage unter den Jüngern des Johannes mit den Juden über die Reinigung.
26 Und sie kamen zu Johannes und sprachen zu ihm: Meister, der bei dir war jenseit des Jordans, von dem du zeugtest, siehe, der tauft, und jedermann kommt zu ihm.
27 Johannes antwortete und sprach: Ein Mensch kann nichts nehmen, es werde ihm denn gegeben vom Himmel.
28 Ihr selbst seid meine Zeugen, dass ich gesagt habe, ich sei nicht Christus, sondern vor ihm her gesandt.
29 Wer die Braut hat, der ist der Bräutigam; der Freund aber des Bräutigams steht und hört ihm zu und freut sich hoch über des Bräutigams Stimme. Diese meine Freude ist nun erfüllt.
30 Er muss wachsen, ich aber muss abnehmen.
31 Der von obenher kommt, ist über alle. Wer von der Erde ist, der ist von der Erde und redet von der Erde. Der vom Himmel kommt, der ist über alle
32 und zeugt, was er gesehen und gehört hat; und sein Zeugnis nimmt niemand an.
33 Wer es aber annimmt, der besiegelt's, dass Gott wahrhaftig sei.
34 Denn welchen Gott gesandt hat, der redet Gottes Worte; denn Gott gibt den Geist nicht nach dem Maß.
35 Der Vater hat den Sohn lieb und hat ihm alles in seine Hand gegeben.
36 Wer an den Sohn glaubt, der hat das ewige Leben. Wer dem Sohn nicht glaubt, der wird das Leben nicht sehen, sondern der Zorn Gottes bleibt über ihm.

4 1 Da nun der Herr inneward, dass vor die Pharisäer gekommen war, wie Jesus mehr Jünger machte und taufte denn Johannes
2 (wiewohl Jesus selber nicht taufte, sondern seine Jünger),
3 verließ er das Land Judäa und zog wieder nach Galiläa.
4 Er musste aber durch Samaria reisen.

5 Da kam er in eine Stadt Samarias, die heißt Sichar, nahe bei dem Feld, das Jakob seinem Sohn Joseph gab.
6 Es war aber daselbst Jakobs Brunnen. Da nun Jesus müde war von der Reise, setzte er sich also auf den Brunnen; und es war um die sechste Stunde.
7 Da kommt ein Weib aus Samaria, Wasser zu schöpfen. Jesus spricht zu ihr: Gib mir zu trinken!
8 (Denn seine Jünger waren in die Stadt gegangen, dass sie Speise kauften.)
9 Spricht nun das samaritische Weib zu ihm: Wie bittest du von mir zu trinken, so du ein Jude bist, und ich ein samaritisch Weib? (Denn die Juden haben keine Gemeinschaft mit den Samaritern.)
10 Jesus antwortete und sprach zu ihr: Wenn du erkenntest die Gabe Gottes und wer der ist, der zu dir sagt: „Gib mir zu trinken!", du bätest ihn, und er gäbe dir lebendiges Wasser.
11 Spricht zu ihm das Weib: Herr, hast du doch nichts, womit du schöpfest, und der Brunnen ist tief; woher hast du denn lebendiges Wasser?
12 Bist du mehr denn unser Vater Jakob, der uns diesen Brunnen gegeben hat? Und er hat daraus getrunken und seine Kinder und sein Vieh.
13 Jesus antwortete und sprach zu ihr: Wer von diesem Wasser trinkt, den wir wieder dürsten;
14 wer aber von dem Wasser trinken wird, das ich ihm gebe, den wird ewiglich nicht dürsten; sondern das Wasser, das ich ihm geben werde, das wird in ihm ein Brunnen des Wassers werden, das in das ewige Leben quillt.
15 Spricht das Weib zu ihm: Herr, gib mir dieses Wasser, auf dass mich nicht dürste und ich nicht herkommen müsse, zu schöpfen!

16 Jesus spricht zu ihr: Gehe hin, rufe deinen Mann und komm her!
17 Das Weib antwortete und sprach zu ihm: Ich habe keinen Mann. Jesus spricht zu ihr: Du hast recht gesagt: Ich habe keinen Mann.
18 Fünf Männer hast du gehabt, und den du nun hast, der ist nicht dein Mann; da hast du recht gesagt.
19 Das Weib spricht zu ihm: Herr, ich sehe, dass du ein Prophet bist.
20 Unsre Väter haben auf diesem Berge angebetet, und ihr sagt, zu Jerusalem sei die Stätte, da man anbeten solle.
21 Jesus spricht zu ihr: Weib, glaube mir, es kommt die Zeit, dass ihr weder auf diesem Berge noch zu Jerusalem werdet den Vater anbeten.
22 Ihr wisset nicht, was ihr anbetet; wir wissen aber, was wir anbeten, denn das Heil kommt von den Juden.
23 Aber es kommt die Zeit und ist schon jetzt, dass die wahrhaftigen Anbeter werden den Vater anbeten im Geist und in der Wahrheit; denn der Vater will haben, die ihn also anbeten.
24 Gott ist Geist, und die ihn anbeten, die müssen ihn im Geist und in der Wahrheit anbeten.
25 Spricht das Weib zu ihm: Ich weiß, dass der Messias kommt, der da Christus heißt. Wenn derselbe kommen wird, so wird er's uns alles verkündigen.
26 Jesus spricht zu ihr: Ich bin's, der mit dir redet.
27 Und über dem kamen seine Jünger, und es nahm sie wunder, dass er mit dem Weib redete. Doch sprach niemand: Was fragst du? oder: Was redest du mit ihr?
28 Da ließ das Weib ihren Krug stehen und ging hin in die Stadt und spricht zu den Leuten:
29 Kommt, seht einen Menschen, der mir gesagt hat alles, was ich getan habe, ob er nicht Christus sei!
30 Da gingen sie aus der Stadt und kamen zu ihm.
31 Indes aber ermahnten ihn die Jünger und sprachen: Rabbi, iss!
32 Er aber sprach zu ihnen: Ich habe eine Speise zu essen, von der ihr nicht wisset.
33 Da sprachen die Jünger untereinander: Hat ihm jemand zu essen gebracht?
34 Jesus spricht zu ihnen: Meine Speise ist die, dass ich tue den Willen des, der mich gesandt hat, und vollende sein Werk.
35 Saget ihr nicht: Es sind noch vier Monate, so kommt die Ernte? Siehe, ich sage euch: Hebet eure Augen auf und sehet in das Feld; denn es ist schon weiß zur Ernte.
36 Und wer da schneidet, der empfängt Lohn und sammelt Frucht zum ewigen Leben, auf dass sich miteinander freuen, der da sät und der da schneidet.
37 Denn hier ist der Spruch wahr: Dieser sät, der andere schneidet.
38 Ich habe euch gesandt, zu schneiden, was ihr nicht gearbeitet habt; andere haben gearbeitet und ihr seid in ihre Arbeit gekommen.
39 Es glaubten aber an ihn viele der Samariter aus der Stadt um des Weibes Rede willen, welches da zeugte: Er hat mir gesagt alles, was ich getan habe.
40 Als nun die Samariter zu ihm kamen, baten sie ihn, dass er bei ihnen bliebe; und er blieb zwei Tage da.
41 Und viel mehr glaubten um seines Wortes willen
42 und sprachen zum Weibe: Wir glauben nun hinfort nicht um deiner Rede willen; wir haben selber gehört und erkannt, dass dieser ist wahrlich Christus, der Welt Heiland.
43 Aber nach zwei Tagen zog er aus von dannen und zog nach Galiläa.
44 Denn er selber, Jesus, zeugte, dass ein Prophet daheim nichts gilt.
45 Da er nun nach Galiläa kam, nahmen ihn die Galiläer auf, die gesehen hatten alles, was er zu Jerusalem auf dem Fest getan hatte; denn sie waren auch zum Fest gekommen.
46 Und Jesus kam abermals gen Kana in Galiläa, da er das Wasser hatte zu Wein gemacht.
47 Und es war ein Königischer, des Sohn lag krank zu Kapernaum. Dieser hörte, dass Jesus kam aus Judäa nach Galiläa, und ging hin zu ihm und bat ihn, dass er hinabkäme und hülfe seinem Sohn; denn er war todkrank.
48 Und Jesus sprach zu ihm: Wenn ihr nicht Zeichen und Wunder seht, so glaubet ihr nicht.
49 Der Königische sprach zu ihm: Herr, komm hinab, ehe denn mein Kind stirbt!
50 Jesus spricht zu ihm: Gehe hin, dein Sohn lebt! der Mensch glaubte dem Wort, das Jesus zu ihm sagte, und ging hin.
51 Und indem er hinabging, begegneten ihm seine Knechte, verkündigten ihm und sprachen: Dein Kind lebt.
52 Da forschte er von ihnen die Stunde, in welcher es besser mit ihm geworden war. Und sie sprachen zu ihm: Gestern um die siebente Stunde verließ ihn das Fieber.
53 Da merkte der Vater, dass es um die Stunde wäre, in welcher Jesus zu ihm gesagt hatte: Dein Sohn lebt. Und er glaubte mit seinem ganzen Hause.
54 Das ist nun das andere Zeichen, das Jesus tat, da er aus Judäa nach Galiläa kam.

5 1 Darnach war ein Fest der Juden, und Jesus zog hinauf gen Jerusalem.
2 Es ist aber zu Jerusalem bei dem Schaftor ein Teich, der heißt auf hebräisch Bethesda und hat fünf Hallen,
3 in welchem lagen viele Kranke, Blinde, Lahme, Verdorrte, die warteten, wann sich das Wasser bewegte.
4 (Denn ein Engel fuhr herab zu seiner Zeit in den Teich und bewegte das Wasser.) Welcher nun zuerst, nachdem das Wasser bewegt war, hineinstieg, der ward gesund, mit welcherlei Seuche er behaftet war.
5 Es war aber ein Mensch daselbst, achtunddreißig Jahre lang krank gelegen.
6 Da Jesus ihn sah liegen und vernahm, dass er so lange gelegen hatte, spricht er zu ihm: Willst du gesund werden?
7 Der Kranke antwortete ihm: Herr, ich habe keinen Menschen, wenn das Wasser sich bewegt, der mich in den Teich lasse; und wenn ich komme, so steigt ein anderer vor mir hinein.
8 Jesus spricht zu ihm: Stehe auf, nimm dein Bett und gehe hin!
9 Und alsbald ward der Mensch gesund und nahm sein Bett und ging hin. Es war aber desselben Tages der Sabbat.
10 Da sprachen die Juden zu dem, der geheilt worden war: Es ist heute Sabbat; es ziemt dir nicht, das Bett zu tragen.
11 Er antwortete ihnen: Der mich gesund machte, der sprach zu mir: „Nimm dein Bett und gehe hin!”
12 Da fragten sie ihn: Wer ist der Mensch, der zu dir gesagt hat: „Nimm dein Bett und gehe hin!”?
13 Der aber geheilt worden war, wusste nicht, wer es war; denn Jesus war gewichen, da so viel Volks an dem Ort war.
14 Darnach fand ihn Jesus im Tempel und sprach zu ihm: Siehe zu, du bist gesund geworden; sündige hinfort nicht mehr, dass dir nicht etwas Ärgeres widerfahre.
15 Der Mensch ging hin und verkündete es den Juden, es sei Jesus, der ihn gesund gemacht habe.
16 Darum verfolgten die Juden Jesum und suchten ihn zu töten, dass er solches getan hatte am Sabbat.
17 Jesus aber antwortete Ihnen: Mein Vater wirkt bisher, und ich wirke auch.
18 Darum trachteten ihm die Juden viel mehr nach, dass sie ihn töteten, dass er nicht allein den Sabbat brach, sondern sagte auch, Gott sei sein Vater, und machte sich selbst Gott gleich.
19 Da antwortete Jesus und sprach zu ihnen: Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Der Sohn kann nichts von sich selber tun, sondern was er sieht den Vater tun; denn was dieser tut, das tut gleicherweise auch der Sohn.
20 Der Vater aber hat den Sohn lieb und zeigt ihm alles, was er tut, und wird ihm noch größere Werke zeigen, dass ihr euch verwundern werdet.
21 Denn wie der Vater die Toten auferweckt und macht sie lebendig, also auch der Sohn macht lebendig, welche er will.
22 Denn der Vater richtet niemand; sondern alles Gericht hat er dem Sohn gegeben,
23 auf dass sie alle den Sohn ehren, wie sie den Vater ehren. Wer den Sohn nicht ehrt, der ehrt den Vater nicht, der ihn gesandt hat.
24 Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Wer mein Wort hört und glaubt dem, der mich gesandt hat, der hat das ewige Leben und kommt nicht in das Gericht, sondern er ist vom Tode zum Leben hindurchgedrungen.
25 Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Es kommt die Stunde und ist schon jetzt, dass die Toten werden die Stimme des Sohnes Gottes hören; und die sie hören werden, die werden leben.
26 Denn wie der Vater hat das Leben in ihm selber, also hat er dem Sohn gegeben, das Leben zu haben in ihm selber,
27 und hat ihm Macht gegeben, auch das Gericht zu halten, darum dass er des Menschen Sohn ist.
28 Verwundert euch des nicht, denn es kommt die Stunde, in welcher alle, die in den Gräbern sind, werden seine Stimme hören,
29 und werden hervorgehen, die da Gutes getan haben, zur Auferstehung des Lebens, die aber Übles getan haben, zur Auferstehung des Gerichts.
30 Ich kann nichts von mir selber tun. Wie ich höre, so richte ich, und mein Gericht ist recht; denn ich suche nicht meinen Willen, sondern des Vaters Willen, der mich gesandt hat.
31 So ich von mir selbst zeuge, so ist mein Zeugnis nicht wahr.
32 Ein anderer ist's, der von mir zeugt; und ich weiß, dass das Zeugnis wahr ist, das er von mir zeugt.
33 Ihr schicktet zu Johannes, und er zeugte von der Wahrheit.
34 Ich aber nehme nicht Zeugnis von Menschen; sondern solches sage ich, auf dass ihr selig werdet.
35 Er war ein brennend und scheinend Licht; ihr aber wolltet eine kleine Weile fröhlich sein in seinem Lichte.
36 Ich aber habe ein größeres Zeugnis; denn des Johannes Zeugnis; denn die Werke, die mir der Vater gegeben hat, dass ich sie vollende, eben diese Werke, die ich tue, zeugen von mir, dass mich der Vater gesandt habe.
37 Und der Vater, der mich gesandt hat, derselbe hat von mir gezeugt. Ihr habt nie weder seine Stimme gehört noch seine Gestalt gesehen,

38 und sein Wort habt ihr nicht in euch wohnend; denn ihr glaubt dem nicht, den er gesandt hat.
39 Suchet in der Schrift; denn ihr meinet, ihr habet das ewige Leben darin; und sie ist's, die von mir zeuget;
40 und ihr wollt nicht zu mir kommen, dass ihr das Leben haben möchtet.
41 Ich nehme nicht Ehre von Menschen;
42 aber ich kenne euch, dass ihr nicht Gottes Liebe in euch habt.
43 Ich bin gekommen in meines Vaters Namen, und ihr nehmet mich nicht an. So ein anderer wird in seinem eigenen Namen kommen, den werdet ihr annehmen.
44 Wie könnet ihr glauben, die ihr Ehre voneinander nehmet? und die Ehre, die von Gott allein ist, suchet ihr nicht.
45 Ihr sollt nicht meinen, dass ich euch vor dem Vater verklagen werde; es ist einer, der euch verklagt, der Mose, auf welchen ihr hofft.
46 Wenn ihr Mose glaubtet, so glaubtet ihr auch mir; denn er hat von mir geschrieben.
47 So ihr aber seinen Schriften nicht glaubt, wie werdet ihr meinen Worten glauben?

6

1 Darnach fuhr Jesus weg über das Meer an der Stadt Tiberias in Galiläa.
2 Und es zog ihm viel Volks nach, darum dass sie die Zeichen sahen, die er an den Kranken tat.
3 Jesus aber ging hinauf auf einen Berg und setzte sich daselbst mit seinen Jüngern.
4 Es war aber nahe Ostern, der Juden Fest.
5 Da hob Jesus seine Augen auf und sieht, dass viel Volks zu ihm kommt, und spricht zu Philippus: Wo kaufen wir Brot, dass diese essen?
6 (Das sagte er aber, ihn zu versuchen; denn er wusste wohl, was er tun wollte.)
7 Philippus antwortete ihm: Für zweihundert Groschen Brot ist nicht genug unter sie, dass ein jeglicher unter ihnen ein wenig nehme.
8 Spricht zu ihm einer seiner Jünger, Andreas, der Bruder des Simon Petrus:
9 Es ist ein Knabe hier, der hat fünf Gerstenbrote und zwei Fische; aber was ist das unter so viele?
10 Jesus aber sprach: Schaffet, dass sich das Volk lagert. Es war aber viel Gras an dem Ort. Da lagerten sich bei fünftausend Mann.
11 Jesus aber nahm die Brote, dankte und gab sie den Jüngern, die Jünger aber denen, die sich gelagert hatten; desgleichen auch von den Fischen, wieviel sie wollten.
12 Da sie aber satt waren, sprach er zu seinen Jüngern: Sammelt die übrigen Brocken, dass nichts umkommt.
13 Da sammelten sie und füllten zwölf Körbe mit Brocken von den fünf Gerstenbroten, die übrig blieben denen, die gespeist worden.
14 Da nun die Menschen das Zeichen sahen, das Jesus tat, sprachen sie: Das ist wahrlich der Prophet, der in die Welt kommen soll.
15 Da Jesus nun merkte, dass sie kommen würden und ihn haschen, dass sie ihn zum König machten, entwich er abermals auf den Berg, er selbst allein.
16 Am Abend aber gingen die Jünger hinab an das Meer
17 und traten in das Schiff und kamen über das Meer gen Kapernaum. Und es war schon finster geworden, und Jesus war nicht zu ihnen gekommen.
18 Und das Meer erhob sich von einem großen Winde.
19 Da sie nun gerudert hatten bei fünfundzwanzig oder dreißig Feld Wegs, sahen sie Jesum auf dem Meere dahergehen und nahe zum Schiff kommen; und sie fürchteten sich.
20 Er aber sprach zu ihnen: Ich bin's; fürchtet euch nicht!
21 Da wollten sie ihn in das Schiff nehmen; und alsbald war das Schiff am Lande, da sie hin fuhren.
22 Des anderen Tages sah das Volk, das diesseit des Meeres stand, dass kein anderes Schiff daselbst war denn das eine, darin seine Jünger getreten waren, und dass Jesus nicht mit seinen Jüngern in das Schiff getreten war, sondern allein seine Jünger waren weggefahren.
23 Es kamen aber andere Schiffe von Tiberias nahe zur Stätte, da sie das Brot gegessen hatten durch des Herrn Danksagung.
24 Da nun das Volk sah, dass Jesus nicht da war noch seine Jünger, traten sie auch in Schiffe und kamen gen Kapernaum und suchten Jesum.
25 Und da sie ihn fanden jenseit des Meeres, sprachen sie zu ihm: Rabbi, wann bist du hergekommen?
26 Jesus antwortete ihnen und sprach: Wahrlich, wahrlich ich sage euch: Ihr suchet mich nicht darum, dass ihr Zeichen gesehen habt, sondern dass ihr von dem Brot gegessen habt und seid satt geworden.
27 Wirket Speise, nicht, die vergänglich ist, sondern die da bleibt in das ewige Leben, welche euch des Menschen Sohn geben wird; denn den hat Gott der Vater versiegelt.
28 Da sprachen sie zu ihm: Was sollen wir tun, dass wir Gottes Werke wirken?

29 Jesus antwortete und sprach zu ihnen: Das ist Gottes Werk, dass ihr an den glaubt, den er gesandt hat.
30 Da sprachen sie zu ihm: Was tust du denn für ein Zeichen, auf dass wir sehen und glauben dir? Was wirkst du?
31 Unsre Väter haben Manna gegessen in der Wüste, wie geschrieben steht: „Er gab ihnen Brot vom Himmel zu essen."
32 Da sprach Jesus zu ihnen: Wahrlich, wahrlich ich sage euch: Mose hat euch nicht das Brot vom Himmel gegeben, sondern mein Vater gibt euch das rechte Brot vom Himmel.
33 Denn dies ist das Brot Gottes, das vom Himmel kommt und gibt der Welt das Leben.
34 Da sprachen sie zu ihm: Herr, gib uns allewege solch Brot.
35 Jesus aber sprach zu ihnen: Ich bin das Brot des Lebens. Wer zu mir kommt, den wird nicht hungern; und wer an mich glaubt, den wird nimmermehr dürsten.
36 Aber ich habe es euch gesagt, dass ihr mich gesehen habt, und glaubet doch nicht.
37 Alles, was mir mein Vater gibt, das kommt zu mir; und wer zu mir kommt, den werde ich nicht hinausstoßen.
38 Denn ich bin vom Himmel gekommen, nicht dass ich meinen Willen tue, sondern den Willen des, der mich gesandt hat.
39 Das ist aber der Wille des Vaters, der mich gesandt hat, dass ich nichts verliere von allem, was er mir gegeben hat, sondern dass ich's auferwecke am Jüngsten Tage.
40 Denn das ist der Wille des, der mich gesandt hat, dass, wer den Sohn sieht und glaubt an ihn, habe das ewige Leben; und ich werde ihn auferwecken am Jüngsten Tage.
41 Da murrten die Juden darüber, dass er sagte: Ich bin das Brot, dass vom Himmel gekommen ist,
42 und sprachen: Ist dieser nicht Jesus, Josephs Sohn, des Vater und Mutter wir kennen? Wie spricht er denn: Ich bin vom Himmel gekommen?
43 Jesus antwortete und sprach zu ihnen: Murret nicht untereinander.
44 Es kann niemand zu mir kommen, es sei denn, dass ihn ziehe der Vater, der mich gesandt hat; und ich werde ihn auferwecken am Jüngsten Tage.
45 Es steht geschrieben in den Propheten: „Sie werden alle von Gott gelehrt sein." Wer es nun hört vom Vater und lernt es, der kommt zu mir.
46 Nicht dass jemand den Vater habe gesehen, außer dem, der vom Vater ist; der hat den Vater gesehen.
47 Wahrlich, wahrlich ich sage euch: Wer an mich glaubt, der hat das ewige Leben.
48 Ich bin das Brot des Lebens.
49 Eure Väter haben Manna gegessen in der Wüste und sind gestorben.
50 Dies ist das Brot, das vom Himmel kommt, auf dass, wer davon isset, nicht sterbe.
51 Ich bin das lebendige Brot, vom Himmel gekommen. Wer von diesem Brot essen wird, der wird leben in Ewigkeit. Und das Brot, dass ich geben werde, ist mein Fleisch, welches ich geben werde für das Leben der Welt.
52 Da zankten die Juden untereinander und sprachen: Wie kann dieser uns sein Fleisch zu essen geben?
53 Jesus sprach zu ihnen: Wahrlich, wahrlich ich sage euch: Werdet ihr nicht essen das Fleisch des Menschensohnes und trinken sein Blut, so habt ihr kein Leben in euch.
54 Wer mein Fleisch isset und trinket mein Blut, der hat das ewige Leben, und ich werde ihn am Jüngsten Tage auferwecken.
55 Denn mein Fleisch ist die rechte Speise, und mein Blut ist der rechte Trank.
56 Wer mein Fleisch isset und trinket mein Blut, der bleibt in mir und ich in ihm.
57 Wie mich gesandt hat der lebendige Vater und ich lebe um des Vaters willen, also, wer mich isset, der wird auch leben um meinetwillen.
58 Dies ist das Brot, das vom Himmel gekommen ist; nicht, wie eure Väter haben Manna gegessen und sind gestorben: wer dies Brot isset, der wird leben in Ewigkeit.
59 Solches sagte er in der Schule, da er lehrte zu Kapernaum.
60 Viele nun seine Jünger, die das hörten, sprachen: Das ist eine harte Rede; wer kann sie hören?
61 Da Jesus aber bei sich selbst merkte, dass seine Jünger darüber murrten, sprach er zu ihnen: Ärgert euch das?
62 Wie, wenn ihr denn sehen werdet des Menschen Sohn auffahren dahin, da er zuvor war?
63 Der Geist ist's, der da lebendig macht; das Fleisch ist nichts nütze. Die Worte, die ich rede, die sind Geist und sind Leben.
64 Aber es sind etliche unter euch, die glauben nicht. (Denn Jesus wusste von Anfang wohl, welche nicht glaubend waren und welcher ihn verraten würde.)
65 Und er sprach: Darum habe ich euch gesagt: Niemand kann zu mir kommen, es sei ihm denn von meinem Vater gegeben.
66 Von dem an gingen seiner Jünger viele hinter sich und wandelten hinfort nicht mehr mit ihm.

67 Da sprach Jesus zu den Zwölfen: Wollt ihr auch weggehen?
68 Da antwortete ihm Simon Petrus: Herr, wohin sollen wir gehen? Du hast Worte des ewigen Lebens;
69 und wir haben geglaubt und erkannt, dass du bist Christus, der Sohn des lebendigen Gottes.
70 Jesus antwortete ihnen: Habe ich nicht euch zwölf erwählt? und – euer einer ist ein Teufel!
71 Er redete aber von dem Judas, Simons Sohn, Ischariot; der verriet ihn hernach, und war der Zwölfe einer.

7

1 Darnach zog Jesus umher in Galiläa; denn er wollte nicht in Judäa umherziehen, darum dass ihm die Juden nach dem Leben stellten.
2 Es war aber nahe der Juden Fest, die Laubhütten.
3 Da sprachen seine Brüder zu ihm: Mache dich auf von dannen und gehe nach Judäa, auf dass auch deine Jünger sehen, die Werke die du tust.
4 Niemand tut etwas im Verborgenen und will doch frei offenbar sein. Tust du solches, so offenbare dich vor der Welt.
5 Denn auch seine Brüder glaubten nicht an ihn.
6 Da spricht Jesus zu ihnen: Meine Zeit ist noch nicht hier; eure Zeit aber ist allewege.
7 Die Welt kann euch nicht hassen; mich aber hasst sie, denn ich zeuge von ihr, dass ihre Werke böse sind.
8 Gehet ihr hinauf auf dieses Fest; ich will noch nicht hinaufgehen auf dieses Fest, den meine Zeit ist noch nicht erfüllt.
9 Da er aber das zu ihnen gesagt, blieb er in Galiläa.
10 Als aber seine Brüder waren hinaufgegangen, da ging er auch hinauf zu dem Fest, nicht offenbar, sondern wie heimlich.
11 Da suchten ihn die Juden am Fest und sprachen: Wo ist der?
12 Und es war ein großes Gemurmel unter dem Volk. Etliche sprachen: Er ist fromm; die andern aber sprachen: Nein, er verführt das Volk.
13 Niemand aber redete frei von ihm um der Furcht willen vor den Juden.
14 Aber mitten im Fest ging Jesus hinauf in den Tempel und lehrte.
15 Und die Juden verwunderten sich und sprachen: Wie kann dieser die Schrift, so er sie doch nicht gelernt hat?
16 Jesus antwortete ihnen und sprach: Meine Lehre ist nicht mein, sondern des, der mich gesandt hat.
17 So jemand will des Willen tun, der wird innewerden, ob diese Lehre von Gott sei, oder ob ich von mir selbst rede.
18 Wer von sich selbst redet, der sucht seine eigene Ehre; wer aber sucht die Ehre des, der ihn gesandt hat, der ist wahrhaftig, und ist keine Ungerechtigkeit an ihm.
19 Hat euch nicht Mose das Gesetz gegeben? und niemand unter euch tut das Gesetz. Warum sucht ihr mich zu töten?
20 Das Volk antwortete und sprach: Du hast den Teufel; wer versucht dich zu töten?
21 Jesus antwortete und sprach: Ein einziges Werk habe ich getan, und es wundert euch alle.
22 Mose hat euch darum gegeben die Beschneidung, nicht dass sie von Mose kommt, sondern von den Vätern, und ihr beschneidet den Menschen am Sabbat.

23 So ein Mensch die Beschneidung annimmt am Sabbat, auf dass nicht das Gesetz Moses gebrochen werde, zürnet ihr denn über mich, dass ich den ganzen Menschen habe am Sabbat gesund gemacht?
24 Richtet nicht nach dem Ansehen, sondern richtet ein rechtes Gericht.
25 Da sprachen etliche aus Jerusalem: Ist das nicht der, den sie suchten zu töten?
26 Und siehe zu, er redet frei, und sie sagen nichts. Erkennen unsre Obersten nun gewiss, dass er gewiss Christus sei?
27 Doch wir wissen, woher dieser ist; wenn aber Christus kommen wird, so wird niemand wissen, woher er ist.
28 Da rief Jesus im Tempel und sprach: Ja, ihr kennet mich und wisset, woher ich bin; und von mir selbst bin ich nicht gekommen, sondern es ist ein Wahrhaftiger, der mich gesandt hat, welchen ihr nicht kennet.
29 Ich kenne ihn aber; denn ich bin von ihm, und er hat mich gesandt.
30 Da suchten sie ihn zu greifen; aber niemand legte die Hand an ihn, denn seine Stunde war noch nicht gekommen.
31 Aber viele vom Volk glaubten an ihn und sprachen: Wenn Christus kommen wird, wird er auch mehr Zeichen tun, denn dieser tut?
32 Und es kam vor die Pharisäer, dass das Volk solches von ihm murmelte. Da sandten die Pharisäer und Hohenpriester Knechte aus, das sie ihn griffen.
33 Da sprach Jesus zu ihnen: Ich bin noch eine kleine Zeit bei euch, und dann gehe ich hin zu dem, der mich gesandt hat.
34 Ihr werdet mich suchen, und nicht finden; und wo ich bin, könnet ihr nicht hin kommen.

35 Da sprachen die Juden untereinander: Wo soll dieser hin gehen, dass wir ihn nicht finden sollen? Will er zu den Zerstreuten unter den Griechen gehen und die Griechen lehren?
36 Was ist das für eine Rede, dass er sagte: „Ihr werdet mich suchen, und nicht finden; und wo ich bin, da könnet ihr nicht hin kommen”?
37 Aber am letzten Tage des Festes, der am herrlichsten war, trat Jesus auf, rief und sprach: Wen da dürstet, der komme zu mir und trinke!
38 Wer an mich glaubt, wie die Schrift sagt, von des Leibe werden Ströme des lebendigen Wassers fließen.
39 Das sagte er aber von dem Geist, welchen empfangen sollten, die an ihn glaubten; denn der Heilige Geist war noch nicht da, denn Jesus war noch nicht verklärt.
40 Viele nun vom Volk, die diese Rede hörten, sprachen: Dieser ist wahrlich der Prophet.
41 Andere sprachen: Er ist Christus. Etliche aber sprachen: Soll Christus aus Galiläa kommen?
42 Spricht nicht die Schrift: von dem Samen Davids und aus dem Flecken Bethlehem, da David war, soll Christus kommen?
43 Also ward eine Zwietracht unter dem Volk über ihn.
44 Es wollten aber etliche ihn greifen; aber niemand legte die Hand an ihn.
45 Die Knechte kamen zu den Hohenpriestern und Pharisäern; und sie sprachen zu ihnen: Warum habt ihr ihn nicht gebracht?
46 Die Knechte antworteten: Es hat nie ein Mensch also geredet wie dieser Mensch.
47 Da antworteten ihnen die Pharisäer: Seid ihr auch verführt?
48 Glaubt auch irgendein Oberster oder Pharisäer an ihn?
49 sondern das Volk, das nichts vom Gesetz weiß, ist verflucht.
50 Spricht zu ihnen Nikodemus, der bei der Nacht zu ihm kam, welcher einer unter ihnen war:
51 Richtet unser Gesetz auch einen Menschen, ehe man ihn verhört und erkennt, was er tut?
52 Sie antworteten und sprachen zu ihm: Bist du auch ein Galiläer? Forsche und siehe, aus Galiläa steht kein Prophet auf.
53 Und ein jeglicher ging also heim.

8

1 Jesus aber ging an den Ölberg.
2 Und frühmorgens kam er wieder in den Tempel, und alles Volk kam zu ihm; und er setzte sich und lehrte sie.
3 Aber die Schriftgelehrten und Pharisäer brachten eine Frau zu ihm, im Ehebruch ergriffen, und stellten sie in die Mitte
4 und sprachen zu ihm: Meister, diese Frau ist ergriffen auf frischer Tat im Ehebruch.
5 Mose aber hat uns im Gesetz geboten, solche zu steinigen. Was sagst du?
6 Das sprachen sie aber, ihn zu versuchen, auf daß sie eine Sache wider ihn hätten. Aber Jesus bückte sich nieder und schrieb mit dem Finger auf die Erde.
7 Als sie nun anhielten, ihn zu fragen, richtete er sich auf und sprach zu ihnen: Wer unter euch ohne Sünde ist, der werfe den ersten Stein auf sie.
8 Und bückte sich wieder nieder und schrieb auf die Erde.
9 Da sie aber das hörten, gingen sie hinaus, einer nach dem andern, von den Ältesten an; und Jesus ward allein gelassen und die Frau in der Mitte stehend.
10 Jesus aber richtete sich auf und sprach zu ihr: Weib, wo sind sie, deine Verkläger? Hat dich niemand verdammt?
11 Sie aber sprach: Herr, niemand. Jesus aber sprach: So verdamme ich dich auch nicht; gehe hin und sündige hinfort nicht mehr.
12 Da redete Jesus abermals zu ihnen und sprach: Ich bin das Licht der Welt. Wer mir nachfolgt, der wird nicht wandeln in der Finsternis, sondern wird das Licht des Lebens haben.
13 Da sprachen die Pharisäer zu ihm: Du zeugst von dir selbst; dein Zeugnis ist nicht wahr.
14 Jesus antwortete und sprach zu ihnen: Auch wenn ich von mir selbst zeuge, so ist mein Zeugnis wahr; denn ich weiß, woher ich gekommen bin und wohin ich gehe; ihr aber wisset nicht, woher ich komme und wohin ich gehe.
15 Ihr richtet nach dem Fleisch, ich richte niemand.
16 Wenn ich aber richte, so ist mein Gericht recht; denn ich bin nicht allein, sondern ich und der mich gesandt hat.
17 Auch steht in eurem Gesetz geschrieben, daß zweier Menschen Zeugnis wahr sei.
18 Ich bin's, der ich von mir selbst zeuge; und der Vater, der mich gesandt hat, zeugt auch von mir.
19 Da sprachen sie zu ihm: Wo ist dein Vater? Jesus antwortete: Ihr kennet weder mich noch meinen Vater; wenn ihr mich kenntet, so kenntet ihr auch meinen Vater.

20 Diese Worte redete Jesus an dem Gotteskasten, da er lehrte im Tempel; und niemand griff ihn, denn seine Stunde war noch nicht gekommen.
21 Da sprach Jesus abermals zu ihnen: Ich gehe hinweg, und ihr werdet mich suchen und in eurer Sünde sterben. Wo ich hingehe, da könnt ihr nicht hinkommen.
22 Da sprachen die Juden: Will er sich denn selbst töten, daß er spricht: Wohin ich gehe, da könnt ihr nicht hinkommen?
23 Und er sprach zu ihnen: Ihr seid von unten her, ich bin von oben her; ihr seid von dieser Welt, ich bin nicht von dieser Welt.
24 Darum habe ich euch gesagt, daß ihr sterben werdet in euren Sünden; denn wenn ihr nicht glaubet, daß ich es bin, so werdet ihr sterben in euren Sünden.
25 Da sprachen sie zu ihm: Wer bist du denn? Und Jesus sprach zu ihnen: Was rede ich noch mit euch!
26 Ich habe viel über euch zu reden und zu richten. Aber der mich gesandt hat, ist wahrhaftig, und was ich von ihm gehört habe, das rede ich zu der Welt.
27 Sie verstanden aber nicht, daß er ihnen von dem Vater sagte.
28 Da sprach Jesus zu ihnen: Wenn ihr des Menschen Sohn erhöhen werdet, dann werdet ihr erkennen, daß ich es bin und nichts von mir selber tue, sondern, wie mich der Vater gelehrt hat, so rede ich.
29 Und der mich gesandt hat, ist mit mir. Der Vater läßt mich nicht allein; denn ich tue allezeit, was ihm gefällt.
30 Da er solches redete, glaubten viele an ihn.
31 Da sprach nun Jesus zu den Juden, die an ihn glaubten: Wenn ihr bleiben werdet an meiner Rede, so seid ihr in Wahrheit meine Jünger
32 und werdet die Wahrheit erkennen, und die Wahrheit wird euch frei machen.
33 Da antworteten sie ihm: Wir sind Abrahams Kinder und sind niemals jemandes Knechte gewesen. Wie sprichst du denn: Ihr sollt frei werden?
34 Jesus antwortete ihnen: Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Wer Sünde tut, der ist der Sünde Knecht.
35 Der Knecht aber bleibt nicht ewiglich im Hause; der Sohn bleibt ewiglich.
36 Wenn euch nun der Sohn frei macht, so seid ihr recht frei.
37 Ich weiß wohl, daß ihr Abrahams Kinder seid; aber ihr sucht mich zu töten, denn mein Wort findet bei euch keinen Raum.
38 Ich rede, was ich von meinem Vater gesehen habe; und ihr tut, was ihr von eurem Vater gehört habt.
39 Sie antworteten und sprachen zu ihm: Abraham ist unser Vater. Spricht Jesus zu ihnen: Wenn ihr Abrahams Kinder wäret, so tätet ihr Abrahams Werke.
40 Nun aber sucht ihr mich zu töten, einen solchen Menschen, der ich euch die Wahrheit gesagt habe, die ich von Gott gehört habe. Das hat Abraham nicht getan.
41 Ihr tut eures Vaters Werke. Da sprachen sie zu ihm: Wir sind nicht unehelich geboren; wir haben einen Vater, Gott.
42 Jesus sprach zu ihnen: Wäre Gott euer Vater, so liebtet ihr mich; denn ich bin ausgegangen und komme von Gott; denn ich bin nicht von mir selber gekommen, sondern er hat mich gesandt.
43 Warum versteht ihr denn meine Sprache nicht? Weil ihr mein Wort nicht könnt hören!
44 Ihr habt den Teufel zum Vater, und nach eures Vaters Gelüste wollt ihr tun. Der ist ein Mörder von Anfang und steht nicht in der Wahrheit; denn die Wahrheit ist nicht in ihm. Wenn er die Lüge redet, so redet er von seinem Eignen; denn er ist ein Lügner und der Vater der Lüge.
45 Ich aber, weil ich die Wahrheit sage, so glaubet ihr mir nicht.
46 Welcher unter euch kann mich einer Sünde zeihen? Wenn ich aber die Wahrheit sage, warum glaubet ihr mir nicht?
47 Wer von Gott ist, der hört Gottes Wort; darum höret ihr nicht, denn ihr seid nicht von Gott.
48 Da antworteten die Juden und sprachen zu ihm: Sagen wir nicht recht, daß du ein Samariter bist und hast einen bösen Geist?
49 Jesus antwortete: Ich habe keinen bösen Geist, sondern ich ehre meinen Vater, und ihr verunehrt mich.
50 Ich suche nicht meine Ehre; es ist aber einer, der sie sucht und richtet.
51 Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: So jemand mein Wort wird halten, der wird den Tod nicht sehen ewiglich.
52 Da sprachen die Juden zu ihm: Nun erkennen wir, daß du einen bösen Geist hast. Abraham ist gestorben und die Propheten, und du sprichst: So jemand mein Wort hält, der wird den Tod nicht schmecken ewiglich.
53 Bist du mehr als unser Vater Abraham, welcher gestorben ist? Und die Propheten sind gestorben. Was machst du aus dir selbst?
54 Jesus antwortete: Wenn ich mich selber ehre, so ist meine Ehre nichts. Es ist aber mein Vater, der mich ehrt, von welchem ihr sprecht: Er ist unser Gott,
55 und kennet ihn nicht; ich aber kenne ihn. Und wenn ich wollte sagen: Ich kenne ihn nicht, - so würde ich ein Lügner, gleichwie ihr seid. Aber ich kenne ihn und halte sein Wort.

56 Abraham, euer Vater, ward froh, daß er meinen Tag sehen sollte, und er sah ihn und freute sich.
57 Da sprachen die Juden zu ihm: Du bist noch nicht fünfzig Jahre alt und hast Abraham gesehen?
58 Jesus sprach zu ihnen: Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Ehe denn Abraham ward, bin ich.
59 Da hoben sie Steine auf, daß sie auf ihn würfen. Aber Jesus verbarg sich und ging zum Tempel hinaus.

9

1 Und Jesus ging vorüber und sah einen, der blind geboren war.
2 Und seine Jünger fragten ihn und sprachen: Meister, wer hat gesündigt, dieser oder seine Eltern, daß er ist blind geboren?
3 Jesus antwortete: Es hat weder dieser gesündigt, noch seine Eltern, sondern es sollen die Werke Gottes offenbar werden an ihm.
4 Ich muß wirken die Werke des, der mich gesandt hat, solange es Tag ist; es kommt die Nacht, da niemand wirken kann.
5 Dieweil ich bin in der Welt, bin ich das Licht der Welt.
6 Da er solches gesagt, spie er auf die Erde und machte einen Brei aus dem Speichel und legte den Brei auf des Blinden Augen
7 und sprach zu ihm: Gehe hin zu dem Teich Siloah, das ist verdolmetscht: gesandt, und wasche dich! Da ging er hin und wusch sich und kam sehend.
8 Die Nachbarn und die ihn zuvor gesehen hatten, daß er ein Bettler war, sprachen: Ist dieser nicht, der dasaß und bettelte?
9 Etliche sprachen: Er ist's, etliche aber: Nein, aber er ist ihm ähnlich. Er selbst aber sprach: Ich bin's.
10 Da sprachen sie zu ihm: Wie sind deine Augen aufgetan?
11 Er antwortete: Der Mensch, der Jesus heißt, machte einen Brei und legte ihn auf meine Augen und sprach: Gehe hin zu dem Teich Siloah und wasche dich! Ich ging hin und wusch mich und ward sehend.
12 Da sprachen sie zu ihm: Wo ist er? Er sprach: Ich weiß nicht.
13 Da führten sie ihn, der zuvor blind war, zu den Pharisäern.
14 Es war aber Sabbat an dem Tage, da Jesus den Brei machte und seine Augen öffnete.
15 Da fragten sie ihn abermals, auch die Pharisäer, wie er wäre sehend geworden. Er aber sprach zu ihnen: Einen Brei legte er mir auf die Augen, und ich wusch mich und bin nun sehend.
16 Da sprachen etliche der Pharisäer: Dieser Mensch ist nicht von Gott, weil er den Sabbat nicht hält. Die andern aber sprachen: Wie kann ein sündiger Mensch solche Zeichen tun? Und es ward eine Zwietracht unter ihnen.
17 Sie sprachen wieder zu dem Blinden: Was sagst du von ihm, daß er hat deine Augen aufgetan? Er aber sprach: Er ist ein Prophet.
18 Die Juden glaubten nicht von ihm, daß er blind gewesen und sehend geworden wäre, bis daß sie riefen die Eltern des, der sehend geworden war,
19 fragten sie und sprachen: Ist das euer Sohn, von welchem ihr sagt, er sei blind geboren? Wie ist er denn nun sehend?
20 Seine Eltern antworteten ihnen und sprachen: Wir wissen, daß dieser unser Sohn ist und daß er blind geboren ist.



21 Wie er aber nun sehend ist, wissen wir nicht; oder wer ihm hat seine Augen aufgetan, wissen wir auch nicht. Er ist alt genug, fragt ihn, laßt ihn selbst für sich reden.
22 Solches sagten seine Eltern, denn sie fürchteten sich vor den Juden. Denn die Juden hatten sich schon geeinigt: wenn jemand ihn als den Christus bekennte, der sollte in den Bann getan werden.
23 Darum sprachen seine Eltern: Er ist alt genug, fraget ihn.
24 Da riefen sie zum andern Mal den Menschen, der blind gewesen war, und sprachen zu ihm: Gib Gott die Ehre! Wir wissen, daß dieser Mensch ein Sünder ist.
25 Er antwortete: Ist er ein Sünder? Das weiß ich nicht; eines aber weiß ich: daß ich blind war und bin nun sehend.
26 Da sprachen sie zu ihm: Was tat er dir? Wie tat er deine Augen auf?
27 Er antwortete ihnen: Ich habe es euch schon gesagt, und ihr habt's nicht gehört! Was wollt ihr's abermals hören? Wollt ihr auch seine Jünger werden?
28 Da schmähten sie ihn und sprachen: Du bist sein Jünger; wir aber sind des Mose Jünger.
29 Wir wissen, daß Gott mit Mose geredet hat; woher aber dieser ist, wissen wir nicht.
30 Der Mensch antwortete und sprach zu ihnen: Das ist ein wunderlich Ding, daß ihr nicht wisset, woher er ist, und er hat meine Augen aufgetan.
31 Wir wissen, daß Gott die Sünder nicht hört; sondern wenn jemand gottesfürchtig ist und tut seinen Willen, den hört er.
32 Vom Anbeginn der Welt hat man nicht gehört, daß jemand einem Blindgeborenen die Augen aufgetan habe.

33 Wäre dieser nicht von Gott, er könnte nichts tun.
34 Sie antworteten und sprachen zu ihm: Du bist ganz in Sünden geboren und lehrst uns? Und stießen ihn hinaus.
35 Es kam vor Jesus, daß sie ihn ausgestoßen hatten. Und da er ihn fand, sprach er zu ihm: Glaubst du an des Menschen Sohn?
36 Er antwortete und sprach: Herr, wer ist's? auf daß ich an ihn glaube.
37 Jesus sprach zu ihm: Du hast ihn gesehen, und der mit dir redet, der ist's.
38 Er aber sprach: Herr, ich glaube, und fiel vor ihm nieder.
39 Und Jesus sprach: Ich bin zum Gericht in diese Welt gekommen, auf daß, die da nicht sehen, sehend werden, und die da sehen, blind werden.
40 Solches hörten etliche der Pharisäer, die bei ihm waren, und sprachen zu ihm: Sind wir denn auch blind?
41 Jesus sprach zu ihnen: Wäret ihr blind, so hättet ihr keine Sünde; nun ihr aber sprecht: Wir sind sehend, bleibt eure Sünde.

10

1 Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Wer nicht zur Tür hineingeht in den Schafstall, sondern steigt anderswo hinein, der ist ein Dieb und Räuber.
2 Der aber zur Tür hineingeht, der ist der Hirte der Schafe.
3 Dem tut der Türhüter auf, und die Schafe hören seine Stimme; und er ruft seine Schafe mit Namen und führt sie aus.
4 Und wenn er alle die Seinen hat hinausgelassen, geht er vor ihnen hin, und die Schafe folgen ihm nach; denn sie kennen seine Stimme.
5 Einem Fremden aber folgen sie nicht nach, sondern fliehen vor ihm; denn sie kennen der Fremden Stimme nicht.
6 Diesen Spruch sagte Jesus zu ihnen; sie verstanden aber nicht, was es war, das er zu ihnen sagte.
7 Da sprach Jesus wieder zu ihnen: Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Ich bin die Tür zu den Schafen.
8 Alle, die vor mir gekommen sind, die sind Diebe und Räuber; aber die Schafe haben ihnen nicht gehorcht.
9 Ich bin die Tür; wenn jemand durch mich eingeht, der wird gerettet werden und wird ein- und ausgehen und Weide finden.
10 Ein Dieb kommt nur, daß er stehle, würge und umbringe. Ich bin gekommen, daß sie das Leben und volle Genüge haben sollen.
11 Ich bin der gute Hirte. Der gute Hirte läßt sein Leben für die Schafe.
12 Der Mietling aber, der nicht Hirte ist, des die Schafe nicht eigen sind, sieht den Wolf kommen und verläßt die Schafe und flieht; und der Wolf erhascht und zerstreut die Schafe.
13 Der Mietling flieht; denn er ist ein Mietling und achtet der Schafe nicht.
14 Ich bin der gute Hirte und kenne die Meinen und bin bekannt den Meinen,
15 wie mich mein Vater kennt und ich kenne den Vater. Und ich lasse mein Leben für die Schafe.
16 Und ich habe noch andere Schafe, die sind nicht aus diesem Stalle; und auch diese muß ich herführen, und sie werden meine Stimme hören, und wird eine Herde und ein Hirte werden.
17 Darum liebt mich mein Vater, weil ich mein Leben lasse, auf daß ich's wieder nehme.
18 Niemand nimmt es von mir, sondern ich lasse es von mir selber. Ich habe Macht, es zu lassen, und habe Macht, es wiederzunehmen. Solch Gebot habe ich empfangen von meinem Vater.
19 Da ward abermals eine Zwietracht unter den Juden über diese Worte.
20 Viele unter ihnen sprachen: Er hat einen bösen Geist und ist unsinnig; was höret ihr ihm zu?
21 Die andern sprachen: Das sind nicht Worte eines Besessenen; kann ein böser Geist auch der Blinden Augen auftun?
22 Es ward aber Tempelweihe zu Jerusalem und war Winter.
23 Und Jesus wandelte im Tempel in der Halle Salomos.
24 Da umringten ihn die Juden und sprachen zu ihm: Wie lange hältst du unsre Seele im Ungewissen? Bist du der Christus, so sage es frei heraus.
25 Jesus antwortete ihnen: Ich habe es euch gesagt, und ihr glaubet nicht. Die Werke, die ich tue in meines Vaters Namen, die zeugen von mir.
26 Aber ihr glaubet nicht, denn ihr seid nicht von meinen Schafen.
27 Meine Schafe hören meine Stimme, und ich kenne sie, und sie folgen mir,
28 und ich gebe ihnen das ewige Leben, und sie werden nimmermehr umkommen, und niemand wird sie aus meiner Hand reißen.
29 Der Vater, der mir sie gegeben hat, ist größer als alles, und niemand kann sie aus meines Vaters Hand reißen.
30 Ich und der Vater sind eins.

31 Da hoben die Juden abermals Steine auf, daß sie ihn steinigten.
32 Jesus antwortete ihnen: Viele gute Werke habe ich euch erzeigt von meinem Vater; um welches Werk unter ihnen steinigt ihr mich?
33 Die Juden antworteten ihm: Um eines guten Werkes willen steinigen wir dich nicht, sondern um der Gotteslästerung willen und weil du als ein Mensch dich selber zu Gott machst.
34 Jesus antwortete ihnen: Steht nicht geschrieben in eurem Gesetz (Psalm 82,6): «Ich habe gesagt: Ihr seid Götter»?
35 Wenn er Götter die nennt, zu welchen das Wort Gottes geschah – und die Schrift kann doch nicht gebrochen werden -,
36 wie sprecht ihr denn zu dem, den der Vater geheiligt und in die Welt gesandt hat: Du lästerst Gott, - weil ich sagte: Ich bin Gottes Sohn?
37 Tue ich nicht die Werke meines Vaters, so glaubet mir nicht;
38 tue ich sie aber, so glaubet doch – wollt ihr mir nicht glauben – den Werken, damit ihr zur Erkenntnis kommt und in ihr bleibt, daß der Vater in mir ist und ich in ihm.
39 Da suchten sie abermals ihn zu greifen. Aber er entging ihnen aus ihren Händen
40 und zog hin wieder jenseits des Jordan an den Ort, da Johannes zuvor getauft hatte, und blieb allda.
41 Und viele kamen zu ihm und sprachen: Johannes tat kein Zeichen; aber alles, was Johannes von diesem gesagt hat, das ist wahr.
42 Und glaubten allda viele an ihn.

11

1 Es lag aber einer krank mit Namen Lazarus aus Bethanien, dem Dorfe Marias und ihrer Schwester Martha.
2 Maria aber war es, die den Herrn gesalbt hat mit Salbe und seine Füße getrocknet mit ihrem Haar. Deren Bruder Lazarus war krank.
3 Da sandten seine Schwestern zu ihm und ließen ihm sagen: Herr, siehe, den du lieb hast, der liegt krank.
4 Da Jesus das hörte, sprach er: Diese Krankheit ist nicht zum Tode, sondern zur Verherrlichung Gottes, daß der Sohn Gottes dadurch verherrlicht werde.
5 Jesus aber hatte Martha lieb und ihre Schwester und Lazarus.
6 Als er nun hörte, daß er krank war, blieb er noch zwei Tage an dem Ort, da er war;
7 danach aber spricht er zu seinen Jüngern: Laßt uns wieder nach Judäa ziehen!
8 Seine Jünger sprachen zu ihm: Meister, vor kurzem erst wollten die Juden dich steinigen, und du willst wieder dahin ziehen?
9 Jesus antwortete: Sind nicht des Tages zwölf Stunden? Wer des Tages wandelt, der stößt sich nicht; denn er sieht das Licht dieser Welt.
10 Wer aber des Nachts wandelt, der stößt sich; denn es ist kein Licht in ihm.
11 Solches sagte er, und danach spricht er zu ihnen: Lazarus, unser Freund, schläft; aber ich gehe hin, daß ich ihn aufwecke.
12 Da sprachen seine Jünger: Herr, schläft er, so wird's besser mit ihm.
13 Jesus aber sprach von seinem Tode; sie meinten aber, er rede vom leiblichen Schlaf.
14 Da sagte es ihnen Jesus frei heraus: Lazarus ist gestorben;
15 und ich bin froh um euretwillen, daß ich nicht dagewesen bin, auf daß ihr glaubet. Aber lasset uns zu ihm ziehen!
16 Da sprach Thomas, der genannt ist Zwilling, zu den Jüngern: Laßt uns mitziehen, daß wir mit ihm sterben!
17 Da kam Jesus und fand ihn schon vier Tage im Grabe liegen.
18 Bethanien aber war nahe bei Jerusalem, bei einer halben Stunde.
19 Und viele Juden waren zu Martha und Maria gekommen, sie zu trösten über ihren Bruder.
20 Als Martha nun hörte, daß Jesus kommt, ging sie ihm entgegen; Maria aber blieb daheim sitzen.
21 Da sprach Martha zu Jesus: Herr, wärest du hier gewesen, mein Bruder wäre nicht gestorben.
22 Aber auch jetzt noch weiß ich, daß, was du bittest von Gott, das wird dir Gott geben.
23 Jesus spricht zu ihr: Dein Bruder wird auferstehen.
24 Martha spricht zu ihm: Ich weiß wohl, daß er auferstehen wird in der Auferstehung am Jüngsten Tage.
25 Jesus spricht zu ihr: Ich bin die Auferstehung und das Leben. Wer an mich glaubt, der wird leben, ob er gleich stürbe;
26 und wer da lebet und glaubet an mich, der wird nimmermehr sterben. Glaubst du das?
27 Sie spricht zu ihm: Herr, ja; ich glaube, daß du bist der Christus, der Sohn Gottes, der in die Welt gekommen ist.
28 Und da sie das gesagt hatte, ging sie hin und rief ihre Schwester Maria heimlich und sprach: Der Meister ist da und ruft dich.

29 Dieselbe, als sie das hörte, stand sie eilends auf und kam zu ihm.
30 Jesus aber war noch nicht in das Dorf gekommen, sondern war noch an dem Ort, da ihm Martha entgegengekommen war.
31 Die Juden, die bei ihr im Hause waren und sie trösteten, da sie sahen, daß Maria eilends aufstand und hinausging, folgten sie ihr nach und dachten: Sie geht hin zum Grabe, daß sie daselbst weine.
32 Als nun Maria dahin kam, wo Jesus war, und ihn sah, fiel sie zu seinen Füßen und sprach zu ihm: Herr, wärest du hier gewesen, mein Bruder wäre nicht gestorben.
33 Als Jesus sie sah weinen und die Juden auch weinen, die mit ihr kamen, ergrimmte er im Geist und ward betrübt in sich selbst
34 und sprach: Wo habt ihr ihn hingelegt? Sie sprachen zu ihm: Herr, komm und sieh es!
35 Und Jesus gingen die Augen über.
36 Da sprachen die Juden: Siehe, wie hat er ihn so lieb gehabt!
37 Etliche aber unter ihnen sprachen: Konnte, der dem Blinden die Augen aufgetan hat, nicht schaffen, daß auch dieser nicht stürbe?
38 Da ergrimmte Jesus abermals in sich selbst und kam zum Grabe. Es war aber eine Höhle, und ein Stein davor gelegt.
39 Jesus sprach: Hebt den Stein weg! Spricht zu ihm Martha, die Schwester des Verstorbenen: Herr, er stinkt schon; denn er hat vier Tage gelegen.
40 Jesus spricht zu ihr: Habe ich dir nicht gesagt: wenn du glaubtest, so würdest du die Herrlichkeit Gottes sehen?
41 Da hoben sie den Stein weg. Jesus aber hob seine Augen empor und sprach: Vater, ich danke dir, daß du mich erhört hast.
42 Ich wußte wohl, daß du mich allezeit hörst; aber um des Volks willen, das umhersteht, habe ich geredet, damit sie glauben, daß du mich gesandt hast.
43 Da er das gesagt hatte, rief er mit lauter Stimme: Lazarus, komm heraus!
44 Und der Verstorbene kam heraus, gebunden mit Grabtüchern an Füßen und Händen und sein Angesicht verhüllt mit einem Schweißtuch. Jesus spricht zu ihnen: Löset die Binden und lasset ihn gehen!
45 Viele nun von den Juden, die zu Maria gekommen waren und sahen, was Jesus tat, glaubten an ihn.
46 Etliche aber von ihnen gingen hin zu den Pharisäern und sagten ihnen, was Jesus getan hatte.
47 Da versammelten die Hohenpriester und die Pharisäer den Rat und sprachen: Was tun wir? Dieser Mensch tut viele Zeichen.
48 Lassen wir ihn so, dann werden sie alle an ihn glauben, und es werden die Römer kommen und nehmen uns Land und Leute.
49 Einer aber unter ihnen, Kaiphas, der desselben Jahres Hoherpriester war, sprach zu ihnen: Ihr wisset nichts;
50 ihr bedenket auch nicht: Es ist euch besser, ein Mensch sterbe für das Volk, als daß das ganze Volk verderbe.
51 Solches aber redete er nicht von sich selbst, sondern, weil er desselben Jahres Hoherpriester war, weissagte er. Denn Jesus sollte sterben für das Volk,
52 und nicht für das Volk allein, sondern damit er auch die Kinder Gottes, die zerstreut waren, zusammenbrächte.

53 Von dem Tage an war es für sie beschlossen, daß sie ihn töteten.
54 Jesus aber wandelte nicht mehr öffentlich unter den Juden, sondern ging von dannen in eine Gegend nahe bei der Wüste, in eine Stadt, genannt Ephraim, und blieb daselbst mit seinen Jüngern.
55 Es war aber nahe das Ostern der Juden; und es gingen aus der Gegend viele hinauf nach Jerusalem vor Ostern, daß sie sich reinigten.
56 Da standen sie und fragten nach Jesus und redeten miteinander im Tempel: Was dünkt euch? Wird er wohl kommen auf das Fest?
57 Es hatten aber die Hohenpriester und Pharisäer ein Gebot ausgehen lassen: wenn jemand wüßte, wo er wäre, solle er's anzeigen, damit sie ihn greifen könnten.

12

1 Sechs Tage vor Ostern kam Jesus nach Bethanien, wo Lazarus war, welchen Jesus auferweckt hatte von den Toten.
2 Daselbst machten sie ihm ein Mahl, und Martha diente; Lazarus aber war deren einer, die mit ihm zu Tische lagen.
3 Da nahm Maria ein Pfund Salbe von unverfälschter, köstlicher Narde und salbte die Füße Jesu und trocknete mit ihrem Haar seine Füße; das Haus aber ward voll vom Geruch der Salbe.
4 Da sprach seiner Jünger einer, Judas Ischarioth, der ihn hernach verriet:
5 Warum ist diese Salbe nicht verkauft um dreihundert Silbergroschen und den Armen gegeben?
6 Das sagte er aber nicht, weil er nach den Armen fragte, sondern er war ein Dieb und hatte den Beutel und

nahm an sich, was gegeben ward.
7 Da sprach Jesus: Laß sie mit Frieden! Mag es gelten für den Tag meines Begräbnisses.
8 Denn Arme habt ihr allezeit bei euch; mich aber habt ihr nicht allezeit.
9 Da erfuhr viel Volks der Juden, daß er daselbst war, und kamen nicht allein um Jesu willen, sondern damit sie auch Lazarus sähen, welchen er von den Toten erweckt hatte.
10 Aber die Hohenpriester beschlossen, daß sie auch Lazarus töteten;
11 denn um seinetwillen gingen viele Juden hin und glaubten an Jesus.
12 Des andern Tages, da viel Volks, das aufs Fest gekommen war, hörte, daß Jesus käme nach Jerusalem,
13 nahmen sie Palmenzweige und gingen hinaus ihm entgegen und schrien: Hosianna! Gelobt sei, der da kommt in dem Namen des Herrn, der König von Israel!
14 Jesus aber fand ein Eselsfüllen und ritt darauf; wie denn geschrieben steht :
15 «Fürchte dich nicht, du Tochter Zion! Siehe, dein König kommt, reitend auf einem Eselsfüllen.»
16 Solches aber verstanden seine Jünger zuerst nicht; aber als Jesus verherrlicht ward, da dachten sie daran, daß solches von ihm geschrieben war und man solches ihm getan hatte.
17 Das Volk aber, das mit ihm war, als er Lazarus aus dem Grabe rief und von den Toten auferweckte, rühmte die Tat.
18 Darum ging ihm auch das Volk entgegen, da sie hörten, er hätte solches Zeichen getan.
19 Die Pharisäer aber sprachen untereinander: Ihr sehet, daß ihr nichts ausrichtet; siehe, alle Welt läuft ihm nach!
20 Es waren aber etliche Griechen unter denen, die hinaufgekommen waren, daß sie anbeteten auf dem Fest.
21 Die traten zu Philippus, der von Bethsaida aus Galiläa war, baten ihn und sprachen: Herr, wir wollten Jesus gerne sehen.
22 Philippus kommt und sagt's Andreas, und Philippus und Andreas sagten's Jesus weiter.
23 Jesus aber antwortete ihnen und sprach: Die Zeit ist gekommen, daß des Menschen Sohn verherrlicht werde.
24 Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Wenn das Weizenkorn nicht in die Erde fällt und erstirbt, so bleibt's allein; wenn es aber erstirbt, so bringt es viel Frucht.
25 Wer sein Leben lieb hat, der wird's verlieren; und wer sein Leben auf dieser Welt hasset, der wird's erhalten zum ewigen Leben.
26 Wer mir dienen will, der folge mir nach; und wo ich bin, da soll mein Diener auch sein. Und wer mir dienen wird, den wird mein Vater ehren.
27 Jetzt ist meine Seele betrübt. Und was soll ich sagen? Vater, hilf mir aus dieser Stunde? Nein, darum bin ich in diese Stunde gekommen.
28 Vater, verherrliche deinen Namen! Da kam eine Stimme vom Himmel: Ich habe ihn verherrlicht und will ihn abermals verherrlichen.
29 Da sprach das Volk, das dabeistand und zuhörte: Es donnerte. Die andern sprachen: Es redete ein Engel mit ihm.
30 Jesus antwortete und sprach: Diese Stimme ist nicht um meinetwillen geschehen, sondern um euretwillen.
31 Jetzt geht das Gericht über die Welt; nun wird der Fürst dieser Welt ausgestoßen werden.

32 Und ich, wenn ich erhöht werde von der Erde, so will ich sie alle zu mir ziehen.
33 Das sagte er aber, zu zeigen, welches Todes er sterben würde.
34 Da antwortete ihm das Volk: Wir haben gehört im Gesetz, daß der Christus ewiglich bleibe; und wie sagst du denn: Des Menschen Sohn muß erhöht werden? Wer ist dieser Menschensohn?
35 Da sprach Jesus zu ihnen: Es ist das Licht noch eine kleine Zeit bei euch. Wandelt, solange ihr das Licht habt, damit euch die Finsternis nicht überfalle. Wer in der Finsternis wandelt, der weiß nicht, wo er hingeht.
36 Glaubet an das Licht, solange ihr's habt, auf daß ihr des Lichtes Kinder werdet. Solches redete Jesus und ging weg und verbarg sich vor ihnen.
37 Und ob er wohl solche Zeichen vor ihnen getan hatte, glaubten sie doch nicht an ihn;
38 auf daß erfüllt würde der Spruch des Propheten Jesaja, den er sagte: «Herr, wer glaubt unserm Predigen? Und wem ist der Arm des Herrn offenbart?»
39 Darum konnten sie nicht glauben, denn Jesaja sagte abermals :
40 «Er hat ihre Augen verblendet und ihr Herz verstockt, daß sie mit den Augen nicht sehen noch mit dem Herzen vernehmen und sich bekehren, und ich ihnen hülfe.»
41 Solches sagte Jesaja, da er seine Herrlichkeit sah, und redete von ihm.
42 Doch auch der Obersten glaubten viele an ihn; aber um der Pharisäer willen bekannten sie es nicht, auf daß sie nicht in den Bann getan würden.
43 Denn sie hatten lieber die Ehre bei den Menschen als die Ehre bei Gott.
44 Jesus aber rief und sprach: Wer an mich glaubt, der glaubt nicht an mich, sondern an den, der mich gesandt

hat.
45 Und wer mich sieht, der sieht den, der mich gesandt hat.
46 Ich bin gekommen in die Welt ein Licht, damit, wer an mich glaubt, nicht in der Finsternis bleibe.
47 Und wer meine Worte hört und bewahrt sie nicht, den werde ich nicht richten; denn ich bin nicht gekommen, daß ich die Welt richte, sondern daß ich die Welt rette.
48 Wer mich verachtet und nimmt meine Worte nicht auf, der hat schon seinen Richter: Das Wort, welches ich geredet habe, das wird ihn richten am Jüngsten Tage.
49 Denn ich habe nicht von mir selber geredet; sondern der Vater, der mich gesandt hat, der hat mir ein Gebot gegeben, was ich sagen und reden soll.
50 Und ich weiß: sein Gebot ist das ewige Leben. Darum, was ich rede, das rede ich so, wie mir der Vater gesagt hat.

13 1 Vor dem Osterfest aber erkannte Jesus, daß seine Stunde gekommen war, daß er aus dieser Welt ginge zum Vater; und wie er hatte geliebt die Seinen, die in der Welt waren, so liebte er sie bis ans Ende.
2 Und bei dem Abendessen, da schon der Teufel hatte dem Judas, Simons Sohn, dem Ischarioth, ins Herz gegeben, daß er ihn verriete,
3 und Jesus wußte, daß ihm der Vater hatte alles in seine Hände gegeben und daß er von Gott gekommen war und zu Gott ging:
4 stand er vom Abendmahl auf, legte seine Kleider ab und nahm einen Schurz und umgürtete sich.
5 Danach goß er Wasser in ein Becken, hob an, den Jüngern die Füße zu waschen, und trocknete sie mit dem Schurz, mit dem er umgürtet war.
6 Da kam er zu Simon Petrus; der sprach zu ihm: Herr, solltest du mir meine Füße waschen?
7 Jesus antwortete und sprach zu ihm: Was ich tue, das weißt du jetzt nicht; du wirst es aber hernach erfahren.
8 Da sprach Petrus zu ihm: Nimmermehr sollst du mir die Füße waschen! Jesus antwortete ihm: Werde ich dich nicht waschen, so hast du kein Teil an mir.
9 Spricht zu ihm Simon Petrus: Herr, nicht die Füße allein, sondern auch die Hände und das Haupt!
10 Spricht Jesus zu ihm: Wer gewaschen ist, der bedarf nichts als noch die Füße waschen; denn er ist ganz rein. Und ihr seid rein, aber nicht alle.
11 Denn er wußte seinen Verräter wohl; darum sprach er: Ihr seid nicht alle rein.
12 Da er nun ihre Füße gewaschen hatte, nahm er seine Kleider und setzte sich wieder nieder und sprach abermals zu ihnen: Wisset ihr, was ich euch getan habe?
13 Ihr heißet mich Meister und Herr und saget recht daran, denn ich bin's auch.
14 Wenn nun ich, euer Herr und Meister, euch die Füße gewaschen habe, so sollt ihr auch euch untereinander die Füße waschen.
15 Ein Beispiel habe ich euch gegeben, daß ihr tut, wie ich euch getan habe.
16 Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Der Knecht ist nicht größer als sein Herr, noch der Apostel größer als der, der ihn gesandt hat.
17 Wenn ihr solches wisset, selig seid ihr, wenn ihr's tut.

18 Nicht rede ich von euch allen; ich weiß, welche ich erwählt habe. Aber es muß die Schrift erfüllt werden (Psalm 41,10): «Der mein Brot isset, der tritt mich mit Füßen.»
19 Jetzt sage ich's euch, ehe denn es geschieht, damit, wenn es geschehen ist, ihr glaubet, daß ich es bin.
20 Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Wer aufnimmt, wenn ich jemand senden werde, der nimmt mich auf; wer aber mich aufnimmt, der nimmt den auf, der mich gesandt hat.
21 Da Jesus solches gesagt hatte, ward er betrübt im Geist und bezeugte und sprach: Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Einer unter euch wird mich verraten.
22 Da sahen sich die Jünger untereinander an, und ward ihnen bange, von welchem er redete.
23 Es war aber einer unter seinen Jüngern, welchen Jesus lieb hatte, der lag bei Tische an der Brust Jesu.
24 Dem winkte Simon Petrus und sprach zu ihm: Sag, wer ist's, von dem er redet!
25 Der lehnte sich an die Brust Jesu und sprach zu ihm: Herr, wer ist's?
26 Jesus antwortete: Der ist's, dem ich den Bissen eintauche und gebe. Und er tauchte den Bissen ein, nahm ihn und gab ihn dem Judas, des Simon Ischarioth Sohn.
27 Und nach dem Bissen fuhr der Satan in ihn. Da sprach Jesus zu ihm: Was du tust, das tue bald!
28 Es wußte aber niemand am Tische, wozu er's ihm sagte.
29 Etliche meinten, weil Judas den Beutel hatte, Jesus spräche zu ihm: Kaufe, was uns not ist zum Fest, oder daß er den Armen etwas gäbe.
30 Da er nun den Bissen genommen hatte, ging er alsbald hinaus. Und es war Nacht.
31 Da Judas aber hinausgegangen war, spricht Jesus: Nun ist des Menschen Sohn verherrlicht, und Gott ist

verherrlicht in ihm.
32 Ist Gott verherrlicht in ihm, so wird ihn Gott auch verherrlichen in sich und wird ihn alsbald verherrlichen.
33 Liebe Kinder, ich bin noch eine kleine Weile bei euch. Ihr werdet mich suchen; und wie ich zu den Juden sagte: Wo ich hingehe, da könnt ihr nicht hinkommen, so sage ich jetzt auch euch.
34 Ein neu Gebot gebe ich euch, daß ihr euch untereinander liebet, wie ich euch geliebt habe, damit auch ihr einander lieb habet.
35 Daran wird jedermann erkennen, daß ihr meine Jünger seid, so ihr Liebe untereinander habt.
36 Spricht Simon Petrus zu ihm: Herr, wo gehst du hin? Jesus antwortete ihm: Wo ich hingehe, kannst du mir diesmal nicht folgen; aber du wirst mir nachmals folgen.
37 Petrus spricht zu ihm: Herr, warum kann ich dir diesmal nicht folgen? Ich will mein Leben für dich lassen.
38 Jesus antwortete ihm: Solltest du dein Leben für mich lassen? Wahrlich, wahrlich, ich sage dir: Der Hahn wird nicht krähen, bis du mich dreimal habest verleugnet.

14

1 Euer Herz erschrecke nicht! Glaubet an Gott und glaubet an mich!
2 In meines Vaters Hause sind viele Wohnungen. Wenn's nicht so wäre, würde ich dann zu euch gesagt haben: Ich gehe hin, euch die Stätte zu bereiten?
3 Und wenn ich hingehe, euch die Stätte zu bereiten, so will ich wieder kommen und euch zu mir nehmen, damit ihr seid, wo ich bin.
4 Und wo ich hingehe, - den Weg wisset ihr.
5 Spricht zu ihm Thomas: Herr, wir wissen nicht, wo du hingehst; und wie können wir den Weg wissen?
6 Jesus spricht zu ihm: Ich bin der Weg und die Wahrheit und das Leben; niemand kommt zum Vater denn durch mich.
7 Wenn ihr mich kenntet, so kenntet ihr auch meinen Vater. Und von nun an kennet ihr ihn und habt ihn gesehen.
8 Spricht zu ihm Philippus: Herr, zeige uns den Vater, so ist's uns genug.
9 Jesus spricht zu ihm: So lange bin ich bei euch, und du kennst mich nicht, Philippus? Wer mich sieht, der sieht den Vater! Wie sprichst du denn: Zeige uns den Vater?
10 Glaubst du nicht, daß ich im Vater und der Vater in mir ist? Die Worte, die ich zu euch rede, die rede ich nicht von mir selbst. Der Vater aber, der in mir wohnt, der tut seine Werke.
11 Glaubet mir, daß ich im Vater und der Vater in mir ist; wo nicht, so glaubet mir doch um der Werke willen.
12 Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Wer an mich glaubt, der wird die Werke auch tun, die ich tue, und wird größere als diese tun, denn ich gehe zum Vater.
13 Und was ihr bitten werdet in meinem Namen, das will ich tun, auf daß der Vater verherrlicht werde in dem Sohne.
14 Was ihr mich bitten werdet in meinem Namen, das will ich tun.
15 Liebet ihr mich, so werdet ihr meine Gebote halten.
16 Und ich will den Vater bitten, und er wird euch einen andern Tröster geben, daß er bei euch sei ewiglich:
17 den Geist der Wahrheit, welchen die Welt nicht kann empfangen, denn sie sieht ihn nicht und kennt ihn nicht. Ihr aber kennet ihn, denn er bleibt bei euch und wird in euch sein.

18 Ich will euch nicht als Waisen zurücklassen; ich komme zu euch.
19 Es ist noch um ein kleines, dann wird mich die Welt nicht mehr sehen. Ihr aber sollt mich sehen, denn ich lebe, und ihr sollt auch leben.
20 An demselben Tage werdet ihr erkennen, daß ich in meinem Vater bin und ihr in mir und ich in euch.
21 Wer meine Gebote hat und hält sie, der ist's, der mich liebt. Wer mich aber liebt, der wird von meinem Vater geliebt werden, und ich werde ihn lieben und mich ihm offenbaren.
22 Spricht zu ihm Judas, nicht der Ischarioth: Herr, was ist's, daß du dich uns willst offenbaren und nicht der Welt?
23 Jesus antwortete und sprach zu ihm: Wer mich liebt, der wird mein Wort halten; und mein Vater wird ihn lieben, und wir werden zu ihm kommen und Wohnung bei ihm machen.
24 Wer aber mich nicht liebt, der hält meine Worte nicht. Und das Wort, das ihr höret, ist nicht mein, sondern des Vaters, der mich gesandt hat.
25 Solches habe ich zu euch geredet, während ich bei euch gewesen bin.
26 Aber der Tröster, der heilige Geist, welchen mein Vater senden wird in meinem Namen, der wird euch alles lehren und euch erinnern alles des, was ich euch gesagt habe. Der Friede Christi
27 Den Frieden lasse ich euch, meinen Frieden gebe ich euch. Nicht gebe ich euch, wie die Welt gibt. Euer Herz erschrecke nicht und fürchte sich nicht.
28 Ihr habt gehört, daß ich euch gesagt habe: Ich gehe hin und komme wieder zu euch. Hättet ihr mich lieb, so würdet ihr euch freuen, daß ich zum Vater gehe, denn der Vater ist größer als ich.

29 Und nun habe ich's euch gesagt, ehe es geschieht, auf daß ihr glaubet, wenn es nun geschehen wird.
30 Ich werde nicht mehr viel mit euch reden, denn es kommt der Fürst der Welt. Er hat keine Macht über mich,
31 aber die Welt soll erkennen, daß ich den Vater liebe und tue, wie mir der Vater geboten hat. Stehet auf und lasset uns von hinnen gehen.

15

1 Ich bin der rechte Weinstock, und mein Vater der Weingärtner.
2 Eine jegliche Rebe an mir, die nicht Frucht bringt, wird er wegnehmen; und eine jegliche, die da Frucht bringt, wird er reinigen, daß sie mehr Frucht bringe.
3 Ihr seid schon rein um des Wortes willen, das ich zu euch geredet habe.
4 Bleibet in mir und ich in euch. Gleichwie die Rebe kann keine Frucht bringen von sich selber, sie bleibe denn am Weinstock, so auch ihr nicht, ihr bleibet denn in mir.
5 Ich bin der Weinstock, ihr seid die Reben. Wer in mir bleibt und ich in ihm, der bringt viel Frucht; denn ohne mich könnt ihr nichts tun.
6 Wer nicht in mir bleibt, der wird weggeworfen wie eine Rebe und verdorrt, und man sammelt sie und wirft sie ins Feuer, und müssen brennen.
7 Wenn ihr in mir bleibet und meine Worte in euch bleiben, werdet ihr bitten, was ihr wollt, und es wird euch widerfahren.
8 Darin wird mein Vater verherrlicht, daß ihr viel Frucht bringet und werdet meine Jünger.
9 Gleichwie mich mein Vater liebt, so liebe ich euch auch. Bleibet in meiner Liebe!
10 Wenn ihr meine Gebote haltet, so bleibet ihr in meiner Liebe, gleichwie ich meines Vaters Gebote halte und bleibe in seiner Liebe.
11 Solches rede ich zu euch, damit meine Freude in euch bleibe und eure Freude vollkommen werde.
12 Das ist mein Gebot, daß ihr euch untereinander liebet, gleichwie ich euch liebe.
13 Niemand hat größere Liebe denn die, daß er sein Leben läßt für seine Freunde.
14 Ihr seid meine Freunde, wenn ihr tut, was ich euch gebiete.
15 Ich sage hinfort nicht, daß ihr Knechte seid; denn ein Knecht weiß nicht, was sein Herr tut. Euch aber habe ich gesagt, daß ihr Freunde seid; denn alles, was ich habe von meinem Vater gehört, habe ich euch kundgetan.
16 Ihr habt mich nicht erwählt, sondern ich habe euch erwählt und gesetzt, daß ihr hingehet und Frucht bringet und eure Frucht bleibe, damit, wenn ihr den Vater bittet in meinem Namen, er's euch gebe.
17 Das gebiete ich euch, daß ihr euch untereinander liebet.
18 Wenn euch die Welt hasset, so wisset, daß sie mich vor euch gehaßt hat.
19 Wäret ihr von der Welt, so hätte die Welt das Ihre lieb. Weil ihr aber nicht von der Welt seid, sondern ich euch aus der Welt erwählt habe, darum hasset euch die Welt.
20 Gedenket an mein Wort, das ich euch gesagt habe: Der Knecht ist nicht größer als sein Herr. Haben sie mich verfolgt, so werden sie euch auch verfolgen; haben sie mein Wort gehalten, so werden sie eures auch halten.
21 Aber das alles werden sie euch tun um meines Namens willen; denn sie kennen den nicht, der mich gesandt hat.
22 Wenn ich nicht gekommen wäre und hätte es ihnen gesagt, so hätten sie keine Sünde; nun aber können sie nichts vorwenden, ihre Sünde zu entschuldigen.

23 Wer mich hasset, der hasset auch meinen Vater.
24 Hätte ich nicht die Werke getan unter ihnen, die kein anderer getan hat, so hätten sie keine Sünde. Nun aber haben sie es gesehen und hassen doch beide, mich und meinen Vater.
25 Doch muß erfüllt werden der Spruch, in ihrem Gesetz geschrieben (Psalm 69,5): «Sie hassen mich ohne Ursache.»
26 Wenn aber der Tröster kommen wird, welchen ich euch senden werde vom Vater, der Geist der Wahrheit, der vom Vater ausgeht, der wird zeugen von mir.
27 Und auch ihr werdet meine Zeugen sein, denn ihr seid von Anfang bei mir gewesen.

16

1 Solches habe ich zu euch geredet, damit ihr nicht Ärgernis nehmt.
2 Sie werden euch in den Bann tun. Ja, es kommt die Stunde, daß wer euch tötet, wird meinen, er tue Gott einen Dienst damit.
3 Und solches werden sie darum tun, weil sie weder meinen Vater noch mich erkennen.
4 Aber solches habe ich zu euch geredet, damit, wenn die Stunde kommen wird, ihr daran gedenket, daß ich's euch gesagt habe. Solches aber habe ich euch von Anfang nicht gesagt, denn ich war bei euch.
5 Nun aber gehe ich hin zu dem, der mich gesandt hat; und niemand unter euch fragt mich: Wo gehst du hin?
6 Sondern weil ich solches zu euch geredet habe, ist euer Herz voll Trauerns geworden.
7 Aber ich sage euch die Wahrheit: es ist euch gut, daß ich hingehe. Denn wenn ich nicht hingehe, so kommt der Tröster nicht zu euch. Wenn ich aber gehe, will ich ihn zu euch senden.

8 Und wenn derselbe kommt, wird er der Welt die Augen auftun über die Sünde und über die Gerechtigkeit und über das Gericht;
9 über die Sünde: daß sie nicht glauben an mich;
10 über die Gerechtigkeit: daß ich zum Vater gehe und ihr mich hinfort nicht sehet;
11 über das Gericht: daß der Fürst dieser Welt gerichtet ist.
12 Ich habe euch noch viel zu sagen; aber ihr könnt es jetzt nicht tragen.
13 Wenn aber jener, der Geist der Wahrheit, kommen wird, der wird euch in alle Wahrheit leiten. Denn er wird nicht aus sich selber reden; sondern was er hören wird, das wird er reden, und was zukünftig ist, wird er euch verkündigen.
14 Derselbe wird mich verherrlichen; denn von dem Meinen wird er's nehmen und euch verkündigen.
15 Alles, was der Vater hat, das ist mein. Darum habe ich gesagt: Er wird's von dem Meinen nehmen und euch verkündigen.
16 Über ein kleines, dann werdet ihr mich nicht sehen; und abermals über ein kleines, dann werdet ihr mich sehen.
17 Da sprachen etliche unter seinen Jüngern untereinander: Was ist das, was er sagt zu uns: Über ein kleines, dann werdet ihr mich nicht sehen; und abermals über ein kleines, dann werdet ihr mich sehen; und: Ich gehe zum Vater?
18 Da sprachen sie: Was ist das, was er sagt: Über ein kleines? Wir wissen nicht, was er redet.
19 Da merkte Jesus, daß sie ihn fragen wollten, und sprach zu ihnen: Darüber fraget ihr untereinander, daß ich gesagt habe: Über ein kleines, dann werdet ihr mich nicht sehen; und abermals über ein kleines, dann werdet ihr mich sehen.
20 Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Ihr werdet weinen und heulen, aber die Welt wird sich freuen; ihr werdet traurig sein, doch eure Traurigkeit soll in Freude verkehrt werden.
21 Ein Weib, wenn sie gebiert, so hat sie Traurigkeit, denn ihre Stunde ist gekommen. Wenn sie aber das Kind geboren hat, denkt sie nicht mehr an die Angst um der Freude willen, daß ein Mensch zur Welt geboren ist.
22 Und auch ihr habt nun Traurigkeit; aber ich will euch wiedersehen, und euer Herz soll sich freuen, und eure Freude soll niemand von euch nehmen.
23 Und an demselben Tage werdet ihr mich nichts fragen. Wahrlich, wahrlich, ich sage euch: Wenn ihr den Vater etwas bitten werdet, so wird er's euch geben in meinem Namen.
24 Bisher habt ihr nichts gebeten in meinem Namen. Bittet, so werdet ihr nehmen, daß eure Freude vollkommen sei.
25 Solches habe ich zu euch in Sprüchen und Bildern geredet. Es kommt aber die Zeit, daß ich nicht mehr in Bildern mit euch reden werde, sondern euch frei heraus verkündigen von meinem Vater.
26 An demselben Tage werdet ihr bitten in meinem Namen. Und ich sage euch nicht, daß ich den Vater für euch bitten will;
27 denn er selbst, der Vater, hat euch lieb, weil ihr mich liebet und glaubet, daß ich von Gott ausgegangen bin.
28 Ich bin vom Vater ausgegangen und gekommen in die Welt; wiederum verlasse ich die Welt und gehe zum Vater.
29 Sprechen zu ihm seine Jünger: Siehe, nun redest du frei heraus und nicht mehr in Bildern.

30 Nun wissen wir, daß du alle Dinge weißt und bedarfst nicht, daß dich jemand frage; darum glauben wir, daß du von Gott ausgegangen bist.
31 Jesus antwortete ihnen: Jetzt glaubet ihr?
32 Siehe, es kommt die Stunde und ist schon gekommen, daß ihr zerstreut werdet, ein jeglicher in das Seine, und mich allein lasset. Aber ich bin nicht allein, denn der Vater ist bei mir.
33 Solches habe ich mit euch geredet, daß ihr in mir Frieden habet. In der Welt habt ihr Angst; aber seid getrost, ich habe die Welt überwunden.

17

1 Solches redete Jesus und hob seine Augen auf gen Himmel und sprach: Vater, die Stunde ist da: verherrliche deinen Sohn, auf daß dich der Sohn verherrliche,
2 wie du ihm Macht gegeben hast über alles Fleisch, damit er das ewige Leben gebe allen, die du ihm gegeben hast.
3 Das ist aber das ewige Leben, daß sie dich, der du allein wahrer Gott bist, und den du gesandt hast, Jesus Christus, erkennen.
4 Ich habe dich verherrlicht auf Erden und vollendet das Werk, das du mir gegeben hast, daß ich es tun sollte.
5 Und nun verherrliche mich du, Vater, bei dir selbst mit der Klarheit, die ich bei dir hatte, ehe die Welt war.
6 Ich habe deinen Namen offenbart den Menschen, die du mir von der Welt gegeben hast. Sie waren dein, und du hast sie mir gegeben, und sie haben dein Wort behalten.
7 Nun wissen sie, daß alles, was du mir gegeben hast, sei von dir.

8 Denn die Worte, die du mir gegeben hast, habe ich ihnen gegeben; und sie haben's angenommen und erkannt wahrhaftig, daß ich von dir ausgegangen bin, und glauben, daß du mich gesandt hast.
9 Ich bitte für sie und bitte nicht für die Welt, sondern für die, die du mir gegeben hast; denn sie sind dein.
10 Und alles, was mein ist, das ist dein, und was dein ist, das ist mein; und ich bin in ihnen verherrlicht.
11 Und ich bin nicht mehr in der Welt; sie aber sind in der Welt, und ich komme zu dir. Heiliger Vater, erhalte sie in deinem Namen, den du mir gegeben hast, daß sie eins seien gleichwie wir.
12 Solange ich bei ihnen war, erhielt ich sie in deinem Namen, den du mir gegeben hast, und habe sie bewahrt, und ist keiner von ihnen verloren außer dem Sohn des Verderbens, auf daß die Schrift erfüllt würde.
13 Nun aber komme ich zu dir und rede solches in der Welt, auf daß sie in sich haben meine Freude vollkommen.
14 Ich habe ihnen gegeben dein Wort, und die Welt haßte sie; denn sie sind nicht von der Welt, wie denn auch ich nicht von der Welt bin.
15 Ich bitte nicht, daß du sie von der Welt nehmest, sondern daß du sie bewahrest vor dem Bösen.
16 Sie sind nicht von der Welt, gleichwie ich auch nicht von der Welt bin.
17 Heilige sie in der Wahrheit; dein Wort ist die Wahrheit.
18 Gleichwie du mich gesandt hast in die Welt, so sende ich sie auch in die Welt.
19 Ich heilige mich selbst für sie, auf daß auch sie geheiligt seien in der Wahrheit.
20 Ich bitte aber nicht allein für sie, sondern auch für die, die durch ihr Wort an mich glauben werden,
21 auf daß sie alle eins seien, gleichwie du, Vater, in mir und ich in dir; daß auch sie in uns seien, damit die Welt glaube, du habest mich gesandt.
22 Und ich habe ihnen gegeben die Herrlichkeit, die du mir gegeben hast, daß sie eins seien, gleichwie wir eins sind,
23 ich in ihnen und du in mir, auf daß sie vollkommen eins seien und die Welt erkenne, daß du mich gesandt hast und liebst sie, gleichwie du mich liebst.
24 Vater, ich will, daß, wo ich bin, auch die bei mir seien, die du mir gegeben hast, auf daß sie meine Herrlichkeit sehen, die du mir gegeben hast; denn du hast mich geliebt, ehe denn die Welt gegründet ward.
25 Gerechter Vater, die Welt kennt dich nicht; ich aber kenne dich, und diese haben erkannt, daß du mich gesandt hast.
26 Und ich habe ihnen deinen Namen kundgetan und will ihn kundtun, damit die Liebe, mit der du mich liebst, sei in ihnen und ich in ihnen.

18

1 Da Jesus solches geredet hatte, ging er hinaus mit seinen Jüngern über den Bach Kidron; da war ein Garten, darein ging Jesus und seine Jünger.
2 Judas aber, der ihn verriet, wußte den Ort auch, denn Jesus versammelte sich oft daselbst mit seinen Jüngern.
3 Da nun Judas zu sich genommen hatte die Schar der Kriegsknechte und die Diener der Hohenpriester und Pharisäer, kommt er dahin mit Fackeln, Lampen und mit Waffen.
4 Da nun Jesus wußte alles, was ihm begegnen sollte, ging er hinaus und sprach zu ihnen: Wen suchet ihr?
5 Sie antworteten ihm: Jesus von Nazareth. Er spricht zu ihnen: Ich bin's! Judas aber, der ihn verriet, stand auch bei ihnen.
6 Als nun Jesus zu ihnen sprach: Ich bin's! wichen sie zurück und fielen zu Boden.
7 Da fragte er sie abermals: Wen suchet ihr? Sie aber sprachen: Jesus von Nazareth.
8 Jesus antwortete: Ich habe es euch gesagt, daß ich's bin. Suchet ihr denn mich, so lasset diese gehen!
9 auf daß das Wort erfüllt würde, welches er gesagt hatte: Ich habe derer keinen verloren, die du mir gegeben hast.
10 Da hatte Simon Petrus ein Schwert und zog es heraus und schlug nach des Hohenpriesters Knecht und hieb ihm sein rechtes Ohr ab. Und der Knecht hieß Malchus.
11 Da sprach Jesus zu Petrus: Stecke dein Schwert in die Scheide! Soll ich den Kelch nicht trinken, den mir mein Vater gegeben hat?
12 Die Schar aber und der Oberhauptmann und die Diener der Juden nahmen Jesus und banden ihn
13 und führten ihn zuerst zu Hannas; der war der Schwiegervater des Kaiphas, welcher des Jahres Hoherpriester war.
14 Es war aber Kaiphas, der den Juden geraten hatte, es wäre gut, daß ein Mensch stürbe für das Volk.
15 Simon Petrus aber folgte Jesus nach und ein anderer Jünger. Dieser Jünger war dem Hohenpriester bekannt und ging mit Jesus hinein in des Hohenpriesters Palast.
16 Petrus aber stand draußen vor der Tür. Da ging der andere Jünger, der dem Hohenpriester bekannt war, hinaus und redete mit der Türhüterin und führte Petrus hinein.
17 Da sprach die Magd, die Türhüterin, zu Petrus: Bist du nicht auch einer von den Jüngern dieses Menschen?

Er sprach: Ich bin's nicht.
18 Es standen aber die Knechte und Diener und hatten ein Kohlenfeuer gemacht, denn es war kalt, und wärmten sich. Petrus aber stand bei ihnen und wärmte sich.
19 Aber der Hohepriester fragte Jesus über seine Jünger und über seine Lehre.
20 Jesus antwortete ihm: Ich habe frei öffentlich geredet vor der Welt. Ich habe allezeit gelehrt in der Synagoge und in dem Tempel, wo alle Juden zusammenkommen, und habe nichts im Verborgenen geredet.
21 Was fragst du mich? Frage die, die gehört haben, was ich zu ihnen geredet habe. Siehe, diese wissen, was ich gesagt habe.
22 Als er aber solches redete, gab der Diener einer, der dabeistand, Jesus einen Backenstreich und sprach: Antwortest du so dem Hohenpriester?
23 Jesus antwortete: Habe ich übel geredet, so beweise, daß es böse sei; habe ich aber recht geredet, was schlägst du mich?
24 Und Hannas sandte ihn gebunden zu dem Hohenpriester Kaiphas.
25 Simon Petrus aber stand und wärmte sich. Da sprachen sie zu ihm: Bist du nicht seiner Jünger einer? Er leugnete aber und sprach: Ich bin's nicht.
26 Spricht einer von des Hohenpriesters Knechten, ein Verwandter des, dem Petrus das Ohr abgehauen hatte: Sah ich dich nicht im Garten bei ihm?
27 Da leugnete Petrus abermals, und alsbald krähte der Hahn.
28 Da führten sie Jesus von Kaiphas vor das Richthaus. Und es war frühe; und sie gingen nicht in das Richthaus, damit sie nicht unrein würden, sondern Ostern essen könnten.
29 Da ging Pilatus zu ihnen heraus und sprach: Was bringet ihr für Klage wider diesen Menschen?
30 Sie antworteten und sprachen zu ihm: Wäre dieser nicht ein Übeltäter, wir hätten dir ihn nicht überantwortet.
31 Da sprach Pilatus zu ihnen: So nehmet ihr ihn hin und richtet ihn nach eurem Gesetz. Da sprachen die Juden zu ihm: Wir dürfen niemand töten, -
32 auf daß erfüllt würde das Wort Jesu, das er sagte, um zu zeigen, welches Todes er sterben würde.
33 Da ging Pilatus wieder hinein ins Richthaus und rief Jesus und sprach zu ihm: Bist du der Juden König?
34 Jesus antwortete: Redest du das von dir selbst, oder haben's dir andere von mir gesagt?
35 Pilatus antwortete: Bin ich ein Jude? Dein Volk und die Hohenpriester haben dich mir überantwortet. Was hast du getan?
36 Jesus antwortete: Mein Reich ist nicht von dieser Welt. Wäre mein Reich von dieser Welt, meine Diener würden darum kämpfen, daß ich den Juden nicht überantwortet würde; aber nun ist mein Reich nicht von dieser Welt.
37 Da sprach Pilatus zu ihm: So bist du dennoch ein König? Jesus antwortete: Du sagst es, ich bin ein König. Ich bin dazu geboren und in die Welt gekommen, daß ich für die Wahrheit zeugen soll. Wer aus der Wahrheit ist, der höret meine Stimme.
38 Spricht Pilatus zu ihm: Was ist Wahrheit? Und da er das gesagt, ging er wieder hinaus zu den Juden und spricht zu ihnen: Ich finde keine Schuld an ihm.
39 Ihr habt aber eine Gewohnheit, daß ich euch einen Gefangenen zum Osterfest losgebe; wollt ihr nun, daß ich euch der Juden König losgebe?
40 Da schrien sie wieder und sprachen: Nicht diesen, sondern Barabbas! Barabbas aber war ein Räuber.



19

1 Da nahm Pilatus Jesus und ließ ihn geißeln.
2 Und die Kriegsknechte flochten eine Krone von Dornen und setzten sie auf sein Haupt und legten ihm ein Purpurkleid an,
3 traten zu ihm und sprachen: Sei gegrüßt, lieber Judenkönig! und gaben ihm Backenstreiche.
4 Da ging Pilatus wieder heraus und sprach zu ihnen: Sehet, ich führe ihn heraus zu euch, damit ihr erkennet, daß ich keine Schuld an ihm finde.
5 Da ging Jesus heraus und trug eine Dornenkrone und ein Purpurkleid. Und Pilatus spricht zu ihnen: Sehet, welch ein Mensch!
6 Da ihn die Hohenpriester und die Diener sahen, schrien sie und sprachen: Kreuzige! kreuzige! Pilatus spricht zu ihnen: Nehmt ihr ihn hin und kreuzigt ihn, denn ich finde keine Schuld an ihm.
7 Die Juden antworteten ihm: Wir haben ein Gesetz, und nach dem Gesetz muß er sterben, denn er hat sich selbst zu Gottes Sohn gemacht.
8 Da Pilatus das Wort hörte, fürchtete er sich noch mehr
9 und ging wieder hinein in das Richthaus und spricht zu Jesus: Woher bist du? Aber Jesus gab ihm keine Antwort.
10 Da sprach Pilatus zu ihm: Redest du nicht mit mir? Weißt du nicht, daß ich Macht habe, dich loszugeben,

und Macht habe, dich zu kreuzigen?
11 Jesus antwortete: Du hättest keine Macht über mich, wenn sie dir nicht wäre von oben her gegeben. Darum: der mich dir überantwortet hat, der hat größere Sünde.
12 Von da an trachtete Pilatus, wie er ihn losließe. Die Juden aber schrien und sprachen: Läßt du diesen los, so bist du des Kaisers Freund nicht; denn wer sich zum König macht, der ist wider den Kaiser.
13 Da Pilatus das Wort hörte, führte er Jesus heraus und setzte sich auf den Richterstuhl an der Stätte, die da heißt Steinpflaster, auf hebräisch Gabbatha.
14 Es war aber der Rüsttag auf Ostern um die sechste Stunde. Und er spricht zu den Juden: Sehet, das ist euer König!
15 Sie schrien aber: Weg, weg mit dem! Kreuzige ihn! Spricht Pilatus zu ihnen: Soll ich euren König kreuzigen? Die Hohenpriester antworteten: Wir haben keinen König denn den Kaiser.
16 Da überantwortete er ihnen Jesus, daß er gekreuzigt würde. Kreuzigung und Tod Sie nahmen ihn aber,
17 und er trug sein Kreuz und ging hinaus zur Stätte, die da heißt Schädelstätte, welche heißt auf hebräisch Golgatha.
18 Allda kreuzigten sie ihn und mit ihm zwei andere zu beiden Seiten, Jesus aber mitten inne.
19 Pilatus aber schrieb eine Überschrift und setzte sie auf das Kreuz; und war geschrieben: Jesus von Nazareth, der Juden König.
20 Diese Überschrift lasen viele Juden, denn die Stätte, da Jesus gekreuzigt ward, war nahe bei der Stadt. Und es war geschrieben in hebräischer, lateinischer und griechischer Sprache.
21 Da sprachen die Hohenpriester der Juden zu Pilatus: Schreibe nicht: Der Juden König, sondern daß er gesagt habe: Ich bin der Juden König.
22 Pilatus antwortete: Was ich geschrieben habe, das habe ich geschrieben.
23 Die Kriegsknechte aber, da sie Jesus gekreuzigt hatten, nahmen sie seine Kleider und machten vier Teile, einem jeglichen Kriegsknecht einen Teil, dazu auch den Rock. Der Rock aber war ungenäht, von obenan gewebt durch und durch.
24 Da sprachen sie untereinander: Lasset uns den nicht zerteilen, sondern darum losen, wes er sein soll, - auf daß erfüllt würde die Schrift (Psalm 22,19): «Sie haben meine Kleider unter sich geteilt und haben über meinen Rock das Los geworfen.» Solches taten die Kriegsknechte.
25 Es stand aber bei dem Kreuze Jesu seine Mutter und seiner Mutter Schwester, Maria, des Kleopas Frau, und Maria Magdalena.
26 Da nun Jesus seine Mutter sah und den Jünger dabeistehen, den er lieb hatte, spricht er zu seiner Mutter: Weib, siehe, das ist dein Sohn!
27 Danach spricht er zu dem Jünger: Siehe, das ist deine Mutter! Und von der Stunde an nahm sie der Jünger zu sich.
28 Danach, da Jesus wußte, daß schon alles vollbracht war, auf daß die Schrift erfüllt würde, spricht er: Mich dürstet!
29 Da stand ein Gefäß voll Essig. Sie aber füllten einen Schwamm mit Essig und steckten ihn auf einen Ysop und hielten es ihm dar zum Munde.
30 Da nun Jesus den Essig genommen hatte, sprach er: Es ist vollbracht! und neigte das Haupt und verschied.
31 Die Juden aber, weil es Rüsttag war, damit nicht die Leichname am Kreuze blieben den Sabbat über, denn es war ein großer Sabbat, baten sie den Pilatus, daß ihnen die Beine gebrochen und sie abgenommen würden.
32 Da kamen die Kriegsknechte und brachen dem ersten die Beine und dem andern, der mit ihm gekreuzigt war.
33 Als sie aber zu Jesus kamen und sahen, daß er schon gestorben war, brachen sie ihm die Beine nicht;
34 sondern der Kriegsknechte einer öffnete seine Seite mit einem Speer, und alsbald ging Blut und Wasser heraus.
35 Und der das gesehen hat, der hat es bezeugt, und sein Zeugnis ist wahr, und er weiß, daß er die Wahrheit sagt, damit auch ihr glaubet.
36 Denn solches ist geschehen, daß die Schrift erfüllt würde : «Ihr sollt ihm kein Bein zerbrechen.»
37 Und abermals spricht die Schrift : «Sie werden sehen auf den, in welchen sie gestochen haben.»
38 Danach bat den Pilatus Joseph von Arimathia, der ein Jünger Jesu war, doch heimlich aus Furcht vor den Juden, daß er den Leichnam Jesu dürfte abnehmen. Und Pilatus erlaubte es. Da kam er und nahm den Leichnam Jesu herab.
39 Es kam aber auch Nikodemus, der vormals bei der Nacht zu Jesus gekommen war, und brachte Myrrhe und Aloe untereinander gemengt, bei hundert Pfunden.
40 Da nahmen sie den Leichnam Jesu und banden ihn in leinene Tücher mit den Spezereien, wie die Juden pflegen zu begraben.
41 Es war aber an der Stätte, da er gekreuzigt ward, ein Garten und im Garten ein neues Grab, in welches

niemand je gelegt war.
42 Dahin legten sie Jesus um des Rüsttages willen der Juden, weil das Grab nahe war.

20

1 An dem ersten Tage der Woche kommt Maria Magdalena frühe, da es noch finster war, zum Grabe und sieht, daß der Stein vom Grabe hinweg war.
2 Da läuft sie und kommt zu Simon Petrus und zu dem andern Jünger, welchen Jesus lieb hatte, und spricht zu ihnen: Sie haben den Herrn weggenommen aus dem Grabe, und wir wissen nicht, wo sie ihn hingelegt haben.
3 Da ging Petrus und der andere Jünger hinaus und kamen zum Grabe.
4 Es liefen aber die zwei miteinander, und der andere Jünger lief voraus, schneller als Petrus, und kam zuerst zum Grabe,
5 schaut hinein und sieht die leinenen Binden gelegt; er ging aber nicht hinein.
6 Da kam Simon Petrus ihm nach und ging hinein in das Grab und sieht die Binden gelegt
7 und das Schweißtuch, das Jesus um das Haupt gebunden war, nicht zu den Binden gelegt, sondern beiseits, zusammengewickelt, an einen besonderen Ort.
8 Da ging auch der andere Jünger hinein, der zuerst zum Grabe gekommen war, und sah und glaubte.
9 Denn sie verstanden die Schrift noch nicht, daß er von den Toten auferstehen müßte.
10 Da gingen die Jünger wieder heim.
11 Maria aber stand vor dem Grabe und weinte draußen. Als sie nun weinte, schaute sie in das Grab
12 und sieht zwei Engel in weißen Kleidern sitzen, einen zu den Häupten und den andern zu den Füßen, da sie den Leichnam Jesu hingelegt hatten.
13 Und dieselben sprachen zu ihr: Weib, was weinest du? Sie spricht zu ihnen: Sie haben meinen Herrn weggenommen, und ich weiß nicht, wo sie ihn hingelegt haben.
14 Und als sie das sagte, wandte sie sich zurück und sieht Jesus stehen und weiß nicht, daß es Jesus ist.
15 Spricht Jesus zu ihr: Weib, was weinest du? Wen suchest du? Sie meint, es sei der Gärtner, und spricht zu ihm: Herr, hast du ihn weggetragen, so sage mir, wo hast du ihn hingelegt, so will ich ihn holen.
16 Spricht Jesus zu ihr: Maria! Da wandte sie sich um und spricht zu ihm auf hebräisch: Rabbuni! das heißt: Meister!
17 Spricht Jesus zu ihr: Rühre mich nicht an! denn ich bin noch nicht aufgefahren zum Vater. Gehe aber hin zu meinen Brüdern und sage ihnen: Ich fahre auf zu meinem Vater und zu eurem Vater, zu meinem Gott und zu eurem Gott.
18 Maria Magdalena kommt und verkündigt den Jüngern: Ich habe den Herrn gesehen, und solches hat er zu mir gesagt.
19 Am Abend aber desselben ersten Tages der Woche, da die Jünger versammelt und die Türen verschlossen waren aus Furcht vor den Juden, kam Jesus und trat mitten ein und spricht zu ihnen: Friede sei mit euch!
20 Und als er das gesagt hatte, zeigte er ihnen die Hände und seine Seite. Da wurden die Jünger froh, daß sie den Herrn sahen.
21 Da sprach Jesus abermals zu ihnen: Friede sei mit euch! Gleichwie mich der Vater gesandt hat, so sende ich euch.



22 Und da er das gesagt hatte, blies er sie an und spricht zu ihnen: Nehmet hin den heiligen Geist!
23 Welchen ihr die Sünden erlasset, denen sind sie erlassen; und welchen ihr sie behaltet, denen sind sie behalten.
24 Thomas aber, der Zwölfe einer, der da heißt Zwilling, war nicht bei ihnen, als Jesus kam.
25 Da sagten die andern Jünger zu ihm: Wir haben den Herrn gesehen. Er aber sprach zu ihnen: Wenn ich nicht in seinen Händen sehe die Nägelmale und lege meinen Finger in die Nägelmale und lege meine Hand in seine Seite, kann ich's nicht glauben.
26 Und über acht Tage waren abermals seine Jünger drinnen und Thomas mit ihnen. Kommt Jesus, da die Türen verschlossen waren, und tritt mitten ein und spricht: Friede sei mit euch!
27 Danach spricht er zu Thomas: Reiche deinen Finger her und siehe meine Hände und reiche deine Hand her und lege sie in meine Seite und sei nicht ungläubig, sondern gläubig!
28 Thomas antwortete und sprach zu ihm: Mein Herr und mein Gott!
29 Spricht Jesus zu ihm: Weil du mich gesehen hast, Thomas, so glaubst du. Selig sind, die nicht sehen und doch glauben!
30 Noch viele andere Zeichen tat Jesus vor den Jüngern, die nicht geschrieben sind in diesem Buch.
31 Diese aber sind geschrieben, daß ihr glaubet, Jesus sei der Christus, der Sohn Gottes, und daß ihr durch den Glauben das Leben habet in seinem Namen.

21

1 Danach offenbarte sich Jesus abermals den Jüngern am See Tiberias. Er offenbarte sich aber so:
2 Es waren beieinander Simon Petrus und Thomas, der da heißt Zwilling, und Nathanael von Kana in Galiläa und die Söhne des Zebedäus und andere zwei seiner Jünger.
3 Spricht Simon Petrus zu ihnen: Ich will fischen gehen. Sie sprechen zu ihm: So wollen wir mit dir gehen. Sie gingen hinaus und traten in das Schiff, und in derselben Nacht fingen sie nichts.
4 Als es aber schon Morgen wurde, stand Jesus am Ufer, aber die Jünger wußten nicht, daß es Jesus war.
5 Spricht Jesus zu ihnen: Kinder, habt ihr nichts zu essen? Sie antworteten ihm: Nein.
6 Er aber sprach zu ihnen: Werfet das Netz zur Rechten des Schiffs, so werdet ihr finden. Da warfen sie und konnten's nicht mehr ziehen vor der Menge der Fische.
7 Da spricht der Jünger, welchen Jesus lieb hatte, zu Petrus: Es ist der Herr! Da Simon Petrus hörte, daß es der Herr war, gürtete er den Rock um, denn er war nackt, und warf sich ins Meer.
8 Die andern Jünger aber kamen mit dem Schiff, denn sie waren nicht ferne vom Lande, sondern bei zweihundert Ellen, und zogen das Netz mit den Fischen.
9 Als sie nun ausstiegen auf das Land, sahen sie Kohlen gelegt und Fische darauf und Brot.
10 Spricht Jesus zu ihnen: Bringet her von den Fischen, die ihr jetzt gefangen habt!
11 Simon Petrus stieg hinein und zog das Netz auf das Land voll großer Fische, hundertdreiundfünfzig. Und wiewohl ihrer so viel waren, zerriß doch das Netz nicht.
12 Spricht Jesus zu ihnen: Kommt und haltet das Mahl! Niemand aber unter den Jüngern wagte, ihn zu fragen: Wer bist du? Denn sie wußten, daß es der Herr war.
13 Da kommt Jesus und nimmt das Brot und gibt's ihnen, desgleichen auch die Fische.
14 Das ist nun das dritte Mal, daß Jesus offenbart ward den Jüngern, nachdem er von den Toten auferstanden war.
15 Als sie nun das Mahl gehalten hatten, spricht Jesus zu Simon Petrus: Simon, des Johannes Sohn, hast du mich lieber, als mich diese haben? Er spricht zu ihm: Ja, Herr, du weißt, daß ich dich lieb habe. Spricht Jesus zu ihm: Weide meine Lämmer!
16 Spricht er zum zweiten Mal zu ihm: Simon, des Johannes Sohn, hast du mich lieb? Er spricht zu ihm: Ja, Herr, du weißt, daß ich dich lieb habe. Spricht Jesus zu ihm: Weide meine Schafe!
17 Spricht er zum dritten Mal zu ihm: Simon, des Johannes Sohn, hast du mich lieb? Petrus ward traurig, daß er zum dritten Mal zu ihm sagte: Hast du mich lieb? und sprach zu ihm: Herr, du weißt alle Dinge, du weißt, daß ich dich lieb habe. Spricht Jesus zu ihm: Weide meine Schafe!
18 Wahrlich, wahrlich, ich sage dir: Als du jünger warst, gürtetest du dich selbst und wandeltest, wo du hin wolltest; wenn du aber alt wirst, wirst du deine Hände ausstrecken, und ein anderer wird dich gürten und führen, wo du nicht hin willst.
19 Das sagte er aber, zu zeigen, mit welchem Tode er Gott preisen würde. Und als er das gesagt, spricht er zu ihm: Folge mir nach!
20 Petrus aber wandte sich um und sah den Jünger folgen, welchen Jesus lieb hatte, der auch an seiner Brust beim Abendessen gelegen hatte und gesagt: Herr, wer ist's, der dich verrät?
21 Da Petrus diesen sah, spricht er zu Jesus: Herr, was wird aber mit diesem?
22 Jesus spricht zu ihm: Wenn ich will, daß er bleibe, bis ich komme, was geht es dich an? Folge du mir nach!
23 Da ging die Rede aus unter den Brüdern: Dieser Jünger stirbt nicht. Aber Jesus sprach nicht zu ihm: Er stirbt nicht, sondern: Wenn ich will, daß er bleibe, bis ich komme, was geht es dich an?
24 Dies ist der Jünger, der von diesen Dingen zeugt und dies geschrieben hat, und wir wissen, daß sein Zeugnis wahrhaftig ist.
25 Es sind auch viele andere Dinge, die Jesus getan hat. Wenn sie aber sollten eins nach dem andern geschrieben werden, achte ich, die Welt würde die Bücher nicht fassen, die zu schreiben wären.